भोजपुरी और नेपाली बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन: गोरखपुर तथा भैरवाँ जनपदों के विशिष्ट सन्दर्भ में

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
की
डी०फिल० उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
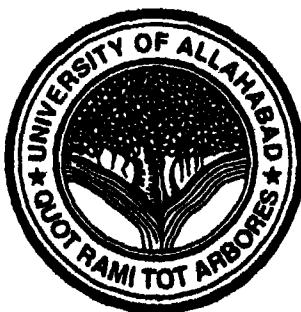
शोध—निर्देशिका
डॉ0 मीरा दीक्षित
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

शोधकर्ता
रजनी कान्त मणि त्रिपाठी
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
2002

भोजपुरी और नेपाली बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन गोरखपुर तथा भैरवा जनपदों के विशिष्ट सन्दर्भ मे

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

भाषाये अपनी सास्कृतिक विरासत मे लोक–चेतना की सवाहिकाए होती है । विचार विनिमय का साधन होते हुए भी वे लोक–चेतना का वैश्वीकरण इस रूप मे प्रस्तुत करती है जहा मनुष्य केन्द्र मे हो जाता है और निर्धारित सीमाए अपने बन्धन को तोड़कर उसके स्वत्व को प्रमाणित करने का कारक बन जाया करती है । हिन्दी इस दृष्टि से विश्वपटल पर अपना पाव इस प्रकार से फैला रही है कि दुनिया के तमाम देश उसके सास्कृतिक बोध से अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपना हाथ बढ़ा रहे है । भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी इस रूप मे क्षेत्रीयता और प्रातीयता की भावना से मुक्त रहकर अपने अन्दर गुणात्मक परिवर्तन उपस्थित करती रही है । पूर्वी हिन्दी और पश्चिमी हिन्दी के रूप मे हिन्दी का इस प्रकार विभाजन एक तरह से भाषायी क्षेत्र मे बाटने जैसा लगता है और जिसके चलते क्षेत्रवाद का जन्म भी होता है और सामाजिक एकता को भी नुकसान पहुचता है । प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध क्षेत्रवाद और प्रान्तीयता की भावना से मुक्त रहकर हिन्दी की आधार बोली भोजपुरी और नेपाल की नेपाली के सास्कृतिक बोध को रेखाकित करने का विनम्र प्रयास है और इस प्रयास मे अपनी जन्मभूमि और उसके समीप स्थित सीमान्त देश नेपाल के सास्कृतिक बोध को भौगोलिक पृष्ठभूमि के रूप मे विवेचित और विश्लेषित करने का कार्य मैने अपना स्वधर्म समझा था, इसका मूल कारण नेपाल का शैव मत का बाहुल्य भी माना जा सकता है, जिसका प्रभाव नाथपथी योगियो की परम्परा मे गोरखपुर की गोरक्षपीठ के प्रभाव के रूप मे भी देखी जा सकती है । भारतीय धर्मसाधना का बहुदेववाद गोरखपुर और नेपाल की सास्कृतिक स्थिति मे अद्वैतवाद का शब्द पर्याय बनता दिखायी पडता है ।

आज जब भारतवर्ष के अन्य सीमान्त देश आतकवाद का सहारा लेकर इस्लाम के एकेश्वरवाद की दुहाई देकर धर्म को क्षेत्रविस्तार की परिधि मे सकुचित करने का प्रयास कर रहे है – "नेपाल की नेपाली और हिन्दी की भोजपुरी" – इस दृष्टि से लोकजागरण की प्रभाती बनकर सामने आ रही है। यह इस शोध–प्रबन्ध की दूसरी केन्द्रीय विशेषता हो सकती है, जहां शिव का सौन्दर्य बोध काव्य के स्तर पर और गद्य के स्तर पर भी दोनो को सप्रेषित करता है।

इस शोध–प्रबन्ध को इस रूप मे प्रस्तुत किया गया है, उससे हम अपने चेहरे को स्वच्छ–दर्पण की तरह देख सके और उसके विकीर्णन से सीमान्त प्रदेश को प्रभावितभी कर सके ।

इस शोध कार्य का उद्देश्य नेपाल मे भोजपुरी का प्रयोग और प्रभाव सम्बन्धी समस्त सामग्री एकसाथ प्रस्तुत कर देना नही है, वरन् उस तथ्य को सामने ला देना है जिसकी अब तक उपेक्षा हुई है और जिसमे आगे अनेक सभावनाए निहित है। इतना अवश्य किया गया है कि प्रयोग और प्रभाव के क्षेत्र की विविधता और अनेकमुखी सक्रियता को निर्भ्रान्त रूप से प्रमाणित करने के लिए जितनी सामग्री अपेक्षित हो सकती है उसे यथेष्ट मात्रा मे प्रस्तुत करने की सम्यक् चेष्टा की गई है। इस शोध–कार्य का उद्देश्य शोध के एक नये क्षेत्र का उद्घाटन है, उसका समापन नही । इस क्षेत्र मे इतनी सभावनाए है कि समापन का अभी प्रश्न ही नही उठता ।

भारत के उत्तर मे लगभग 500 मील की लम्बाई मे पूरब से पश्चिम तक फैला नेपाल अपनी नैसर्गिक सुषमा और सम्पदा के लिए विदेशियो के

आकर्षण का सदा से एक केन्द्र रहा है। आदिकाल से ही यह देश अनेक रूपो में स्मरण किया जाता रहा है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध इस दृष्टि से छह् अध्यायो मे विभाजित है, जिसमे प्रथम अध्याय के अन्तर्गत-

- क) भोजपुरी का नामकरण
- ख) स्थान भेद से नामान्तर
- ग) भोजपुरी की सजीवता
- घ) भोजपुरी का विस्तार क्षेत्र
- च) भोजपुरी के विभिन्न रूप
- छ) भोजपुरी बोलियो की तुलना
- ज) गोरखपुर की भोजपुरी एव प्रमुख कवि है।

भोजपुरी नामकरण के अन्तर्गत स्थान के आधार पर इसका नाम भोजपुरी किस प्रकार से पडा बताने का प्रयास किया गया है। स्थान भेद से नामान्तर के अन्तर्गत प्रत्येक जगह की अपनी बोली की विशिष्टता के कारण उस स्थान के नाम पर उस बोली के नामकरण के बारे मे बताया गया है - जैसे छपरा जिले की भोजपुरी 'छपरहिया' तथा बनारस की भोजपुरी 'बनारसी' आदि । भोजपुरी की सजीवता लोगो का इसके प्रति प्रेम तथा अपनी मातृ-भाषा के प्रति लगाव के बारे मे बताया गया है ।

भोजपुरी के विस्तार क्षेत्र के अन्तर्गत इसके सीमाओ तथा अन्य भाषा-भाषी क्षेत्रो मे इसके विस्तार तथा विद्वानो द्वारा निर्धारित क्षेत्रो के बारे मे लिखा गया है ।

भोजपुरी के विविध रूप में 'जगह–विशेष' की भोजपुरी की सीमाओं के बारे मे बताने का प्रयास किया गया है ।

भोजपुरी बोलियो की तुलना के अन्तर्गत आदर्श–शाहाबाद, सारन तथा बलिया–भोजपुरी की उत्तरी, पश्चिमी आदि बोलियो की तुलना की गयी है।

गोरखपुर की भोजपुरी मे गोरखपुर की भोजपुरी का आदर्श भोजपुरी से अन्तर तथा गोरखपुर की भोजपुरी को क्षेत्र के अनुसार विभाजित किया गया है तथा गोरखपुर के प्रमुख भोजपुरी कवियो को बताया गया है ।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत नेपाली भाषा का परिचय दिया गया है। नेपाली की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे विभिन्न भाषा–शास्त्रियो के मत दिए गए है। आधुनिक आर्य–भाषा और नेपाली का वर्गीकरण करके नेपाली को हिमाली खस वर्ग की भाषा के अन्तर्गत रखा गया है तथा हिमाली–खस वर्ग की भाषाओ के बारे मे लिखा गया है जिसमे हिमाली भाषा, पश्चिमी पहाड़ी भाषाओ, गढ़वाली, कुमाउनी के बारे मे लिखा गया है। नेपाली भाषा के ऐतिहासिक विकास को नेपाली के अन्तर्गत लिखा गया है जिसमे प्राचीन नेपाली जो कि प्रारम्भ से ई0 की चौदहवी शताब्दी तक है तथा मध्यकालीन नेपाली – पन्द्रहवी शताब्दी से उन्नीसवी शताब्दी तक और आधुनिक नेपाली – बीसवीं शताब्दी से अब तक के बारे मे बताया गया है। नेपाल के बाहर नेपाली की स्थिति के बारे मे बताया गया है। इसके बाद इस अध्याय मे नेपाली भाषा की वर्तमान स्थिति के बारे मे बताया गया है कि नेपाली के विकास के लिए क्या हो रहा है। इसके बाद नेपाल की भाषिक स्थिति के बारे मे बताया गया है कि किस क्षेत्र मे कौन–कौन सी बोलिया है। इसके बाद पहाडी क्षेत्र मे नेपाली के बारे मे बताया गया है। पुन नेपाली का पुराना नाम "खसकुरा", "खसभाषा" अथवा पर्वतिया के बारे मे बताया गया है। अन्त मे भैरहवा तथा वहां के प्रमुख कवियो के बारे मे बताया गया है ।

तीसरे अध्याय मे "भोजपुरी और नेपाली का भाषागत स्वरूप निर्धारण" करने का प्रयास किया गया है। "भोजपुरी का भाषागत स्वरूप" के अन्तर्गत भोजपुरी के क्षेत्र के बारे मे बताया गया है और उसके बाद नामकरण के बारे मे बताया गया है। भोजपुरी का विभाजन तथा क्षेत्रो के अनुसार अलग-अलग जिलो, स्थानो के भोजपुरी के सज्ञा, विशेषण, क्रियापद तथा आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी जिसमे आजमगढ, बनारस तथा मिर्जापुर की भोजपुरी शामिल है, से अन्तर बताया गया है। उनके रूप के बारे मे बताया गया है। इसके बाद मधेसी भोजपुरी और थारू भोजपुरी के बारे मे बताया गया है ।

"नेपाली भाषा का स्वरूप" के अन्तर्गत नेपाली भाषा के शब्द जिसमे तत्सम्, तद्‌भव, देशज तथा विदेशी है, उनके बारे मे बताया गया है। अनेक शब्द जो सस्कृत से प्राकृत और नेपाली मे आ गये है, उनके बारे मे बताया गया है। हिन्दी तथा नेपाली के शब्द स्त्रोतो की समानता के बारे मे बताया गया है। नेपाली के लिग, वचन, कारक, सर्वनाम तथा सर्वनाम की रूपावली, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, क्रिया, काल, तीन वाच्य– 'कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य' सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया, अव्यय, सधि, समाज आदि के बारे मे बताया गया है ।

चौथे अध्याय मे "भोजपुरी और नेपाली का सास्कृतिक बोध" मे दोनो क्षेत्रो के धार्मिक, सामाजिक तथा भौगोलिक सम्बन्ध के बारे मे बताया गया है।

पाचवे अध्याय मे "भोजपुरी तथा नेपाली साहित्य" के अन्तर्गत भोजपुरी तथा नेपाली कवियो के बारे में बताया गया है जिसमे उन नेपाली कवियो को भी बताया गया है जो हिन्दी और भोजपुरी कवियो से प्रभावित होकर उन्ही की तरह काव्य रचना करने का प्रयास किया है ।

छठे अध्याय मे नेपाली और भोजपुरी ध्वनियो का विवेचन किया गया है। इसमे नेपाली के स्वर, सयुक्त स्वर, अनुनासिक स्वर, व्यजनवर्ण, अक्षर प्रणाली के बारे मे लिखा गया है। भोजपुरी ध्वनि मे भोजपुरी स्वर, अनुनासिक स्वर, सयुक्त स्वर, व्यजन, अनुनासिक व्यजन, पार्श्विक व्यजन, लुठित व्यजन, उक्षिप्त या ताडनजात व्यजन, व्यजन वर्णों का द्वित्वभाव या दीर्घीकरण, भोजपुरी तथा नेपाली के ध्वनिग्रामो के तुलनात्मक अध्ययन के निष्कर्ष के बारे मे बताया गया है ।

अन्त मे मै उन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन लोगो का सहयोग व स्नेह एव शुभकामनाए निरतर मिलती रही । सर्वप्रथम मै अपने पूज्य गुरू स्वर्गीय डा0 भवानी दत्त उत्प्रेती जी के प्रति श्रद्धावनत हूँ जिन्होने मुझे इस विषय पर शोध-कार्य करने के लिए प्रेरित किया था । उनके आकस्मिक निधन हो जाने से मेरा शोध-कार्य रूक गया था जिसको मै डा0 मीरा दीक्षित जी के निर्देशन मे पुन शुरू कर सका और उनके सहयोग एव स्नेह से इसे पूरा कर सका। मै उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मै उन सभी पुस्तकालयो एव लोगो के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने अल्पमात्र भी इस ग्रन्थ की पूर्णता मे योगदान दिया है तथा उन सभी प्राचीन एव अर्वाचीन लेखको का आभारी हूँ जिनकी रचनाए जिस रूप मे भी इस ग्रन्थ के प्रणयन मे उपयोगी सिद्ध हुई है ।
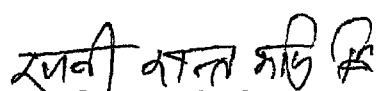
रजनी कान्त मणि त्रिपाठी
रेजनी कान्त मणि त्रिपाठी
शोध-छात्र, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

प्रथम अध्याय

भाजपुरी

भोजपुरी – नामकरण

भोजपुरी[1] पूर्वी अथवा मागधी-परिवार की सबसे पश्चिमी बोली है । ग्रियर्सन ने पश्चिमी मागधी को "बिहारी" की सज्ञा से अभिहित किया है। बिहारी से ग्रियर्सन का उस एक भाषा से आशय है, जिसकी – मगही – मैथिली तथा भोजपुरी तीन बोलिया है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से ग्रियर्सन का कथन सत्य है तथापि इन तीन बोलियो मे पारम्परिक अन्तर भी है । मैथिली "अछ या छ" धातु का प्रयोग भोजपुरी तथा मगही में नही है। इसी प्रकार भोजपुरी क्रियाओ के रूप मे मैथिली तथा मगही क्रियाओं के रूप की जटिलता का सापेक्षिक रूप से अभाव है। मैथिली मे प्राचीनकाल से ही रचनाये होती रही है और भोजपुरी तथा मगही मे भी लोकगीतो तथा लोक कथाओ का बाहुल्य है। इन अन्तरो के साथ–साथ इन त्रिविध बोलियो के बोलने वालो को इस तथ्य (बात) की प्रतीति भी नही होती कि उनकी बोलिया भाषा की उपभाषाये है। इस सन्दर्भ में यह भीषण कठिनाई है कि बिहारी भाषा का कोई साहित्यिक रूप भी

---

1 कतिपय विद्वानो ने "भोजपुरी" के स्थान पर "भोजपुरिया" शब्द का प्रयोग किया है। विशेषण के लिए "ई" की भाति ही भोजपुरी मे "इया" प्रत्यय भी व्यवहृत होता है, किन्तु इस "इया" प्रत्यय से किंञ्चित् अप्रतिष्ठा अथवा घनिष्ठता का भाव आ जाता है, जिसका "ई" प्रत्यय मे वस्तुत अभाव है। "ई" प्रत्ययवाला रूप छोटा है तथा जिस प्रकार "बगाल" से "बगाली", "नेपाल" से "नेपाली" शब्द बन जाते है, उसी प्रकार यह भी बन जाता है। यही कारण है कि – "भोजपुरिया" की अपेक्षा – "भोजपुरी" के प्रयोग को समीचीन मानते हुए प्रयोग किया जाता है। कीन्स हार्नले तथा ग्रियर्सन प्रभृति विद्वन्मण्डली ने भी अपने लेखो तथा ग्रन्थो मे "भोजपुरी" शब्द का ही प्रयोग किया है, जिस कारण यह बहुत प्रचलित हो गया है ।

उपलब्ध नही है। इन परिस्थितियो मे इन बोलियो के बोलने वाले अपनी–अपनी बोली को एक दूसरे से पृथक् समझ सकते है तथापि मैथिली, मगही तथा भोजपुरी के बोलने वाले सहजतापूर्वक एक–दूसरे की बोली समझ लेते है ।

भोजपुरी की तीनो बोलियो मे विस्तार–क्षेत्र की दृष्टि से भोजपुरी का स्थान सर्वोच्च है। उत्तर मे हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण मे मध्य प्रान्त की सरगुजा जनपद तक इस बोली का विस्तार है। बिहार प्रान्त के शाहाबाद, सारन, चम्पारन, राची, जशपुर स्टेट, पलामू के कुछ भाग तथा मुजफ्फर नगर के उत्तर–पश्चिमी कोने में इस बोली के बोलने वाले निवास करते है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश मे बनारस, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर के अधिकाश भाग, मिर्जापुर, गोरखपुर, आजमगढ़ तथा बस्ती जिले की हरैया तहसील मे स्थित कुवानो नदी तक भोजपुरी बोलने वालो का आधिपत्य है ।

डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी ने मागधी बोलियो तथा भाषाओ को तीन भागो मे विभक्त किया है । डॉ0 चटर्जी के मतानुसार

1 भोजपुरी पश्चिमी मागधी–वर्ग

2 मैथिली तथा मगही मध्य मागधी–वर्ग

3 बगला, असमिया और उडिया पूर्वी मागधी–वर्ग के अन्तर्गत आती है। इस प्रकार बगला, असमिया और उडिया यदि भोजपुरी की चचेरी बहने हैं तो मैथिली और मगही उसकी सगी बहने है ।

भोजपुरी बोली का नामकरण शाहाबाद जनपद के भोजपुर परगने के नाम पर हुआ है। सम्प्रति भोजपुर स्वय अब जनपद हो गया है। शाहाबाद जिले मे भ्रमण करते हुए डॉ0 बुकलन सन् 1822 ई0 मे भोजपुर आये थे। उन्होने मालवा के

भोजवशी – "उज्जैन" राजपूतों के "चेरों" जाति को पराजित करने के विषय मे उल्लेख किया है ।

बगाल की एशियाटिक सोसाइटी के 1871 के जर्नल मे छोटा नागपुर, पचैत तथा पलामू के सम्बन्ध मे मुसलमान इतिहास लेखको के विवरणो की चर्चा करते हुए **बलॉचमैन** ने भोजपुर का भी उल्लेख किया है। वे वर्णन करते हुए कहते है कि– "बगाल के पश्चिमी प्रान्त तथा दक्षिणी बिहार के राजा, दिल्ली सम्राट के लिये अत्यन्त दु खदायी थे। अकबर के राजत्वकाल मे बक्सर के समीप भोजपुर के राजा दलपत सम्राट से पराजित होकर बन्दी किये गये और अन्त मे, जब बहुत अधिक आर्थिक दण्ड के पश्चात् वे बन्धन–मुक्त हुए तो, उन्होने सम्राट के विरूद्ध पुन क्रान्ति की। जहाँगीर के राजत्वकाल मे भी उनकी क्रान्ति चलती रही, जिसके परिणामस्वरूप भोजपुर लूटा गया तथा उनके उत्तराधिकारी– "प्रताप" को शाहजहाँ ने फाँसी का दण्ड दिया। आइने–अकबरी मे इस बात का उल्लेख है कि रोहतास–सरकार के अन्तर्गत– "सहसराम" (सासाराम) परगने के उत्तर तथा "आरा" के पश्चिम, भोजपुर मे, इन उज्जैनी राजाओ का निवास–स्थान था। शाहजहाँ के शासनकाल के दसवे वर्ष मे प्रताप ने सम्राट के विरूद्ध क्रान्ति की। इसी समय अब्दुल्ला खाँ फिरोजजग ने भोजपुर पर घेरा डाला तथा इसे विजय किया ।[1] इसके पश्चात् प्रताप ने अपने को सम्राट के हाथ मे सौप दिया और शाहजहाँ की आज्ञा से उसे फासी दी गयी ।[2]

ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी समय भोजपुर–राज्य अत्यन्त प्रसिद्ध था। इसके शासक उज्जैन राजपूत प्राचीनकाल मे अपने मूलस्थान मालवा से बिहार चले आये थे। मध्ययुग के भारतीय इतिहास–विशेषत –पश्चिमी बिहार के इतिहास – मे इन राजपूतो का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। सन् 1857 ई0 की

क्रान्ति तक इनका प्रभुत्व अक्षुण्य रहा। इसी समय महाराजकुमार बाबू कुँवरसिह ने अँगरेजों के विरूद्ध विप्लव किया, जिसके परिणामस्वरूप भोजपुर ध्वस्त कर दिया गया। इस प्रकार भोजपुर राज्य का अन्त हुआ। इस समय "डुमराँव"-राज्य के वशज (उज्जैनवशी क्षत्रिय) मात्र है ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि उज्जैन के भोजो[1] के नाम पर ही "भोजपुर" नाम पडा, क्योंकि प्राचीन काल मे इन्ही लोगो ने इसी क्षेत्र पर अधिकार करके यहाँ शासन करना प्रारम्भ किया था । डुमराँव के निकट भोजपुर नगर ही इनकी राजधानी थी । यद्यपि इस प्राचीन नगर का वैभव विनष्ट हो चुका है, तथापि आज भी डुमराँव के निकट – "छोटका" तथा "बड़का" भोजपुर नाम के दो गाँव वर्तमान है। "नवरत्न दुर्ग" का ध्वसावशेष अब भी यहा विद्यमान है। इसके स्थापत्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह मध्ययुग की कृति है ।

भोजो के प्राचीन नगर के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम भी "भोजपुर" पड गया, जो आगे चलकर इस नाम के परगने तथा जिले का कारण हुआ । प्राचीन काल मे भोजपुर नगर के दक्षिण तथा वर्तमान आरा (भोजपुर) के उत्तर का अर्द्धभाग इसी प्रान्त की सीमा थी । सन् 1781 के "जेम्स रेनेल"[2] के एटलस मे आरा के उत्तरी भाग का नाम – "रोतास" (रोहतास) प्रान्त मिलता है। इस प्रकार 18वी शती मे भोजपुर एक प्रान्त था। धीरे-धीरे इसका विशेषण भोजपुरी, इस प्रान्त के वासियो तथा उनकी बोली के लिए भी प्रयुक्त होने लगा। चूकि इस प्रान्त की बोली ही इसके उत्तर-दक्षिण

---

1 धार के प्रसिद्ध राजा भोज का नाम किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर उस क्षेत्र के राजाओ की उपाधि प्रतीत होता है। (ऐतरेय ब्राह्मण, 8-14)

2 जेम्स रेनेल ने सर्वप्रथम बनारस तथा बिहार का प्रामाणिक मानचित्र तैयार किया था

तथा पश्चिम मे भी बोली जाती थी, इसलिये भौगोलिक दृष्टि से भोजपुर–प्रान्त से बाहर होने पर भी इधर के नागरिक तथा उनकी भाषा के लिये भी "भोजपुरी" शब्द ही प्रचलित हो गया ।

यह एक विशेष तथ्य है कि भोजपुर के चारो ओर की तीन करोड से अधिक लोगो की बोली का नाम भोजपुरी हो गया। प्राचीन काल मे भोजपुरी का यह क्षेत्र,–"काशी",–"मल्ल" तथा पश्चिमी "मगध" एव "झारखण्ड" (छोटा नागपुर) के अन्तर्गत था। मुगलकाल मे जब भोजपुर के राजपूतो ने अपनी वीरता तथा सामरिक शक्ति का विशेष परिचय दिया तब एक ओर जहाँ "भोजपुरी" शब्द जनता तथा भाषा दोनो का वाचक बनकर गौरव का द्योतन करने लगा, वही दूसरी ओर वह एक भाषा के नाम पर प्राचीनकाल के तीन प्रान्तो को एक प्रान्त मे पिरोने मे भी समर्थ हुआ।

इस प्रकार सत्रहवी–अठारहवी शताब्दी मे मागधी–भाषा के इस रूप के बोलने वाले "भोजपुरी" कहलाये । भोजपुरी स्वभावत युद्धप्रिय होते है। अतएव मुगल सेना तथा उसके पश्चात् 1857 ई0 के भारतीय विद्रोह तक ब्रिटिश सेना मे उनका बडा सम्मान रहा । बिहार मे प्रचलित निम्न पद मे भोजपुरियो के युद्धप्रिय स्वभाव की चर्चा है। इस पद मे "भोजपुरिया" शब्द से भोजपुरी लोगो से तात्पर्य है–पद इस प्रकार है–

> भागलपुर [1] के भगोलिया,
> कहलगाँव [2] के ठग ,
> पटना [3] के दैवालिया,
> तीनू नामजद ,
> सुनि पावै भोजपुरिया,
> त तीनू कै तुरै रग [4]।।

1, 2, 3 बिहार के नगरो के नाम है।

4 तीनो की नसे तोड दे।

का ही प्रश्न न होगा, बल्कि तुम्हारी बहू–बेटियों का होगा।"[1]

इसके पश्चात् निश्चित रूप से भाषा के अर्थ मे–"भोजपुरी" शब्द का प्रयोग सन् 1868 ई0 मे जॉन बीम्स ने अपने "भोजपुरी" बोली पर सक्षिप्त टिप्पणी शीर्षक लेख में किया है।[2] वस्तुत बीम्स ने प्रचलित अर्थ मे ही इस शब्द का प्रयोग किया है। यह लेख प्रकाशित होने से एक वर्ष पूर्व 17 फरवरी सन् 1867 ई0 मे एशियाटिक सोसायटी में पढ़ा गया था ।

भोजपुरी जनता तथा उनकी भाषा के नाम भी मिलते है। मुगलो के शासनकाल मे दिल्ली तथा पश्चिम मे, भोजपुरियो – विशेषत भोजपुरी–क्षेत्र के तिलगो – को "बक्सरिया" कहा जाता था। 17वी तथा 18वी शताब्दी मे भोजपुर तथा उसके पास मे ही स्थित

---

1. 1789–"Two days after, as a regement of sepoys on its way to Chunar Garh, was marching through the city at day-break, I went out, and was standing to see it pass by, the regement halted, and a few men from centre ran into a dark lane, and laid hold of a hen and some roots, the people screamed. 'Do not make so much noise', said one of the men in his Bodjpooria idiom. 'We go today with the Frenghees, but we are all servants (tenants) to Cheyt Singh, and may come back tomorrow with him, and then the question will be not about your roots but about your wives and daughters "

ग्रियर्सन – लिग्विस्टिक सर्वे, प्रथम भाग, पूरक अश पृ0 22 पर (रेमण्डकृत–"शेर मुताखरीन का अनुवाद, द्वितीय सस्करण, अनुवादक की भूमिका, पृ0 8, भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ0 234–235 पर।

2 रॉयल सोसाइटी आफ बगाल जर्नल भाग 3, पृ0 485–508 द्रष्टव्य।

बक्सर, फौजी सिपाहियो की भर्ती के दो प्रमुख केन्द्र थे। 18वी शती में जब अग्रेजो के हाथ मे जब शासन सूत्र आया, तब वे भी मुगलो की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए भोजपुर तथा बक्सर से तिलगो की भर्ती करते रहे ।[1]

अधिकांशत भोजपुरी बगाल मे जाते है, जहा उन्हे बगाली लोग– "हिन्दुथानी" अथवा "पश्चिमा" तथा कभी–कभी "देशवासी" अथवा "खोट्टा" भी कहते है। "खोट्टा" शब्द मे तो स्पष्ट रूप से घृणा का भाव भी आ जाता है। अधिकाश भोजपुरी बगाल तथा उसके मुख्य नगर कलकत्ता मे दरबानी अथावा छोटा–मोटा काम करके ही जीवोकापार्जन करते है। इसी कारण इनके लिए "छोट्टा" शब्द का प्रयोग हुआ होगा। वस्तुत बगाली तथा भोजपुरी दोनों इससे अनभिज्ञ है कि उनकी भाषाये एक ही मागधी भाषा से प्रसूत हुई है। शिक्षित बगाली भी इस तथ्य से अपरिचित ही है और वे भोजपुरी को हिन्दी अथवा हिन्दुस्थानी के अन्तर्गत ही मानते है।

"देशवासी" के सम्बन्ध मे यह उल्लेखनीय है कि जब कलकत्ता अथवा बगाल मे जब एक भोजपुरी दूसरे भोजपुरी से मिलता है तब उसे देशवासी अथवा मुल्की भाई कहकर सम्बोधित करता है तथा अपनी बोली को भी देशवाली कहता है। किन्तु देशवाली अथवा मुल्की शब्दो की व्याप्ति के विषय मे यह ज्ञातव्य है कि ये दोनो ही शब्द सापेक्षिक शब्द है और कभी–कभी एक पश्चिमी हिन्दी भाषा–भाषी भी एक दूसरे पश्चिमी हिन्दी भाषा–भाषी को देशवासी अथवा मुल्की और उसकी भाषा को देशवासी कहता है ।

उत्तरी भारत मे भोजपुरियो को "पुर्बिया" और उसकी बोली को "पूर्बी बोली" कहते है। "पूरब" और "पुर्बिया" के सम्बन्ध मे–हाब्सन–जॉन्सन[2] मे निम्न विवरण उपलब्ध है–

---

1 विलियम इरविग– दि आर्मी आफ द इण्डियन मुगल, लन्दन 1903, पृ0 68–69, 6 6

2 हॉब्सन–जॉन्सन पृ0 724, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 235
हेनरी यूल तथा ए सी बर्नेल कृत कोश "हाब्सन–जाब्सन"–जिसमे ऐग्लो–इण्डियन लोगो मे प्रचलित शब्दो तथा वाक्यो की तालिका है

"उत्तरी भारत में "पूरब" से अवध, बनारस तथा बिहार प्रान्त से तात्पर्य है, अतएव "पूर्बिया" इन्ही प्रान्तों के निवासियो को कहते है। बगाल की पुरानी फौज के सिपाहियो के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता था, क्योंकि उनमे से अधिकाश इन्ही प्रान्तो के निवासी थे ।"

ऊपर के उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि "पुर्बिया" तथा "पूर्बी" के अतर्गत "कोसली" (अवधी) भी आ जाती है. वस्तुत "पुर्बिया" शब्द की व्याप्ति भी अनिश्चित तथा सापेक्षिक है। ये ब्राह्मण–ग्रन्थो में प्रयुक्त "प्राच्य" अथवा ग्रीक "प्रसिओई" का आधुनिक रूप है, जिससे "मध्य प्रदेश" के पूरब के निवासियो से आशय है। आधुनिक काल मे भी कोसल (अवध) के लोग बिहार के निवासियो को "पुर्बिया" कहते है। यद्यपि नागरी हिन्दी (खडी बोली) तथा ब्रजभाषा–भाषी उन्हे ही "पुर्बिया" कहते है।

स्थान-भेद से नामान्तर –

भोजपुरी के अन्तर्गत स्थान–भेद से बोलियो का नाम भी पड गया है, जैसे छपरा जिले की भोजपुरी "छपरहिया" तथा बनारस की भोजपुरी "बनारसी" बोली कहते है। इसी प्रकार बलिया के पश्चिमी तथा आजमगढ के पूर्वी क्षेत्र की बोली "बगरही" कहलाती है। इधर बागर से उस क्षेत्र से तात्पर्य है, जहा गगा की बाढ नही जाती।

श्रीराहुल साकृत्यायन ने बलिया जिले के तेरहवे वार्षिकोत्सव के अपने अभिभाषण मे भोजपुरी भाषा के स्थान पर "मल्ली" नाम का प्रयोग किया है। मल्ल जनपद बुद्ध के काल मे षोडश महजनपदो के साथ वर्णित गणराज्यो मे से एक गणराज्य था। इसकी वास्तविक सीमा क्या थी, यह आज निश्चित रूपेण नही बोधगम्य हो सका है। जैन–कल्पसूत्रो मे नव मल्लो का उल्लेख है, किन्तु बौद्ध–ग्रन्थो मे केवल तीन स्थानो–

1 कुशीनारा

2 पावा

3 अनुपिया

के मल्लो का उल्लेख प्राप्त होता है। इनके कई प्रसिद्ध नगरो के नाम मिलते है जैसे–

1 भोजनगर

2 अनुपिया

3 उरूवेलकप्प ।

कुशीनारा तथा पावा विद्वानो के अनुसार उत्तर प्रदेश के गोरखपुर मे स्थित वर्तमान कसया (सिद्धार्थ नगर) पडरौना (जनपद) ही है। इस सम्बन्ध मे एक तथ्य ध्यातव्य है कि "मल्ल" की भाति "काशी" का उल्लेख भी प्राप्त होता है। काशी (बनारस) मे भी भोजपुरी ही बोली जाती है, अतएव मल्ल के साथ काशी का होना भी आवश्यक है। राहुलजी ने इस क्षेत्र की भोजपुरी का "काशिका" [1] नामकरण किया है, किन्तु भोजपुरी को इस प्रकार छोटे–छोटे टुकड़ो मे विभक्त करना अनावश्यक तथा अनुपयुक्त है। सम्प्रति भोजपुरी एक विस्तृत क्षेत्र की भाषा है। यही कारण है कि प्राचीन जनपदीय नामो को पुन प्रकाशित (प्रचलित) करने की अपेक्षा इसी का प्रयोग समीचीन है। इस नाम के साथ–साथ भी कम–से–कम तीन सौ वर्षों की परम्परा है।

भोजपुरी की सजीवता

भोजपुरी एक सजीव भाषा है। यद्यपि भोजपुरी–क्षेत्र से प्रारम्भिक (प्राथमिक) तथा माध्यमिक–शिक्षा का माध्यम हिन्दी है, तथापि अपनी मातृभाषा के लिये भोजपुरियो के हृदय मे अगाध प्रेम है। जहॉं अध्यापक तथा छात्र सभी भोजपुरी ही है, वहा कठिन शब्दो की व्याख्या तथा अर्थ आदि समझाने के लिये अध्यापक बन्धु प्राय भोजपुरी का ही प्रयोग करते है। इसी प्रकार गणित के प्रश्नो तथा ज्यामिति के अभ्यासो को आपस मे समझाते हुए छात्रगण प्राय अपनी मातृभाषा ही बोलते है। प्राथमिक कक्षाओ के छात्र तो अपने गुरूजनो को भोजपुरी मे ही सम्बोधित करते है। व्यवहारत भी आपसी वार्तालाप भी सर्वत्र वें लोग भोजपुरी मे ही करते है। संस्कृत के प्राचीन पडित भी अपनी पाठशालाओ

1 भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 236

मे व्याकरण शास्त्र की शिक्षा प्रदान करते समय छात्रो को भोजपुरी मे ही पढ़ाते है। भोजपुरी भाषी कोई जन जब आपस मे वार्तालाप करते हुए हिन्दी, उर्दू मिश्रित बोलता है, तो वह उपहास का पात्र बन जाता है। ग्रामीण पचायतो मे राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक समस्याओ पर विचार करते समय लोग भोजपुरी का ही व्यवाहार करते है और हाथ के लिखे हुए विवाहादि के निमन्त्रण–पत्र भी प्राय भोजपुरी मे ही होते है।

बनारस तथा मिर्जापुर के एक विशेष प्रकार के गीत, जिसे कजली कहते है, अत्यधिक प्रचलित है। इसकी भाषा प्राय भोजपुरी होती है। कजली पावस ऋतु मे ही गायी जाती है ।

भोजपुरी का विस्तार (क्षेत्र)

भोजपुरी–क्षेत्र के बाहर भोजपुरियों का सबसे बडा केन्द्र कलकत्ता है। कलकत्ता को हम वास्तव मे भोजपुरी जीवन तथा सस्कृति का केन्द्र कह सकते है। सहस्त्रो भोजपुरी कलकत्ता तथा भागीरथी के किनारे स्थित जूट–कारखानो मे काम करते है । कलकत्ता के – "आक्टरलोनी मानुमेण्ट" के पास का किले का मैदान (जिसे भोजपुरी मे मौनीमठ (मौन रहने वाले साधु का मठ) कहते है) वास्तव मे भोजपुरियो का हाइडपार्क है। प्रत्येक रविवार को हजारो भोजपुरी इस मैदान मे एकत्र होकर भोजपुरी लोकगीतो, लोक–कथाओ तथा लोक–गाथाओ (आल्हा, विजैमल आदि) से अपना मनोरजन करते है ।

भोजपुरी के प्रति उसके बोलने वालो का इतना अनुराग होने पर भी इसमे लिखित साहित्य का अभाव है। सम्भवत इसका कारण यह है कि प्राचीन काल मे जहाँ मिथिला तथा बगाल के ब्राह्मणो ने सस्कृत के साथ–साथ अपनी–अपनी मातृभाषाओ मे भी लेखन कार्य सतत बनाये रखा वही भोजपुरियो ने मात्र सस्कृत के ही पठन–पाठन–लेखन तक अपने को सीमित रखा । उधर सस्कृत का प्रमुख केन्द्र काशी भी भोजपुरी

क्षेत्र मे ही है। इस कारण भी सस्कृत–अध्ययन के लिये ही भोजपुरियो को विशेष प्रोत्साहन मिला । किन्तु यह सत्य है कि कबीर तथा भोजपुरी क्षेत्र के अन्य सन्त कवि अपनी मातृभाषा को न विस्मरण कर सके और अपनी मातृभाषा का दीपक प्रज्वलित किये रहे ।

भोजपुरी 43,000 वर्गमील मे बोली जाती है। इसकी सीमा प्रान्तों की राजनीतिक सीमा से भिन्न है। भोजपुरी के पूर्व मे इसकी दो बहनों – "मैथिली" तथा "मगही" का क्षेत्र है। इसकी सीमा गगा नदी के साथ–साथ पटना के पश्चिम, कुछ मील तक पहुँच जाती है, जहाँ से सोन नदी के मार्ग का अनुसरण करती हुई वह रोहतास तक पहुँचती है। यहाँ से वह दक्षिण–पूर्व का मार्ग ग्रहण करती है तथा आगे चल कर राँची के प्लेटो के रूप मे एक प्रायद्वीप का निर्माण करती है। इनकी दक्षिण–पूर्वी सीमा राँची के बीस मील पूर्व तक जाती है तथा बाँदू के चारो ओर घूमकर वह खरसावाँ तक पहुँच जाती है । यहाँ से यह उडिया को अपने बामहस्त छोडती हुई पश्चिमाभिमुखी होकर, पुन दक्षिण और तत्पश्चात् उत्तर की ओर मुडकर जशपुर (स्टेट) को अपने अन्तर्गत कर लेती है। यहाँ छत्तीसगढी तथा बघेली को वह अपनी बाई ओर छोड देती है। यहाँ से भण्डरिया तक पहुँचकर यह प्रथम उत्तर–पश्चिम और पुन उत्तर–पूर्व मुडकर सोन नदी का स्पर्श करती हुई नगपुरिया भोजपुरी की सीमा को पूर्ण करती है ।

सोन नदी को पार कर भोजपुरी अवधी की सीमा का स्पर्श करती है तथा सोन नदी के साथ यह 82 अश देशान्तर रेखा तक चली जाती है। इसके पश्चात् उत्तर ओर मुड़कर यह मिर्जापुर के 15 मील पश्चिम की ओर गगा नदी के मार्ग से मिल जाती है । यहाँ से यह पुन पूर्व की ओर मुडती है, गगा को मिर्जापुर के पास पार करती है तथा अवधी को अपने बाये छोडती हुई यह सीधे उत्तर की ओर "ग्राण्ड ट्रक रोड" पर स्थित "तभगावाद" को स्पर्श करती हुई जौनपुर शहर के कुछ मील पूर्व तक पहुँच जाती है । इसके पश्चात् घाघरा नदी के मार्ग का अनुसरण करती

हुई यह "अकबरपुर" तथा "टाडा" तक चली जाती है। घाघरा नदी के उत्तरी बहाव मार्ग के साथ–साथ पुन यह पश्चिम मे 82 अश देशान्तर तक पहुँच जाती है। यहाँ से यह टेढ़े–मेढे मार्ग से होते हुए बस्ती जनपद के उत्तर–पश्चिम, नेपाल की तराई मे स्थित, यह सीमा "गिरवा" तक चली जाती है। यहा पर भोजपुरी की सीमा एक ऐसी पट्टी बनाती है, जिसका कुछ भाग नेपाल की सीमा के अन्तर्गत आता है। यह पट्टी 15 मील से अधिक चौड़ी नही है तथा बहराइच तक चली गयी है। इसमे "थारू" बोली बोली जाती है, जिसमे भोजपुरी के ही रूप मिलते है।

भोजपुरी की उत्तरी सीमा, अवधी की इस पट्टी को, जो भोजपुरी तथा नेपाली के बीच है, बायी ओर छोडती हुई दक्षिण की ओर 83 अश देशान्तर रेखा तक चली गयी है। यह पूर्व मे रूम्मनदेई (रूपन्देही जनपद–बुद्ध का जन्म–स्थान प्राचीन लुम्बिनी) तक पहुँच जाती है। यहाँ से यह पुन उत्तर–पूर्व ओर, नेपाल राज्य मे स्थित "बुटवल" तक चली जाती है तथा वहाँ से पूर्व से होती हुई नेपाल राज्य के "अमलेखगज" के 15 मील पूर्व तक पहुँच जाती है। यहाँ ये यह फिर दक्षिण की ओर मुडती है। इसके पूर्व मे मैथिली का क्षेत्र आ जाता है। मुजफ्फरपुर के 10 मील इधर तक पहुँच कर यह सीमा पश्चिम की ओर मुड जाती है तथा गडक नदी के साथ–साथ वह पटना के पास तक जाकर गगा नदी से मिल जाती है।

ऊपर भोजपुरी की जो सीमा निर्धारित की गयी है उसमे तथा डॉ0 ग्रियर्सन द्वारा लिखित "लिग्विस्टिक सर्वे" मे दी गयी सीमा मे विशेषत भोजपुरी की उत्तरी सीमा मे थोडा सा अन्तर है। वस्तुत भाषा की विशेषता की दृष्टि से भारत तथा नेपाल की सीमा बहुत कुछ अस्पष्ट है। इधर डॉ0 ग्रियर्सन ने केवल राजनैतिक–सीमा देकर ही सन्तोष कर लिया है। यद्यपि उन्होने यह स्पष्ट रूपेण इगित किया है कि हिमालय की तराई मे भी भोजपुरी बोली जाती है। स्व0 प्रो0 डॉ0 उदय नारायण तिवारी (हिन्दी विभाग, इलाहाबाद युनिवर्सिटी) ने स्वय जाँच करके इस सीमा को डॉ0 ग्रियर्सन द्वारा

दी हुई सीमा से और उत्तर निर्धारित किया है। इसके लिये स्व0 पूज्य तिवारी जी को नेपाल की तराई मे भ्रमण करके अनेक स्थानो मे भाषा की जाच करनी पड़ी तभी यह सीमा निश्चित हो सकी । तराईमे जो पट्टी अवधी की सीमा में प्रविष्ट कर गयी है और जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है, वहाँ "थारू" जाति निवास करती है, जो भोजपुरी–भाषा–भाषी है। यद्यपि अवधी–भाषी भी व्यापार के लिये कभी–कभी यहाँ आते–जाते रहते है ।

भोजपुरी के विस्तार को मानचित्र मे देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस समय यह दो राज्यो – उत्तर प्रदेश तथा बिहार मे फैली हुई है। वस्तुत यह उत्तर प्रदेश के पूर्व के जिलो तथा पश्चिमी बिहार की भाषा है। इसके बोलने वालों की सख्या भी अन्य दोबिहारी बोलियो – मैथिली तथा मगही की सयुक्त सख्या से लगभग दुगुनी है। दो राज्यो मे विभक्त होने पर भी भोजपुरियों की सस्कृति तथा रीति–रिवाज मे कोई अन्तर नही आया है। पारस्परिक विवाह–सम्बन्ध, भोजपुरी भाषा–सम्मेलन, परदेश मे भी एक–दूसरे से मिलने पर मातृभाषा मे ही पूरी तरह सम्भाषण की प्रथा ने वस्तुत दो राज्यो मे विभक्त भोजपुरियो को एकता के सूत्र मे आबद्ध कर रखा है । यह होते हुए भी, यदि समस्त भोजपुरी भाषा–भाषी एक ही राज्य मे आ जाते तो इसमे एकता की भावना और भी दृढ हो जाती और तब सामूहिक रूप से ये भारतीय राष्ट्र के अभ्युत्थान मे और अधिक सहायक होते।

भोजपुरी के विविध रूप

डॉ0 ग्रियर्सन ने भोजपुरी को चार भागोमे विभक्त किया है जो निम्न है–

1– उत्तरी

2– दक्षिणी

3– पश्चिमी, तथा

4– नगपुरिया

---

1 लिग्विस्टिक सर्वे।

उत्तरी भोजपुरी घाघरा नदी के उत्तर मे बोली जाती है। इसकी भी दो विभाषायें है –

1 सरवरिया ।

2 गोरखपुरी ।

यदि गण्डक नदी के साथ एक रेखा नेपाल सीमा तक और वहाँ से गोरखपुर शहर के कुछ मील पूर्व से होते हुए "बरहाज" तक खीची जाय तो इसके पश्चिम "सरवरिया" तथा "गोरखपुरी" भोजपुरी का क्षेत्र होगा ।

सोन नदी के दक्षिण "नगपुरिया भोजपुरी" का क्षेत्र पड़ता है। उत्तरी तथा नगपुरिया भोजपुरी के मध्य मे की दक्षिणी तथा पश्चिमी का क्षेत्र आता है। यदि बरहज से गाजीपुर शहर तक और वहाँ से सोन नदी तक रेखा खीची जाय तो इसके पूर्व दक्षिणी भोजपुरी तथा पश्चिम पश्चिमी भोजपुरी का क्षेत्र होगा। यह दक्षिणी भोजपुरी ही वास्तव मे आदर्श भोजपुरी है। इसका क्षेत्र शाहाबाद, सारन, बलिया, पूर्वी देवरिया तथा पूर्वी गाजीपुर है। पश्चिमी गाजीपुर, आजमगढ, बनारस, मिर्जापुर तथा जौनपुर के कुछ भागो मे पश्चिमी भोजपुरी बोली जाती है ।

आदर्श भोजपुरी अपनी अन्य बोलियो की अपेक्षा अति श्रुति–मधुर है। जिस प्रकार ईरानी लोगो की सम्बाद की फारसी तथा फ्रेंच बोलने वालो की उच्चारण विधा मे एक विशेष प्रकार का सगीतात्मक माधुर्य तथा लोच–इन्टोनेशन–होता है, तदवत् माधुर्य तथा लोच आदर्श भोजपुरी मे भी होता है। वाक्य के अन्तिम स्वर का देर तक उच्चारण करने से हीयह माधुर्य उत्पन्न होता है। उदाहरणार्थ–यदि किसी को कहना है कि – बच्चे, कहाँ जा रहे हो ? तो इसे आदर्श भोजपुरी मे इस प्रकार कहेगे–

"बबुआ हो – ओ – ओ – कहाँ जातार – अ – अ ।"

भोजपुरी की अन्य बोलियो मे इस माधुर्य का तथा लोच का सर्वथा ही अभाव है ।

आदर्श भोजपुरी को इसकी अन्य बोलियो से पृथक करने वाला सर्वनाम – "रउआँ" है। इस सर्वनाम का भोजपुरी की अन्य बोलियो मे अभाव है। आदर्श भोजपुरी में इस शब्द के कई रूप उपलब्ध है यथा– "राउरँ और राउर" आदि।

आदर–प्रदर्शन के लिए ही "आपके" अर्थ म "रउरा" तथा "राउर" सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। प्राकृत में इस शब्द का रूप "लाउल" प्राप्त होता है, जिसका सस्कृत रूप "राजकुल" अथवा "राजकुल्य" होगा। मैथिली मे इस सर्वनाम के लिये "बाइस" तथा "अहाँ" शब्दों का प्रयोग होता है, जिनकी उत्पत्ति सस्कृत के "अतिश" तथा "आयुष्मान्" शब्दो से हुई है ।

आदर्श–भोजपुरी का "राउर" शब्द इतना प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण है कि "अवधी" के कवि महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की तथा "ब्रजभाषा" के महाकवि सूरदास से लेकर श्री जगन्नाथदास "रत्नाकर" तक ने इसका प्रयोग किया है। सत्यता तो यह है कि अवधी, ब्रजभाषा तथा अन्य पश्चिमी–बोलियो मे इस सर्वनाम का समानार्थक कोई शब्द है ही नही । गोस्वामी तुलसीदास जी ने "श्रीराम चरित मानस" मे लिखते है–

" जौ राउर अनुशासन पाऊँ।
कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ।। "[1]

सूरदास के एक पद की टेक है

"मधुप" रावरी पहिचान"[2]

---

1 श्रीरामचरित मानस बालकाण्ड स्वयम्बर प्रकरण ।

2 सूरसागर ।

श्री जगन्नाथदास "रत्नाकर", "उद्धव-शतक" के एक पद मे कहते हैं-

"फैले बरसाने मे न रावरी कहानी यह।" [1]

भोजपुरी बोलियों की तुलना :

नीचे आदर्श-शाहाबाद, सारन तथा बलिया-भोजपुरी की उत्तरी, पश्चिमी आदि बोलियो की हम तुलना करते है -

1. **संज्ञा**- आदर्श भोजपुरी के स्त्रीलिग शब्दो के अन्त मे प्राय ह्रस्व "इ" आता है, किन्तु भोजपुरी की इतर बोलियो मे इनका अभाव है- जैसे-आँखि-पाँखि (आदर्श भोजपुरी) । आँख-पाँख (अन्य भोजपुरी)।

गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी के सज्ञा पदो मे कही-कही अनुनासिक का प्रयोग होता है- जैसे-भाँट-खाँड़ ।

किन्तु आदर्श भोजपुरी मे इसके रूप होंगे भाट, साड । मैथिली के प्रभाव से कभी-कभी सारन तथा मुजफ्फरपुर की सीमा की भोजपुरी मे "ड" का "र" होता है। जैसे- घोड़ा → घोरा, सडक → सरक आदि।

गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी मे प्राचीन भोजपुरी के कतिपय रूप अद्यावधि पर्यन्त विद्यमान है। जैसे हिन्दी - "मैं" सर्वनाम "मयँ" तथा "मैं" रूप। भोजपुरी की अन्य बोलियो मे यह रूप केवल कहावतो तथा मुहावरो आदि मे ही उपलब्ध होते है। उत्तरी भोजपुरी के अन्य कारको मे व्यवहृत "मो" सर्वनाम भी आदर्श भोजपुरी मे नही मिलता। इसी प्रकार मध्यम पुरूष के सर्वनाम "तू" के अतिरिक्त, गोरखपुर मे "तैं" भी बोला जाता है तथा अप्राणिबोधक, प्रश्नवाचक सर्वनाम-"कैथी" (हिन्दी "क्या") गोरखपुर मे "केथुआ" बोला जाता है ।

---

1. उद्धव-शतक ।

विशेषण –सख्यावाचक विशेषण मे 11 से 18 तक को उत्तरी भोजपुरी में – "एगारे", "बारे", "तेरे" आदि बोला जाता है और आदर्श भोजपुरी का इन शब्दो मे व्यवहृत अन्तिम "ह" का गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी मे लोप हो जाता है। इसी प्रकार आदर्श भोजपुरी मे–"अर्तिस", "अर्तालिस", "सत्सठ", "अर्सठ" गोरखपुर मे "अँड़तिस", "अँडतालिस", "सँड़सठ" और "अँड़सठ" बोले जाते हैं।

क्रियापद– (क) सहायक क्रियायें :–

आदर्श भोजपुरी का "बाडै" गगा के उत्तर "बाटै" हो जाता है। यद्यपि कही–कही "बाडै" का भी प्रयोग होता है। इसी प्रकार उत्तम पुरूष पुल्लिग मे "बाटौ", मध्यम पु0 में "बाट", "बाटै", "आटै", तथा अन्य पुरूष पुल्लिग मे "बाटै", "आटै", "बाय", "आय", रूप मिलते है। आदर्श भोजपुरी मे "बा" रूप का उत्तरी भोजपुरी मे सर्वथा अभाव है ।

(ख) क्रियापद वर्तमान काल .–

सारन की भोजपुरी मे मध्यम पुरूष एक वचन में– "दैखुए", "दैखुयस", अन्य पुरूष एक वचन मे "दैखुए", "दैखै" तथा अन्य पुरूष बहुवचन मे "दैखैन" रूप वैकल्पिक रूप मे मिलते है ।

भूतकाल

भोजपुरी की समस्त बोलियो मे भूतकाल मे "ल" वाला रूप मिलता है, किन्तु पलामू की भोजपुरी मे उसमे "उ" भी जोड दिया जाता है। गण्डक के पूर्व की भोजपुरी पर मैथिली का भी प्रभाव पडने लगता है–यथा–

उत्तमपुरूष .– हम "दैखलियैन" (जब कर्म अन्य पुरूष मे रहता है) तथा जब उसके प्रति विशेष आदर–प्रदर्शन करना होता है, जैसे–"मैने श्रीमान् राजा को देखा" → "हम राजा कै दैखलियैन" कहा जायेगा। इसी प्रकार जब कर्म मध्यमपुरूष

मे रहता है तब– "हम दैखलियव" बोला जाता है यथा "हम रउरा के दैखलियव", अर्थात् मैने आप श्रीमान् को देखा ।

मध्यमपुरूष :– जब कर्म अन्य पुरूष का होता है तथा जब वह किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति का बोधक होता है तब– "तू देखलहुस" का प्रयोग किया जाता है, यथा – "तू मलिया के देखलहुस"। किन्तु जब अन्य पुरूष के कर्म के प्रति आदर–प्रदर्शन करना होता है तब– "तू देखलहुन" का प्रयोग किया जाता है, जैसे– "तू राजा के दैखलहुन" अर्थात् "तुमने श्रीमान् राजा को देखा"।

भूतकाल (सम्भाव्य)

म0पु0ए0व0	अन्य पु0ब0व0
दैखतैन	दैखतैस

उपर्युक्त उत्तरी भोजपुरी की दो विभाषाये–गोरखपुरी और सरवरिया है जिनमे गोरखपुरी की कतिपय विशेषताओ का उल्लेख ग्रियर्सन ने भी किया है। इनमे जो विशेषता, विशिष्टता हमारा ध्यान अधिक आकर्षित करती है, वह है विवृत "अ" को लिखने की प्रणाली । इसे दो बार लिखा जाता है,–यथा–

" दअअ", लअअ" ।

उच्चारण–सम्बन्धी विशेषता गोरखपुरी भोजपुरी मे यह है कि "ड" के स्थान पर इसमे "र" का प्रयोग होता है–यथा–पडल –– परल। बलिया की आदर्श भोजपुरी मे "परल तथा पडल" दोनो का प्रयोग होता है।

इसी प्रकार आदर्श भोजपुरी की सहायक क्रिया "बाडै" के लिये गोरखपुरी भोजपुरी मे "बाटै" का ही प्रयोग मिलता है

---

1 लिग्विस्टिक सर्वे, भाग 5, पृ0 229

सरवरिया भोजपुरी का क्षेत्र बस्ती तथा पश्चिमी गोरखपुर है। इसकी निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है जिसे जाँचने के पश्चात् डॉ0 उदय नारायण तिवारी जी ने भी अनुमोदित किया है।[1] गोरखपुर की भाँति बस्ती में भी "ड़" के स्थान पर "र" का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार यहाँ भी लोग "पडल" के स्थान पर "परल" ही बोलते हैं। यहाँ सम्बन्ध कारक मे उपसर्ग के रूप मे "कई" तथा अन्य कारको मे "के" का प्रयोग होता है। यह सीधे–सीधे पश्चिमी भोजपुरी के प्रभाव का परिणाम है।

सरवरिया भोजपुरी के सर्वनाम के रूपों मे भी कई विशेषताये दृष्टिगोचर होती है, यथा–सम्बन्ध कारक के रूपो के अन्त मे "ए" आता है– तुहरे, ओ करे, इन्–के, अपने, आदि । क्रिया पदो के रूपो मे इस बोली मे एक विशेषता होती है कि इसके अन्य पुरूष, एकवचन, भूतकाल के रूपो मे– अस/असि के स्थान पर– "इस" का प्रयोग होता है। इस प्रकार आदर्श भोजपुरी के दिहलस या दिहलसि, लिहलस, या लिहलसि, कइलस या कइलसि, रूप सरवरिया भोजपुरिया मे दिहलिस, लिहलिस एव कइलिस हो जाते है।

सहायक क्रिया के रूप मे "ड" से अन्त होने वाले रूप के स्थान पर यहाँभी "ट" से अन्त होने वाले रूपो का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार यहाँ "आटै" आदि रूप ही प्रयोग मे आते है ।

फैजाबाद, जौनपुर, आजमगढ, बनारस, मिर्जापुर तथा गाजीपुर के पश्चिमी भाग मे जो भोजपुरी बोली जाती है वह आदर्श भोजपुरी की अपेक्षा कई रूपो मे (बातो मे) भिन्न है। उदाहरणस्वरूप बिहारी भाषाओ की एक सबसे बडी विशेषता यह है कि

---

1 लिंग्विस्टिक सर्वे, भाग 5, पृ0 239

"अकारान्त" सज्ञा पदो के रूप अन्य कारको मे भी वैसे ही रहते है, किन्तु इस भोजपुरी मे ये "ए" मे परिणत तो हो जाते है। वस्तुत यह पश्चिमी भोजपुरी प्राच्य समूह की आर्य भाषाओ मे से सबसे पश्चिम की है, अतएव इस पर इसकी पश्चिम की बोलियो का प्रभाव पडना सर्वथा स्वाभाविक है ।

निम्नलिखित बातो मे, पश्चिमी भोजपुरी आदर्श भोजपुरी से भिन्न है–

(क) **संज्ञा :–**

सज्ञाके रूप मे, "आदर्श भोजपुरी" तथा "पश्चिमी भोजपुरी" मे निम्नलिखित अन्तर है –

आदर्श भोजपुरी (बलिया, शाहाबाद)	**पश्चिमी भोजपुरी** (आजमगढ़)
पाँच	पाँचा
भाट	भॉट
सॉढ	सॉड
जाअ	जाआ
गाइ	गाय
आँखि	आँख
पाँखि	पाँख

आजमगढ, बनारस तथा मिर्जापुर की पश्चिमी भोजपुरी मे सम्बन्धकारक के प्रत्यय के रूप मे "क" तथा "कै" का प्रयोग होता है। आदर्श भोजपुरी के अन्य कारको मे सज्ञापदो के अन्त मे "आ" आता है, किन्तु प0 भोजपुरी मे यह "ए" हो जाता है।

बनारस तथा आजमगढ की प0 भोजपुरी मे अधिकरण कारक का चिह्न "से" है। आदर्श भोजपुरी मे यह "सैं" अथवा "सै" है किन्तु शाहाबाद की भोजपुरी मे यह "सै" है ।

उदाहरण–

पेड़ से पतई गिरत जाय –– पेड़ से पत्ते गिर रहे है। (बनारस)

पैड़ सै पतई गिरतिया –– पेड से पत्ते गिर रहे है। (बलिया)

पैड़ लै पतई गिरतिया –– पेड से पत्ते गिर रहे हैं। (शाहाबाद)

"लिये" के अर्थ मे प्रत्यय के रूप मे बनारस तथा मिर्जापुर की प0 भोजपुरी मे "कातिन" "बदे" तथा कभी–कभी "कातिर" का प्रयोग होता है, किन्तु बलिया की आदर्श भोजपुरी मे केवल कातिर हो जाता है ।

उदाहरण–

तोरा वदे, तोरा कातिन – बनारस, मिर्जापुर ।

तोहरा कातिर या कातिन – बलिया ।

इसी प्रकार "बदले में" के अर्थ मे पश्चिमी भोजपुरी "सन्ती/सन्तिन" शब्दो का प्रयोग होता है किन्तु आदर्श भोजपुरी मे "सँती" हो जाता है।

(ख) **विशेषण** –

भोजपुरी की भिन्न–भिन्न उपभाषाओ के सख्यावाचक विशेषण मे पश्चिमी तथा आदर्श भोजपुरी मे पहाडा पढ़ते समय "औ" अन्तर आता है। आदर्श भोजपुरी मे दु पाँचे, दु साते, दु आठे आदि कहते है, किन्तु आजमगढ और बनारस मे– दु पचै, दु सतै, दु अठै आदि कहते है ।

पलामू की उत्तरी सीमा पर आदर्श–भोजपुरी बोली जाती है, किन्तुउसी जिले के उत्तर–पूर्वी कोने मे, जहाँ गया की सीमा आती है, मगही का आरम्भ हो जाता है। पलामू जिले के शेष भाग मे, तथा समस्त राँची जिले मे भोजपुरी का एक विकृत रूप बोला जाता है। इस विकृति का एक कारण तो "मगही "है, जो इसके उत्तर, पूर्व और दक्षिण मे बोली जाती है। इसके अतिरिक्त पश्चिमी मे "छत्तीसगढी"

का प्रभाव पड़ने लगता है। इन दोनों के अतिरिक्त इस विकृति का एक तीसरा कारण यह भी है कि यहाँ के अनार्य भाषा–भाषी आदिवासियो की बोली के भी अनेक शब्द यहाँ की भोजपुरी मे सयुक्त हो गये है। सत्यता यह प्रतीत होती है कि इधर के मूल निवासी "आस्ट्रिक" (आग्नेय), तथा द्रविण–भाषा–भाषी थे, किन्तु कालान्तर मे आर्य–भाषा के रूप मे भोजपुरी का प्रसार इस क्षेत्र मे हुआ । यही विकृत भोजपुरी जशपुर (पुरानी स्टेट) मे भी बोली जाती है । (पुराने जशपुर राज्य के पश्चिम ओर छत्तीसगढी की एक उपभाषा सरगुजिया बोली जाती है और दक्षिण मे उड़िया का क्षेत्र है।)

इस विकृत भोजपुरी का नाम "नगपुरिया" अथवा "छोटा भोजपुरी" की बोली है। इसको "सदानी/सदरी" कहते है । अनार्य मुडा लोग इसे "डिकूकाजी" अथवा "डिकू"[1] बोली कहते है । जिसका अर्थ–आर्य–भाषा–भाषी होता है। "सदरी" से तात्पर्य है कि, यह उन लोगो की बोली है, जो इधर बस गये हैं। उत्तरी भारत मे प्रयुक्त फारसी–अरबी के – "सदर मुकाम" – शब्द से यह शब्द ग्रहण किया गया है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ी का विकृत रूप "सदरी कोरवा" कहलाता है। विशुद्ध "कोरवा" बोली तो मुण्डा लोगो की है।

छोटा नागपुर डिवीजन के भी वस्तुत दो भाग है। इसके उत्तरी भाग मे हजारी बाग तथा दक्षिण मे राची है। इन दोनो भागो को विभक्त करने वाली दामोदर नदी है। सीमा के पठार के अन्तर्गत वस्तुतत राची का समस्त जिला आ जाता है। इस पठार के पूर्व ओर "मानभूम और सिहभूम" के जिले आते है। इस पठार के पूर्व का कुछ भाग राजनैतिक दृष्टि से राची जिले मे पडता है। ग्रियर्सन के अनुसार– यहाँ की भाषा नगपुरिया नही अपितु "पचपरगनिया" बोली है, जो वस्तुत मगही का ही एक रूप है। कई अन्य विद्वान इस "पचपरगनिया" बोली को भोजपुरी का ही अग स्वीकार करते है।[2]

---

1 डिकूकाजी/डिकू–आर्य भाषा–भाषियो की बोली ।

2 द्रष्टव्य–भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ0 243

नगपुरिया और सदानी का वैशिष्ठ्य

"नगपुरिया और सदानी" की निम्नलिखित विशेषताये है–

1 **उच्चारण–** इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ अन्तिम वाले अक्षर के पूर्व वाले अक्षर मे "इ" का आगम होता है और इस प्रकार "अपिनिहित" (Epenthesis) का रूप आ जाता है, जैसे–सुअइर। पड़ोस की बगला भाषा के कारण "अ" का उच्चारण "ओ" मे परिणत हो जाता है, जैसे–सब–का उच्चारण सोब, भजन का भोजन हो जाता है ।

2 **सज्ञा–** एक वचन से बहुवचन बनाते समय सज्ञा पदो मे "मन" प्रत्यय सयुक्त हो जाता है। इस प्रत्यय का छत्तीसगढ़ी मे प्रयोग होता है और वही से यहाँ इसका आगमन हुआ है ।

इसमे निम्नलिखित परसर्गो (Post position) का प्रयोग होता है–कर्मकारक–को, सम्बन्ध कारक के, क, केर तथा कर, सम्प्रदान–ले लै, लगिन, और लगै, अधिकरण–मे, अपादान से प्रयुक्त होते है। कभी–कभी छत्तीसगढी का प्रत्यय "हर" भी प्रयोग मे आता है जैसे–"बेटाहर"।

क्रिया – सहायक क्रिया

वर्तमान – मै हूँ		भूत – मै था [1]	
एकवचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
अहौ, हौ/हौ	अही/हई	रहो	रही/रहली
अहइस, हइस, हिस	अहा/हा	रहिस	रहा/रहला
अहे/है	अहे/है	रहे/रहलत	रहै/रहलै

1 **टिप्पणी**–"अहों" आदि को कभी–कभी "आहों" आदि के रूप मे भी लिखते है। वर्तमान काल के निम्न रूप इसमे, मगही से लिये गये है।

	एकवचन	बहुवचन[1]
1	हे – को	हे – की
2	हे – किस	हे – का
3	हे – के	हे – कै

देख के रूप

धातु – "देख–क्" देखना, इसका प्रयोग सम्प्रदान कारक मे "देखने के लिए" के अर्थ मे भी होता है–

क्रियामूलक विशेष्य – देइख् ।

विकारी रूप – देखे, देखल ।

इनमे देखल का अर्थ देखने की क्रिया भी होता है।

वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप – देखत, देखते हुए।

भूतकालिक कृदन्तीय रूप – देखल, देखा हुआ ।

सम्भाव्य वर्तमान के रूप वही होते है जो भविष्यत् के, किन्तु इसमे अपवाद स्वरूप अन्य पु0ए0व0 मे – "देखोक्" तथा ब0व0 मे "देखो" रूप मिलते है। अन्य बोलियो मे जहाँ सम्भाव्य वर्तमान के लिए प्रयुक्त होते है, वहाँ नगपुरिया मे वैकल्पिक रूप से पुरा घटित वर्तमान *Present Perfect* के रूपो का प्रयोग होता है ।

वर्तमान मै देखता हूँ		भूतकाल मैने देखा		भविष्यत्काल मै देखूगा	
ए0व0	ब0व0	ए0व0	ब0व0	ए0व0	ब0व0
देखो–ना	देखि–ला	देखलो	देखली		
देखिसि–ला देखिस्–ला	देख–ला	देखलिस	देखला	देख, देखवे	देखा, देखवा
देखे ला	देखै–ला	देखलत	देखलइ	देखोक्	देखो

1 अहौ/हौ का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप मे उस अवस्था मे होता है जब विधेय मे विशेषण पद होता है। यथा–पानी गर्म है, किन्तु हे–को का प्रयोग वहाँ होता है,

भविष्यत्		भूतकाल (सम्भाव्य)	
मै देखूँगा आदि		(यदि) मै देखे होता	
ए0व0	ब0व0	ए0व0	ब0व0
देखबो	देखब, देखबै	देखतो	देखती
देखबे	देखबा	देखतिस्	देखता
देखी, देखतै	देखबै	देखतक्	देखतै

पुराघटित वर्तमान "मैंने देखा है" के निम्नलिखित दो रूप होते है–

ए0व0	ब0व0	ए0व0	ब0व0
देखलो हो	देखली हई	देखो	देखी
देखले हइस	देखला हा	देखिस	देखा
देखलक है	देखलै है	देखे	दखै

पुराघटित अतीती– "मैने देखा था" के रूप नीचे लिखते है–

एक वचन	बहुवचन
देख्–रहो	देख्–रही
देख्–रहिस्	देख्–रहा
देख्–रहे	देख–रहे

टिप्पणी 1 – ऊपर की तालिका मे "देखतै" तथा "देखबै" रूप मगही से उधार लिये गये है। वर्तमान काल का रूप – देखत–हो, "मै देखता हूँ", होता है। इसके सक्षिप्त रूप "देखथों" तथा "देखत्थों" भी वैकल्पिक रूप से प्रयुक्त होते है। इसी प्रकार घटमान अतीत का रूप देखत रहो–"मै देखता था"–होगा।

भोजपुरी की अन्य बोलियो की भाँति यहाँ भी प्रेरणार्थक एवं कर्मवाच्य की क्रियाये मिलती है, यथा—"खायक्" दिखाना (प्रेरणार्थक) देखवाएक् दिखलवाना (द्वितीय प्रेरणार्थक), देखल् जाएक्—देखा जाना (कर्मवाच्य)। इसमे अनियमित क्रियापद —होएक् "होना" मिलता है। इसके वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप "होअत" या "भवेत्" भूतकालिक कृदन्तीय रूप "होअल" या "भेल" होते है। इसी प्रकार जाएक् (जाना) तथा "देएक्" के भूतकालिक कृदन्तीय रूप "गेल", "देवेक"—गया, दिया। वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप देत या देवत एव भूतकालिक कृदन्तीय रूप देल या देवल होंगे।

असमापिका के कृदन्तीय रूप (Conjunctive Participle)देइख् या देइख—के—होते है। अन्य भोजपुरी बोलियो से तुलना करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका मूल रूप—देखि था, किन्तु अपिनिहित (Ependthesis) के कारण उच्चारण मे यह "देइख" मे परिणत हो गया। इस "इ" के कारण ही इसके पूर्व आने वाले "आ" का उच्चारण "ओ" मे परिणत हो जाता है। इस प्रकार "माइर", "मारकर" का उच्चारण "मोइर" हो जाता है ।

मधेशी भोजपुरी

गोरखपुर के पूर्व, गण्डक नदी के उस पार, बिहार का चम्पारन जिला है। यह सारन जिले के उत्तर है। चम्पारन तथा सारन जिलो को गण्डक नदी ही विभाजित करती है। इन दोनो जिलो मे ऐतिहासिक तथा राजनैतिक सम्बन्ध है किन्तु वास्तव मे चम्पारन प्राचीन मिथिला—प्रदेश का ही एक भाग है। इसकी भाषा से भी इस बात की पुष्टि होती है । यद्यपि यहाँ की भाषा प्रमुख रूप मे वही भोजपुरी है, जो सारन तथा पूर्वी गोरखपुर मे बोली जाती है तथापि इस पर पडोस बोली जाने वाली मुजफ्फरपुर की मैथिली का भी यत्किंचित् प्रभाव है। चम्पारन के पूर्व, मुजफ्फरपुर की सीमा की बोली पर, मैथिली का सबसे अधिक प्रभाव है। यहाँ के ढाका थाने मे 18 मील लम्बे

तथा 2 मील चौड़े क्षेत्रफल मे मैथिली बोली जाती है। चम्पारन मे पश्चिम की ओर जाने से मैथिली का प्रभाव क्रमश क्षीण हो जाता है। यहाँ तक कि गण्डक के किनारे की बोली वही भोजपुरी हो जाती है जो उत्तर–पूर्वी–सारन तथा पूर्वी गोरखपुरमें बोली जाती है । चम्पारन की बोली को यहाँ वाले "मधेशी"नाम से अभिहित कहते है। "मधेशी" शब्द की उत्पत्ति सस्कृत "मध्यदेश" से हुई है। तिरहुत की मैथिली तथा गोरखपुर की भोजपुरी के मध्य की बोली होने के कारण ही इसका "मधेशी" नाम पडा है।

"मधेशी" भोजपुरी मे भी मैथिली की भाँति ही "मूर्धन्य ड़" का उच्चारण "र" मे परिणत हो जाता है। यथा–पड़ल —> परल, कोढ़ी —> कोरही, धड़का — धरका।[1]

मुजफ्फरपुर की मैथिली मे–"उन लोगो के लिये "औकनी" सर्वनाम का प्रयोग होता है। मधेशी भोजपुरी मे भी यह "औकनी" विद्यमान है।

इस प्रकार सहायक क्रिया के रूप मे मधेशी भोजपुरी मे "आर"ऽ(तुम हो) तथा "आटै" (वह है) दोनो का प्रयोग होता है तथा सकर्मक क्रिया ए0व0, अतीतकाल का रूप मैथिली की भाँति – "अक"प्रत्ययान्त होता है–

जैसे कहलक् – उसने कहा, देलक् – उसने दिया, आदि। यहाँ – "यह आया" के भोजपुरी आइल् के स्थान पर मैथिली – "आएल" का एव "उसने कहा" के लिये मैथिली "कहल–कै" का प्रयोग होता है।

---

1 बलिया की आदर्श भोजपुरी मे "पडल" तथा "परल" दोनो का प्रयोग होता है। "कोढी" के लिये आदर्श भोजपुरी मे भी "कोरहि" व्यवहृत होता है। किन्तु बडका के लिये बरका का प्रयोग नही होता। यह साम्य गोरखपुर तथा बस्ती की भोजपुरी मे भी दृष्टिगत होता है ।

थारू भोजपुरी

डा0 ग्रियर्सन ने थारू भोजपुरी का एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। थारू वस्तुत भारत के आदिवासी है। वे हिमालय की तराई मे, पूरब मे– जलपाईगुडी से लेकर पश्चिम मे कुमायूँ भावर तक पाये जाते है। इसका उल्लेख अलबेरूनी ने भी किया है। इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे अनेक विद्वानो ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया है। श्री क्रुक ने तो इस सम्बन्ध मे विशेष श्रम किया । उनके अनुसार थारू मूलत द्रविड़ है किन्तु नेपाली तथा अन्य पहाड़ी जातियो के सम्पर्क तथा सम्मिश्रण से उनमे मगोल रक्त आ गया है। उनके शारीरिक गठन से यह बात स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है ।

थारू लोगो की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे भले ही विवाद हो, किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि वे आर्य–भाषा–भाषी है और थारू नाम की इनकी कोई पृथक भाषा नही है। सर्वत्र ये लोग अपने आस–पास की आर्य–भाषा ही बोलते है। उदाहरणस्वरूप पूर्णिया के उत्तर मे बसने वाले थारू पूर्वी मैथिली के विकृत रूप का जो वहाँ प्रचलित है, व्यवहार करते है। इसी प्रकार चम्पारन तथा गोरखपुर के थारू विकृत भोजपुरी एव नैनीताल के तराई के थारू उस क्षेत्र मे बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी का प्रयोग करते है ।

थारू लोगो की बोली की यह विशेषता उल्लेखनीय है कि उसमे पडोस मे बोली जाने वाली बोली का विशेष पुट रहता है। उदाहरण के लिये उत्तर प्रदेश का खीरी जिला कोसली (अवधी) भाषा–भाषी है किन्तु यहाँ के थारू अवधी नही बोलते अपितु उनकी बोली मे – पीलीभीत तथा नैनीताल की तराई मे बोली जाने वाली पश्चिमी

---

1 लिग्विस्टिक सर्वे, भाग 5, अक 2, पृ0 311 से 324 तक।

हिन्दी का पुट है । इसी प्रकार बहराइच तथा गोडा के थारू इन जिलो की कोसली (अवधी) नही बोलते किन्तु वे बस्ती मे प्रचलित विकृत भोजपुरी का व्यवहार करते है। डा0 ग्रियर्सन के अनुसार थारू पूर्वी हिन्दी बिल्कुल ही नही बोलते, वे या तो नैनीताल की तराई की पश्चिमी हिन्दी बोलते है या भोजपुरी अथवा मैथिली का व्यवहार करते है ।

****

गोरखपुरी की भोजपुरी बोली

गोरखपुर राप्ती नदी के किनारे बसा हुआ है। महाभारत काल मे गायो की रक्षा करने के कारण इसका नाम गोरक्षपुर पडा था। ससार का सबसे पुराना गणतन्त्र गोरखपुर मे तथा उसके आस-पास ही विकसित हुआ । मुअज्जमशाह जब यहा पर शिकार के लिए आये थे तो इसका नाम मुअज्जमाबाद रखा गया था। 1801ई0 मे ईस्ट इडिया कपनी ने अवध के नवाब से इसको खरीदा था। 1857 के विद्रोह के कारण अग्रेजो ने 1865 मे गोरखपुर से बस्ती तथा आजमगढ़ को अलग कर दिया था। बाद मे 1947 मे देवरिया को गोरखपुर से अलग किया गया।

डा0 ग्रियर्सन[1] ने भोजपुरी को चार भागो मे विभक्त किया है। ये विभाग है – उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा नगपुरिया। उत्तरी भोजपुरी घाघरा नदी के उत्तर मे बोली जाती है। इसकी भी दो विभाषाए है –

क) सरवरिया तथा

ख) गोरखपुरी ।

यदि गण्डक नदी के साथ एक रेखा नेपाल सीमा तक और वहा से गोरखपुर शहर के कुछ मील पूरब से होते हुए बरहज तक खीची जाय तो इसके पश्चिम "सरवरिया" तथा पूरब "गोरखपुरी" भोजपुरी का क्षेत्र होगा ।

---

1 ग्रियर्सन – 'लिग्विस्टिक सर्वे। ऑफ इण्डिया', जिल्द 5, भाग-2

गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी के सज्ञा पदो मे कही–कही अनुनासिक का प्रयोग होता है। यथा– भाँट, नाँद ।

गोरखपुरी की उत्तरी भोजपुरी मे प्राचीन भोजपुरी के कतिपय रूप आज भी वर्तमान है, जैसे– हिन्दी ' मै ' सर्वनाम ' मयँ ' तथा ' मे ' रूप। भोजपुरी की अन्य बोलियो मे यह रूप केवल कहावतो तथा मुहावरो आदि मे ही मिलते है। उत्तरी भोजपुरी के अन्य कारको मे व्यवहृत ' मो ' सर्वनाम भी आदर्श भोजपुरी मे नही मिता है। इसी प्रकार मध्यम पुरूष के सर्वनाम ' तू ' के अतिरिक्त गोरखपुर मे ' तै ' भी बोला जाता है तथा अप्राणिबोधक, प्रश्नावाचक सर्वनाम ' केथी ' (हिन्दी ' क्या') गोरखपुर मे ' केथुआ ' बोला जाता है।

सख्यावाचक विशेषण मे 11 से 18 तक को उत्तरी भोजपुरी म 'एगारे', 'बारे', 'तेरे' इत्यादि बोला जाता है और आदर्श भोजपुरी का इन शब्दो मे व्यवहृत अन्तिम 'ह' का गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी मे लोप हो जाता है। इसी प्रकार आदर्श भोजपुरी के 'अर्तिस', 'अर्तालिस", 'सत्सठ', 'अर्सठ' गोरखपुर मे 'अँडतिस', 'अँडतालिस', 'सँडसठ' और 'अँडसठ' बोले जाते है ।

गोरखपुरी भोजपुरी[1] की एक प्रमुख विशेषता है विवृत्त'अ' को लिखने की प्रणाली । इसे दो बार लिखा जाता है, यथा–दअअ लअअ । उच्चारण–सम्बन्धी विशेषता गोरखपुरी भोजपुरी मे यह है कि 'ड' के स्थान पर इसमे 'र' का प्रयोग होता है , यथा – पडल –– परल ।

---

1 ग्रियर्सन – लिग्विस्टिक सर्वे, भाग 5, पृष्ठ 229

गोरखपुर के प्रमुख भोजपुरी कवि

गोरखपुर के पुराने भोजपुरी कवियो मे श्री राम अधार त्रिपाठी 'जीवन' चचरीक तथा मन्न द्विवेदी का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है, जिसमे चचरीक जी भोजपुरी मे शुद्ध स्वतन्त्रता आन्दोलन के बारे मे अपनी कवितायें लिखे है। इनके कविताओ के शीर्षक भी इसी प्रकार है– "स्वराजी", "चर्खा"। "सोहर" भी इन्होंने स्वतन्त्रता आनदोलन के बारे में ही खिा है ।

अन्य प्रमुख कवियो मे प्रमुख है श्री कृष्ण मुरारी शुक्ल। यह हास्य रस के कवि है । इन्होने अपनी एक कविता भी सुनायी जो इस प्रकार है–

कल पुरजा बिल्कुल ढिल ढिल बा
गडिया एकदम सकरपक्क बाय
अरे भोकलवा चकाचक्के बाय । (चकाचक)

अरूण गोरखपुरी भी भोजपुरी कवियो मे प्रमुख है। इन्होने भी अपनी एक कविता सुनायी जो इस प्रकार है–

कोनो कालू डोम खरीद्लस फिरसे राजा के
राहि बिकाइल चौराहा पर
बूझ राजा के?

गणेश तिवारी ने भी अपनी एक कविता सुनायी जो इस प्रकार है–
इ पिरितिया त कोल्हू क चक्का हव,
अगुरी देव त पहुचा धरइब करी ।

एक अन्य प्रमुख भोजपुरी कवि है श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव 'युगानी' जी। यह गोरखपुर के पचगावा के पास भवानिपुर गाव के रहने वाले है। इस समय

यह गोरखपुर आकाशवाणी मे कार्यरत भी है। इनका एक काव्य सग्रह है–"मोथा और माटी" जो कि 1980 मे "वसुन्धरा" प्रकाशन गोरखपुर से प्रकाशित हुआ है। जब मै इनसे सम्पर्क किया तो इन्होने अपनी यह कविता मुझे सुनायी–

आगी पर चारो ओर काठे क हाडी,
राम–राम मोछू सलाम भाई दाढ़ी।
लरिकन क खेल लाठी क रेल,
हुकुर–हुकुर इजन कब दउर कब फेल।
के कब कोह्म जाय,
कहा पे ओह्म जाय,
बेमतलब घुड़दौड़, इध्म जा उह्म जा
के गिरी कह्म गिरी दऊ इ अनाडी
राम–राम मोछू सलाम भाई दाढी ।

इनके अतिरिक्त अन्य प्रमुख कवि इस प्रकार है–

1 स्व0 श्री त्रिलोकी नाथ उपाध्याय ।
2 श्री राम नवल मिश्र ।
3 श्री अरूण गोरखपुरी ।
4 श्री सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' ।
5 श्री मुकेश श्रीवास्तव ।
6 श्री परमात्मा मणि त्रिपाठी ।
7 श्री राजनाथ त्रिपाठी 'राजू गोरखपुरी'।

****

द्वितीय अध्याय

नेपाली

नेपाली भाषा का परिचय

हिमाली क्षेत्र के पश्चिमी "भेक" तथा पश्चिमी नेपाल की पुरानी जाति "खसों" के आधार पर नेपाली भाषा को "खसभाषा" कहा जाता रहा है । "खसकुरा" या "खसभाषा" कहने से अभी भी लोग उसे नेपाली भाषा का ही दूसरा नाम समझते है । नेपाली भाषा नेपाल के सविधान के "भाग–1, धारा–4 के" अनुसार राष्ट्रभाषा है । नेपाल के अधिकाश क्षेत्र मे पहाड ही पहाड़ है, अत यहा के वाशिन्दो को समतल मे रहने वाले लोग पहाडी या पहाड़िया तथा इनकी भाषा को "पहाडी" भाषा कहते हैं । भाषा–शास्त्रियों ने भी सम्पूर्ण हिमाली क्षेत्र की आधुनिक आर्यभाषा को पहाड़ी वर्ग मे रक्खा है तथा नेपाली को "पूर्वी पहाड़ी" कहा है। इसको "पर्वते भाषा" कहने के दो तात्पर्य हैं– नेपाल पर्वतो का देश होने के कारण यहा के वाशिन्दे को "पर्वते" कहा है। सुन्दरानन्द बडा ने इसे "पार्वती भाषा" कहा, जिसे "पर्वत्या" भी कहा जाता है। श्री 5 बडा महाराज पृथ्वीनारायण शाह द्वारा नेपाल के एकीकरण के बाद "नेपाली", "गोर्खाली" नाम से प्रसिद्ध हुए तथा इनकी भाषा को "गोर्खाली" कहा गया। भाषा के रूप मे राजकीय मान्यता प्राप्त करने के पश्चात इसका व्यापक प्रयोग देखने मे आया । इसी सिलसिले मे इसे "गोरख–भाषा", "गोरखा भाषा", "गोर्खा भाषा", "गोर्खे भाषा" और "गुर्खाली भाषा" नाम दिये गये । प्रसगवश नेपाली भाषा के अन्य नाम भी देखने को मिलते है । काठमाडो उत्पत्यका के शिलालेखो मे इसे "भाषा", "देशभाषा", "स्वदेश भाषा" और "गिरिराज भाषा" की सज्ञा से अभिहित किया गया है । शक्तिवल्लभ ने इसे "लोक भाषा", विद्यापति ने "प्राकृत भाषा" की सज्ञा दी है ।

"नेपाली भाषा" नाम सर्वप्रथम सम्भवत एटन के व्याकरण मे ही दिखाई पडा । इससे पहले कर्क व्यांटिक ने इसे पर्वते ही कहा था । उसके बाद के यूरोपीय भाषा शास्त्रियो ने "गोर्खाली" तथा "नेपाली" का ही प्रयोग किया ।

नेपाल नाम के आधार पर इसका नाम नेपाली हुआ । नेपाल मे अनेक भाषाए है, लेकिन देश की बहुसख्यक जनता की भाषा यही होने के कारण यह "नेपाली" भाषा[1] हो गई । अथर्वपरिशिष्ट, कौटिल्य[2] का अर्थशास्त्र, समुद्रगुप्त का प्रयाग स्थित शिलालेख और पुराणो मे "नेपाल" शब्द ई0पू0 पाचवी शताब्दी से ही प्रचलित है। नेपाल के बाहर हर जगह इसे "नेपाली भाषा" ही कहा जाता है।

---

1. The languages passes under various names. Europians call it 'Nepali'or 'Naipali' i.e. the language of Nepal. This is a misnomer, for it is not the language of Nepal, but only that of the Aryan rules of the country. The inhabitants of Nepal itself give the name (in a slightly corrupted form) to the principal Tibetan-Burman language of the country, Newari and call the Aryan language 'Khas-Kura' 'Khas-speech'. It is also called Gorkhali, i.e. the language of the Gorakhas owing to the fact that the Rajput rulers of Nepal come immediately from the town of the Gorkhas Another name is Parbatiya or the language of the mountainers Another name Pahati also meaning 'Mountainers Language' was given by Mr Baines to the whole group of Aryan language spoken in the lower Himalayas from Nepal to Chamta He divides these Pahati language into three sub-grups, western Pahati of the Punjab Himalaya's , Central Pahati of Garhwal and Kumaon and eastern Pahati of Nepal. Eastern Pahati is therefore another title of the language now its names are in order, Khas Kura, Naipali, Gorkhali, Parbatiya and Eastern Pahari " -Grierson Linguistic Survey of India Vol IX, pt IV, Page 18

\+ (क) नेपाली भाषा की उत्पत्ति—चुडामणि उपाध्याय रेग्मी, पृ0 ८
(ख) नेपाली भाषा का बनोट—गोपाल निधि तिवारी।

नेपाली की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न भाषा शास्त्रियों के मत –

नेपाली की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे विद्वानो मे परस्पर मतैक्य नही है। इस सम्बन्ध में उपलब्ध विभिन्न विद्वानो के मतो को सक्षेप मे उपस्थित किया जा रहा है –

(1) जार्ज ग्रियर्सन[1] ने नेपाली भाषा को राजस्थानी, मेवाड़ी, मालवी और मारवाड़ी इन चार बोलियो की परिनिष्ठित भाषा का ही विकसित या परिवर्तित रूप स्वीकार किया है। नेपाली उसी प्राकृत और अपभ्रंश से उद्‌भूत हुई है, जिससे राजस्थानी का उद्‌भव हुआ है। फलत ग्रियर्सन की दृष्टि मे शौरसेनी प्राकृत और शौरसेनी अपभ्रश ही नेपाली की स्त्रोत–भाषा या जननी है ।

---

1. Sir George Grierson- 'Certain Rajputs of Udaipur, being oppressed by the Musalmans, fled to the North and in the early parts of the 16th Century, settled in the country of the lower Himalayas including Garhwal, Kumaon and Western Nepal. In 1559 a party of these conouered the town of Gorakha (say seventy miles to the North-West of Kathmandu). In 1768 Prithvi Narain Shah of Gorkha made himself master of the whole of Nepal and found the present Grkhali dynasty. It will, thus, be seen that the ruling classes of Nepal mountain say that they are of Rajput origin and their language, which is the lingua-Franca of the country is still closely connected with Mewati-Mrawati dialect spoken in the Udaipur, which they claim as their original home "

   (Linguistic Survey of India, Vol. IX Pt. 1)

(2) **डा0 सुनीति कुमार चटर्जी की मान्यताएँ –** डा0 चटर्जी ने आधुनिक आर्य भाषाओं का नये सिरे से वर्गीकरण किया है तथा वे ग्रियर्सन के वर्गीकरण से असहमत है। डा0 चटर्जी का वर्गीकरण ग्रियर्सन की अपेक्षा अधिक तर्कसगत है, पर जहा तक हिमालय की तलहटी मे बोली जाने वाली पहाडी भाषाओ (जैसा अभिधान उन्होंने स्वय दिया है) का प्रश्न है उन्होने उनके साथ न्याय नही किया है। आधुनिक आर्य भाषाओ की तालिका मे चटर्जी ने ग्रियर्सन की तरह पहाड़ी भाषाओं (कुमाउनी, नेपाली) आदि को स्थान नही दिया है । डा0 चटर्जी की तालिका मे पहाडी भाषाओ का स्थान न होना ही सिद्ध करता है कि वे इन्हे सस्कृत से उत्पन्न आर्यभाषा नहीं मानते । यदि वे इसे सस्कृतोत्पन्न आर्यभाषा के रूप मे स्वीकार करते तो निश्चय ही अपनी आधुनिक आर्यभाषा तालिका के किसी खाने मे स्थान प्रदान करते। डा0 चटर्जी ने कश्मीरी तथा पूर्वी पहाडी (नेपाली), मध्य पहाडी (गढवाली और कुमाउनी) तथा पश्चिमी पहाडी (कुलुई, चमेआली आदि) भाषाओ की उत्पत्ति "दरद" भाषा से मानी है। डा0 चटर्जी ने ग्रियर्सन के द्वारा उद्भावित असस्कृत आर्यभाषा यानी दरद या पिशाच भाषा से पहाडी भाषाओ का उद्भव बताया है ।

(3) **आर0 एल0 टर्नर :–** उत्तरकालीन नेपाली भाषा की उत्पत्ति इन्होने शौरसेनी प्राकृत और शौरसेनी अपभ्रश से मानी है तथा प्राचीन नेपाली की उत्पत्ति मागधी प्राकृत और मागधी अपभ्रश से स्वीकार की है। उनके अग्रिम वक्तव्य का आशय है कि "भारत के पश्चिमोत्तर भाग से आर्य भाषा–भाषी लोग पहाडो की ओर कब आये यह बता पाना तो कठिन है, किन्तु इतना निश्चित है कि इनके आगमन के पूर्व भी नेपाल मे कोई आर्यभाषा बोली जाती रही होगी। प्रमाणस्वरूप 1650 विक्रम सवत् को पाटन (काठमाडो का एक भाग) की दरबारी भाषा को गृहीत किया जा सकता

है। सम्भवत यह भाषा भोजपुरी और मैथिली आदि बिहारी बोलियो की स्रोत-भाषा (यानी मागधी-प्राकृत और मागधी अपभ्रश) से मिलती-जुलती रही होगी। इसके अतिरिक्त नेपाली मे मैथिली और भोजपुरी के शब्द भी विपुल सख्या मे पाये जाते है।"

(4) श्री पारसमणि प्रधान ने नेपाली की उत्पत्ति खस अपभ्रश से मानी है। उनके अनुसार कुछ प्राचीन खस उत्तर पशिचम भारत के कश्मीर अचल में आकर बसे और कुछ खस गढ़वाली और कुमाऊ होते हुए पशिचम नेपाल मे आये। गढ़वाल और कुमाऊँ के वासिकाओ मे अधिकाश खस बोली बोलते है। गोरखा राज्य की स्थापना के बाद भी खशों की ही प्रधानता थी और यह बोली सरल, सुसम्पन्न और विशाल होने के फलस्वरूप नेपाल राज्य के एकीकरण के बाद यही "राजभाषा" बनी। इस प्रकार नेपाली भाषा का उद्‌गम इसी खस अपभ्रंश से हुआ ।

(5) इतिहास शिरोमणि श्री बाबूराम आचार्य के अनुसार भी "खसकुरा" या "पर्वतीय बोली" कश्मीर से आई हुई इडावृत्ति आर्यो से चला दिखता है। नेपाली भाषा का उद्‌गम खस से हुआ ऐसा ही ये मानते है ।

(6) श्री सूर्य विक्रम सवाली ने नेपाली भाषा की उत्पत्ति भारतीय हिन्दी, मराठी, बगाली आदि की तरह सस्कृत से ही मानी है । उनके अनुसार सन् 1303 मे अलाउद्‌दीन खिलजी ने चित्तौर पर आक्रमण किया। इस आक्रमण से चित्तौर जर्जर हो गया (महामहोपाध्याय गौरी शकर ओझा के अनुसार) तथा वहा के राजा श्री रत्नसिह

---

1 नेपाली भाषा की उत्पत्ति र विकास-पारसमणि प्रधान, पृ0 16-17

2 नेपाली भाषा को बनोट-गोपालनिधि तिवारी, पृ0 51

3 नेपाली भाषा के विकास का सक्षिप्त इतिहास-श्री सूर्य विक्रम सवाली, पृ0 1-2

का भाई तथा लड़का इधर–उधर भटकने लगे । श्री रत्नसिंह का भाई कुम्भकर्ण की सन्तान कुछ समय बाद कुमाऊँ के पहाड की तरफ से पाल्या मे आकर बस गये और धीरे–धीरे अपने राज्य का विस्तार करने लगे और बाद मे पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल को अपने अधिकार मे कर लिया।" (उदयपुर का इतिहास भाग 1, पृ0 72)

इसी कुम्भकर्ण के वंशज कुमाऊँ से नेपाल आये तथा इसी समय नेपाली भाषा का प्रारम्भ हुआ और ये लोग ग्रियर्सन साहब ने जिस भाषा समूह को राजस्थानी भाषा कहा है, उसी मे से एक भाषा बोलते थे। राजस्थानी भाषा गुजराती की तरह शौरसेनी अपभ्रंश से निकली हुई है। अतएव नेपाली भाषा की उत्पत्ति भी शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है ।

(7) भाषा वैज्ञानिक श्री बालकृष्ण पोखरेल[1] ने नेपाली भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से कुछ अंश मे माना है ।

(8) श्री विज्ञान विलास[2] के अनुसार– "नेपाली भाषा की उत्पत्ति नेपाल मे ही हुई", ऐसा मत प्रकट किया है। उनके अनुसार भारत से आये हुए राजपूतो के नेपाल प्रवेश से पहले से ही यह भाषा नेपाल मे प्रचलित थी ।

(9) श्री गोपालनिधि तिवारी के अनुसार "वैदिक भाषा प्राचीन भाषाओ की जननी होने के कारण इससे लौकिक संस्कृत होते हुए अनेक किस्म की प्राकृत भाषाओ

---

1 नेपाली भाषा र साहित्य – बालकृष्ण पोखरेल, पृ0 11

की उत्पत्ति हुई । सस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश होते हुए नेपाली भाषा की उत्पत्ति हुई। भारतवर्ष मे बोली जाने वाली हिन्दी, बगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाओं की तरह ही नेपाली भाषा की उत्पत्ति हुई । पुन वे लिखते है कि सस्कृत के तत्सम शब्द, उसी से विकृत प्राकृत के शब्द तथा अपभ्रश से बना "खसकुरा" ही स्थानीय तुरनियन शाखा के (गरूड, मगर, चेपाड , मुर्गी, कुसुण्डा, नेवारी, किराती, लिस्वु, लाप्चा आदि) शब्दो के साथ सम्मिलित होकर नेपाली भाषा निर्मित हुई है।

(10) श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी [1] – नेपाली भाषा का प्राचीन रूप खसान मे बना, खसान मे बढ़ा तथा खसान में पालित हुआ। उस समय की अपभ्रश खस अपभ्रंश थी, जिससे नेपाली भाषा की उत्पत्ति हुई कर्णाली प्रदेश मे उस समय खसो का आधिपत्य होने के कारण उस क्षेत्र का नाम खसान हुआ । प्राकृत भाषाकाल मे उस समय भारत के पश्चिमोत्तर प्रान्त और मध्यदेश की विशेषता का समान रूप लिया हुआ प्राकृत सरपादलक्ष– प्रदेश मे रहा होगा जो मूलत उदीच्य सस्कृत के विकसित होने पर भी मध्यदेशीय सस्कृत से प्रभावित था ।

(11) श्री सच्चिदानन्द चौधरी [2] – जिस प्रकार भारतीय भू–भाग मे विविध प्राकृतो से महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची आदि अपभ्रशो का उद्‌भव हुआ, ठीक उसी तरह नेपाल मे "पार्वत्य प्राकृत" से भी "पर्वतिया अपभ्रश" उत्पन्न हुई होगी । आधुनिक नेपाली का विकास स्वतन्त्र पद्धति पर हुआ है, यह सस्कृत, पार्वत्य प्राकृत, पर्वतिया अपभ्रश आदि मे गुजरती हुई वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुई है।

---

1 नेपाली भाषा की उत्पत्ति – श्री चूड़ामणि उपाध्याय, रेग्मी, पृ0 2

2 जर्नल त्रिभुवन विश्वविद्यालय – डा0 सच्चिदानन्द चौधरी, 1967, पृ0 28

इसकी अव्यवस्थित पूर्वी कड़ी "पहाड़ी या पर्वतिया अपभ्रश" है। मागधी, शौरसेनी, खस आदि अपभ्रश नही ।

(12) **गोविन्द चातक के अनुसार** --खसो का प्रसार हिमालय मे हिन्दूकुश से नेपाल तक था । इस तथ्य को अस्वीकार नही किया जा सकता । किन्तु मध्य और पूर्वी हिमालय में वे इतने प्रभंवशाली नही रहे जितने कि पश्चिम में । यदि सभी पहाड़ी भाषाओं का मूल दरद या खस ही होता तो उनमे बहुत बड़ी समानता होती। ठीक इसके विपरीत कश्मीरी आदि दरद भाषाए मध्य पहाडी तथा पूर्वी पहाड़ी से बिल्कुल पृथक अस्तित्व प्रकट करती है। शौरसेनी का कोई और पर्वतीय रूप भी रहा होगा । वास्तव में मध्य और पूर्वी पहाड़ी का मूल कोई खस, दरद या पैशाची प्राकृत नहीं है । वे स्पष्टत शौरसेनी से सम्बन्धित है।

(13) **डा० भोलानाथ तिवारी** --इसका मूल शौरसेनी अपभ्रश से मानते है।

उपर्युक्त मान्यताओ को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि नेपाली की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे विद्वानो का समुदाय मुख्यत दो वर्गों मे बटा हुआ है जिसमे एक वर्ग नेपाली की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रश से माना है और दूसरा दल खस अपभ्रश से । शौरसेनी से नेपाली को उद्भूत मानने वालो मे जार्ज ग्रियर्सन, आर०एल० टर्नर, श्री सूर्य विक्रम शवाली, बालकृष्ण पोखरेल, गोविन्द चातक

---

1 मध्य पहाड़ी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन- गोविन्द चातकण पृ० 32-33

2 हिन्दी भाषा - डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० 120

तथा डा0 भोलानाथ तिवारी आदि अनेक विद्वानो के नाम आते है। दूसरी ओर खस अपभ्रंश से नेपाली की उत्पत्ति मानने वालों मे श्री बाबूराम आचार्य, श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी, गोपालनिधि तिवारी, पारसमणि प्रधान, डा0 सुनीति कुमार चटर्जी आदि प्रमुख है ।

उपर्युक्त विद्वानो ने अपने–अपने मतो के समर्थन मे जो तर्क दिए है, उन पर ध्यान देने से ऐसा लगता है कि दोनो पक्षो के मत समान मूल्य एव महत्व रखते है । ऐसी स्थिति मे किसी एक का समर्थन करना हमारे लिए कठिन है। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाली के उद्‌भव एव विकास मे शौरसेनी एवं खस दोनो का ही किसी न किसी रूप मे योगदान अवश्य रहा है ।

आधुनिक आर्यभाषा और नेपाली .

आधुनिक आर्य भाषाओ का वर्गीकरण तथा भाषाओ को एक सूत्र मे बाधने के प्रयास के क्रम मे पहला श्रेय हार्नले को ही दिया जा सकता है। उन्होने गौड़ीय भाषाओ के तुलनात्मक व्याकरण मे आर्य परिवार के आधुनिक भारतीय आर्य भाषा को चार भाग मे विभाजित किया । वह विभाजन इस प्रकार है–

(1) **पूर्वी गौड़ी**– पूर्वी हिन्दी (मैथिली, मगही, भोजपुरी) और बगाली, असमिया, उड़िया ।

(2) **पश्चिमी गौडी** – पश्चिमी हिन्दी (ब्रज–राजस्थानी आदि) और गुजराती, सिन्धी, पजाबी ।

(3) **दक्षिणी गौड़ी** – मराठी ।

(4) **उत्तरी गौड़ी** –पहाड़ी भाषा और गढ़वाली, कुमाऊँनी, नेपाली।

मोटे तौर से उन्होंने उत्तरी और पश्चिमी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत और पूर्वी का सम्बन्ध मागधी प्राकृत से दिखाया है । उसके बाद बर्नले द्वारा प्रतिपादित भारत में आर्यों के प्रदेश के सिद्धान्त के आधार पर ग्रियर्सन ने आधुनिक आर्य भाषाओ का दूसरा वर्गीकरण प्रस्तुत किया । हार्नले ने गौड़ीय भाषाओ का तुलनात्मक व्याकरण मे लिखा है कि आर्य जब भारत मे आये तो कम से कम दो दल मे विभक्त होकर आये । पहले आने वाले पजाब जाकर रहने लगे तथा पीछे आने वाले आर्य पूर्वागत आर्यों को भगाकर, उनके जगह पर रहने लगे और उसके बाद भगाये जाने पर वे आर्य पूर्वी, दक्षिण और उत्तर मे फैल गये। इसी के आधार पर ग्रियर्सन ने आभ्यन्तर और बाह्य का भेद किया । पूर्वागत आर्य बाह्य शाखा की भाषा बोलने लगे तथा नवागत आर्य अभ्यन्तर शाखा के । उनका यह वर्गीकरण दो बार निकला – भारत के भाषा–सर्वेक्षण मे और इडियन एण्टिक्ववेटी मे ।

पहला वर्गीकरण इस प्रकार है –

(अ) बाह्य शाखा–

क) उत्तर पश्चिमी समुदाय

1 लहदा अथवा पश्चिमी पजाबी

2 सिन्धी

ख) दक्षिणी समुदाय

1 मराठी

2 पूर्वी हिन्दी

ग) पूर्वी समुदाय

1 उडिया

2 बिहारी

3 बगाली

4 असमिया

(आ) मध्य शाखा–

घ) मध्य समुदाय

1 राजस्थानी

ड) आभ्यन्तर शाखा–

ई) केन्द्रीय समुदाय

1 पश्चिमी हिन्दी

2 पजाबी

3 गुजराती

4 भीली

5 खानदेशी

च) पहाड़ी समुदाय–

1 पूर्वी। पहाडी अथवा नेपाली

2 केन्द्रीय पहाडी

3 पश्चिमी पहाडी भाषाए ।

ग्रियर्सन का दूसरा वर्गीकरण इस प्रकार है–

अ) मध्यदेशीय (पश्चिमी हिन्दी)

आ) आभ्यान्तर (पजाबी, राजस्थानी, गुजराती, पूर्वी। हिन्दी और पहाडी भाषाए)।

इ) बाह्य (लहन्दा, सिन्धी, मराठी, उडिया, असमिया, बगाली और बिहारी भाषा) ।

ग्रियर्सन के वर्गीकरण के आधार पर भाषा की ध्वनि, रूप और शब्द समूहो मे समानता है। डा0 चटर्जी ने ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत भाषा-साम्य के आधार की आलोचना कर अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। उनका "बंगला भाषा के उत्पत्ति और विकास" में प्रस्तुत वर्गीकरण इस प्रकार है-

1) दक्षिणात्य - मराठी, कोकणी ।

2) प्राच्य -असमिया, बगाली, उडिया, मैथिली, मगही, भोजपुरी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढी ।

3) मध्यदेशीय - बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, हिन्दुस्तानी ।

4) प्रतीच्य - मालवी, निमाडी, मेवाती, गुजरी, जयपुरी और हतौडी, पश्चिमी गुजराती, पश्चिमी मारवाडी ।

5) प्रतीच्य (नागरी और पालि प्रभवित) - सिहली, मालदीवान।

6) उदीच्य - पूर्वी पजाबी, लहदा, सिन्धी, जिप्सी ।

7) उदीच्य (खस) - पश्चिमी पहाडी भाषाए, गढवाली, कुमाऊँनी, नेपाली ।

डा0 चटर्जी के वर्गीकरण के बाद भी अनेक वर्गीकरण दिखाई पडे लेकिन आधार वही ऐतिहासिक क्षेत्रीय और भाषा की विशेषता ही है । ऐतिहासिक और भौगोलिक आधार पर एक और वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है-

1) प्राच्य मागधी वर्ग - मैथिली, मगही, भोजपुरी, बगाली, असमिया, उडिया ।

2) मध्यपूर्वी अर्द्धमागधी वर्ग – अवधी, वघेली, छत्तीसगढी।

3) मध्यदेशीय शौरसेनी वर्ग – ब्रज, बागरू, कन्नौजी, बुन्देली, राजस्थानी भाषाएं तथा गुजराती ।

4) दक्षिणात्य महाराष्ट्री वर्ग – मराठी, कोकणी ।

5) उदीच्य पैशाची वर्ग – सिन्धी, लहन्दा, पजाबी ।

6) हिमाली खस वर्ग – पश्चिमी पहाडी भाषाए, गढ़वाली, कुमाऊँनी, नेपाली ।

उपर्युक्त आधुनिक आर्य भाषाएं अभी के प्रमुख भाषाओ मे से है। सम्पूर्ण आधुनिक आर्यभाषा और भाषिकाओ की गणना यदि की जाय तो एक लम्बी सूची बन जाएगी, लेकिन हमारा प्रयोजन नेपाली भाषा की उन्नति और विकास क्रम दिखाना ही है, अत यहा हिमाली क्षेत्र की खस भाषा की सक्षिप्त चर्चा करेंगे ।

नेपाल की उप–भाषाये
हिमाली भाषा

डा0 ग्रियर्सन के अनुसार हिमाली भाषाओ का क्षेत्र भारत के पजाब राज्य के उत्तर भाग भद्रवाह से नेपाल के पूर्वी क्षेत्र तक फैला हुआ है, लेकिन यह क्षेत्र वास्तव मे अभी व्यापक है। नेपाल के पूर्वी क्षेत्र से भी पूर्व के पश्चिम बगाल, सिक्किम, भूटान, असम और नागाहिल्स समेत यह भाषा बोली जाती है। हिमाली भाषा के क्षेत्र मे अन्य भाषा भी बोली जाती है । उच्च हिमाली प्रदेश और कही कही महाभारत पर्वतमाला मे भी यह भाषा तिब्बत बर्मी परिवार की

भाषा के साथ कन्नौजी, पजाबी, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, राजवशी आदि भाषा बोली जाती हे ।

हिमाली भाषाओं के विभाजन तीन मुख्य समुदाय मे किये गये है। उनको हिमाली कहने का खास आधार भाषा की विशेषता ही है (पूर्वी पहाड़ी) (नेपाली) केन्द्रीय पहाड़ी (कुमाऊँनी और गढ़वाली) और पश्चिम पहाडी (सिरमौरी, बघाती, किउन्थली, कुलुपी, भाण्डेअली, सुकेती, चमेअली, भद्रवाही, पड़ोरी आदि) हैं। भारत की 1961 की जनगणना मे भारत में हिमाली आर्य भाषा बोलने वालो की सख्या 45,61,750 है और इनमें नेपाली भाषा–भाषियों की सख्या 10,30,254 है। कुमाऊँनी को छोड़कर इस शाखा के भाषा–भाषियो मे नेपाली बोलने वालो की सख्या ही सबसे ज्यादा है ।

पश्चिमी पहाड़ी भाषाए

हिमालय के पश्चिमी भाग मे रहने वाली जातियो के द्वारा बोली जाने वाली अनेक भाषाओ को पश्चिमी पहाडी नाम दिया गया है। यह पजाब के उत्तर पूर्वी पहाड़ मे भद्रवाह, चम्बा, भण्डी, सिमला, चकराता, बाहुल, स्थिति आदि जगहो मे तथा इसके अगल–बगल मे बोली जाती है । भारत के 1961 के जनगणना के अनुसार इनकी सख्या 6,59,556 मिलती है। इसकी प्रमुख भाषिकाओ मे– सिरमौरी, बघाती, चमेअली, म्योठली और बहित्या, सिराजी, सोदोची (सतलज वर्ग) कुलुपी, झतरी, (कुल्लू वर्ग) भण्डेल्नो, पहाड़ी, सुकेती (मडी वर्ग का), भद्रवाही, पाडरी, भरेसी (भद्रवाह वर्ग) लाइली और हमीरपुरी भी इसी वर्ग के है।

गढवाल की भाषा गढवाली है। पुराणो मे इसका नाम केदार खण्ड,

उत्तराखंण्ड आदि है। ई0 1961 की जनगणना मे 8,09,146 गढ़वाली भाषा-भाषी भारत में दीखते है। यह संख्या भारत के नेपालियो से कम है।

यह टेहरी, अलमोडा और सहारनपुर, देहरादून, बिजनौर तथा मुरादाबाद के कुछ भागो मे बोली जाती है । इसकी लिपि देवनागरी ही है ।

गढ़वाली के साथ ही कुमाऊँनी का भी नेपाली से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सिंजाली गढ़वाली और कुमाऊँनी एक ही भाषा की सन्तान है।

कुमाऊँनी

कुमाऊँनी और सिजाली का स्त्रोत एक ही है। एक ही साथ कुमाऊनी, गढ़वाली और नेपाली का उद्भव तथा विकास हुआ होगा । ये तीनो भाषाए विक्रम सवत तेरहवी शताब्दी तक एक ही होगी । उसके बाद ही ये स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई होंगी । कुमाऊँ (कूर्माचल) की भाषाको कुमाउनीया, कुमैयाँ कहा जाता है। यह भाषा अभी अल्मोडा, नैनीताल, पिथौरागढ़, चामधैली और उत्तराचल मे बोली जाती है। कुमाऊँनी के पूर्व मे नेपाली भाषा, दक्षिण मे पाचाली हिन्दी, पश्चिम मे गढवाली और उत्तर मे तिब्बती बोली जाती है ।

नेपाली

नेपाली को ग्रियर्सन ने पूर्वी पहाड़ी कहा है। यहा नेपाली भाषा के ऐतिहासिक क्रम-विकास की सक्षिप्त चर्चा करेगे ।

नेपाली भाषा के इतिहास को मोटे रूप से तीन काल मे विभाजित किया जा सकता है –

क) प्राचीन नेपाली – प्रारम्भ से ई0 की चौदहवी शताब्दी तक ।

ख) मध्यकालीन नेपाली – पन्द्रहवी शताब्दी से उन्नीसवी शताब्दी तक।

ग) आधुनिक नेपाली – बीसवी शताब्दी से अब तक ।

प्राचीन नेपाली

"प्राचीन काल से ही हिमाली क्षेत्र के पशिचमी भाग मे बड़ी केदार जैसे तीर्थस्थल होने के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे आर्यभाषा-भाषी जन आते रहते थे । इस प्रकार आने वालो मे से कुछ वही रूक गये । इस प्रकार यहा रहने तथा नये आगन्तुको की सख्या बढते जाने के कारण इस क्षेत्र मे आर्य भाषा भाषियो की सख्या बढती गयी । भारत मे मुसलमानो द्वारा पीडित शरणार्थी बहुत बडी सख्या मे कुमाऊँ, गढवाल आये और नेपाल तराई होते हुए ये पहाडी क्षेत्र मे भी प्रवेश पा गये। इस प्रकार क्रमश नेपाल के कर्णाली, गण्डकी और वागमती क्षेत्र मे आर्य भाषा-भाषी जन का प्रसार हुआ । कर्णाली क्षेत्र मे पहले से ही आकर रहने वाले खसो के बीच कुछ कुमाऊँ और गढवाल की तरफ से आने वाले और कुछ सीधे तराई की तरफ से आने वाले मिलकर रहने लगे। लेकिन शुरू मे विशेष

प्रभुत्व खसों का ही था। पश्चिमी क्षेत्र मे जनसख्या के घनत्व और आबादी जगह जमीन की कमी से पुराने और नवागन्तुक खस, राजपूत और ब्राह्मण क्रमश पूरब की तरफ बढ़े और क्रमश गंण्डकी, वाग्मती और कोशी क्षेत्र मे फैल गये।[1] इसी समय अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 मे चित्तौर पर आक्रमण किया और रत्नसिह के भाई, लडके इधर–उधर भागते चले। रत्नासिह के भाई कुम्भकर्ण के वशज कुमाऊँ आये और उसके बाद पाल्पा जाकर वहा अपने राज्य का विस्तार करने लगे। इनकी भाषा शौरसेनी अपभ्रश से विकसित राजस्थानी थी।[2] पूरब तरफ गये हुए खस ब्राह्मणो की भाषा[1] को गुरूड, मगर, तमाड, नेवार, राई, लिम्बू आदि भाषा–भाषियो ने "खसकुरा" कहा । "नेपाली" भाषा के इस युग मे हम काचल्ल, अशोकचल्ल, लितारीमल्ल, रिपुमल्ल, आदित्यमल्ल, पुष्यमल्ल, पृथ्वीमल्ल, कर्णाली, अचल के राजाओ के द्वारा राज्य विस्तार मिलता है तो साथ ही विशाल खस राज्य पृथ्वीमल्ल के बाद छिन्न–भिन्न होने के प्रमाण भी मिलते है। इस प्रकार अलग–अलग होने के बावजूद नेपाली भाषा–भाषी पहाडी क्षेत्र मे जिधर–तिधर फैलने लगे और भाषा के माध्यम से अखण्डता की आधारशिला निर्मित हुई।

नेपाली भाषा का प्राचीनकाल इसका प्रथम प्रसारकाल है, इस समय इसका मूल स्थान कर्णाली अचल होने के बाजूद भी यह पूर्वी पहाडी क्षेत्र मे भी फैलने लगा था । तेरहवी शताब्दी के अन्त मे काठमाडू पर आक्रमण करने वाले खस राजा जितारीमल्ल और उसके बाद आने वाले रिपुमल्ल और आदित्यमल्ल के

---

1 श्री चूडामणि उपाध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा की उत्पत्ति, पृ0 50–51

2 सूर्य विक्रम शबाली – नेपाली भाषा के विकास का सक्षिप्त इतिहास।

के साथ आने वाले कुछ प्राचीन नेपाली भाषा–भाषी यही बस गये। आदित्यमल्ल का नेपाली मे लिखा हुआ ई0 स0 1321 का अभिलेख गोर्खा जिला के "ताघवाई" नामक एक "गुम्बा" मे मिला और यही अभी तक प्राप्त नेपाली भाषा का सर्वप्राचीन नमूना है।[1] मोटामोटी तौर पर आधुनिक आर्य भाषा का समय के और इसके बाद का नमूना हम प्राचीन बगाली, मैथिली, गुजराती, मराठी, राजस्थानी भाषाओ का हम पाते है तो प्राचीन नेपाली का लिखित नमूना भी। 1321 ई0 तक का पाते है। इस प्रकार आदित्यमल्ल का ताम्रपत्र (1321), पुण्यमल्ल का तामपत्र (1328, 1336, 1337 ई0) पृत्वीमल्ल का कनकपत्र (1356) और ताम्रपत्र (1358), अभयमल्ल का ताम्रपत्र (1346 ई0), मोदिनी वर्मा का ताम्रपत्र (1393 ई0), ससार वर्मा का तामपत्र (1396 ई0), बलिराज का ताम्रपत्र (1398 ई0), मेदिनी वर्मा और अजितवर्मा का ताम्रपत्र (1437 ई0), विवोधशाही का ताम्रपत्र (1498 ई0) आदि ताम्रपत्रो मे प्राचीन नेपाली का नमूना मिलता है[2]

मध्यकालीन नेपाली

मध्यकालीन नेपाली का समय ई0 की सोलहवी शताब्दी से ई0 के उन्नीसवी शताब्दी तक है। सुविधा के लिए इस काल को पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल मे विभाजित किया जा सकता है । नेपाल के एकीकरण से पूर्व का समय नेपाली भाषा का पूर्वमध्यकाल है तो उसके बाद का समय उत्तरमध्य काल है ।

---

1 मोहन प्रसाद – मध्यकालीन अभिलेख, पृ0 1–8

2 चूडामणि उपाध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा की उत्पत्ति, पृ0 52

पूर्वमध्यकाल नेपाली भाषा–भाषियो के लिए दूसरा प्रसार युग है। सोलहवी शताब्दी तक भी भारत के पड़ोसी राज्यो से पहाडी मे आने वालो तथा पश्चिम से पूरब की ओर जाने वालो का क्रम विच्छिन्न नही हुआ था। मुसलमानो के आक्रमण से बचने के लिए अब कुमाऊँ भी सुरक्षित नही रहा। इस कारण कन्नौज के ब्राह्मण, राजस्थान के राजपूत तथा कुमाऊँ और गढ़वाल के खस ब्राह्मण भी नेपाल आने लगे । 1620 ई0 में जहागीर के गढ़–कुमाऊँ पर आक्रमण के बाद बहुत से लोग अपने जानमाल, धर्म की रक्षा के लिए नेपाल आ गये। ये नवागन्तुक ब्राह्मण अपने धार्मिक आचरण मे कट्टर होने के बाजूद अपने आचार–विचार मे कुछ उदार थे । अत पूर्वागत "पूर्विया" और नवागत कुमैया के बीच रीति–रिवाज मे कुछ भिन्नता के बाजूद इधर आने पर उनकी भाषा मे कुछ अनतर नही रहा ।[1]

सोलहवी शताब्दी मे नेपाली भाषा–भाषियो का विस्तार और तेजी से होने लगा । पात्या के सोनवशी राजा मुकुन्दसेन के (1518–1553) राज्य विस्तार होने के बाद नेपाली भाषा–भाषी पूर्वी क्षेत्र मे फैले और नेपाली भाषा ने भोजपुरी और मैथिली के साथ भोट–वर्मी भाषाओ से भी प्रभाव ग्रहण किया। पीछे सत्रहवी शताब्दी मे कुछ नेपाली भाषा–भाषी बिहार के रामनगर मे आकर बसे। इसी समय एक तरफ तराई के साथ जुडे हुए क्षेत्रो से विशेषत सवर्ण भाषाओ के प्रभाव आए तो दूसरी ओर पडोसी भाषाओ के मार्फत अरबी, फारसी शब्द भी नेपाली भाषा मे दिखाई पडने लगे। इस समय मे काठमाण्डो मे मल्ल राजाओ

---

1 कालिभक्त पन्त हाम्रो सास्कृतिक इतिहास, पृ0 51–53

2 श्री चूडामणि उपध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा की उत्पत्ति, पृ0 53

के तीन राज्य थे। यहा की मुख्य भाषा नेवारी थी लेकिन मैथिली भी मल्ल राजाओ के समय की प्रमुख साहित्यिक भाषा थी । इस समय तक नेपाली का प्रसार क्षेत्र हमें लक्ष्मी नरसिह मल्ल के शिलालेख (1341) और प्रतापमल्ल के शिलालेखो (1670) से स्पष्ट होता है ।

सोलहवी शताब्दी के बाद कर्णाली अचल मे छोटे–छोटे बाईस राज्य थे, लेकिन उनके द्वारा प्रयुक्त नेपाली भाषा का नमूना प्रचुर मात्रा मे मिलता है। भानशाही, सुतिशाही, सग्रामशाही, साइमल्लशाही, वीरभद्रशाही, जहांगीरशाही, सुरन्यशाही, सुदर्शनशाही के अभिलेखो से पूर्वमध्यकालीन नेपाली के केन्द्रीय भाषा का नमूना मिलात है । इसी तरह पश्चिमी भाषिका का नमूना हमे वाणी विलास के ज्वरोत्पत्ति चिकित्सा (1716) और प्रेमनिधि पन्त के प्रायश्चित प्रीप (1723) तथा "नृपश्लोकी" मे मिलता है। 1650 ई0 के आसपास लिखी गयी "वाजपरीक्षा" मे ब्रजभाषा का भी प्रभाव दिखता है ।

मुस्लिम धर्मावलम्बी चूडीहारे नेपाल के पहाडी क्षेत्र मे इसी समय पूर्वी और पश्चिमी भाग मे फैले तथा चूडी बनाकर स्थानीय जनता के बीच बेचकर वे वहा जम गए। अपनी एक अलग भाषा लेकर आए हुए इन मुसलमानो की भाषा का नेपाली पर प्रभाव पडा और इस तरह उर्दू मिश्रित नेपाली का जन्म हुआ। [1]

नेपाली भाषा–भाषी इस अवधि मे पहाड़ी क्षेत्र मे व्यापक रूप से फैल गये। पश्चिम से पूरब को आने वाले नेपाली भाषा–भाषियो की सख्या बढने

---

1 कालिभक्त पन्त – उद्धृत ने0प0उ0, पृ0 54

के कारण यहा के भोट-वर्गी भाषी के बीच आपसी सम्पर्क के लिए माध्यम भाषा के लिए नेपाली प्रयुक्त हुआ ।उस समय की चौबीस राज्य मे नेपाली प्रशासन भाषा बनी । नेपाली इतना विस्तृत हो जाने के कारण ही श्री 5 बड़ा महाराज पृथ्वीनारायण शाह द्वारा नेपाल के एकीकरण मे आसानी हुई ।

उत्तर-मध्यकाल नेपाली भाषा का तीसरा प्रसार युग है। विशाल नेपाल के निर्माण के बाद छोटे-छोटे राज्य विशाल राष्ट्र मे मिल जाने के कारण लोग अपनी सुविधानुसार वसोवस के लिए इधर-उधर फैलने लगे। नेपाली लोग तराई मे आये, पहाड़ के कोना-कोना मे फैल गये तथा नेपाली भाषा एकीकृत नेपाल के प्रशासन की माध्यम भाषा बनी । राजेन्द्र लक्ष्मी तथा बहादुरशाह के नायबी में नेपाल का विस्तार पूर्व विप्टा से पश्चिम कागडा तक होने पर कुमाऊँ नेपाल के भीतर आ गया और वहा भी नेपाली का प्रभाव पडा । नेपाली भाषा-भाषी दार्जिलिग तथा भूटान में भाग नही गये, बल्कि जगल ही जगल आसपास मे भी अपना डेरा-डण्डा जमा लिया । सुगौली सन्धि (1815 ई0) के बाद नेपाल के राजनीतिक सीमा निर्धारण के बाद भी नेपाली भाषा का विस्तार नही हुआ। 1820 ई0 मे ही कलकत्ता स्थित फोर्ट-विलियम कालेज के प्राध्यापक जे0ए0 एटन ने नेपाली भाषा का प्रथम व्याकरण लिखा । भीमसेन थापा के प्रधानमन्त्रित्वकाल मे नेपाली सेना मे अग्रेजीकरण होने पर अनेक अग्रेजी शब्द नेपाली मे आये। उसके बाद अग्रेजो से सम्बन्ध बढने के कारण भी अग्रेजी का प्रभाव नेपाली पर पडा । 1885 ई0 के आसपास ब्रिटिश फौज मे नेपाली जवानो के भर्ती होने की व्यवस्था हुई। उसके बाद नेपाल के बाहर जाने वाले मगर, गुरूड, राई, लिम्बू, नेवारी आदि भाषा-भाषी एक दूसरे से बोलचाल मे नेपाली भाषा का ही प्रयोग करते रहे ।

इसी समय पड़ोसी देश भारत मे पहले से ही चली आ रही ब्रजभाषा विशेष रूप से कविता के लिए स्वीकृत भाषा होने के कारण उसका प्रभाव लिखित नेपाली मे मिलता है, साथ ही कम मात्रा मे मैथिली और भोजपुरी के भी अश मिलते है। उसी तरह नेपाली भाषा मगर, गुरूड, थकाली, तामाड, चेपाड, नेवारी, धामी, राई, लिम्बू, सुनुार, लेपचा, धिमाल आदि भोर वर्मी और थास दरे, दनुवार, कुम्हाले, आदि आर्य परिवार की भाषाओ का विभिन्न जगहो मे बोली जाने वाली नेपाली भाषा पर प्रभाव पड़ा तथा नेपाली का इन भाषाओ पर । भारत के पड़ोसी भाषाओं के मार्फत नेपाली मे पुर्तगाली भाषा के शब्द के आये तथा प्रशासन के स्तरीकरण के सिलसिले मे अड्डा अदालत में अरबी, फ्रान्सीसी शब्द भी आये। भारत में ब्रिटिश शासन के बाद भी अड्डा–अदालत की स्वीकृत भाषा फारसी होने के कारण नेपाली मे भी, इनका प्रभाव स्वाभाविक था ।

उत्तरमध्यकाल मे नेपाली भाषा गण्डकी क्षेत्र को छोडकर वाग्मती क्षेत्र को अपना केन्द्र बनाने लगी थी । फिर भी उस समय नेपाली भाषा और इसके वक्ता को गोर्खाली ही कहा गया । स्वय आधुनिक नेपाल के निर्माता बडा महाराज पृथ्वीनारायण शाह के चिट्ठी–पत्री, उनके दिव्योपदेश, शान्तिवल्लभ के हास्यकदम्ब का नेपाली उल्था (1879 ई0) गोर्खा वशावली और पृथ्वीनारायण शाह की जीवनी भानुभक्त के हितोपदेश, मित्रलाभ (1776 ई0) जैसे कृति के साथ औषधिग्रन्थ, तीन आहान, राजधर्म, गीतगोविन्द, मुद्राराक्षस, पुराण, महाभारत, रामायण के अनुवाद जैसे प्रशस्त गद्यकृति मिलते है ।

अभी तक उपलब्ध पद्य नेपाल के निर्माण के बाद का ही मिलता है। भानुभक्त आचार्य ही इस युग के प्रतिनिधि कवि हुए जिनका रामायण नेपाली भाषा के प्रसार मे विशेष रूप से सहायक हुआ । उन्नीसवी शती के अन्त के

आसपास मोतीराम भट्ट ने नेपाली भाषा की उन्नति के लिए सक्रिय सहयोग दिया। उन्होने भानुभक्त की रचना को प्रकाशित कराया, सामूहिक रूप मे साहित्य सृजन की चलन चलाई, नेपाली मे नाटको का अनुवाद कर उर्दू और हिन्दी के नाटक, जो दरबार मे अभिनीत होते थे, उनको नेपाली मुखौटा दिया, पुस्तक तथा पत्र–पत्रिकाओं की तरफ ध्यान देकर आधुनिक युग की नीव डाली। उनकी भाषा मे ही हम आधुनिक नेपाली का अकुर पाते है, साथ ही भानुभक्त कालीन भाषा के लक्षण से भी युक्त है। अत हम "गोरखापत्र" के प्रकाशन (1901) के बाद की भाषा को आधुनिक नेपाली भाषा कहते है ।

आधुनिक नेपाली

स्थूल रूप से 1901 ई0 के बाद नेपाली भाषा आधुनिक युग मे पदार्पण करती है । गोरखापत्र के प्रकाशन के साथ नेपाली लेखन शैली ने बोलचाल की सरल और स्वाभाविक राह ली। नेपाली भाषा के वर्ण, व्याकरण और शब्द भण्डार मे परिवर्तन परिलक्षित होता है। नेपाली भाषा का व्याकरण और शब्दकोश का निर्माण होता है। पुस्तक पत्रिकाओ की सस्था की स्थापना प्रकाशन मे क्रमिक वृद्धि पठन–पाठन के माध्यम के रूप मे नेपाली विषय रखा जाना आदि महत्वपूर्ण घटना 20वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध अर्थात् 1950 तक के है। 1951 के बाद (प्रजातत्र के बाद) पत्र–पत्रिका और सस्था की सख्या बढी, नेपाली भाषा मे हिन्दी और अग्रेजी के बढते हुए प्रभाव को रोकने के लिए "अर्रोवादी आन्दोलन" शुरू हुआ। विभिन्न विषयो मे पुस्तको का प्रकाशन, देश–विदेश के रेडियो से नेपाली मे समाचार और कार्यक्रम का प्रसार और देश–विदेश से नेपाली भाषा का अध्ययन अनुसधान होने लगा । विश्वविद्यालय तथा अन्य सस्थाओ की स्थापना नेपाली भाषा ने नेपाल के सविधान मे राष्ट्रभाषा के रूप मे सवैधानिक मान्यता प्राप्त की तथा शिक्षा और

प्रशासन के माध्यम के रूप मे नेपाली का व्यापक रूप मे प्रचार–प्रसार हुआ। नेपाली भाषा का आधुनिक युग नेपाली भाषा का चौथा प्रसार युग है। नेपाली भाषा–भाषी पहले और दूसरे विश्व युद्ध में ससार के कोने–कोने मे जाकर बढे। इस प्रकार बाहर जाने वाले नेपालियो मे से कुछ बर्मा मे रह गये जहा एक नेपाली समाज बन गया । इसी प्रकार 1947 मे ब्रिटिश फौज के नेपालियो का विभाजन होने पर चार रेजिमेंट ब्रिटेन के हिस्सा मे पडने के कारण, इसका मुख्य स्थान मलाया और सिगापुर हो गया, और यहा भी इसका एक नेपाली समाज बना। इधर भारतीय फौज मे भर्ती तथा अन्य किस्म के काम मे लगे नेपाली भारत के उत्तर प्रदेश बिहार, बगाल, आसाम तथा अन्य राज्यो मे तथा सिक्किम तथा भूटान मे स्थायी रूप से रह रहे है । नेपाल के भीतर भी पहाड़ से तरायी और तरायी से पहाड पर पूरब से पश्चिम, पश्चिम से पूरब आने–जाने के क्रम में नेपाली भाषाओ के विभिन्न भाषिकाओ के वक्ताओ मे भी एक दूसरे की भाषिका का प्रभाव पडा, लेकिन सब तरफ पूर्वी भाषिका पर आधारित राष्ट्रभाषा नेपाली का ही व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ ।

****

नेपाल के बाहर नेपाली की स्थिति

नेपाली भाषा–भाषियों[1] में नेपाली भाषा बोलने वाले पूर्वजो के वशज मात्र नही है, बल्कि नेपाल और नेपाल के बाहर की अन्य जातिया भी इसे मातृभाषा के रूप में अपना चुकी है । नेपाल के मगर, गरूड , नेवार, लिम्बू, सुनुवार, यामी, येपाड, राजी, व्यासी, भोटे, दरै आदि जातियो के द्वारा नेपाली को ग्रहण करने की बात 1952–54, 1961 और 1971 के जनगणना विवरण की तुलना से स्पष्ट होती है। भारत मे रहने वाले मगर, गरूड , नेवार, राई, लेम्बू, लेप्था और मोटे भाषा–भाषियो ने भी अपनी भाषा को छोडकर नेपाली भाषा को अपना लिया । सिक्किम के कतिपय आदिवासी इसे अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार कर चुके है ।

नेपाल के बाहर भारत मे नेपाली भाषा–भाषी[2] विभिन्न आर्य और अनार्य परिवार के साथ रहकर भी अपनी भाषा के अस्तित्व को कायम रखे हुए है। सिक्किम, वर्मा, मलाया, पाकिस्तान, सिगापुर, बगलादेश, दार्जिलिग, आसाम, देहरादून मे नेपाली भाषा बहुत अधिक सख्या मे है। उनका अपना एक समाज ही बनता जा रहा है । रूस, अमेरिका, चीन, विलायत आदि देशो मे यह विश्व की एक भाषा के रूप मे बोली जाने लगी है। नेपाल के साथ मैत्री सम्बन्ध के साथ ही इसका प्रसार क्षेत्र भी विदेशो मे बढता जा रहा है। 1921 की जनगणना के अनुसार नेपाली बालने वालो की सख्या भारत मे डेढ लाख से कुछ ही कम थी।[3]

---

1 श्री चूडामणि उपाध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 2–3

2 श्री गोपालनिधि तिवारी – नेपाली भाषा को बनोट, पृ0 18

3 डा0 भोलानाथ तिवारी – हिन्दी भाषा, पृ0 121

नेपाल के चौंदहो अचल में नेपाली भाषा की ही प्रधानता है। राष्ट्रभाषा होने के कारण इसके माध्यम से ही सभी बोलने लगे है ।

इस प्रकार नेपाली का प्रसार क्षेत्र दिनोदिन अत्यन्त व्यापक होता जा रहा है ।

नेपाली भाषा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समाज मे नेपाली भाषा का अध्ययन नेपाली और विदेशी विद्वानो द्वारा व्यापक रूप से हो रहा है। अभी भारत, अमेरिका, रूस, विलायत, चीन आदि देशो मे इस पर अनुसधान, पुस्तक–पत्रिकाओं का प्रकाशन, रेडियो प्रसारण आदि कार्य बडी तेजी से हो रहा है। समर इन्सिट्च्यूट ऑफ लिग्विस्टक्स की स्थापना के बाद नेपाल के विभिन्न भाषाओ के वर्णनात्मक अध्ययन के क्रम मे नेपाली पर भी सूक्ष्म रूप से अध्ययन हो रहा है। इसी सस्था से भाटिया हरी के सम्पादन मे बोल–चाल की नेपाली (कनवरसेशनल नेपाली) 1969 मे आस्टिनटे, ए होल्सहाउजेन वल्भमणि दहरा और चूड़ामणि बन्धु के सयुक्त लेखन मे भाषा के खडीय वर्गो के अध्ययन श्री बन्धु के ही सकलन और सम्पादन मे नेपाली भाषा की कम्प्युटर शब्दनुक्रमणिका, भाटिया हरी का नेपाली वाक्यो का शोध पत्र (टेंटेटिव सिस्टमैटिक आर्गेनाइजेशन आफ नेपाली सेंटेसेज) आदिप्रकाशित हुए।

इसी तरह फ्रैकलिन सी साउथबर्थ का रूपानतरण व्याकारण पूना से 1967 मे प्रकाशित हुआ । इसका नाम है नेपाली ट्रासफॉर्मेशनल स्टक्चर्स ए स्केच। 1969 मे केरल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के विद्यार्थी ने नेपाली भाषा के विभिन्न पक्षो पर शोध पत्र लिखा। दार्जिलिग मे नेपाली के प्रयोग,

अनुसधान और मौलिक लेख, उच्च कक्षा मे अध्ययन और इसको सवैधानिक मान्यता दिलाने का कार्य चल रहा है ।

1969 मे ही एशियाई जन एकता का अनुसधान केन्द्र, विज्ञान एकामी सोवियत सघ से 3600 शब्दो का "नेपाली रूसी शब्दकोश" का सम्पादन ई0स0 राविनोमिच न0ई0 कारोसेम और ल0आ0 आगानीना के द्वारा किया गया। इस कोश के अन्त में नेपाली भाषा का सक्षिप्त व्याकरण भी प्रस्तुत है। अमेरिका के कौनेल विश्वविद्यालय की श्रीमती अब्दुल्की ने 1969 मे एम ए के शोधपत्र के रूप में कारक व्याकरण और नेपाली भाषा और 1974 मे पी0एच0डी0 के शोध पत्र के रूप मे डा0 ग्राइम्स के सिद्धान्त के आधार पर नेपाली वाक्य का अर्थपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया । 1974 मे ही श्री बल्लभमणि दाहाल का पूना विश्वविद्यालय मे लेख्य और कथ्य नेपाली का वर्णन ए टिक्रपशन ऑफ नेपाली लिटरेरी एण्ड कोलोकिपल शीर्षक विषय मे पी एच डी के लिए शोध प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार नेपाली के अनय विद्वान रात-दिन नेपाली भाषा के भण्डार की श्री वृद्धि मे क्रियाशील है। देश और विदेशो मे शोध कार्य क्रियान्वित हो रहे है।

नेपाल के वाह्य सम्पर्क मे क्रमिक वृद्धि विदेशियो का नेपाल आगमन और नेपाल की भाषा सस्कृति और अन्य विविध विषयो मे ज्ञान प्राप्त करने तथा अनुसधान के कार्य मे अभिरूचि प्रकट हो रही है, एक तरफ देश के बाहर नेपाली भाषा का प्रयोग पठन-पाठन और अनुसधान का कार्य हो रहा है तो दूसरी ओर देश के भीतर सम्पूर्ण नेपाली जीवन के अभिन्न अग के रूप मे नेपाली भाषा का प्रयोग दिखायी पडता है। सरकारी स्तर से नेपाली भाषा के सवर्धन के क्षेत्र में हुए प्रत्यक्ष कार्य जैसे-प्राविधिक शब्दावली का निर्माण सचार और शिक्षा के माध्यम

के रूप मे नेपाली का प्रयोग प्रशासन तथा न्यायालय मे नेपाली का प्रयोग, सस्थाओ के माध्यम से नेपाली की अभिव्यक्ति क्षमता मे विकास का प्रयत्न तथा पचायत स्थानीय विकास योजनाये गांवो के भोर राष्ट्रीय अभियान जैसे कार्यों से भी नेपाली भाषा के व्यापक प्रयोग मे भी सहायता मिली है ।

स्वर्गीय श्री पाँच महाराजाधिराज महेन्द्र की सदिक्षा से उनके ही कुलपतित्व मे नेपाली भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए "रायल नेपाल एकेडेमी" की स्थापना 1957 में हुई। नेपाली भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए एकेडमी की देन एव सहयोग महत्वपूर्ण है। नेपाली साहित्य सस्थान की स्थापना कवि केदारमान व्यथित के प्रयास से 1962 मे हुई। इस सस्था ने देश के विभिनन स्थानो मे तथा देशव्यापी साहित्य सेमिनारों द्वारा नेपाली भाषा और साहित्य की समस्याओ पर विचार-विमर्श कराकर इसके प्रचार और उन्नति मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सक्षेप मे नेपाली नेपाल अधिराज्य के समस्त राष्ट्रीय राज कार्य शिक्षा दीक्षा सस्कृति और साहित्यिक कार्य-कलाप की माध्यम भाषा है। नेपाली नेपाल मे एकछत्र राज्य स्थापित कर अपनी विजय पताका फहराते हुए बड़ी तेजी से चारो ओर विश्व मे फैलती जा रही है ।

और बोलने वालो की आवासीय स्थिति यानि उनकी आबादी की सघनता की दृष्टि से भाषायी वर्गीकरण अधिक उपयुक्त ठहरता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से भी नेपाल का लगभग उसी प्रकार वर्गीकरण अब तक के सभी नेपाली एव विदेशी भूगोलवेत्ताओ ने किया है। नेपाल के प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता डा0 हर्कबहादुर गऊड़ ने नेपाल को प्रकृतिक बनावट की दृष्टि से चार भागो मे बाटा है, पर भाषिक और आबादी की दृष्टि से डा0 गऊड के वर्गीकरण का सुदूर उत्तरी "भोर" (उपत्यका) क्षेत्र जो तिब्बत की सीमा से लगता है, यह नेपाली भाषा के क्षेत्र के अन्तर्गत ही किया जाएगा । क्योंकि एक तो उस क्षेत्र मे आबादी नगण्य है, दूसरी बात वहा भोट या तिब्बती भाषा–भाषी जो भी थोड़े–बहुत लोग तिब्बत से आकर बस गये है, वे 1953 ई0 से तिब्बत पर चीन के आक्रमण की आन्तरिक प्रक्रिया शुरू होने या आक्रमण के बाद से अब तक बसने वाले लोग है। इसलिए उनका अपना कोई भाषायी क्षेत्र नही है और है भी तो नही के बराबर जो यहा उल्लेखनीय नहीं दीखता।

नदी, घाटी, पर्वत आदि का भाषाओ की स्थिति के बीच विभाजक रेखाए खीचने मे बहुत बडा हाथ होता है। नेपाल तो स्वय प्राकृतिक रूप से ही उपर्युक्त तीन क्षेत्रो मे बटा हुआ है। इसलिए भी इन्ही तीन आधारों पर भाषायी वर्गीकरण ठीक जँचता है ।

पहाडी क्षेत्र और नेपाली भाषा

नेपाल का सुदूर उत्तरी और उत्तरी क्षेत्र जो इस देश की पूर्वी सीमा मेदी नदी से पश्चिमी सीमा महाकाली नदी तक फैला हुआ है, यही क्षेत्र पहाडी प्रदेश क नाम से जाना जाता है। इस प्रदेश के उत्तर मे चीन शासित तिब्बत की सीमा लगती है और दक्षिण मे नेपाल का तराई प्रदेश पडता है। यह पहाडी प्रदेश इस देश के सिर तथा दोनो ओर फैली दो बाहुओ के समान है जिस पर इस राष्ट्र

को गर्व है तथा यहा के लोगो की भुजाओं के शौर्य उनकी वीरता और चमकती "खुकरियों" की धार मे सदा से इस देश का मस्तक ऊँचा रखा है। नेपाली मूलरूप से इसी पहाडी प्रदेश की भाषा है। यूँ इस पहाडी प्रदेश मे विभिन्न जातिया रहती है जिसमें सामाजिक मर्यादा और आर्थिक सम्पन्नता की दृष्टि से क्षत्रिय एव ब्राह्मण श्रेष्ठ जातिया है। वर्तमान समय तक की सेना और प्रशासन मे यही दो जातिया मुख्य भूमिका लेती आयी है। नेपाल एक हिन्दू राष्ट्र है। इसलिए सामाजिक और धार्मिक दायित्व यहां के विनीत हिन्दू नरेशो ने सदा से ब्राह्मण के कन्धो पर डाल रखा है। धर्म जिस राज्य का प्रमाण हो राजा जहा सदा से कर्मचारी क्षत्रिय रखा हो वहां दायित्वों का यह बंटवारा सस्कारजन्य, स्वाभाविक तथा हिन्दू धर्मानुकूल भी है। दूसरी ओर इसे यहा के वीर क्षत्रियो तथा क्षत्रिय कुल मे श्रेष्ठ ठकुरी वशी महान नृपतियों, राजपुरूषों को एकाग्रचित्त होकर देश की सुरक्षा, राजनीतिक स्थिरता और न्याय को कामयाब रखने का भरपूर अवसर भी प्राप्त होता रहता है ।

नेपाली का पुराना नाम "खसकुरा", "खसभाषा" अथवा पर्वतिया

मुख्यरूप से नेपाली, जिसका पुराना नाम "खसभाषा" या "खसकुरा" है, इन्ही पश्चिम नेपाल के पहाड़ो मे भारत से प्रवेश कर पूरब की ओर फैलती गयी। लडाकू खस जाति या खस वर्ग, जो बाद मे अपनी बीसा के लिए प्रसिद्ध क्षत्रिय के नाम से जाने जाते रहे है, उनकी भाषा है। खसो के सम्बन्ध मे वैसे कई धारणाए पायी जाती है, पर यह निश्चय अब कर सकना मुश्किल है कि भारतीय इतिहास के पन्नो पर कई बार उभरी वह प्राचीन उस जाति और इस क्षत्रिय जाति मे कितना कौन घुलमिल गया है। वैसे कुमाऊँनी भाषा की जाति मूलक कहावतो मे क्षत्रियो के लिए अब भी "खस" या "खशिया" सम्बोधन का प्रयोग

मिलता है।[1] डा0 कमल प्रकाश मल्ल ने क्षत्रियो के लिए ही "खस" सज्ञा का प्रयोग किया है तथा उन्हे, ठक्कुरियो एव ब्राह्मणों को भारत से आया मानते है। भारत मे विभिन्न मुस्लिम आक्रमणो के फलस्वरूप राजस्थान से हिन्दू राजपूत (क्षत्रिय) योद्धाओ की जो अनेक टोलियां निरन्तर गढ़वाल, कुमाऊँ प्रदेश होते हुए पूरब की ओर के पहाडो मे फैलती गई, सम्भव है उनके चपेट मे नेपाल

---

1 दक्षिण उत्पन्न सिर्फ एक भाषा जो इन पहाड़ों मे बोली जाती है वह है खस या पर्वतिया – जो एक भारतीय प्राकृत है, यहा उनके बीच ई0 बारहवी से पद्रहवी शताब्दी मे उपनिवेश के क्रम मे लायी गई और अब सामान्यतया यह इतना बिखरा हुआ है कि महाकाली के पश्चिमी क्षेत्र मे इसने वहा की स्थानीय बोलियो को लगभग समाप्त ही कर दिया है। वैसे उस नदी के पूर्वी इलाके मे वह इतनी सुविधा से नही बढ़ पाई उसके पीछे यह बात थी कि इधर त्रिशूलगगा बीच मे पडती थी जिसने इस भाषायी साम्राज्य को आगे बढ़ने से रोका । उसने पूरब मे वहा की स्थानीय मातृभाषाओ को और पश्चिम मे खस या पर्वतिया दो अलग भाषायी साम्राज्य को लगभग समान रूप से विभाजन कर रखा था । पर्वतिया भाषा सरल, शब्दग्राही और अशिक्षितो के द्वारा बोली जाने वाली थी, पर उन जोशीले सैनिको और राजपुरूषो ने जो इसकी बोली बोलने वाले थे, इसे योग्य बनाया। लगभग इसकी पूरी वाक्य-रचना और प्रत्येक दस मे से आठ शब्द वास्तव मे हिन्दी है।

के पश्चिमी पहाडो मे कुछ पहले से आकर रह रही साक्त खस जाति भी पूरी तरह आ गई हो तथा जिनकी गति को रोक पाना उनके लिए बिल्कुल असम्भव भी था । परिणामत वह विशाल क्षत्रिय जाति मे घुलमिल कर अपना जाति सूचक खस नाम भी खो चुकी हो, लेकिन उनकी भाषा ने अपना कोई न कोई स्वरूप फिर भी बना रखा होगा, जो उन क्षत्रिय वीरों की अपनी भाषा पश्चिमी हिन्दी यानी राजस्थानी के साथ सम्प्रक्त होकर क्रमश हिन्दी से साधारण भिन्नता मे विकसित होती गई हो।[1] फिर भी जब तक उसका एक स्पष्ट स्वरूप न बन गया हो तब तक वह उस क्षेत्र की भाषा खसकुरा के नाम से हीलोगो से आहृत होती रही हो । इतना निश्चित रूप मे कहा जा सकता है कि खसकुरा पश्चिमी नेपाल और गढ़वाल कुमाऊँ की कोई एक अच्छी बोली थी जिसका कोईलिखित

---

1 "खशि नैं जड "खशिया (क्षत्रिय) को नहाकर जाड़ा होता है,
बमन से जाड ब्राह्मण को भोजन के बाद जाड़ा लगता है।"
खशिया कि रीस खशिया का क्रोध भयकर होता है, उसके क्रोध को भैसे
भैंसा कि तीस की प्यास सदृश कहा गया है।"
खशि मनै ठाड ठाड खशिया मनाने से भी नही मानता, अकडा रहता है।
खशिये कि उल्टि खेपडि "खशिया को बुद्धि नही होती ।"
खशियैल पी भैसक दूद भैंस का दूध पीते रहने से खशिये मे सूझ-बूझ नही
दी सूज न बूज रहती ।"
खशिये मित्यारि नै खशिया को कभी मित्र नही बनाना चाहिए ।"

"कुमाऊँनी लोक-साहित्य तथा गीतकार", डा0 भवानीदत्त उत्प्रेती, प्रथम सस्करण 1976 पृ07

साहित्य तो नही था, पर लोगो की जुबान पर उसका कोई प्रचलित लोक साहित्य अवश्य था ।

उन वीर क्षत्रिय योद्धाओ के पश्चिम से नेपाल मे प्रवेश करने पर जो हाल खसो और वह्म की स्थानीय भाषाओ का हुआ होगा लगभग वैसी ही स्थिति की चर्चा हॉग्सन महोदय ने उनके मध्य तथा पूर्वी पहाडो मे फैलने के बाद परिणामो के सन्दर्भ मे की है। वह नेवारी का उदाहरण देते हुए नेपाली द्वारा उसे अतिक्रमितकर मिटाये न जा सकने के पीछे तर्क देते हुए लिखते है कि सम्भवत नेवारो की भाषा को, उनका अलग राज्य होने के कारण विकास और सम्प्रेषण की सुविधा उसे स्वत प्राप्त हो चुकी थी। उससे उसे वचित नही किया जा सकता था, पर उनके धर्म (बौद्ध) की दोनो ही, पुराने हिन्दू आगन्तुक तथा नये हिन्दू विशेषताओ ने ईर्ष्या की दृष्टि से अवश्य देखा। पहाड़ी प्रदेशो मे बात कुछ भिन्न थी और इसके अतिरिक्त चाहे जो कारण रहा हो नवागन्तुको का जो ज्वार दक्षिण से आता रहा वे मुख्य रूप से त्रिशूली के पश्चिम मे बसते गये । ब्राह्मणप्रधान (वर्णाश्रमप्रधान) हिन्दू धर्म अब तक भी इसलिए वहा प्रमुखत फैलता रहा है क्योंकि इसके सबसे बडे समर्थक "खस" (क्षत्रिय) जाति तथा उनके बाद "मगर" और "गुरूड" जाति थी ।

दक्षिण (भारत मे तात्पर्य) से आने वाले वे नवागतुक लोग वे शरणार्थी थे जो वहा निरन्तर मुस्लिम आक्रमणो के कारण इधर आने को बाध्य हुए थे तथा वे सख्या मे इतने अधिक थे कि पहाडो पर रहने वाले असभ्य और यत्र-तत्र बिखरे मूलवासियो के ऊपर अपनी भाषा एव धर्म की छाप डालने मे पूरी तरह समर्थ हो गये । ब्राह्मणप्रधान हिन्दू वर्णाश्रम धर्म की सहज व्यापकता और गहरी जडो

के कारण ही नेपाल मे सस्कृत जानने वालो की सख्या बहुत अधिक है।[1] उसमे भी आज भी उनकी सख्या पश्चिम के पहाडो मे सर्वाधिक है। रास्थान की ओर से जाने वाले वीर क्षत्रिय योद्धाओं ने जब नेपाल मे प्रवेश प्रारम्भ किया तो उनके साथ उनके आश्रित ब्राह्मण लोग भी स्थायी रूप से ले आये धर्म और अपने आश्रयदाता राजा मे निष्ठा रखने वाले थे। ब्राह्मण उनके सुख दु ख के सदा सत्वर रहे है। मुस्लिम आक्रमणो से टूटे हुए और निराश इन योद्धाओ को पुन शक्ति सगठन कर नये राज्य स्थापित करने की प्रेरणा देने वाले भी अवश्य ही ये ही लोग रहे होंगे। धर्मविहित समाज के निर्माण मे इन ब्राह्मणो की भूमिका निश्चय ही उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है ।

---

1 "गोरखो की भाषा", "परवतिया" नेपाल की प्रधान भाषा है। मध्य और पश्चिम के प्रान्तो मे अधिकाश लोग उसी भाषा का प्रयोग करते रहे है। यह भाषा सस्कृत का एक अपभ्रश है और नागरी–लिपि मे लिखी जाती है। भोटियो की भाषा तिब्बती है, नेवार जाति के लोगो की बोली उन सबसे भिन्न है। नेपाल मे सस्कृत जानने वाले भी पर्याप्त सख्या मे है।"

– राममूर्ति सिह, "हमारे पडोसी राष्ट्र", प्रथम सस्करण 1949 ई0 पृ0 178

भैरहवा (रूपन्देही) – परिचय

एशिया की ज्योति गौतम बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी के पास पश्चिम अचल के विकास के मूलद्वार के रूप मे भैरहवा (रूपन्देही जिला) स्थित है। इसके दक्षिण में भारत–नेपाल अन्तर्राष्ट्रीय सीमा फैला हुआ है।

विक्रम स0 2028[1] की जनगणना के अनुसार – इस जिला की जनसख्या 2,43,346 है। भैरहवा रूपन्देही जिला के अन्तर्गत आता है, जो कि जिला का मुख्यालय है। अचल के छै जिलो मे जनसख्या की तुलना मे रूपन्देही जिला का ही प्रथम स्थान है।

इस जिले मे बडी सख्या मे थारू, यादव, मुसलमान और ब्राह्मण है। भाषायी आधार पर यहा के निवासियो की जनसख्या[2] इस प्रकार से विभाजित किया जा सकता है–

नेपाली	43,531
नेवारी	2,807
भोजपुरी	1,04,661
अवधी	70,440
थारू	7,510
मगर	776
गुरुङ	1,321
अन्य	6,832

---

1 भैरहवा स्थित नगरपालिका तथा केम्पस मे उपलब्ध तथ्य के अनुसार।

2 भैरहवा स्थित केम्पस के पुस्तकालय मे उपलब्ध तथ्य के अनुसार।

इस जिले मे भोजपुरी बोलने वालो की सख्या सबसे ज्यादा है। वर्तमान समय मे शिक्षा के प्रसार के कारण भैरहवा जनपद मे अन्य भाषा–भाषी लोगो की सख्या घटती जा रही है। अब यह्य पर नेपाली और हिन्दी बोलने व समझने वालो की सख्या मे वृद्धि हो रही है। यहाँ के स्कूलो और कालेजो मे प्राय नेपाली माध्यम मे ही पढाई–लिखाई का कार्य हो रहा है। कुछ ऐसे भी विद्यालय है जिनमे अग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है ।

यहाँ पर बडी सख्या मे थारू, यादव, मुसलमान व ब्राह्मण रहते है । भैरहवा (रूपन्देही) जिले की दक्षिणी सीमा भारत के साथ इसको जोडती है। भैरहवा के पास से काफी सख्या मे रोपाई करने के लिए भारत में लोग आते है। यहाँ पर भारतियो की भी जनसख्या अच्छी सख्या मे है। रूपन्देही जिले मे भैरहवा नगर पचायत ही सबसे बडी जनसख्या वाली नगर पचायत है।

इस जिले मे थारू जाति की सख्या सबसे अधिक है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह्य के आदिवासी लोग थारू जनजाति के है। यहा की बहुसख्यक जनता थारू अपने सस्कृति के अनुसार रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेशभूषा और अपनी भाषा बोलते है। इनकी भाषा मे भोजपुरी, अवधी, मागधी तथा हिन्दी भाषा का प्रभाव दिखाई पडता है । थारू जनजाति मे छोटी उम्र मे शादी का भी रिवाज है। यहा की थारू जाति भूत, पिशाच और अन्य तरह के अधविश्वासो पर विश्वास करती है ।

थारू के बाद यहा यादव जाति की सख्या ज्यादा है। यादव लोग अपनी जाति "यदुवशी" भगवान श्रीकृष्ण वशज अपने को समझते है।

भैरहवा के पश्चिम मे लुम्बिनी है, जहा पर मुस्लिम लोग भी रहते है। मुसलमानो मे पठान, खाँ, टुर्की आदि मुस्लिम जातिया हैं।

इस जिले मे वर्मा, भारत से आने वाले और पहाड पर रहने वाले लोगो की बोली व सस्कृति मे सम्मिश्रण है। कुर्मी और थारू तथा कुछ और जातियो का मुख्य पेशा कृषि ही है। नेवारी तथा बनिया लोग ज्यादातर व्यापार मे लगे हुए है । विभिन्न जातियो के लोग भिन्न-भिन्न कार्यों मे लगे हुए है।

भैरहवा के दक्षिण मे नेपाल-भारत सीमा पर सोनौली तथा उत्तर मे पोखरा को जाने वाली सोनौली पोखरा राजमार्ग स्थित है। बाद में लुम्बिनी मे जन्मे राजकुमार सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) के नाम से इस राजमार्ग का नाम सिद्धार्थ राजमार्ग रख दिया गया है। भैरहवा से लुम्बिनी की दूरी 21 किलोमीटर है ।

भैरहवा मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय के अन्तर्गत दो डिग्री कालेज हैं। भैरहवा के पास बुटबल मे एक टेनिकल इस्टीट्यूट भी है। विद्यालयो की प्रशासनिक एब जिला शिक्षा समिति के निर्देश मे जिला शिक्षा अधिकारी का कार्यालय भैरहवा में है ।

भैरहवा ही जिले का मुख्यालय है। अधिकाश कार्यालय यही पर स्थित है। एक दशक से कृषि पर आधारित यहा की अर्थ-व्यवस्था महेन्द्र राजमार्ग [illegible] राजमार्ग बन जाने से अर्थ-व्यवस्था मे नये क्षितिज का उदय हुआ। इससे व्यापार और उद्योग को काफी बढावा मिला है। प्राय यहा का सभी भू-भाग समतल होने के कारण कृषि मे आधुनिकीकरण की यहा शुरूआत अब शुरू हो गयी है।

भैरहवा बाजार मे प्राय व्यापारी वर्ग ही ज्यादा है। यहा पर विदेश से आये तथा नेपाल मे निर्मित सामानो की बिक्री की जाती है। भैरहवा के बाजार मे या आस--पास जाने पर भोजपुरी या हिन्दी की जानकारी रखने वालो को किसी प्रकार की कोई परेशानी नही होती । यहा हर दुकान पर भोजपुरी और हिन्दी बोली और समझी जाती है। अधिकाशत भारत के लोग ही यहां खरीददारी करने के लिए आते है। भारतीय मुद्रा पूरे नेपाल मे हर जगह ली जाती है। यहा पर आने पर किसी भी भारतीय को सबकुछ लगभग अपने ही देश जैसा लगता है।

******

*** भैरहवा के प्रमुख कवि ***

भैरहवा के कवियो का वैसे तो अभाव है लेकिन वह्म सम्पर्क करने पर कुछ कवियो के नाम प्रकाश मे आये है। इनमे से अधिकांश कवियो की रचनाये या उनके काव्य ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है । कुछ उभरते हुए कवि मिले जो काव्य के क्षेत्र मे काफी कुछ करने की कोशिश कर रहे है। उनमें सबसे प्रमुख कवि है 'बालकृष्ण भट्टराई' जो कि भैरहवा कैम्पस के अध्यापक भी है । उन्होंने बातचीत के दौरान अपनी कुछ कविताये भी सुनायी। उनके द्वारा लिखी हुई कुछ कवितायें इस प्रकार है –

विरहणी के प्रति

सुख दु ख दुवै हुन्छन् घाम छाया सरी यहां [1]
सुखले मात्र मान्छेकी उन्नति देजियो कहाँ ?
त्यसैले मनकी रानी । दु खमा रूनु हुन्न है ।
दु ख नै नगरी कैल्ये सुखले पनि हुन्न है ।

× × × ×

रूनु जीवनको हार सहनु जीत हो बुझ
सङ्घर्षमय जीवनमा खुशी का ऑसुले रूझ
नझार तिमीले आसु रोई एकान्तमा बसी
वरू सृजनका नक्ति समारू लेखनी मसी ।

× × × × ×

---

1 "क्षायित्व" पत्रिका, पूर्णांक 34 – काठमाडू

सृजना सुख हो हेर, साधना गर्नुपर्दछ
लोक कल्याणका निक्ति सृजना गर्नुपर्दछ
थिएनौ भवमा हामा नहुने छौ भविष्यमा
साचो त आज मात्रै ही नभोलि नहि जो यहा ।

इनकी दूसरी कविता इस प्रकार है–

आशा–निराशा
जीवनको थिपथिपे दियो हो [1]
जीवनका कठिन यात्राहरूमा
उकालो चढ्दा
ऑध्यारा घुम्तीहरूमा
वाटो देखाउने सम्बल ।

भैरहवा के अन्य प्रमुख कवियो मे यादव भट्टराई का भी नाम लिया जा सकता है। इन्होने "दिल्ली" नाम स एक कविता लिखी है–

दिल्ली

भीडले उन्मत्त शहर
आफै मस्त छ कता–कता
यात्री अतपत्र छन् सर्वत्र
वाहन अलपत्र कता–कता ।

---

1 बालकृष्ण भट्टराई–पत्रिका "मधुपर्क" मई–जून 2000, पूर्णांक 360 काठमाडू

2 यादव भट्टराई – "दिशाहीन यात्रा का हर फहरू" प्रकाशन, काठमाडू।

भैरहवा के एक अन्य कवि है "कपिलदेव लामिछाने", इनसे सम्पर्क करने पर इन्होने जो अपनी कविता सुनाई वह इस प्रकार है—

मेरे गांव का नेता मंत्री भाछन

मेरा गाउँका नेता मन्त्री 'भा' छन्
कुर्कुच्चा खियाउथे पहिले
टायर खियाउने भा' छन् ।
मेरा गाउका नेता मन्त्री भा' छन् ।
नारा लगाउँथे पहिले
अचेल मयलपीस लगाउने भा' छन् ।
जागिर खेज्दै हिड्थे पहिले
अचेल
कसलाई जागिर रूवाउने
र कसैको जागिर रूवाउने
र कसैको जागिर खाने भा' छन् ।
साच्चै
अचेल मेरा गाउका नेता मन्त्री भा' छन् ।

इनके अतिरिक्त भैरहवा के अन्य कवि इस प्रकार है —

1 मोदनाथ शास्त्री — इन्होने महाकाव्य भी लिखा है।
2 रूद्र श्रवाली
3 रूद्र शर्मा "दुखी"
4 गगा लिगल

5	सुमन राणा
6	बुद राना
7	विजय सागर
8	हर्षध्वज राई
9	करूणानिधि शर्मा
10	पृथ्वी शेरचन
11	हृदय लेकाली
12	देवी न्यौपाने धीर
13	वैकुठनाथ अर्याल
14	अमर किशोर घिमिरे
15	भीम प्रसाद लामिछाने
16	गगा लिगल
17	खगराज पाण्डे ।

****

तृतीय अध्याय

भोजपुरी और नेपाली का भाषागत स्वरूप निर्धारण

भोजपुरी और नेपाली का भाषागत स्वरूप निर्धारण

भोजपुरी का भाषागत स्वरूप

बिहार की मैथिली, मगही तथा भोजपुरी तीनो बोलियो मे विस्तार क्षेत्र की दृष्टि से भोजपुरी का स्थान सर्वोच्च है। यह बोली उत्तर मे हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण मे मध्य प्रान्त के शाहाबाद, सारन, चम्पारन, राची, जशपुर स्टेट, पलामू के कुछ भाग तथा मुजफ्फरपुर के उत्तर–पश्चिमी कोने मे इस बोली के बोलने वाले रहते है । उत्तर प्रदेश के बनारस, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर के अधिकाश भाग, मिर्जापुर, गोरखपुर, आजमगढ तथा बस्ती जिले की हरैया तहसील में स्थित कुवानो नदी तक भोजपुरी बोलने वालो का आधिपत्य है। डा0 सुनीति कुमार चटर्जी ने भोजपुरी को पश्चिमी मागधी वर्ग के अन्तर्गत रखा है।

भोजपुरी बोली का नामकरण शाहाबाद जिले के भोजपुर परगने के नाम पर हुआ है। अब यह बात स्पष्ट हो गया है कि उज्जैन के भोजो [1] के नाम पर ही "भोजपुर" नाम पड़ा, क्योंकि प्राचीन काल मे इन्ही लोगों ने इस क्षेत्र पर अधिकार करके यहा शासन करना आरम्भ किया था। 18वी शताब्दी मे भोजपुर एक प्रान्त था। धीरे–धीरे इसका विशेषण भोजपुरी इस प्रान्त के निवासियो तथा उसकी बोली के लिए भी प्रयुक्त होने लगा ।

---

1 धार के प्रसिद्ध राजा भोज का नाम किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर उस क्षेत्र के राजाओ की उपाधि प्रतीत होता है। (ऐतरेय ब्राह्मण, 8–14)

भाषा के अर्थ मे लिखित रूप मे इसका सर्वप्रथम उल्लेख सन् 1789 ई0 मे मिलता है। सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने 'लिग्विस्टिक सर्वे' के प्रथम भाग के पूरक अश, पृ0 22 मे एक उद्धरण दिया है।

इसके पश्चात् निश्चित रूप से भाषा के अर्थ मे "भोजपुरी" शब्द का प्रयोग, सन् 1868 ई0 मे जॉन बीम्स ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल, भाग 3, पृष्ठ 485–508 मे अपने "भोजपुरी बोली पर सक्षिप्त टिप्पणी" शीर्षक लेख मे किया ।

भोजपुरी के अन्तर्गत स्थान–भेद से बोलियो का नाम भी पड गया है, जैसे छपरा जिले की भोजपुरी को "छपरहिया" तथा बनारस की भोजपुरी को "बनारसी" बोली कहते है। इसी प्रकार बलिया के पश्चिमी तथा आजमगढ के पूर्वी क्षेत्र की बोली "बगरही" कहलाती है। इधर बागर से उस क्षेत्र से तात्पर्य है, जहा गगा की बाढ़ नही जाती ।

भोजपुरी एक सजीव भाषा है। भोजपुरी क्षेत्र के बाहर भोजपुरियो का सबसे बडा अड्डा कलकत्ता है। कलकत्ता को हम वास्तव मे भोजपुरी जीवन तथा सस्कृति का केन्द्र कह सकते है। हजारो भोजपुरी कलकत्ता तथा भागीरथी के किनारे स्थित जूट के कारखानो मे काम करते है। कलकत्ता के "आमरललोनी मॉनुमेण्ट" के पास का जिले का मैदान (जिसे भोजपुरी मौनीमठ (मौन रहने वाले साधु का मठ) कहते है)। वास्तव मे भोजपुरियो का हाइडपार्क है। प्रत्येक रविवार को हजारो भोजपुरी इस मैदान मे एकत्र होते है तथा भोजपुरी गीतो, लोककथाओ तथा लोक गाथाओ (आल्हा, बिजमैल आदि) से अपना मनोरजन करते है ।

डा0 ग्रियर्सन[1] भोजपुरी को चार भागो मे विभक्त किया है। ये विभाग है– उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा नगपुरिया । उत्तरी भोजपुरी की भी दो विभाषाए है–

1 सरवरिया तथा

2 गोरखपुरी ।

सोन नदी के दक्षिण नगपुरिया भोजपुरी बोली जाती है। उत्तरी तथा नगपुरिया भोजपुरी के बीच में ही दक्षिणी तथा पश्चिमी भोजपुरी का क्षेत्र है। यदि बरहज से गाजीपुर शहर तक और वह्म से सोन नदी तक रेखा खीची जाय तो इसके पूरब दक्षिणी भोजपुरी तथा पश्चिम मे पश्चिमी भोजपुरी का क्षेत्र होगा ।

यह दक्षिणी भोजपुरी ही वास्तव मे आदर्श भोजपुरी है। इसका क्षेत्र इलाहाबाद, सारन, बलिया, पूर्वी देवरिया तथा पूर्वी गाजीपुर है। पश्चिमी गाजीपुर, आजमगढ़, बनारस, मिर्जापुर तथा जौनपुर के कुछ भागो मे पश्चिमी भोजपुरी बोली जाती है ।

आदर्श भोजपुरी अपनी अन्य बोलियो की अपेक्षा अधिक श्रुति मधुर है। जिस प्रकार ईरानी लोगो की बोलचाल की फारसी तथा फ्रेच बोलने वालो के लहजो मे एक विशेष प्रकार का सगीतात्मक माधुर्य तथा लोच–'इष्टोनेशन'–होता है, उसी प्रकार का माधुर्य तथा लोच आदर्श भोजपुरी में भी होता है। वाक्य के अन्तिम स्वर का देर तक उच्चारण करने से ही यह माधुर्य उत्पन्न होता है। आदर्श भोजपुरी को इसकी अन्य बोलियो से पृथक करने वाला सर्वनाम "रउआ" है। इस सर्वनाम का भोजपुरी की अन्य बोलियो मे अभाव है। आदर्श भोजपुरी मे इस शब्द के कई रूप उपलब्ध है, यथा–"राउरा", "राउर" आदि। आदर प्रदर्शन के लिए

---

1 डा0 ग्रियर्सन– लिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, भाग 2

ही आपके अर्थ मे "रउरा" तथा "राउर"[1] सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। प्राकृत मे इस शब्द का रूप "लाउल" मिलता है, जिसका सस्कृत रूप "राजकुल" अथवा "राजकुल्य" होगा । मैथिली मे इस सर्वनाम के लिए "आइस" तथा "अह्नँ" शब्दो का प्रयोग होता है, जिनकी उत्पत्ति सस्कृत के "अति" तथा "आयुष्मान" शब्दों से हुई है ।

शाहाबाद, सारन तथा बलिया भोजपुरी की उत्तरी, पश्चिमी आदि बोलियों का तुलनात्मक विवरण इस प्रकार है–

1 **संज्ञा**[2]– आदर्श भोजपुरी के स्त्रीलिंग शब्दो के अन्त मे प्राय ह्रस्व इ आती है, किन्तु भोजपुरी की अन्य बोलियो मे इसका अभाव है, जैसे–आँखि, पाँखि (आदर्श भोजपुरी), आख पाख (अन्य भोजपुरी)। गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी के सज्ञा पदो मे कही–कही अनुनासिक का प्रयोग होता है। यथा–भाँट, नाँद। किन्तु आदर्श भोजपुरी मे इसके रूप होंगे–भार, नाद। मैथिली के प्रभाव से कभी–कभी सारन तथा मुजफ्फरपुर की सीमा की भोजपुरी मे 'ड' का 'र' होता है, यथा–घोडा → घोरा, सड़क → सरक ।

गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी मे प्राचीन भोजपुरी के कतिपय रूप आज भी वर्तमान है, जैसे–हिन्दी 'मैं' सर्वनाम 'मयँ' तथा 'में' रूप। भोजपुरी की अन्य बोलियों मे यह रूप केवल कहावतो तथा मुहावरो आदि मे ही मिलते है। उत्तरी भोजपुरी के अन्य कारको मे व्यवहृत 'मो' सर्वनाम भी आदर्श भोजपुरी मे नही मिलता । इसी प्रकार मध्यम पुरूष के सर्वनाम 'तू' के अतिरिक्त, गोरखपुर मे 'तैं' भी बोला जाता है, तथा अप्राणिबोधक, प्रश्नवाचक सर्वनाम 'केथी' (हिन्दी 'क्या') गोरखपुर मे '-थुआ' बोला जाता है।

2. **विशेषण–**[1] सख्यावाचक विशेषण मे 11 से 18 तक को उत्तरी भोजपुरी मे 'एगारे', 'बारे', 'तेरे' इत्यादि बोला जाता है और आदर्श भोजपुरी का इन शब्दो मे व्यवहृत अन्तिम 'ह' का गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी मे लोप हो जाता है। इसी प्रकार आदर्श भोजपुरी के "अर्तिस", "अर्तालिस", "सत्सठ", "अर्सठ" गोरखपुर मे "अँड़तिस", "अँडतालिस", "सँडसठ" और "अँडसठ" बोले जाते है ।

क्रियापद[2] **(क) सहायक क्रियाएँ –**

आदर्श भोजपुरी का "बाडे" गगा के उत्तर "बाटे" हो जाता है। यद्यपि कही–कही "बाडे" का भी प्रयोग होता है, इसी प्रकार उत्तम पुरूष पुल्लिग मे "बाटी", मध्यमपुरूष मे "बाट", "बाटे", "आटे" तथा अन्य पुरूष पुल्लिग मे "बाटे", "आटे", "बाय", "आय" रूप मिलते है।

(ख) **क्रियापद वर्तमानकाल–** सारन की भोजपुरी मे मध्यमपुरूष एक वचन मे "देखुए", "देखुएस", अन्य पुरूष एकवचन मे "देखुए", "देखै" तथा अन्य पुरूष बहुवचन मे "देखेन" रूप वैकल्पिक रूप मे मिलते है ।

भूतकाल– भोजपुर की समस्त बोलियो मे भूतकाल में "ल" वाला रूप मिलता है, किन्तु पलामू की भोजपुरी में उसने "उ" भी जोड़ दिया जाता है। गण्डककेपूरब की भोजपुरी पर मैथिली का भी प्रभाव पडने लगता है, यथा–

उत्तमपुरूष– हम देखलियैन । इसी प्रकार जब कर्म मध्यमपुरूष मे रहता है तब "हम देखलियव" बोला जाता है, यथा– "हम रउरा के देखलियव" अर्थात मैने आप श्रीमान को देखा ।

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य

2 वही

मध्यमपुरूष-- जब कर्म अन्य पुरूष का होता है तथा जब वह किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति का बोधक होता है तब 'तू देखलहुल' का प्रयोग किया जाता है, यथा--'तू मलिया के देखलहुस' । किन्तु जब अन्य पुरूष के कर्म के प्रति आदर प्रदर्शित करना होता है तब 'तू देखलहुन' का प्रयोग किया जाता है, जैसे-- 'तू राजा के देखलहुन' अर्थात् 'तुमने श्रीमान् राजा को देखा'।

म0पु0ए0व0	अ0पु0ब0व0
देखतेन	देखतेस

उत्तरी भोजपुरी मे दो विभाषाए[1] है-- 1 गोरखपुरी, 2 सरवरिया। गोरखपुरी की कतिपय विशेषताओ का उल्लेख ग्रियर्सन ने अपने लिग्विस्टिक सर्वे के भाग 5, पृ0 229 मे किया है। इनमे से सबसे अधिक जो विशेषता हमारा ध्यान आकर्षित करती है, वह है विकृत 'अ' को लिखने की प्रणाली। इसे दो बार लिखा जाता है, यथा-- दअअ लअअ । उच्चारण सम्बन्धी विशेषता गोरखपुरी भोजपुरी में यह है कि 'ड़' के स्थान पर इसमे 'र' का प्रयोग होता है, यथा-- पडल -- परल। बलिया की आदर्श भोजपुरी मे परल तथा पडल, दोनो का प्रयोग होता है।

इसी तरह आदर्श भोजपुरी की सहायक क्रिया 'बाड़े' के लिए गोरखपुरी भोजपुरी मे 'बारे' का ही प्रयोग प्रचलित है।

सरवरिया भोजपुरी का क्षेत्र बस्ती तथा पश्चिमी गोरखपुर है। इसकी निम्नलिखित विशेषताओ का उल्लेख ग्रियर्सन ने लिग्विस्टिक सर्वे के भाग 5, पृ0 239 मे किया है। गोरखपुर की भाति बस्ती मे भी 'ड़' के स्थान पर 'र' का ही प्रयोग

1 ग्रियर्सन--लिग्विस्टिक सर्वे, भाग--5, पृ0 229

2 ग्रियर्सन--लिग्विस्टिक सर्वे, भाग--5, पृ0 239

होता है। इस प्रकार यहा भी लोग 'पड़ल' के स्थान पर 'परल' ही बोलते है। यहा सम्बन्ध कारक मे परसर्ग के रूप मे 'कई' तथा अन्य कारको मे 'के' का प्रयोग होता है। यह पश्चिमी भोजपुरी के प्रभाव का परिणाम है।

सरवरिया भोजपुरी के सर्वनाम के रूपो मे भी कई विशेषताए[1] दृष्टिगोचर होती हैं। यथा–सम्बन्ध कारक के रूपो के अन्त मे 'ए' आता है, यथा– तुहरे, ओकरे, इन्हे,, अपने आदि ।

क्रियापदो के रूपो मे इस बोली मे एक विशेषता यह है कि इसके अन्यपुरूष, एकवचन, भूतकाल के रूप मे–अस या–असि के स्थान पर–इस का उपयोग होता है। इस प्रकार आदर्श भोजपुरी के दिहलस या दिहलसि, लिहलस या लिहलसि, कइलस या कइलसि रूप सरवरिया भोजपुरी मे दिहलिस, लिहलिस एव कइलिस हो जाते है ।

सहायक क्रिया के रूप मे 'ड' से अन्त होने वाले रूप के बजाय यहा भी 'ट' से अन्त होने वाले रूपो का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार यहा 'बाटे' आदि रूप ही प्रयोग में आते हैं ।

फैजाबाद, जौनपुर, बनारस, आजमगढ, मिर्जापुर तथा गाजीपुर के पश्चिमी भाग मे जो भोजपुरी बोली जाती है, वह आदर्श भोजपुरी की अपेक्षा कई बातो मे भिन्न है। जैसे बिहारी भाषाओ की एक सबसे बडी विशेषता यह है कि 'अकारान्त' सज्ञापदो के रूप अन्य कारको मे भी वैसे ही रहते है, किन्तु इस पश्चिमी भोजपुरी मे ये–'ए' मे परिणत हो जाते है। वस्तुत यह पश्चिमी भोजपुरी

---

1 ग्रियर्सन–लिग्विस्टिक सर्वे, भाग–5, पृ0 229

प्राच्य समूह की आर्यभाषाओ मे से सबसे पश्चिम की है, अतएव इस पर इसकी पश्चिम की बोलियो का प्रभाव पडना सर्वथा– स्वाभाविक है।

इन बातो मे पश्चिमी भोजपुरी आदर्श भोजपुरी से भिन्न है–

(क) सज्ञा [1]

सज्ञापदो के रूप मे, 'आदर्श भोजपुरी' तथा 'पश्चिमी भोजपुरी' मे- निम्नलिखित अन्तर है

आदर्श भोजपुरी (बलिया, शाहाबाद)	पश्चिमी भोजपुरी (आजमगढ़)
लकठो	लकठा
खोंच	खोंचा
भाट	भाँट
सोंढ	सोंड़
जाब	जाबा
गाइ	गाय
आखि	आँख
पाखि	पाँख

आजमगढ, बनारस तथा मिर्जापुर की पश्चिमी भोजपुरी मे सम्बन्ध मे कारक के परसर्ग के रूप मे 'क' तथा 'कै' का प्रयोग होता है। यहा इस बात को भी सदैव स्मरण रखना चाहिए कि आदर्श भोजपुरी के अन्य कारको के सज्ञापदो के अन्त मे 'आ' आता है, किन्तु पश्चिमी भोजपुरी मे यह 'ए' हो जाता है।

1 डा0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 242

बनारस तथा आजमगढ की पश्चिमी भोजपुरी मे अधिकरण कारक का चिन्ह 'से' है। आदर्श भोजपुरी मे यह 'से' अथवा 'सें' है, किन्तु शाहाबाद की भोजपुरी मे यह 'ले' है, यथा–

पेड से पतई गिरत बाय —	बनारस
फेड़ से पतई गिरतिया —	बलिया
फेड़ ले पतई गिरतिया —	शाहाबाद

'लिए' के अर्थ मे परसर्ग के रूप में बनारस तथा मिर्जापुर की पश्चिमी भोजपुरी मे खातिन, बदे तथा कभी–कभी खातिर का प्रयोग होता है, किन्तु बलिया की आदर्श भोजपुरी मे केवल खातिर ही आता है, यथा–

तोरा बदे, तोरा खातिन (बनारस तथा मिर्जापुर)
तोहरा खातिर या खातिन (बलिया)।

इसी प्रकार 'बदले में' के अर्थ मे पश्चिमी भोजपुरी मे 'सन्ती' तथा 'सन्तिन' शब्दो का प्रयोग होता है, किन्तु आदर्श भोजपुरी मे यह सँती हो जाता है।

(ख) विशेषण [1]

आदर्श भोजपुरी में पहाडा पढ़ते समय दु पाँचे, दु साते, दु आठे आदि कहते है किन्तु आजमगढ तथा बनारस मे दु पचे, दु सते, दु अठे आदि कहते है ।

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 242

'नगपुरिया' और 'सदानी' की निम्नलिखित विशेषताए है–

1 **उच्चारण** इसमे एक विशेषता यह है कि यहा अन्तिम अक्षर के पूर्व वाले अक्षर मे 'इ' का आगम होता है और इस प्रकार 'अपनिहिति' (Epenthesis) का रूप आ जाता है, जैसे 'सुअइर' । पडोसकी बगला भाषा के कारण 'अ' का उच्चारण 'ओ' मे परिवर्तित हो जाता है, उदाहरण–स्वरूप 'सब' का उच्चारण 'सोब' हो जाता है।

2. **सज्ञा** – एक वचन से बहु वचन बनाते समय सज्ञापदो मे –मन प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। इस प्रत्यय का छत्तीसगढी मे प्रयोग होता है और वही से यहा आया है। बहुवचन मे प्राणिवाचक शब्दो के लिए ही इसका प्रयोग होता है। इसमे निम्नलिखित "परसर्गो" (POST POSITION) का प्रयोग होता है।

कर्मकारक– के, सम्बन्धकारक– के, क, केर तथा कर,

सम्प्रदान– ले, लै, लगिन और लगे। अधिकरण–मे, अपादान–से। कभी–कभी छत्तीसगढ़ी का प्रत्यय हर भी प्रयोग मे आता है, जैसे 'बेटाहर'।

क्रिया – सहायक क्रिया [1]

वर्तमान– मै हूँ		भूत– मै था ।	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
1–अहो, हौ अथवा हौ	अही या हई	रहो	रही या रहली
2–अहइस, हइस, हिस	अहा या हा	रहिस	रहा या रहला
3–अहे या हैअहे या है	रहे या रहलक	रहै या रहलै	

टिप्पणी 'अहों' आदि को कभी–कभी 'आहों' आदि के रूप मे भी लिखते है। वर्तमान काल के निम्नलिखित रूप,[2] इसमे मगही से लिये गये है।

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 244

2 वही

एकवचन	बहुवचन
1– हे ̄को	हे ̄की
2– हे ̄किस	हे का
3– हे ̄के	हे कै

टिप्पणी –अहौं या हौ का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में उस अवस्था मे होता है जब विधेय मे विशेषण पद होता है, यथा–पानी गर्म है, किन्तु हेको का प्रयोग वह्य होता है, जह्य विधेय मे सज्ञापद होते है। यथा–यह पानी है।

देख के रूप

धातु– देखे ̄क्, इसका प्रयोग सम्प्रदान कारक मे 'देखने के लिए' के अर्थ मे भी होता है।

क्रियामूलक विशेष्य – देझ्ब्

विकारी रूप – देखे, देखल्

इनमे 'देखल्' का अर्थ 'देखने की क्रिया' भी होता है।

वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप – देखत्, देखते हुए।

भूतकालिक कृदन्तीय रूप – देखल्, देखा हुआ ।

सम्भाव्य वर्तमान के रूप वही होते है, जो भविष्यत् के, किन्तु इसमे अपवाद–स्वरूप अ0पु0, ए0व0 मे देखोक् तथा ब0व0 मे दखो रूप मिलते है। अन्य बोलियो मे जहाँ सम्भाव्य वर्तमान के रूप प्रयुक्त होते है, वहाँ नगपुरिया मे वैकल्पिक रूप से पुराघटित वर्तमान के रूपो का प्रयोग होता है।

भविष्यत्–[1] मैं दूखूँगा आदि, भूतकाल (सम्भाव्य) (यदि) मै देखे होता।

वर्तमानकाल का रूप देखत्–हो, 'मै देखता हूँ', होता है। इसके सक्षिप्त रूप दे खयों तथा दे खत्यो की वैकल्पिक रूप से प्रयुक्त होते है। इसी प्रकार घटमान अतीत का रूप देखत–रहों, 'मै देखता था', होगा।

भोजपुरी की अन्य बोलियों की भाति ही यहा भी प्रेरणार्थक एव कर्मवाच्य की क्रियाए बनती है। यथा–दे खाएक, दिखाना (प्रे0), देखवाएक, दिखलवाना (क्रि0प्रे0), देखल् जाए् क्, देखा जाना (क0वा0)। इसमे अनियमित क्रिया–पद होए् क्, 'होना' मिलता है। इसके वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप होअत् या भेवत्, भूतकालिक कृदन्तीय रूप होअल् या भेल् होते है। इसी प्रकार जाएक्, 'जाना' तथा देएक् के भूतकालिक कृदन्तीय रूप गेल्, देवेक्, गया, दिया, वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूप देत् या देवत् एव भूतकालिक कृदन्तीय रूप देल् या देवल् होंगे।

असमापिका के कृदन्तीय देइख् या देइख्–के होते है। अन्य भोजपुरी बोलियो से तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका मूल रूप देखि था, किन्तु अपिनिहित (Epenthesis) के कारण उच्चारण मे यह देइख् मे परिणत हो गया । इस 'इ' के कारण ही इसके पहले आनेवाले 'आ' का उच्चारण भी 'ओ' मे परिणत जो जाता है। इस प्रकार माइर, 'मारकर' का उच्चारण कभी–कभी मोइर हो जाता है ।

मधेसी [2] (भोजपुरी)– 'मधेसी' भोजपुरी में भी मैथिली की भाति ही मूर्धन्य 'ड़' का उच्चारण 'र' मे परिणत हो जाता है। यथा–पडल →परल, कोढी →

1 डा0 उदय नारायण तिवारी–भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 245

2 वही पृ0 246

कोर्‌ही तथा बडका —> बरका (बलिया की आदर्श भोजपुरी मे पडल तथा परल दोनो का प्रयोग होता है। कोढ़ी के लिए आदर्श भोजपुरी मे भी कोर्‌हि व्यवहृत होता है, किन्तु बड़ा के लिए बरका का प्रयोग नही होता ।)

मुजफ्फरपुर की मैथिली मे 'उन लोगों' के लिए ओ‾कनी सर्वनाम का प्रयोग होता है। मथेसी भोजपुरी मे भी यह 'औकनी' वर्तमान है।

इसी प्रकार सहायक क्रिया के रूप मे मथेसी भोजपुरी मे वारड (तुम हो) तथा बाटे (वह है), दोनो का प्रयोग होता है तथा सकर्मक क्रिया, ए0व0, अतीतकाल का रूप मैथिली की भाँति–अक प्रत्ययान्त होता है। यथा–कहलक्, उसने कहा, देलक्, उसने दिया, आदि। यहाँ 'वह आया' के भोजपुरी आइल् के स्थान पर मैथिली आएल का एव 'उसने कहा' के लिए मैथिली कहल–कै का प्रयोग होता है।

थरू भोजपुरी–[1] अपने लिग्विस्टिक सर्वे भाग 5, अङ्क 2 के पृ0 311 से 329 पर डॉ0 ग्रियर्सन ने थारू भोजपुरी का विवरण दिया है। ये आर्यभाषा–भाषी है और थारू नाम की इनकी कोई पृथक भाषा नही है। थारू लोगो की बोली की यह विशेषता है कि उसमे पडोस मे बोली जानेवाली बोली का विशेष पुट रहता है ।

---

1 ग्रियर्सन–लिग्विस्टिक सर्वे, भाग–5, अङ्क 2, पृ0 311–329

नेपाली भाषा का स्वरूप

हिन्दी, बगला, असमिया आदि की तरह नेपाली भाषा का जन्म सस्कृत से हुआ है। यह भाषा पहाडी से विकसित हुई है। ग्रियर्सन ने इसे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ के भीतरी उप-शाखा के पहाडी वर्ग के पूर्वी पहाड़ी उपवर्ग के अन्तर्गत रखा है। "भारत के भाषा सर्वेक्षण" मे ग्रियर्सन ने इसे मध्यवर्ती उपशाखा की केन्द्र की तरफ झुकी हुई भाषाओ के साथ वर्गीकृत किया है। डा0 सुनीति कुमार चटर्जी इसे आधुनिक आर्यभाषाओ की पश्चिमी शाखा की भाषा राजस्थानी के साथ रखते है, तो डा0 धीरेन्द्र वर्मा इसे मध्यदेशीय भाषाओ मे राजस्थानी के साथ । केलाग ने अपनी "हिन्दी भाषा के व्याकरण" मे नेपाली को हिन्दी की एक बोली के रूप मे रखा है और अन्य बोलियो के साथ नेपाली भाशा के व्याकरणिक बिन्दुओं को भी छुआ है। डा0 हरदेव बाहरी इस भाषा को आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओ की हिन्दीतर वर्ग मे उत्तरी उपवर्ग की भाषा मानते हैं।

हिन्दी की तरह ही उद्गम की दृष्टि से नेपाली भाषा के शब्द–तत्सम्, तद्भव, देशज तथा विदेशन–इन चार वर्गों में विभक्त हैं। नेपाली और हिन्दी की विशाल तत्सम् शब्दावली बिल्कुल समान है। अन्य शब्दावलियो मे ध्वनिगत अन्तर भी परिलक्षित होता है। इस भाषा मे हिन्दी की तरह ही अनेक शब्दो के तत्सम् तथा तद्भव रूप[1] साहित्य मे प्रयुक्त होते है जैसे–

हसत (हात), अश्रु (आसु), रात्रि (राति), लक्षण (लच्छिन), कर्ण (कान) ओष्ठ (ओठ), जिह्वा (जिभ्रो), मित्र (मीत), पत्र (पात)।

---

1 देशी शब्दो का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन–डॉ0 चन्द्रप्रकाश त्यागी, लिपि प्रकाशन, दिल्ली–51, पृ0 24–25

अनेक शब्द सस्कृत तथा प्राकृत से विकसित हुए[1] है जो तद्‌भव कहलाते है –

सस्कृत	प्राकृत	नेपाली
हस्त	हत्थ	हात
भक्त	भन्त	भात
पत्र	पत्त	पात
कार्य	कज्ज	काज
धर्म	धम्म	धाम
कर्म	कम्म	काम
आत्मा	अप्पा	आफू
रात्रि	रन्ति	रात
वृक्ष	रूक्ख	रूख
मूल्य	मोल्ल	मोल इत्यादि

विकार के अनुसार नेपाली भाषा के शब्दावली विकारी एव अविकारी होती है। सज्ञा, सर्वनाम, विशेशण एव क्रिया विकारी श्ब्द है, जबकि अव्यय अविकारी। हिन्दी की तरह ही सज्ञा शब्दो के विभेद बनावट के अनुसर तीन (रूढि, मौखिक एव योगरूढ़ि) एव व्यवहार के अनुसार पाच (जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, द्रव्यवाचक, समुदायवाचक एव भाववाचक) होते है।

संज्ञा[2]– हिन्दी की तरह ही नेपाली भाषा मे भी व्युत्पत्ति के अनुसार सज्ञा के तीन– रूढ़ि, यौगिक तथा योगरूढ़ि एव व्यवहार के अनुसर पाच भेद – जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समुदायवाचक एव द्रव्यवाचक होते

1 वही

2 श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी–नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 140

है। हिन्दी तथा नेपाली शब्दावली के स्रोत प्राय समान है अत विभिन्न सज्ञाओ के समान उदाहरण दिए जा सकते है –

क्रिया	**सज्ञा**
पढ्नु (पढ़ना)	पढ़ाइ (= पढाई)
लेखनु (लिखना)	लेखइ (=लिखाई)
चढ़नु (चढना)	चढ़ाइ (चढ़ाई)

विशेषण	सज्ञा (भाववाचक)
समान (समान)	समानता (समानता)
सम (यम)	समता (समता)
सज्जन (सज्जन)	सज्जनता (सज्जनता)
वीर	वीरता
धीर	धीरता
गर्म	गर्मी
जवान	जवानी

संज्ञा का रूपान्तर–[1] लिग, वचन तथा कारक के प्रयोग द्वारा सज्ञा मे परिवर्तन होता है ।

लिंग –नेपाली भाषा मे पुल्लिग तथा स्त्रीलिग के अतिरिक्त नपुसकालिग तथा सामान्य लिग (उभयलिग) का प्रयोग भी होता है।

भाववाचक, समुदायवाचक तथा द्रव्यवचक सज्ञाए तथा निर्जीव वस्तुओ को नपुसकलिग के अन्तर्गत रखा जाता है।

1 श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी–नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 140

कुछ शब्द जैसे माचिस, मित्र, जानवर, दोपाय, चरो, मीरा, हास, मृग इत्यादि पुरूषत्व तथा स्त्रीत्व दोनो का बोध कराते है। ऐसे शब्दो को सामान्य लिग के अन्तर्गत रखा जाता है ।

सामान्य या उभयलिगी सज्ञाओ के साथ 'लोग्ने', 'भाले', 'झाक', 'वीर', 'जुर्रा' आदि पुल्लिगवाचक शब्द जोडकर तथा 'स्वास्नी', 'पोथी', 'भूनी', 'मुडुली', 'साही' आदि स्त्रीलिंग वाचक शब्द जोडकर स्त्रीलिग बनाते है। जैसे–

उभयलिग	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
मानिस	लोग्नेमानिस	स्वास्नीमानिस
हास	भालेहॉस	पोथीहास
कमिला	भालेकमिला	पोथीकमिला
मृग	झाकमृग	मुडुलीमृग
बनेल	बीरबनेल	भुनीबनेल
बाज	जुर्राबाज	साहीबाज

हिन्दी की तरह कुछ सजीव वस्तुओ के पुल्लिग तथा स्त्रीलिग द्योतक अलग–अलग शब्द नेपाली भाषा[1] मे है जैसे–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
बाबु	आमा
दाज्यू	भाउज्यू
ससुरा	सासू
वीर	थुनी
लोग्ने	स्वास्नो

---

1 गोपालनिधि तिवारी–नेपाली भाषा को बनोट।

भाले	पोथी
रागो	भैसी
झाक	गुडुली
जुर्रा	साही
राजा	रानी

अकारान्त, आकारान्त आदि शब्दो को ईकारान्त बनाकर अथवा 'अक' के स्थान पर 'इका' प्रत्यय जोडकर या पुल्लिग शब्दो के अन्त मे 'वी' प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिग बनाते है।[1] जैसे–

पुल्लिग	**स्त्रीलिग**
घोड़ा	घोड़ी
सुगा	सुगी
कछुवा	कछुवी
परेवा	परेवी
काका	काकी
पुत्र	पुत्री
कुमार	कुमारी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
देव	देवी
दास	दासी
सिपाही	सिपहिनी
भोटे	भोटिनी

1 गोपालनिधि तिवारी–नेपाली भाषा को बनोट।

पत	पतेनी
पडित	पडितनी
धोबी	धोबिनी
सरदार	सरदार्नी।
क्षेत्री	क्षेत्रिणी
लेखक	लेखिका
बालक	बालिका
गायक	गायिका
अध्यापक	अध्यापिका

इस भाषा में पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ विशेष प्रत्यय भी व्यवहार मे आते है। जैसे–

स्त्रीलिंग	**पुल्लिंग**
गुरू	गुरूमा
गुरूड़	गुरूडसेनी

इस भाषा मे दो वचन होते है,[1] जो है–

1 एकवचन 2 बहुवचन या अनेकवचन।

इस भाषा मे व्यक्तिवाचक, समुदायवाचक, भाववाचक एव द्रव्यवाचक सज्ञाए प्राय एकवचन के रूप मे ही प्रयुक्त होती है।

यदि किसी सज्ञा के साथ (खासकर निर्जीव जातिवाचक सज्ञा के साथ) अनेकता या अधिकता बोध कराने वाला कोई विशेषण जुडा होता है तो वह

1 डा0 हेमाड गराज अधिकारी–समसामयिक नेपाली व्याकरण, पृ0 79

सज्ञा के एक वचन के रूप मे ही प्रयुक्त होती है। जैसे– हजार जना, एघार रूपिया, घेरे गर्मी आदि ।

सामान्य नाम बोधक जातिवाचक सज्ञाओ का एकवचन तथा बहुवचन दोनो रूप प्रयुक्त होते है। जाति की विशेषता बतलाते समय केवल एकवचन रूप प्रयोग मे आता है। जैसे–मानिस मरणशील छ।

नेपाली भाषा मे बहुवचन के तीन भेद[1] होते है, जो निम्नलिखित है–

(क) अनेकार्थी। जैसे– गाइस्क (गाये), मनिसहरू इत्यादि।

(ख) प्रकारार्थी। वस्तुओ या व्यक्तियो के भिन्न प्रकार का बोध कराने के लिए भी बहुवचन प्रयुक्त होता है, जैसे–
मोहनहरू (मोहन, सोहन, श्याम आदि)

(ग) आदरार्थी– मनुष्य, देवता आदि को आदर दिखाने के लिए बहुवचन का प्रयेग होता है। जैसे– गुरू आए ।

नेपाली भाषा मे एकवचन को बहुवचन मे बदलने के लिए 'हरू' शब्द जोड़ते है। जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**
मानिस	मानिसहरू
पुस्तक	पुस्तकहरू
परेवा	परेवाहरू

---

1 डा0 हेमाङ्गराज अधिकारी–समसामयिक नेपाली व्याकरण, पृ0 79.

घर	घरहरू
छोरा	छोराहरू
कलम	कलमहरू

कभी–कभी उकारान्त या ओकारान्त शब्दो को आकारान्त बनाकर "हरू" शब्द जोड़ते है। जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**
मानु	मानाहरू
पाठो	पाठाहरू
केटो	केटाहरू

सर्वनामो को एकवचन से बहुवचन मे बदलने के पहले उनका रूप बदल जाता है,[1] जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**
म (मैं),	हामी
त (तुम)	तिमी
त्यो (वह)	तिनी

होकर उसके साथ "हरू" शब्द जुडता है।

एकवचन	**बहुवचन**
म, हामी	हामीहरू
त, तिमी	तिमीहरू
त्यो, तिनी	तिनीहरू

---

1 श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी–नेपाली भाषा को उत्पत्ति।

एकवचन शब्दो के साथ 'गण' वर्ग, वृन्द, जन, समूह, मडल आदि शब्द जोड़कर भी बहुवचन बनाते है। जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**
देव	देवगण
छात्र	छात्रवर्ग
पाठक	पाठकवृन्द
गुरू	गुरूजन

कारक[1] – हिन्दी की तरह ही इस भाषा मे आठ कारक होते है–

विभक्ति	**कारक**	**कारक चिन्ह**
प्रथमा	कर्ता	ले
द्वितीया	कर्म	लाई
तृतीया	करण	ले, बाट
चतुर्थी	सम्प्रदान	लाई
पंचमी	अपादान	देखि, बार
षष्ठी	सम्बन्ध	को, का, की
सप्तमी	अधिकरण	मा
	सम्बोधन	हो ।

सकर्मक क्रिया मे भूतकाल के प्रयोग की स्थिति मे कर्ताकारक का विभक्ति चिन्ह "ले" प्रयुक्त होता है।

वर्तमान तथा भविष्यत्काल की क्रिया के साथ 'ले' का प्रयोग प्राय नहीं होता है ।

---

1 डी0पी0 भट्टराई 'प्रकाश'–नेपाली व्याकरण र अभिवयक्ति, पृ0 212–216

सम्बन्धी शब्द यदि स्त्रीलिंग हो तो 'की' विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

मोहन की आमा ।

बहुवचन या आदर का बोध कराते समय 'का' प्रयुक्त होता है। जैसे–

राम का छोरा हरू ।

मोहन का पिता ।

हिन्दी के 'में' के अर्थ मे स्थान, काल या भाव विशेष का बोध कराने के लिए अधिकरण कारक की विभक्ति 'मा' प्रयुक्त होती है और उसे काल, अधिकरण, स्थान अधिकरण तथा भाव अधिकरण कहते है। जैसे–

दस मिनट (दस मिनट मे) या

गाउँ मा (ग्राव मे)।

क्रमश काल अधिकरण तथा स्थान अधिकरण का बोध कराते हे।

सम्बोधन कारक की विभक्ति 'हो' के अतिरिक्त 'मे' तथा 'हे' भी हैं ।

छोरो शब्द की रूपावली इस प्रकार है–

कारक [1]	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	छोरा, छोरोले, छोराले	छोरहरू, छोराहरूले
कर्म	छोरोलाई, छोरालाई	छोराहरू, छोराहरूलाई
करण	छोरोले, छोराले, बाट	छोराहरूले, बाट

---

1 डी0पी0 भट्टराई 'प्रकाश'–नेपाली व्याकरण र अभिवयक्ति, पृ0 212–216

सम्प्रदान	छोरोलाई, छोरालाई	छोराहरूलाई
अपादान	छोरो, छोरा देखि, बाट	छोराहरू देखि, बाट
सम्बन्ध	छोरा, छोराको, का, की	छोराहरू, का, की
अधिकरण	छोरो, छोरामा	छोराहरूमा
सम्बोधन	ए छोरा	ए छोरा हरूहो।

नेपाली भाषा मे पुरूष के तीन भेद – उत्तम, मध्यम एव अन्य पुरूष होते है।

सर्वनाम[1]– हिन्दी की तरह ही नेपाली भाषा मे सर्वनाम छ प्रकार के होते है, जो निम्नलिखित है –

क) पुरूषवाचक

ख) निश्चयवाचक

ग) अनिश्चयवाचक

घ) सम्बन्धवाचक, जैसे–जो, जे, जुन

ड) प्रश्नवाचक, जैसे– को, के

च) निजवाचक, जैसे– आफु (आप, निज, स्वय)

हिन्दी की तरह ही पुरूषवाचक सर्वनाम तीन तरह के होते है, जो निम्नलिखित है –

क) उत्तम पुरूष जैसे म (मै), हामी (हम)

ख) मध्यम पुरूष जैसे तँ (तुम), तिमीहरू (आपलोग)

ग) अन्य पुरूष जैसे त्यो (वह), ती (वे), तिनी, उ, उनी

निश्चयवाचक सर्वनाम अन्य पुरूष के यो (यह), त्यो (वह), यी (ये), ती (वे) सर्वनाम विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होने पर या किसी वस्तु के निर्देश करते समय निश्चयवाचक सर्वनाम होते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम जैसे-- कोही (कोई सजीव), केही (कोई निर्जीव), कुने, सब आदि ।

सर्वनामो के साथ सम्बोधन कारक का प्रयोग नही होता है।

कुछ सर्वनामो की रूपावलिया इस प्रकार है--

पुरूषवाचक उत्तमपुरूष 'म' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	म, मैले	हामी (हरू) ले
कर्म	मलाई	हामी (हरू) ले, बाट
करण	मैले, मबाहट	हामी (हरू) ले, बाट
सम्प्रदान	मलाई	हामी (हरू) लाई
अपादान	मदेखि, बाट	हामी (हरू) देखि, बाट
सम्बन्ध	मेरो, मेरी, मेरा	हाम्रो, हाम्री, हाम्रा
		हामी हरूको, का, की
		हामी (हरू) मा
अधिकरण	ममा	हामी (हरू) मा

मध्यम पुरूष 'तँ' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तँ, तैले	तिमीहरू, तिमी हरूले
कर्म	तँलाई	तिमीहरूलाई
करण	तैले, तबाट	तिमीहरूले, बाट
सम्प्रदान	तँलाई	तिमीहरूलाई
अपादान	तँबाट	तिमीहरूदेखि, बाट
सम्बन्ध	तेरो, तेरी, तेरा	तिमीहरूको, का, मी
अधिकरण	तँमा	तिमीहरूमा ।

अन्यपुरूष 'त्यो' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	त्यो, त्यसले	ती, तिनीहरू, तिनीहरूले
कर्म	त्यो, त्यसलाई	ती, तिनीहरूलाई
करण	त्यसले	तिनीहरूले
सम्प्रदान	त्यसलाई	तिनीहरूलाई
अपादान	त्यानदेखि, बाट	तिनीहरूदेखि, बाट
सम्बन्ध	त्यसको, का, की	तिनीहरूको, का, की
अधिकरण	त्यसमा	तिनीहरूमा

अन्यपुरूष 'उ' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	उ, उसले	उनीहरूले
कर्म	उ, उसलाई	उनीहरूलाई
करण	उसले	उनीहरूले
सम्प्रदान	उसलाई	उनीहरूलाई
अपादान	उसदेखि, उसबाट	उनीहरूदेखि, बाट
सम्बन्ध	उसको, उसका, उसकी	उनीहरूको, का, की
अधिकरण	उसमा	उनीहरूमा

नोट – आदरार्थ मध्यम एब अन्य पुरूष के तिमी, तिनी, उनी, मिनी सर्वनामो के स्थान पर तपाई, उहा, यहा शब्द प्रयुक्त होते है ।

सम्बन्धवाचक 'जो' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जो, जसले	जुन, जुनले
कर्म	जो, जसलाई	जुन, जुनलाई
करण	जसले, जसलेबाट	जुनले, जुनलेबाट
सम्प्रदान	जसलाई	जुनलाई
अपादान	जसदेखि, बाट	जुनदेखि, बाट
सम्बन्ध	जसको, जसका, जसकी	जुनको, जुनका, जुनकी,
अधिकरण	जसमा	जुनमा

प्रश्नवाचक 'को' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	को, कुन, कसले	को, कुन, कुनले
कर्म	को, कसलाई	को, कुनलाई
करण	कसले, कसबाट	कुनले, कुनबाट
सम्प्रदान	कसलाई	कुनलाई
अपादान	कसदेखि, कसबाट	कुनदेखि, कुनबाट
सम्बन्ध	कसको, कसका, कसकी	कुनको, कुनका, कुनकी
अधिकरण	कसमा	कुनमा

नोट – 'के' तथा 'जे' का प्रयोग केवल नपुसकलिग एकवचन मे होता है, जिसका रूप के, केले, के, केले, केलाई, "के दिखि, बाट", "के को, का, की"एव केमा होत है।

निजवाचक 'आफू' शब्द

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आफू, आफूले	आफू (हरू) ले
कर्म	आफूलाई	आफू (हरू) लाई
करण	आफूले, आफूबाट	आफू (हरू) ले बाट
सम्प्रदान	आफूलाई	आफू (हरू) लाई
अपादान	आफूदेखि, आफूबाट	आफू (हरू) देखि, बाट
सम्बन्ध	आफूको, का, की आपनो, आपना, आपनी	आफू (हरू) को , का, की
अधिकरण	आफूमा	आफू (हरू) मा

विशेषण नेपाली भाषा मे विशेषण चार तरह के होते है–

गुणवाचक विशेषा, जो विशेषण के रग, रूप, आकार आदि का बोध कराते है। जैसे–

रग – कालो, रातो, सेतो, नीले आदि

रूप – टेढ़ो, सीधा, कुरूप आदि

आकार – समतल, गोलो

गुण – राम्रो, नराम्रो, उदार, उचित, धनी, गरीब

स्थान – ऊँचो, भित्रो

अवस्था – कठोर, नरम, मोटो, पातलो

काल – भूत, वर्तमान, भविष्यत्, नया, पुरानो

दिशा – उत्तरी, दक्षिणी, देब्रे, दाहिने

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
गुरू	गुरूतर	गुरूतम

'भन्दा' तथा 'मा' शब्दो के प्रयोग द्वारा उत्तरावस्था का बोध कराया जाता है। जैसे– मोहन – सोहन भन्दा बुद्धिमान छ। मोहन र सोहन मा सोहन चलाक छ ।

सबभन्दा शब्द के प्रयोग द्वारा उत्तमावस्था का बोध कराया जाता है। जैसे–सोहन सबभन्दाराम्रो छ ।

विभिन्न उपसर्गो[1] या प्रत्ययो के प्रयोग द्वारा सज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय से विशेषण बनाये जाते है । जैसे–

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
वान्	विद्या	विद्यावान्
	कोच	कोचवान्
	धन	धनवान्
मान्	बुद्धि	बुद्धिमान्
	श्री	श्रीमान्
मन्त	दया	दयमन्त
	गुण	गुणमन्त
इक	कल्पना	काल्पनिक
	स्वाभाव	स्वाभाविक
	धर्म	धार्मिक

1 डा0 हेमाड गराज अधिकारी–समसामयिक नेपाली व्याकरण, पृ0 245

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
	समाज	सामाजिक
	दिन	दैनिक
	पक्ष	पाक्षिक
	मास	मासिक
	वर्ष	वार्षिक
	भूगोल	भौगोलिक
	हृदय	हार्दिक
	इच्छा	ऐच्छिक
	नगर	नागरिक
	प्रकृति	प्राकृतिक
ईय	जाति	जातीय
	आत्मा	आत्मीय
	स्वर्ग	स्वर्गीय
	स्थान	स्थानीय
इया	शहर	शहरिया
इन/इण	कुल	कुलीन
	ग्राम	ग्रामीण
लु/आलु/ले/ली/लो	खर्च	खर्चालु
	विष	विषालु
	माया	मायालु
	दूध	दूधालु
	घर	घरेलु
	ठिमी	ठिमिले
	गोरखा	गोरखाली
	रस	रसिलो

क्रिया से बने विशेषण जैसे–पढ़ेको (पाठ)

सज्ञा का सम्बन्ध कारक रूप जैसे– जगली, शहरी, भारतीय, नेपाली आदि ।

परिमाणवाचक विशेषण – जो निश्चित परिमाणवाचक तथा अनिश्चित परिमाणवाचक में विभक्त होते है ।

सख्यावाचक विशेषण इसके दो भेद होते है –

क) निश्चित संख्यावाचक

ख) अनिश्चित सख्यावाचक

निश्चित संख्यावाचक विशेषण पाच तरह के होते है, जो निम्नलिखित है–

क) गणनावाचक जैसे– एक, चार, पाच आदि

ख) क्रमवाचक जैसे– चौथो, पाचो

ग) आवृत्तिवाचक जैसे– दुगुना, चौगुना, दोबर, तेबर

घ) समुदायवाचक जैसे– चारै, सातै

ड) प्रत्येकवाचक जैसे– एकेक, प्रत्येक, हर एक, दुइ–दुइ, तीन–तीन।

अनिश्चित संख्यावाचक सर्वनाम– जैसे– थोडे, घेरै, सबै आदिका प्रयोग अनिश्चित परिणामवाचक विशेषण की तरह भी हो सकता है। हजारौ, अनेक आदि अनिश्चित सख्यावाचक विशेषणो के साथ ऐसा नही होता ।

सर्वनाम विशेषण – सर्वनाम से बने होते है। ये दो तरह के होते है जो निम्नलिखित है –

क) मूल सर्वनामिक विशेषण – जैसे यो, त्यो, उ, जो आदि।

ख) यौगिक सर्वनामिक विशेषण– जैसे यति, यत्रो, त्यति,त्यत्रो, कति, कत्रो, उति, उत्रो, यस्तो, त्यस्तो, कस्तो, उस्तो, जस्तो आदि।

प्रयोग के अनुसार विशेषण के निम्नलिखित दो भेद होते है–

क) उद्देश्य विशेषण– जैसे मीठो आँप, राम्रोमानिस

ख) विधेय विशेषण– जैसे आँप मीठो छ

जिस विशेषण के अन्त मे आकार या ओकार होता है उसका रूप विशेष्य के स्त्रीलिंग होने पर बदल जाता है। जैसे–कालो गोऊ, काली गाई, राम्रो मालिक, राम्री मालिक्नी ।

जिस विशेशण के अन्त मे 'वान' या 'मान' प्रत्यय जुड़ा होता है वे बत्ती एव मत्ती प्रत्ययो मे बदल जाते है। जैसे–

रूपवान पुरूष, रूपवती स्त्री, बुद्धिमान पुरूष, बुद्धिमती स्त्री आदि।

जिन विशेषणो के अन्त मे आकार या ओकार नही होता, उनका रूप नही बदलता है। जैसे दयालु पुरूष, दयालु स्त्री ।

हिन्दी की तरह ही नेपाली भाषा मे भी विशेषण की मूलावस्था, उत्तरावस्था एव उत्तमावस्था– ये तीन अवस्थाएं होती है।

तत्सम् शब्दो को मूलावस्था से उत्तरावस्था एव उत्तमावस्था मे बदलने के लिए सस्कृत की तरह ही क्रमश 'तर' एव 'तम' प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। जैसे–

प्रत्यय	सज्ञा	विशेषण
इत	हर्ष	हर्षित
ई/ए	खून	खूनी
	गफ	गफी

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
	उत्साह	उत्साही
	भात	भाते
	पहाड़	पहाड़े
इयार	होश	होशियार इत्यादि

इनमें से अधिकाश प्रत्यय हिन्दी मे भी इसी प्रकार प्रयुक्त होते है। ति, त्रो, स्तो आदि प्रत्यय लगाकर सर्वनाम से विशेषण बनाते है । जैसे–

सर्वनाम	विशेषण
उ	उति, उत्रो, उस्तो
को	कति, कत्रो, कस्तो
त्यो	त्यति, त्यत्रो, त्यस्तो
यो	यति, यत्रो, यस्तो

सख्यावाचक विशेषण से विशेषण बनाने के लिए उसमे ता, ओटा, बर, हरो आदि प्रत्यय जोड़ते हैं ।

संख्यावाचक विशेषण	विशेषण
एक	एउटा, एकवटा, एकोहरा
दुइ	दुउटा, दुइटवटा, दोबर, दोहरो, दोहोटो
तीन	तीनवटा, तेबर, तेहरो
चार	चारओटा, चौबर, चौगुना, चौथो

क्रिया की धातु मे अक्कड, आहा, इलो, उवा, ऐया आदि प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते है ।

क्रिया	**विशेषण**
बुझनु	बुझक्कड
घुम्नु	घुमक्कड़
पोल्नु	पोलाहा
सुत्नु	सुताहा
हास्नु	हँसिलो
हार्नु	हरूवा
खानु	खवैय, खाने
गाउनु	गवैया
हुनु	हुने
पढ्नु	पढ़ने, पढ़न्ते
उडनु	उडन्ते
लड़नु	लड़ाकू

अव्यय से विशेषण बनाने के लिए 'ई', इरी, ल्लो आदि प्रत्यय जोड़ते है।

अव्यय	**विशेषण**
बाहिर	बाहिरी
भित्र	भित्रे
पर	पराई
ऊपर	उपल्लो
पछि	पछिल्लो

क्रिया – इस भाषा मे क्रिया की धातु मे 'नु' प्रत्यय लगाकर क्रिया के साधारण रूप बनता है। जैसे खानु, दिनु, राख्नु, देख्नु, गर्नु आदि ।

हिन्दी की तरह ही इस भाषा मे क्रिया के दो भेद– अकर्मक तथा सकर्मक होते है ।

अकर्मक क्रिया – पूर्ण सकर्मक जैसे सुत्नु, हस्नु आदि तथा अपूर्ण सकर्मक जैसे हुनु, लाग्नु, आदि दो तरह के होते है।

सकर्मक क्रिया भी पूर्ण सकर्मक (जिसका एक ही कर्म होता है) तथा अपूर्ण सकर्मक (द्विकर्मक तथा कर्मपूर्तियुक्त क्रियाए) दो तरह की होती है।

अर्थ के अनुसार हिन्दी की तरह ही क्रिया के दो भेद (समापिका तथा असमापिका) होते है।

समापिका क्रिया के तीन भेद– साधारण क्रिया, सभाव्य क्रिया एव विधि क्रिया या विध्यर्थ होते है।

पूर्वकालिक कृदन्त असमापिका क्रिया का ही एक रूप है। यह 'ई' (जैसे खाई, गरी आदि), एर जैसे (खएर, गरेर), कन (जैसे करीकन), इ वरी (जैसे गरी बरी) प्रत्ययो के प्रयोग द्वारा बनता है। पूर्वकालिक क्रिया अकर्मक क्रिया (जैसे उठेर, गएर आदि) तथा सकर्मक क्रिया (जैसे खएर, लेखेर आदि) दोनो से बनती है।

व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के दो भेद– मूल क्रिया (जैसे गर्नु, दिनु, खानु, बस्नु आदि) तथा यौगिक क्रिया (जैसे गरि, दिनु, लजाउनु आदि) होते है ।

यौगिक क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया या सयुक्त बनाकर या नाम धातु के प्रयोग द्वारा बनाई जा सकती है ।

प्रेरणार्थक क्रिया निम्नलिखित तरीके से बनाई जा सकती है–

क) 'आउ' प्रत्यय के प्रयोग द्वारा

क्रिया	**प्रेरणार्थक क्रिया**
गर्नु	गराउनु
बस्नु	बसाउनु
रूनु	रूबाउनु

ख) जानु, पार्नु, सक्नु, हुनु, रोक्नु, ठान्नु आदि क्रियाओ के अन्त मे 'लाउनु' शब्द जोडकर–

क्रिया	**प्रेरणार्थक क्रिया**
जानु	जानलाउनु
रूक्नु	रोक लाउनु

ग) कुछ क्रियाओ के धातु के साथ 'आउन लाउन' शब्द जोडकर–

क्रिया	**प्रेरणार्थक क्रिया**
आउनु	आउन लाउनु
पठाउनु	पठाउन लाउनु
समाउनु	समाउन लाउनु
पाउनु	पाउन लाउनु

सयुक्त क्रिया क्रिया के साथ सहायक क्रिया जोडकर सयुक्त क्रिया बनाई जाती है ।

सहायक क्रिया	संयुक्त क्रिया
गर्नु	लेख्दैगर्नु, जादैगर्नु
दिनु	गरिदिनु, भनिदिनु
जानु	निजानु, भन्नजानु
सम्नु	गर्नसम्नु, भन्नसक्नु
पाउनु	भन्नपाउनु, लेख्नपाउनु
हेर्नु	भनिहेर्नु, लेखिहेर्नु, गरिहेर्नु
ढाल्नु	लेखिढाल्नु, भनिढाल्नु
छोड़नु	गरिछोडनु, लेखिछोडनु
राख्नु	लेखिराख्नु, भनिराख्नु

सज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि के साथ 'इ, आउ' आदि प्रत्यय जोडकर नामधातु बनती है। जैसे–

शब्द	नामधातु	क्रिया
डर	डराउ	डराउनु
लाज	लजाउ	लजाउनु
लोभ	लोभि, लोभ्याउ	लोभिनु, लोभ्याउनु
लामो	लमि	लमिनु
भित्र	भित्रि	भित्रिनु
घिन	घिनाउ	घिनाउनु
दोबर	दोबरि	दोबारिनु

काल, वाच्य, लिग, वचन, पुरूष एव अर्थ के परिवर्तन द्वारा क्रिया का रूपान्तर होता है ।

काल [1] हिन्दी की तरह ही इस भाषा मे काल तीन– भूतकाल, वर्तमानकाल एव भविष्यकाल होते है। अलग–अलग प्रत्ययो के प्रयोग द्वारा विभिन्न कालों का निर्धारण होता है। कालो द्योतक प्रत्यय निम्नलिखित दो प्रकार के होते है–

क) करण प्रत्यय, जैसे छु, छौ, छस, छ, छन आदि। स घरमा थिए । म स्कूल जानछु आदि प्रयोग इसके उदाहरण है।

ख) अकरण प्रत्यय (निषेधात्मक प्रत्यय) जैसे छैन, छैनो, छैनस, छैनो, छैनून आदि। म घरमा थिइनँ। म स्कूल जादिनँ आदि प्रयोग इसके उदाहरण है।

नेपाली भाषा मे भूतकाल चार तरह का– सामान्य भू, पूर्णभूत, अपूर्ण भूत एव संदिग्ध भूत होता है। नीचे 'बस्नु' क्रिय (बसना) का रूपान्तर इस प्रकार है–

सामान्य भूतकाल

	एकवचन	**बहुवचन**
उ0पु0	म बसिनँ	हामी बसेनौ
मध्यम पुरूष	तँ बसिनस	तिमीहरू बसेनौ
अन्य पुरूष	त्यो बसेन	तिनीहरू बसेनन्
(स्त्री0)	त्यो बसिन	

1 डी0पी0 भट्टराई 'प्रकाश'–नेपाली व्याकरण र अभिवयक्ति, पृ0 76–83

अकरण (निषेधवाचक) सामान्य भूत

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पु0	म बसिनँ	हामी बसेनौ
म0पु0	तँबसिनस	तिनीहरू बसेनौ
अ0 पु0	त्यो बसेन	तिनीहरू बसेनन्
(स्त्री0)	त्यो बसिन	

पूर्व भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	म बसेको थिएँ	हामी बसेका थियौ
(स्त्री0)	म बसेकी थिएँ	
मध्यम पुरूष	तँ बसेको थिइस	तिमीहरू बसेका थियौ
(स्त्री0)	तँ बसेकी थिइस	
अन्य पुरूष	त्यो बसेको थियो	तिनीहरू बसेका थिए
(स्त्री0)	त्यो बसेकी थिई	

अकरण (निषेधवाचक) पूर्वभूत

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसेको थिइनँ	हामी बसेका थिएनौ
(स्त्री0)	म बसेकी थिइनँ	
म0पु0	तँ बसेको थिइनस्	तिमीहरू बसेका थिएनौ
(स्त्री0)	तँ बसेकी थिइनस्	
अ0पु0	त्यो बसेको थिएन	तिनीहरू बसेका थिएनन्
(स्त्री0)	त्यो बसेकी थिइन	

अपूर्ण भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसतो थिए/बस्तथे/बस्थे	हामी बस्ता थियौ
(स्त्री0)	म बस्ती थिएँ	बस्तथ्यौ/बस्थ्यौ
मध्यम पुरूष	तँ बस्तो थिइस/ बस्तथिइस/बस्थिस्	तिमीहरू बस्ताथियौ/ बस्तथ्यौ/बस्थ्यौ
(स्त्री0)	तँ बस्ती थिइस्	
अ0पु0	त्यो बस्ती थियो/ बस्तथ्यो/बस्थ्यो	तिनीहरू बस्ताथिए/ बस्तथे/बस्थे
(स्त्री0)	त्यो बस्ती थिई/बस्तथी/बस्थी	

अकरण (निषेधवाचक) अपूर्ण भूत

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बस्तिनथें/बस्तैनथे	हा बस्तैनथ्यौ
म0पु0	तँ बस्तैनथिस	तिमीहरू बस्तैनथ्यो
(स्त्री0)	तँ बस्तिनथिस्	
अन्य पु0	त्यो बस्तैनथ्यो	तिनीहरू बस्तैनथे
(स्त्री0)	त्यो बस्तिनथी	

सदिग्ध भूत

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसे हुँला	हामी बसे होला
(स्त्री0)	म बसे हुँली	
म0पु0	तँ बसिस् होला	तिमीहरू बस्यौ होला
(स्त्री0)	तै बसी होलिस	

अ0पु0	त्यो बस्यो होला	तिनीहरू बसे होलान्
(स्त्री0)	त्यो बसी होली	

इस भाषा मे वर्तमान काल[1] के चार भेद– सामान्य वर्तमान, तात्कालिक वर्तमान, पूर्ण वर्तमान तथा सदिग्ध वर्तमान होते है जिनकी रूपावली इस प्रकार है–

सामान्य वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बस्छु/बस्तछु	हामी बस्छौ/बसतछौ
म0पु0	तँ बस्छस्/बस्तछस	तिमीहरू बस्तछौ
(स्त्री0)	तँ बस्छेस/बस्तछेस	
अन्य पु0	त्यो बस्छ/बस्तछ	तिनीहरू बस्छन्
(स्त्री0)	त्यो बस्छे/बस्तछे	बसतछन्

अकरण (निषेधवाचक) सामान्य वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	मैं बस्तिनँ	हामी बस्तैनौं
म0पु0	तँ बस्तैनस	तिमीहरू बस्तैनौ
(स्त्री0)	तँ बस्तिनस्	
अन्य पु0	त्यो बसतैन	मिनीहरू बस्तैनन्
(स्त्री0)	त्यो बस्तिन	

1 डा0 हेमाड गराज अधिकारी–समसामयिक नेपाली व्याकरण, पृ0 115

तात्कालिक वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसिरहेछु/रहे कोछु	हामी बसिरहे छौ
(स्त्री0)	म बसिरहिछु/बसिरहेकीछु	रहेका छौ
म0पु0	तँ बसिरहे छस/रहे कोछस्	तिमीहरू बसिरहे छौ/रहेका छौ
अन्य पु0	त्ये बसिरहेछ/रहेको छ	तिनीहरू बसिरहेछन्
(स्त्री0)	त्यो बसिरहिछ/ बसि रहे कि छ	रहेकाछन्

अकरण तात्कालिक वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसिरहेको छैनँ	हामी बसिरहेका छैनौ
(स्त्री0)	म बसिरहेकी छैनँ	
म0पु0	तँ बसिरहेको छैनस्	तिमीहरू बसिरहेका छैनौ
(स्त्री0)	तँ बसिरहेकी छैनस्	
अन्य पु0	त्यो बसिरहेको छैन	तिनीहरू बसिरहेका छैनन्
(स्त्री0)	त्यो बसिरहेकी छैन	

पूर्ण वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसेको छु	हामी बसेका छौ
(स्त्री0)	म बसेकी छु	
म0पु0	तँ बसेको छस्	तिमीहरू बसेका छौ
(स्त्री0)	तँ बसेकी छस्	
अन्य पु0	त्यो बसेको छ	तिनीहरू बसेका छन्
(स्त्री0)	त्यो बसेकी छ	

अकरण (निषेधवाचक) पूर्ण वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बसेको छैनँ	हामी बसेका छैनो
(स्त्री0)	म बसेकी छैनँ	
म0पु0	तँ बसेको छैनस्	तिमीहरू बसेका छैनौ
(स्त्री0)	तँ बसेकी छैनस्	
अन्य पु0	त्यो बसेको छैन	तिनीहरू बसेका छैनन्
(स्त्री0)	त्यो बसेकी छैन	

सदिग्ध वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
उ0पु0	म बस्तो हुँ/हुँला	हामी बस्ता होऊँ/होउँला
(स्त्री0)	म बस्ती हुँ/हुँली	
म0पु0	तँ बस्तो होसँ/लोलिस्	तिमीहरू बस्ता होऊ
(स्त्री0)	तँ बस्ती होस्/होलिस्	
अन्य पु0	त्यो बस्तो हो/होला	तिनीहरू बस्ता हुन
(स्त्री0)	त्यो बस्ती हो/होली	होलान्

नोट– सदिग्ध वर्तमान के निषेधावाचक रूप के लिए क्रिया के पहले 'न' जोडते है। जैसे– म नबस्तो हुँ (हुँला)। तँ नवस्तो होस (होलास) इत्यादि ।

भविष्यत काल नेपाली भाषा मे भविष्यत् काल के दो भेद– सामान्य भविष्यत् एव सभाव्य भविष्यत्–होते है। कोई–कोई वैयाकरण इसे पूर्ण तथा अपूर्ण भविष्यत् के नाम से भी अभीहित करते है ।

निषेधात्मक सभाव्य भविष्यत् काल के लिए क्रिया के पहले 'न' लगाते है। जैसे– म नबसुला, तँ नबस्लास्।

हिन्दी की ही तरह नेपाली भाषा मे तीन वाच्य[1]– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एव भाववाच्य– होते है। कर्मवाच्य का प्रयोग इस भाषा मे बहुत ही कम होता है।

कर्तृवाच्य अकर्मक एव सकर्मक दोनो ही क्रियाओ के साथ बनता है। जैसे– भाइ, सुन्छ (अकर्मक क्रिया), मोहन किताब पढ् (सकर्मक क्रिया)। कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रिया के साथ ही बन सकता है। जैसे– मोहनबाट पत्र लेखियो। इसी प्रकार भाववाच्य केवल अकर्मक क्रिया से बनता है। जैसे–

रामबाट सुतिन्छ् ।

सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया के साथ "इकार या इन्" जोड़कर क्रमश कर्मवाच्य तथा भाववाच्य बनाते है। जैसे–

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
खान्छ	खाइन्छ
पठछ्	पठिनछ्
लेख्छ्	लेखिनछ
गाउछ	गाइन्छ
गर्छ	गरिन्छ
मोहन किताब पढ्छ	मोहन बाट किताब पठिन्छ
म पत्र लेख्नेछु	म बाट पत्र लेखिनेछ
हाँस्छ	हाँसिन्छ

1 पच्च प्रसाद शर्मा–अनिवार्य नेपाली को पाठ्यपुस्तक, पृ0 69

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रून्छ	रोइन्छ
मर्छ	मरिन्छ
आउछ	आइन्छ
बस्छ	बसिन्छ
जान्छ	जाइन्छ, गइन्छ
हुनछ	होइन्छ, भारन्छ
राम सुत्छ	रामबाट सुतिन्छ

अव्यय　　नेपाली भाषा मे अव्यय चार तरह के होते है, जो निम्नलिखित है–

क) क्रिया विशेषण

ख) सम्बन्ध वाचक या नामयोगी

ग) सयोजक

घ) विस्मयादि बोधक ।

क्रिया विशेषण के निम्नलिखित भेद है –

क) स्थानवाचक– जैसे यहा, उहा, कहा, यता, उता, त्यता, कता, जहा, तहा, नजीक, पारि, वारि, पर, वर, तल, माथि, अथि, पछि, बाहिर, भित्र इत्यादि ।

ख) परिमावाचक – जैसे ढेर, थोर, किंचित्, कम, थेरै, थोरै, अति, अत्यन्त, जति, मति, खूब, प्राय , लगभग इत्यादि।

ग) कालवाचक– अब, तब, जब, आज, हिजो, प्रतिदिन, निरन्तर, अहिले, कहिले, सदा, सर्वदा, बहुधा, तत्काल, यजिञ्जेल, उतिञ्जेल, हियो इत्यादि ।

घ) गुणवाचक – जैसे राम्री, वेसरी, छीटो, जाडो इत्यादि ।

ङ) अनुकरणवाचक – दनादन, फनाफन, पटापट, खुसुखुसु, घुरू घुरू, टक्क, टपक्क, भुसुक्क, मुसुक्क, पुलुक्क, फतक्क, थपक्क, थमाथम, सरासर, थ्याच्च, प्याच्च, चिटिक्क, झिलिक्क इत्यादि ।

च) निषेधवाचक – जैसे न, नाईं, नि, सिन्तै इत्यादि ।

सम्बन्धवाचक या नामयोगी – इसके निम्नलिखित भेद होते है–

क) कालवाचक जैसे–अधि, पछि, पूर्व, उपरान्त इत्यादि

ख) स्थानवाचक जैसे–निकट, नेर, बीच, माथि इत्यादि

ग) दिशावाचक जैसे– तर्फ, तिर, पट्टि इत्यादि

घ) साधनवाचक जैसे– द्वारा ।

ङ) हेतुवाचक जैसे– निमित्त, निम्ति

च) भिन्नतावाचक जैसे–बिना, रहित, बाहेक इत्यादि ।

छ) साहश्यवाचक जैसे–सम, समान, अनुरूप, तुल्य, भाति इत्यादि।

कुछ शब्द विभिन्न प्रयोग द्वारा क्रिया विशेषण अथवा सम्बन्ध–वाचक अव्यय या सयोजक हो सकता है ।

सयोजक   इसके दो भेद – सापेक्ष एव निरपेक्ष होते है ।

सापेक्ष सयोजक निम्नलिखित दो तरह के होते है–

क) करणवाचक   जैसे– र, किनकी इत्यादि ।

ख) सकेतवाचक   जैसे–यदि, पो, भने, भनेदेखि इत्यादि।

निरपेक्ष अव्यय निम्नलिखित प्रकार के होते है –

क) समुच्चयवाचक   जैसे– र, समेत, पनि इत्यादि ।

ख) विभाजक   जैसे– अथवा, वा, कि, किंवा

ग) परिणामदर्शक   जैसे– अत , अतएव, यसैले, यसकारण इत्यादि।

घ) विरोधदर्शक   जैसे– किन्तु, परन्तु, वरन्, तर, नत्र, होइनभने इत्यादि।

विस्मयादिबोधक   इसके मुख्य भेद निम्नलिखित है–

क) हर्षबोधक   जैसे– अहा । वाह–वाह । धन्य । श्यावस ।

ख) आश्चर्यबोधक   जैसे–अहो । के । क्या । सॉच्चै ।

ग) तिरस्कारबोधक   जैसे– छि । धिक्कार ।

घ) शोकबोधक   जैसे– हाय । हा । हरे । राम–राम ।

ड) सम्बोधनबोधक   जैसे– रे, अरे, ए इत्यादि ।

सधि – हिन्दी तथा सस्कृत की तरह ही इस भाषा मे सधि तीन तरह की – स्वर सधि, व्यजन सधि एब विसर्ग सधि – होती है। सधि के नियम भी इस भाषा मे समान है ।

समास –[1]

हिन्दी की तरह ही नेपाली भाषा मे भी समास के छ भेद – तत्पुरूष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, अव्ययीभाव एव बहुब्रीहि होते है। समास एव उनके विग्रह सम्बन्धी नियम इन दोनो ही भाषाओ मे समान है ।

हिन्दी भाषा की तरह ही नेपाली भाषा मे भी वाक्य के मुख्य दो खण्ड उद्देश्य एव विधेय होते है । वाक्यो के भेद, वाक्य रचना एव वाक्य विग्रह के नियम भी प्राय समान होते है ।

हिन्दी एव नेपाली विराम चिन्ह समान है ।

छन्द रचना मे भी हिन्दी एव नेपाली मे प्रचुर समानता है ।

---

1 डा0 हेमाड राज अधिकारी, "समसामयिक नेपाली व्याकरण", पृ0 311

****

चौथा अध्याय

भोजपुरी और नेपाली का सांस्कृतिक बोध

भोजपुरी और नेपाली का सास्कृतिक बोध

भौगोलिक रूप से भारत और नेपाल के जुडे होने के कारण ये दोनो सास्कृतिक रूप से भी गहरे जुडे हुए है। भारत के दो प्रमुख भोजपुरी भाषी राज्यो विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार से नेपाल जुडा हुआ है। हिन्दू राष्ट्र होने के नाते नेपाल का विशेषकर उत्तर भारत के गया, काशी, प्रयाग, हरिद्वार, अयोध्या, वृन्दावन, चित्रकूट आदि तीर्थस्थलो के साथ प्राचीन काल से ही अटूट सम्बन्ध रहा है । भारत के यह सभी तीर्थ स्थल बिहार और उत्तर प्रदेश मे पडते है। बिहार और उत्तर प्रदेश भारत का भोजपुरी भाषी क्षेत्र तो है ही, हिन्दी के प्राय मूर्धन्य व अनेक छोटे बडे साहित्यकार भी इन्ही दो राज्यो मे हुए है। विद्यापति से लेकर कबीर, सूर, तुलसी तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के स्वल्प निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक प्राय सभी श्रेष्ठ साहित्यकार उसी हिन्दी भाषी क्षेत्र अथवा उपर्युक्त तीर्थस्थलो से किसी न किसी रूप मे अवश्य सम्बद्ध रहे है। कबीर, तुलसी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र काशी से जुडे रहे, तो सूर ब्रजभूमि से । वही दूसरी ओर विद्यापति मिथिला अचल से जुडे रहे। नेपाल पूरब से पश्चिम तक बिहार और उत्तर प्रदेश से घनिष्ठ रूप मे लगा हुआ है तथा दोनो ओर की भाषिक स्थिति भी बिल्कुल एक है । इस समानता से तथा दोनो ओर के तीर्थस्थलो ने नेपाल और भारत के बीच ऐसा सहज सम्बन्ध और आत्मीय वातावरण पैदा कर दिया है, जिससे दोनो ही देश के लोग तीर्थस्थलो पर एक–दूसरे से सदा बधु–भाव से मिलने का अवसर पाते रहे है। प्रयाग के सगम पर कुम्भ और माघ मेले, काशी मे गगा स्नान एव विश्वनाथ दर्शन हेतु असख्य नेपाली प्राय नेपाल के प्रत्येक कोने से आते ही रहते है। प्रतिवर्ष बडी सख्या मे सायुज्य मुक्ति के उद्देश्य से नेपाली वृद्ध काशी वास के लिए भी आते है, जिनके साथ वर्षो उनका परिवार

भी वहा रूका रहता है। इसी प्रकार वृन्दावन, मथुरा आदि स्थलो पर भी होली और झूला आदि अवसरो पर अथवा अन्य दिनो मे दर्शनार्थ आने वाले लोग भी कम नही ।

बिहार के देवघर (वैद्यनाथ धाम) और हरिहर क्षेत्र मे भी सावन और माघ मे शिवलिग पर जल अर्पित करने तथा हरिहर क्षेत्र मे कार्तिक स्नान के लिए लाखो लोग प्रतिवर्ष आते है। इनके अतिरिक्त भी अनेक छोटे–बडे धार्मिक स्थल शिलानाथ धाम, कल्याणेश्वर महादेव, सीतामढ़ी आदि धार्मिक स्थल भी उसी हिन्दी भाषी प्रदेश मे पड़ते है जहा पर हर वर्ष नेपाल से लाखो लोग दर्शनार्थ आया करते है ।

भारत से भी नेपाल के तीर्थस्थलो पर जाने वाले लोगो की सख्या लाखो मे होती है। काठमाडू उपत्यका मे शिवरात्रि के अवसर पर पशुपति–नाथ दर्शन हेतु लाखो लोग भारत से जाते है। उसी प्रकार नेपाल के अन्य धार्मिक–तीर्थस्थलो जैसे जनकपुर धाम, वाराह क्षेत्र आदि मे भी काफी बडी सख्या भारतवासी जाते है। जनकपुर मे तो विवल्पचमी, रामनवमी और फाल्गुन पूर्णिमा के अवसर पर लाखो की सख्या मे भारतीय लोग आते है। फाल्गुन शुक्ल मे वहा जनकपुर क्षेत्र परिक्रमा पन्द्रह दिन तक चलती है और पूर्णिमा को समापन दिन पर नगर परिक्रमा होती है। इतने दिनो तक इस परिक्रमा मे लाखो भारतीय–नेपाली साथ–साथ रहते है। जनकपुर को बिहार के जयनगर से जोड़ने वाली नेपाली रेल जो कि देश की एकमात्र रेल है, मुख्य रूप मे भारतीय यात्रियो को ही ध्यान मे रखकर चलायी जा रही है। इससे नेपाल को अच्छी आय हो रही है। इन धार्मिक स्थलो पर आने वाले अधिकाश भारतीय यात्री हिन्दी प्रदेश के ही होते है।

हम यह अच्छी तरह जानते ही है कि भारत और नेपाल के जनजीवन तथा सस्कृति–निर्माण मे धर्म ने जितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, उतनी और किसी चीज ने नही । वस्तुत धर्म ही वह मूल बिदु है जिसने दोनो देशो के सास्कृतिक सम्बन्ध को एक स्थिर और ठोस धरातल प्रदान किया है।

भारत के सस्कृत ग्रथो मे नेपाल का उल्लेख

नेपाल के सम्बन्ध मे भारत के सस्कृत ग्रन्थो मे उल्लेख प्राचीन काल से ही प्राप्त होता है। दोनो देशो के पुरातन सास्कृतिक सम्बन्ध पर इससे भी काफी प्रकाश पडता है। उन ग्रन्थो मे सर्वाधिक "स्कन्दपुराण" के अन्तर्गत नेपाल का सविस्तार उल्लेख प्राप्त होता है। स्कन्दपुराण का समय विक्रम की आठवी शताब्दी से भी पूर्व का ठहरता है। इस ग्रन्थ के हिमवत्खड अन्तर्गत "नेपाल–महात्म्य" [1] नाम से नेपाल का विशद वर्णन हुआ है। नेपाल को महाक्षेत्र यानी महान तीर्थ की सज्ञा देते हुए कथा प्रारम्भ होती है ।

नेपाल काशी और कैलाश से भी रम्य [2]

स्कन्दपुराण के अन्तर्गत नेपाल –महात्म्य मैं तो नेपाल को काशी और कैलाश से भी श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश की गयी है। इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य और गरिमा को देखकर काशी और कैलाश से कभी अपने आपको अलग नही करने पाते। भगवान शिव तथा देवी पार्वती का मन भी उतना आनन्दमय और

---

1 "नेपाल माहात्म्य", प्रथम सस्करण, वि०स० 2028 नेपाल राष्ट्रीय अक्षर प्रतिष्ठान प्रकाशन काठमाण्डू, पृ० 1

2 वही, पृ० 3

प्रभावित हुआ कि ये दोनो काशी एव कैलाश को छोड उसी श्लेष्मातक वन मे आ गये और मृग और मृगी रूप मे विचरण करने लगे। शिव और पार्वती के अदृश्य हो जाने से देवतागण, ससार व्याकुल हो गया । नारद आदि मुनि तथा ब्रह्मा आदि देवगणो ने तीनो लोको मे उन्हे ढूढा, शहर, गाव, नदी, वन, पर्वत कही भी उन्हे शकर दिखाई नही पडे । हिमालय पर्वत घूमते हुए अत्यन्त शान्त वे लोग हिमालय की गोद मे आश्रित श्लेषमातक वन मे आये उसी समय उन्हे मृगो के झुड में एक मृग तीन नेत्र तथा अत्यन्त पुष्ट सुन्दर शरीर वाले मृगरूपधारी शिव और मृगी रूप मे पार्वती का दर्शन हुआ ।

शकर द्वारा मृग रूप का त्याग नही करते देख इन्द्र, विष्णु और ब्रह्मा ने विचार किया कि उस मृग का सीग पकडकर हम इसे वश मे कर ले। इसके पश्चात् उन्होने बलपूर्वक दोनो हाथो से मृग रूपी शिव का सीग पकडा देवताओ द्वारा सींग पकड़े जाने पर मृगरूपी महेश्वर जोरो से उछले जिससे सीग के चार टुकड़े हो गये। महारूद्र उछलकर उस पार बाग्मती नदी के मनोहर तीर पर पहुच गये और पशुपति नाम से अब स्थित हो गये देवताओ ने तब शिव से हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा कि हे महारूद्र आप काशी या मनोहर कैलाश पर चलिए। आपके बिना हमे चराचर जगत शून्य सा लगता है। इतना सुनकर शिव ने देवताओ से कहा कि मै इस रम्य वन मे रहूगा, कही नही जाऊगा। इस श्लेषमान्तक वन मे पशु रूप मे स्थित हूँ इसलिए मेरा नाम ससार मे पशुपति होगा मुझ पशुपति का जो देवता और पृथ्वी का मनुष्य दर्शन करेगा उसे मेरे अनुग्रह से पशु जन्म नही प्राप्त होगा[1] ।

---

1 "नेपाल माहात्म्य", वही, प्रथम सस्करण, पृ0 3

शिव के साथ पार्वती ने भी जब वही वाग्मती नदी के तीर पर रहने की इच्छा प्रकट की तो शिव ने कहा कि – हे गिरिजे । मै तुम्हे एक अत्यन्त गुप्त बात बताता हूँ। हे पार्वती, तुम पूर्व जन्म मे सती नाम से देव की पुत्री थी। पिता के अपमान से तुमने प्राण त्याग कर दिया । तुम्हारे वियोग मे शोकाकुल मै स्नेहवश तुम्हारी तारा कन्धे पर लेकर सारी पृथ्वी पर घूमता फिर रहा था मुझे शोकाकुल देव विष्णु ने मेरे प्रति स्नेहवश तुम्हारे अगो को अपने सुदर्शन चक्र से काट–काट कर गिराना शुरू कर दिया । मृगस्थली के उत्तर वाग्मती नदी के तीर पर तुम्हारा गुह्य अग गिरा, वह पीठ अत्यन्त महिमायुक्त है। मेरे प्रेमवश तुमने यहा रहने की इच्छा प्रकट की इसलिए हे सुमुखी पार्वती तुम्हारा नाम वत्सला होगा। हे महेश्वरी, मेरी आज्ञा से तुम मेरी आग्नेय दिशा मे सदावास करोगी। वाग्मती मे स्नान कर तुम्हारे दर्शनोपरान्त जो मेरा दर्शन करेगा उसे कैलाश वास का फल प्राप्त होगा ।

स्कन्दपुराण के इस हिमवत्खड अन्तर्गत नेपाल हिमालय मे वर्णित सारे स्थल आज भी ज्यो के त्यो है। उन स्थलो की महिमा ने नेपाल को सदा शिवत्व से मडित किये रखा। पशुपति और मृगस्थली देव के शान्त और रमणीय स्थल पर पहुंचने पर आज भी मनुष्य की पाशिवकता जैसे स्वत दूर हटने लगती है। पाशिवक दुर्गुणो से मुक्ति के बाद ही मनुष्य का शुद्ध रूप निखरता है। उसके लिए पहले वत्सलता को अगीकार करना पडता है। तभी पशुपति प्रसन्न होते है अर्थात् सभी पशुत्व से मुक्ति का द्वार खुलता है। वात्सल्य तभी पैदा हो सकता है जब हम दूसरो को आघात करने वाली भावना से अपने आपको अलग कर ले। वत्सल्य रूप मे पार्वती को पशुपति के पास उपस्थिति के पीछे तार्किक दृष्टिकोण से भी यही अर्थ समझा जा सकता है ।

शिवत्व की महिमा से मडित नेपाल में शिव के पशुपति रूप मे व्यवस्थित हो जाने के बाद दूर से दूर अनेक देवी–देवता लोग उनकी सानिध्य –लालसा से वहा आकर बसने लगे। नेपाली लोगो का निष्कपट और स्वच्छ चरित्र तथा धार्मिक आचार मे उदारता एव सहिष्णुता देखकर उपयुक्त प्रसग की सच्चाई मे सहज ही विश्वास प्रकट किया जा सकता है ।

[1]काठमाण्डू के पश्चिम मे वाग्मती अचल से लगे हुए दोलागिर पर्वत का क्षेत्र पडता है। इस "दोलागिरि" को धौलागिरि के नाम से आज लोग जानते है। इसी के नाम पर वर्तमान नेपाल का धौला गिरि अचल भी है। धौलागिरि पर्वत पर मुक्तिनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है । यह बहुत पवित्र तीर्थ माना जाता है।

जब रामचन्द्र को सागर पर सेतु निर्माण करना पड़ा था तो उस समय वायुपुत्र हनुमान ने हिमालय शिखर तोड़कर ले जाने के लिए इसी प्रात से होकर वीरभद्रा के सगम स्थल पर पर्वत को रखा था फिर दोनो हाथो से पर्वत उठाकर हनुमान वायु मार्ग से चले गये थे, तभी से यह स्थल हनुमत्तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ । उसी सगम से कुछ ही दूरी पर वाल्मीकि ने भी वाल्मीकीश्वर नामक लिग की स्थापना की थी। वाल्मीकीश्वर के दर्शन से वाग्विभूति प्राप्त होती है ।

स्कन्दपुराण मे नेपाल के विभिन्न तीर्थस्थलो के महत्व उनका इतिहास और अवस्थिति पर विस्तृत रूप मे सुन्दर प्रकाश पडा है। यहा प्राकृतिक सौन्दर्य

---

1 "नेपाल–महात्म्य", द्वितीय अध्याय, पृ0 11

और रम्य वातावरण का भी भारत के प्राचीन सस्कृत ग्रन्थ ने बडा ही मनोहर चित्र प्रस्तुत किया है ।

इसके अतिरिक्त आधुनिक सस्कृत ग्रन्थों मे भी अनेक मे नेपाल का कही न कही किसी न किसी रूप मे यथा अवसर या प्रसग क्रम मे उल्लेख मिल जाया करता है । सत्रहवी शताब्ददी मे हुए उदासीन मार्ग (मठ) के सस्थापक श्रीचन्द्र के जीवनीकार ने भी उनके जीवन के कई प्रसगो को नेपाल से सम्बद्ध दिखाया है। श्रीचन्द्र जी उदासीन मठ मे साक्षात् शिव के अवतार माने जाते है। हिन्दू जनता के उद्बोधन मे उनका बहुत बडा हाथ रहा है। श्रीचन्द्र जी के जीवनीकार आखलानन्द शर्मा लिखते है – वर्तमान समय मे जिन बातो का हिन्दू जनता मे उद्बोधनात्मक आवेश होना चाहिए उन बातो का उल्लेख आज से तीन सौ वर्ष पूर्व विक्रम की सत्रहवी सदी मे जगदगुरू श्रीचन्द्रजी के जीवनकाल में श्रीचन्द्र द्वारा ही हो सका था ।

बौद्धो का सर्वनाश करने के लिए जिस प्रकार भगवान शकर शकराचार्य जी के रूप मे अवतीर्ण हुए उसी प्रकार यवनो का उच्छेद करने के लिए भगवान शकर श्री चन्द्र जी के रूप मे अवतीर्ण हुए।[1]

आगे उनके सम्बन्ध मे फिर लिखते है कि जिस समय सिंध प्रान्त के यवनो ने नगर ठठा की पवित्र भूमिमे दूसरा मक्का बनाने का आयोजन किया

---

1 अखिलानन्द शर्मा, "जगदगुरू–श्रीचन्द्र दिग्विजयम", प्रथम सस्करण, वि०स० 1998, सन् 1942 ई, भूमिका, पृष्ठ "ख"

था उस समय चारो ओर हिन्दू सगठन का शखनाद बजा कर आपने ही उनके शासन को छिन्न–भिन्न कर दिया था ।

श्रीचन्द्र दिग्विजय के लेखक ने श्रीचन्द्र जी के विभिन्न स्थानो के भ्रमण चर्चा क्रम मे उनका नेपाल के प्रमुख धार्मिक स्थल जनकपुर आना भी लिखा है। जनकपुर प्रसग की चर्चा "श्रीचन्द्र दिग्विजयम" के त्रयोदश सर्ग मे हुई है। वह पूर्व दिग्विजय के अनन्तर अनेक शिष्यो के साथ जगन्नाथपुरी से प्रस्थित होकर जनकपुर पहुचे। वहा पर अनेक मुनिजनो की प्रार्थना से आपने सनकादि मुनि प्रवर्तित उदासीन मार्ग का प्रचार किया ।

श्रीचन्द्र नेपाल के पार्वत्य–प्रदेश मे भी पहुचे थे और वहा के नरेश से पूजित हुए थे । ललितपुर, काठमाण्डू उपत्यका की एक प्रसिद्ध प्राचीन नगरी है। उसे पाटन या ललितपट्टन भी कहते है। सम्राट अशोक की पुत्री चारूमति ललितपुर मे बौद्धधर्म के प्रचार के लिए आयी। वह ललितपुर के नरेश से ब्याही गयी थी । बौद्ध पाटनो के आधिक्य के कारण ही लोग इसे पाटन नाम से आज भी पुकारते है। यह नगरी नेपाली कला, कास्य, पीतल आदि के बर्तनो तथा धातु के मूर्तियो के लिए प्रसिद्ध है। इसी नगरी मे पुरेप्रस्तर का प्रसिद्ध कृष्ण मन्दिर है।

नेपाल के सस्कृत ग्रन्थो मे भारत का उल्लेख

आर्य भूमि नेपाल का सस्कृत साहित्य से बहुत प्राचीन काल से ही सम्बन्ध रहा है । आर्य सस्कृति के सरक्षण का यह बडा उत्तरदायित्व भी नेपाल, भारत की ही तरह, पर तुलनात्मक दृष्टि से अपनी छोटी भौगोलिक परिधि मे, आज तक निभाता आया है। युगानुयुग से हिमालय के

समीप रहकर निरतर साधनारत महर्षियो से प्रकाशित इस आर्यभूमि मे देववाणी सस्कृत के उपासको का होना कोई नवीन बात नही है। लिच्छवी काल मे तो सस्कृत राष्ट्रभाषा के रूप मे ही थी। मल्ल और शाहकाल के भी शिलालेख, ताम्र पत्र, कनक पत्र आदि सस्कृत मे है। लेखन के साथ–साथ साहित्यिक कृतियाँ भी सस्कृत मे रची जाने के कारण, सस्कृत राजकीय प्रतिष्ठा भाषा सिद्ध होती है। अत सस्कृत के माध्यम से देश, समाज और मानवता की सेवा करने वाले लोगो की यहा कमी नही रही है। इस भूमि मे सस्कृत वाड्मय के उपासक कितने हुए और उनकी कैसी साधना रही यह एक अलग ही अनुसधान का विषय है। अत इस सदर्भ मे यहा विशेष नही कहा जा सकता । फिर भी याज्ञवल्य, व्यास, वाल्मीकि, पराशर, भृगु, कपिल, अमरवाडा, भारवी प्रभृति श्रेष्ठ साधको की साधना देखने पर पता चलता है कि उनका इस हिमालय क्षेत्र (नेपाल) से गहरा साहचर्य रहा है, जो किसी भी नेपाली को आहलाद एव गौरवानुभूति से भर देता है ।

जिस देश मे सस्कृत का इतने पुरातन का से प्रयोग चला आ रहा हो, वहा के सस्कृत ग्रन्थो मे भारत का उल्लेख होना भी स्वाभाविक है। परन्तु एक तो यह विषय इस शोध का मूल उद्देश्य नही, दूसरे नेपाल के सम्पूर्ण सस्कृत ग्रन्थो की न तो सूची कही प्राप्त होती है और न सारे ग्रन्थ ही प्रकाशित हो सके है। इसलिए जो कुछ थोडी–बहुत सामग्री इस सदर्भ मे उपलब्ध हो सकी है, उतने को ही इस चर्चा का आधार बनाया गया है। वास्तव मे वहा के सस्कृत ग्रन्थो मे भारत का और भारत के सस्कृत ग्रन्थो मे नेपाल के उल्लेख का सीमित प्रसग यहा केवल इसलिए लाया गया है ताकि दोनो देशो के बीच प्राचीन सम्बन्ध पर कुछ प्रकाश डाला जा सके । वस्तुत भारत और नेपाल के बीच सास्कृतिक आदान–प्रदान की जो प्राचीन काल से ही एक निरतर प्रक्रिया चलती रही है उसका भी नेपाल मे भोजपुरी के लिए आधारशिला एव भूमि तैयार करने मे प्रमुख हाथ रहा है।

पाँचवा अध्याय

भोजपुरी और नेपाली साहित्य

उस प्राचीन युग मे भी भोजपुरी पूर्णरूप से सजीव भाषा थी । इन कवियो मे कबीर का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। सच बात तो यह है कि कबीर की भाषा के सम्बन्ध मे हिन्दी के लेखको तथा विद्वानो ने गम्भीरता से विचर नही किया है ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[2] ने अपनी पुस्तक "हिन्दी साहित्य का इतिहास" मे उद्धृत किया है– "इनकी भाषा सधुक्कडी अर्थात् राजस्थानी, पजाबी मिली खडी बोली है, पर रमैनी और सबद मे गाने के पद है, जिनमे काव्य की ब्रज भाषा और कही–कही पूरी बोली का ही व्यवहार है।" नागरी–प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कबीर की भाषा पर पजाबी का सर्वाधिक प्रभाव है। इसकी भाषा पर विचार करते हुए कबीर ग्रथावली का सम्पादक अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुए लिखते है– यद्यपि उन्होने (कबीर ने) स्वयं कहा है– "बोली मेरी पूरब की"[1] अर्थात् मेरी बोली पूर्वी है तथापि खड़ी, ब्रज, पजाबी, राजस्थानी, अरबी आदि अनेक भाषाओ की पुट भी उनकी उक्तियो पर चढ़ा हुआ है। पूर्वी से उनका क्या तात्पर्य है यह नही कह सकते । उनक बनारस निवास पूर्वी से अवधी का अर्थ लेने के पक्ष मे है परन्तु उनकी रचना मे बिहारी की पर्याप्त मेल है, यहा तक की मृत्यु के समयय उन्होने जो पद कहा है उसमे मैथिली का भी खूब ससर्ग दिखायी देता है।

इस पचमेल खिचड़ी का कारण यह है कि उन्होने दूर–दूर के सन्तो का सत्सग किया था जिससे स्वाभाविक है उस पर भिन्न–भिन्न प्रान्तो की बोलियो का प्रभाव पडा । पूर्वी शब्द से कबीर ग्रन्थावली के सम्पादको ने तो स्पष्ट रूप से अवधी का अर्थ लिया है क्योंकि उनके अनुसार कबीर का बनारस निवास

---

1 कबीर ग्रन्थावली, पृ0 67

2 प0 रामचन्द्र शुक्ल "हिन्दी साहित्य का इतिहास" सशोधित और प्रवर्द्धित सस्करण, पृ0 98

इसी ओर इगित कर रहा है। यद्यपि पूर्वी शब्द से कबीर का क्या तात्पर्य था, यह कहना कठिन है किन्तु मध्य युग मे इसका अर्थ अवध, बनारस तथा बिहार था।

यद्यपि प्राचीन काल से बनारस का सास्कृतिक सम्बन्ध मध्यदेश से ही रहा है तथापि उसकी भाषा तो स्पष्ट रूप से मागधी की पुत्री है। यह बोली बनारस के पश्चिम मिर्जामुराद थाने से दो-तीन मील और आगे तमचाबाद तक बोली जाती है। वस्तुत यही बोली कबीर की मातृभाषा थी । यह प्रसिद्ध है कि कबीर पढ़े-लिखे न थे, अतएव अपनी मातृभाषा मे रचना करना उनके लिए सर्वथा स्वाभाविक था । कबीर के अनेक पद आज भी बनारसी बोली अथवा भोजपुरी में उपलब्ध हैं। नीचे उदाहरण-स्वरूप इनके पद उद्धृत है-

तोर हीरा हिराइल बा किचड़े मे [1]
कोई ढूढ़ै पूरब कोई ढूढ़ै पच्छिस, कोई ढूँढ़ै पानी पथारे मे ।।1।।
सुर नर मुनि अरू पीर औलिया, सब भूलल बाडे नखरे मे ।।2।।
दास कबीर ये हीरा को परखै, बाँधि लिहलै जतन से अचरे मे।।3।।

ऊपर के पद वेलवेडियर प्रेस से प्रकाशित कबीर साहब की शब्दावली से लिये गये है। इन पदो की भाषा भोजपुरी है, यद्यपि इनमे कही-कही अवधी की भी पुट है किन्तु जैसा कि ऊपर कहा गया है कबीर ग्रन्थावली की भाषा पर पजाबी तथा राजस्थानी का प्रभाव है । अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यो हुआ ? इस सम्बन्ध मे "ग्रन्थावली" के विद्वान सम्पादक का अनुमान है कि चूकि कबीर प्रयत्नशील व्यक्ति थे, इसलिए जिस प्रान्त मे वे जाते थे, वहा की भाषा को अपनाकर उसमे पद रचना करने लगते थे ।

---

1 कबीर साहेब की शब्दावली, दूसरा भाग, पृ0 40, शब्द 28

वस्तुत यह कोरी कल्पना ही प्रतीत होती है। सच बात तो यह है कि कबीर की भाषा की भी ठीक वही दशा हुई है, जो आज से दो सहस्र पूर्व बुद्ध की भाषा की हुई थी । बुद्ध वचन की भाषा अर्थात् पालि को हीनयान–सम्प्रदाय के दक्षिणी बौद्ध मागधी मानते है । कतिपय विद्वानो के अनुसार बुद्ध की भाषा अर्द्धमागधी थी, किन्तु पालि भी मध्यदेश की ही भाषा थी ।

प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान सिल्वो लेवी तथा जर्मन विद्वान हेनरिख लूडर्स ने अपने लेखो मे यह स्पष्ट रूप से दिखलाया है कि आधुनिक पालि मे मागधी के अनेक शब्द मिलते है। इससे यह सहज ही सिद्ध हो जाता है कि बुद्ध वचन की भाषा पहले मागधी ही थी किन्त बाद मे वह पालि के साँचे मे ढाली गई। एक बात और है, मागधी में पालि मे यह अनुवाद–कार्य केवल किंचित परिवर्तन से ही सम्भव था । उदाहरण–स्वरूप "सुत्तनिपात" के "धनि यसुत्त" की निम्नलिखित दो पक्तियों मे यह इस प्रकार है –

पक्कोरनो युद्ध खीरो हमस्सि,[1]

अनुतीरे महिपा समान बासो ।

हन्ना कुटि उत्तहितो गिनि,

अथ चे पथ यसी पवस्व देव ।

इसका मागधी रूप इस प्रकार होगा –

पक्कोदने दुद्ध खीले हमस्सि,

अनुतीरे भहिया समान वाशे ।

ऊपर के उदाहरणो से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार मागधी को पालि मे सहज ही मे परिवर्तित किया जा सकता है। कबीर की भाषा की

---

1 "सुत्तनिपाल" के धनियसुत्त पक्तिया ।

भी यही दशा हुई है। वास्तव मे कबीर की मातृभाषा बनारसी बोली थी, जो भोजपुरी का ही एक रूप है । प्राचीन काल मे आज ही की भाति इस बोली की कोई साहित्यिक महत्व न था । अतएव जब कबीर की प्रसिद्धि हुई तो उनके पदो का यहा की साहित्यिक भाषाओ मे रूपान्तर आवश्यक था । बहुत सम्भव है कि अवधी मे यह कार्य कबीर ने स्वय किया हो, क्योंकि अवधी भोजपुरी की सीमा की भाषा है, किन्तु ब्रजभाषा, राजस्थानी तथा पजाबी आदि में तो कबीर की मूलवाणी को उन प्रान्तो के उनके अन्य शिष्यो ने ही बदली होगी। नीचे के प्रमाणो से मेरे इस बात की पुष्टि हो जाती है। यहा जो उदाहरण दिये जा रहे है, सभी नागरी प्रचारणी सभा द्वारा सम्पादित कबरी–ग्रन्थावली से ही किये गये है। यद्यपि इस सस्करण पर यहाँ की बोलियो तथा पजाबी का अत्यधिक प्रभाव है फिर भी छन्द के कारण भोजपुरी के सज्ञा शब्द ही नही, अपितु कई क्रिया–पद भी अपनेमूल रूप मे ही बचे रह गये है। ये शब्द पुकार–पुकार कर कह रहे है कि कबीर की मूल वाणी का क्या रूप था।

(क) अवधी मे सज्ञापदो के तीन रूप मिलते है–

1 लघु 2 गुरू 3 अनावश्यक, जैसे–घोडा, घोडवा।

भोजपुरी मे तीसरा रूप नही मिलता, आरम्भ के दो ही रूप मिलते है। बोलचाल की भोजपुरी मे प्राय गुरू रूप ही प्रयुक्त होता है ।

(ख) भोजपुरी–क्रियाओ के भूतकाल मे अल–अले आदि प्रत्यय लगते है। इस सस्करण के अनेक पदो मे भी ये रूप मिलते है–जैसे–

1 जुलहै तनि बुनि पार न पावल [1] (पृ0 104)

2 त्रिगुण रहित फल रामि हम राखल[1]। (पृ0 104)

---

1 कबीर ग्रन्थावली, सम्पादित नागरी प्रचारिणी सभा, पृ0 104

3 ना हम जीवत न मूँ वाले ।[1](पृ0 108)

चहुँ दिसि गगन रहाइले ।[2]

आनन्द मूल सदा पुरूषोत्तम,

घर विनसै मगन न जाइले ।

(ग) भोजपुरी–क्रियाओ के भविष्यतकाल के अन्य पुरूष एकवचन मे इहे प्रत्यय लगता है, जो वस्तुत सस्कृत–ष्यति, पालि–स्सइ का परिवर्तित रूप है। जैसे–करिष्यति —›करिस्सइ —› करिहई —› करिहे । जैसे–

1 हरि मरिहै तो हम हूँ मरिहै (मरिहे ?)[3] (पृ0 102)

2 ॲन्द्री स्वादि विषै रस बार है,[4]

नरक पड़े पुनि राम न कहिहैं । (पृ0 134)

ऊपर के क्रिया–पद के "पावल", "राखल–, "मूवले", "परलै", "रहाइल", "जाइल" एव भरिहै, बहिहैं आदि रूप इस बात को स्पष्ट रूप से घोषित करते है कि कबीर की मूलवाणी का बहुत–कुछ अश उनकी मातृभाषा बनारसी बोली मे ही लिखा गया था ।

" धरमदास "

कबीर की परम्परा मे ही उत्पन्न होने वाले धरमदास कबीर की ही भॉति एक सन्त कवि थे। इनके कतिपय पद भोजपुरी मे उपलब्ध है। इनके जीवन के सम्बन्ध निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नही है किन्तु कहा जाता है कि ये कबीर के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पन्द्रह वर्ष बाद तक जीवित रहे।

1, 2, 3, 4 वही पृष्ठ 108, 268, 102, 134.

कबीर ने कई पद धरमदास को सम्बोधित करते हुए लिखे है। इससे भी इन दोनो सन्तो का सम्बन्ध प्रमाणित होता है। कबीरदास के ग्रन्थो के साथ–साथ धरमदास जी की शब्दावली भी वेलवेडियर प्रिण्टिग प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई। इनकी कविता का उदाहरण निम्नलिखित है –

सेमर है ससार, भुवा उधराइल हो । [1]
सुन्दर भक्ति अनुप, चले पहिताइल हो ।।1।।

नदी बहै अगम अपार, पार कस पाइब हो ।
सतगुरू बैठे मुख मोरि, काहि गोह राइब हो ।।2।।

सन्त नाम गुल गाइब, सत ना डोलाइब हो ।
कहे कबीर धर्मदास, अमर घर पाइब हो ।।3।।

कहँवा से जिव आइ, कहँवाँ समाइल हो ।
कहँवा कइल मुकाम, कहाँ कपताइल हो ।।4।।

" शिव नारायण "

सन्त परम्परा के कवि का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के चन्द्रवार नामक गांव मे हुआ था। इन्होने अनेक ग्रन्थो की रचना की जो आज उपलब्ध है। इनके ग्रन्थो मे प्राय दोहा और चौपाई छन्दो का प्रयोग हुआ है। ये वही सुप्रसिद्ध छन्द है जिनकी मलिक मुहम्मद जायसी ने "पदमावत" मे तथा गोस्वामी तुलसीदास ने "रामचरित मानस" मे प्रयोग किया है। इन्होने प्रधान रूप से पूर्वी। अवधी का ही अपने ग्रन्थो मे प्रयोग किया है। किन्तु जहाँ इन्होने "जातसार" (जाते के गीत) और "छातो" (चैत मे गाने के गीत) लिखे है, वहा भोजपुरी भाषा

---

1 धरनी धरमदास जी की शब्दावली–प्रकाशित वेलवेडियर प्रिटिंग प्रेस प्रयाग, पृ0 45, शब्द 12

स्वाभाविक रीति से आ गयी है। इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे दिया जाता है। सन्त कवियो ने परमात्मा को प्रीतम के रूप मे देखा है और अत्यन्त रहस्यपूर्ण ढग से उसक विरह का चित्रण भी विया है–

शिवनारायण का पद इस प्रकार है–

चलहु सखी खोजि लाउ निज सँइयाँ ।
पिया रहले अभी साथ मे, हे, छोडि गइले कवन ठँइया ।
बेला से पूछो, चमेली से पूछो, पूछो मै बन भटकोइया ।
ताल से पूछो, तलैया से पूछो, पूछों मै पोखरा कुइयाँ ।
'शिवनारायण' सखि पिया नहि बेते, हरि ले ले मन खदुरइयाँ।

" धरनीदास "

सन्त कवियो मे धरनीदास का नाम प्रसिद्ध है। ये बिहार प्रान्त के सारन जिले के माँझी नामक गाव के निवासी थे। ये स्वभाव से ही साधु थे और भगवत भजन मे ही अपना अधिकाश समय व्यतीत करते थे । ये अपने गांव के पास के जमीदार के यहा मुन्शी का काम करते थे। विरक्ति होने पर इन्होने अपनी नौकरी छोड दी । इन्होने अपने "प्रेम–प्रगास" नामक ग्रन्थ मे सन्यास लेने की तिथि सन् 1656 ई0 (स0 1713) दी है

सम्वत् सत्रह सो चलि गयऊ ।[1]
तेरह अधिक ताहि पर भयऊ ।।
साहजहा होदी दुनियाई ।
पसरी औरगजेब दुहाई ।।
सोच विचारि आतमा जागी ।
धरती धरेऊ भेस बैरागी ।।

---

1 "प्रेम प्रगास", धरनीदास, प्रकाशित छपरा से ।

इनके दो ग्रन्थ हस्तलिखित रूप मे उपलब्ध है–

1 शब्द–प्रगास, 2 प्रेम–प्रगास ।

ये दोनो ग्रन्थ माँझी के पुस्तकालय में सुरक्षित है। प्रेम–प्रगास का प्रकाशन छपरा से हुआ था ।

माँझी वाली हस्तलिखित प्रति की पुष्पिका को देखने से विदित होता है कि यह 21 भादो, सन् 1281 फसली (सन् 1873 ई0) मे लिखी गई थी। इसे माँझी के महन्त रामदास ने वही की निवासिनी जानकीदासी उर्फ वर्ताकुअरि के लिए लिखा था । इसकी भाषा अवधी मिश्रित भोजपुरी है। इसमे कही–कही बँगला के 'पयार' छन्द का भी प्रयोग हुआ है।

इनका एक पद उद्धृत किया जा रहा है–

धरनीदास कृत "प्रेम–प्रगास" से –

कि मोरे देसवा सखी मोरे देसवा ।[1]

एक अचर्ज बात मोरे देस ।।1।।

तर के उपर थैला, उपर के हेठ ।

जेठ लहुर होला, लहुरा से जेठ ।।2।।

आगु के पाछु होला, पाछु होला आगु ।

जागल सुतैला, सुतल उठि जागु ।।3।।

" लक्ष्मी सखी "

इनका पूरा नाम बाबा लक्ष्मीदास था, किन्तु लक्ष्मी सखी के नाम से ये बिहार मे अधिक प्रसिद्ध है। ये भोजपुरी के प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनका

---

1 प्रेम प्रगास, धरनीदास प्रकाशित छपरा से ।

जन्म बिहार प्रान्त के सारन जिले के अमनौर नामक ग्राम मे हुआ था। इनका जन्मकाल उन्नसवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध है । ये सखी सम्प्रदाय के अनुयायी थे तथा इनके पिता का नाम मुन्शी जगमोहनदास था । कुछ विवरणो के अनुसार ये कायस्थ कुल में उत्पन्न हुए थे । इन्होंने जीवन के प्रारम्भ मे ही ससार से नाता तोडकर भगवान से सम्बन्ध जोड़ लिया था । इन्होने अपने गाव अमनौर से थोडी दूर हटकर तरेआ नामक गॉव मे एक आश्रम बनाया था । अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे ये भजन गा कर अपना समय बिताया करते थे । इनके निम्नलिखित चार ग्रन्थ प्रसिद्ध है–

1 अमर सीढी

2 अमर कहानी

3. अमर विलास

4 अमर फराश ।

इनका प्रधान ग्रन्थ अमर सीढ़ी है। इसमे भगवन–भक्ति विषयक पद है। कबीर की भाति ही इनके पदो एव भजनो मे कही योग–साधना का उल्लेख मिलता है और कही रहस्यवाद की झाकी मिलती है। अमर सीढ़ी से इनका पद यहा उद्धृत किया जा रहा है–

सखी तोरे पियवा देइ केइ एगा पतिया,[1]
बारहु दियवा जुड़ाइ लेहु हियवा ।
समुझि समुझि कै बतिया ।।1।।

सखी सम्प्रदाय मे माधुर्य–भव की उपासना प्रचलित है। इसमे परमात्मा को पति और पत्नी मानकर भक्ति की जाती है। ऊपर के पद मे इसी प्रेम–पद्धति का सकेत है ।

---

1 लक्ष्मी सखी, अमर सीढी, प्रकाशित छपरा।

लक्ष्मी सखी का दूसरा ग्रन्थ अमर कहानी है। इसमे भी भक्ति–विषयक पद है । झूमर, विवाह, जारी, कजली– इनके छोटे ग्रन्थ है। इनके शिष्य कामता सखी ने "छुहा दोहा" नामक ग्रन्थ लिखा है। इन सभी ग्रन्थो की प्रकाशन इनके शिष्य श्री महेश प्रसाद वर्मा छपरा ले किया है। इनकी कविता नीचे उद्धृत है–

मनै मनै करीले गुनावनि हो पिया परम के ढोर [1]
पाहनो पसीजि पसीजिके हो वहि चल वहि लोर ।।1।।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ का अध्ययन आज से 60 वर्ष पूर्व बीम्स और भण्डारकर के अनुसधानो के परिणामस्वरूप प्रारम्भ हुआ था। इस अध्ययन का सूत्रपात सस्कृत तथा प्राकृत के अध्ययन से हुआ था। भोजपुरी की वैज्ञानिक अध्ययन तो सर्वप्रथम श्री बीम्स ने ही प्रारम्भ किया था। इस सम्बन्ध मे इनकी 'नोट्स आन द भोजपुरी डायलेक्ट्स आफ हिन्दी स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार शीर्षक निबन्ध "रायल एशियाटिक सोसाइटी" की पत्रिका, भाग 3, पृ0 483 से 508 मे सन् 1868 ई0 मे प्रकाशित हुआ था । यह निबन्ध रॉयल एशियाटिक सोसायटी के समक्ष 17 फरवरी 1867 ई0 मे पढ़ा गया था ।

डा0 जार्ज ए0 ग्रियर्सन ने "रॉयल एशियाटिक सोसाइटी" पत्रिका मे कतिपय बिहारी लोकगीत शीर्षक लेख प्रकाशित किया था। इन गीतो की सकलन बिहार प्रान्त के आरा, पटना आदि जिलो मे किया गया है। इसमे प्रधानतया भोजपुरी लोकगीत ही आये है। इस लेख के प्रारम्भ मे विद्वान लेखक ने बिहार की तीन प्रधान बोलियों– मगही, मैथिली एव भोजपुरी – का परिचय दिया है। तत्पश्चात् सोहर, जँतासार, झूमर आदि गीत लिये गये है।

---

1 कामता सखी, "दुहा दोहा" प्रकाशक महेश शर्मा, छपरा से।

ग्रियर्सन का दूसरा लेख इसी पत्रिका मे "कतिपय भोजपुरी लोकगीत" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ है ।

डा0 ग्रियर्सन ने बगाल के एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका मे भोजपुरी प्रान्त मे सर्वाधिक प्रचलित विजयमल शीर्षक गीत न0 3 प्रकाशित किया है। विजय मल" भोजपुरी का महाकाव्य है। इसकी ग्रियर्सन ने शाहाबाद जिले मे सग्रह किया थ । "विजय मल" का यह सबसे अधिक प्रामाणिक सस्करण है। हाल ही में कलकत्ता के "दूधनाथ" प्रेस से "कुँअर विजयी" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है।

डा0 ग्रियर्सन ने इण्डियन ऐण्टीक्वेरी नामक बम्बई से प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिका मे "आल्हा के विवाह गीत" को प्रकाशित किया है। भोजपुरी प्रदेश मे आल्हा के गीत अत्यधिक प्रचलित है। विद्वान लेखक ने इस गीत-सग्रह को प्रकाशित करके प्रशसनीय कार्य किया है। इसमे केवल आल्हा के विवाह का वर्णन है ।

लन्दन की प्राच्य विद्या परिषद की पत्रिका मे डा0 ग्रियर्सन ने "उत्तरी भारत की लोक साहित्य" शीर्षक लेख प्रकाशित किया है, जिसमे भोजपुरी भाषा के भी अनेक गीत सम्मिलित है। इस लेख में विद्वान लेखक ने उत्तरी भारत मे प्रचलित तुलसीदास जी की "रामचरित मानस", बिहारी की "सतसई", सूर के पद और विद्यापति की "पदावली" का उदाहरण देते हुए आल्हा के सुप्रसिद्ध गीत का कुछ अश उद्धृत है। ग्रियर्सन ने जर्मन भाषा की एक सुप्रसिद्ध पत्रिका मे "नायकी बनजरवा" शीर्षक एक लेख लिखा है, जिसमे आपने नायकी नामक किसी बनजारे या सौदागर के गीत की सग्रह किया है। यह शाहाबाद जिले मे सग्रह किया गया है।

ह्यू फ्रेजर एक अग्रेज सिविलियन थे तथा गोरखपुर जिले मे मजिस्ट्रेट पद पर नियुक्त थे । इन्होने "बगाल की एशियाटिक सोसायटी" की पत्रिका मे गोरखपुर जिले मे प्राप्त भोजपुरी गीतो का सग्रह प्रकाशित किया है। इन गीतो की अग्रेजी अनुवाद फ्रेजर ने स्वय प्रस्तुत किया है। इनका सम्पादन ग्रियर्सन ने किया है। ग्रियर्सन ने अपनी "हैप्पगियों" मे भोजपुरी की विशेषताओ पर प्रचुर प्रकाश डाला है ।

जे0 बीम्स भी एक सिविलियन थे तथा आरम्भ मे सारन जिले के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे । इन्होंने भोजपुरी के सम्बन्ध मे सर्वप्रथम एक लेख लिखा था जिसका उल्लेख अन्यत्र हो चुका है ।

ए0जी0 शिरेफ भी अग्रेज सिविलियन थे तथा कुछ काल तक जौनपुर जिले के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी थे। इन्होंने हिन्दी लोकगीत नामक पुस्तक सम्पादित किया है जिसमे भोजपुरी के कई गीतो का सग्रह है।

प0 राम नरेश त्रिपाठी ने भी कविता–कौमुदी के भाग–5 मे ग्राम–गीतो का सकलन किया है। इस पुस्तक मे सोहर, जनेऊ, विवाह, जॉंत, सावन, निरवाही, हिंडाला, कोल्हू, मेला और बारहमासा आदि गीतों का सग्रह किया है।

सोहर भी प0 राम नरेश त्रिपाठी द्वारा सकलित और प्रकाशित की गयी है। यह पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जने वाले गीतो–सोहर की सुन्दर सग्रह है ।

हमारा ग्राम साहित्य के भी सग्रहकर्ता और सम्पादक प0 राम नरेश त्रिपाठी ही है। देहाती कहावतो, मुहावरो, कहानियों तथा जातीय गीतो एव नृत्यो पर इस पुस्तक मे प्रकाश डाला गया है। इस सग्रह में विविध सस्कारो के साथ

ही साथ विभिन्न जातियो द्वारा गाये जाने वाले गीतो का भी सकलन है ।

भोजपुरी ग्राम–गीत (प्रथम भाग)

इस ग्रन्थ का सग्रह और सम्पादन प0 कृष्णदेव उपाध्याय, एम0ए0, डी0फिल ने किया है। इसमे बलिया जिले के गीतो का ही सग्रह किया गया है। इस संग्रह मे कुल 269 गीत है। ये गीत सस्कार और ऋतु–क्रम से निम्नलिखति 15 भागो मे विभक्त है– सोहर, खेलवना, जनेऊ, विवाह, वैवाहिक परिहास, गवना जँात, देवी माता, शीतला माता, झूमर, बारहमासा, कजली, चैता, बिरहा, और भजन ।

भोजपुरी ग्राम–गीत (द्वितीय भाग)

इस पुस्तक के भी सम्पादक और सग्रहकर्ता प0 कृष्णदेव उपाध्याय, एम0ए0, पी एच डी ही है। इसमें 25 प्रकार के भोजपुरी गीतों का सग्रह किया गया है। इनकी कुल सख्या 430 है। इसमे निम्नलिखित प्रकार के गीतो का सग्रह हुआ है– सोहर, जोग, सेहरा, विवाह, बहुरा, पिडिया, गोधन, नाग पचमी, जँतसार, कजली, बारहमासी, होली, डफ, चैता, सोहनी, रोपनी, बिरहा, कहार, गोड, पचरा, निरगुन, देशभक्ति, पूरबी, पराती और भजन ।

भोजपुरी लोकगीत के व रूपरस के सग्रहकर्ता और सम्पादक कुमार दुर्गा शकर प्रसाद सिह है। इनमे निम्नलिखित 15 प्रकार के गीतो का सग्रह है– सोहर, जँतसार, झूमल, हॅरूआ, भजन, बारहमासा, अलचारी, खेलवना, विवाह, पूरबी, कजरी, रोपनी और निराई, हिंडोले, देवीजी तथा मार्ग चलते समय के गीत ।

भोजपुरी ग्राम–गीत के सग्रहकर्ता और सम्पाददक श्री डब्लू0जी0 आर्चर, आई0सी0एस0 तथा श्री सकठा प्रसाद है। भोजपुरी ग्राम गीतो का प्रकाशन आर्चर ने "बिहार–उड़ीसा–रिसर्च सोसायटी" पटना की पत्रिका के विभिन्न अको मे किया था। इनमे गीतो की कुल सख्या 366 है। ये गीत बिहार प्रान्त के शाहाबाद जिले के कायस्थ परिवार से सग्रह किये गये है। इनका सग्रह–काल 1939–41 ई0 है। इस पुस्तक मे 25 प्रकार के गीतो का सग्रह किया गया है, जिनके नाम इस प्रकार है– सगुन, तिलक, शिव–विवाह, प्रातकातन, हलदी, सेहला, जोग, टोना, विवाह–मगल, सोहाग, परीछन, कोहवर, जेवनार, आवतैनी, झूमर, तापा, सोहर, मुण्डन, चैता, माता के गीत, कजली, बरसाती, जँतसार, रोपनी और सोहनी के गीत ।

"धरती गाती है" पुस्तक के लेखक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी है। लोक गीतो के क्षेत्र में सत्यार्थी जी ने बहुत कार्य किया है ।

"बेला फूले आधी रात" नामक पुस्तक के लेखक भी श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ही है। इसमे भी विभिन्न भाषाओ के गीतो का सग्रह किया गया है।

"धरती के गीत" सग्रह मे खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा तथा भोजपुरी के गीतों का सग्रह किया गया है। ये गीत किसानो की समस्या से सम्बन्ध रखते है। पुस्तक की प्रकाशन "बम्बई कम्युनिस्ट पार्टी" द्वारा हुआ है।

भोजपुरी के आधुनिक कवि

बिसराम

भोजपुरी के वर्तमान कवियो मे बिसराम का स्थान ऊँचा है। अनपढ़

होने पर भी इस जन कवि ने ऐसे सरस तथा भावपूर्ण बिरहो की रचना की है कि उन्हे पढ़कर हृदय सहज भाव से रस–प्लावित हो जाता है ।

बिसराम का जन्म आजमगढ शहर से कुछ दूर हटकर सिरामपुर नामक गाव मे एक क्षत्रिय परिवार मे हुआ था । यह गाव टोस (तमसा) नदी के किनारे स्थित है। बिसराम के माता–पिता ने उसे स्कूल मे पढ़ाने का प्रयत्न किया किन्तु उसका मन पाठशाला मे न लगा वह प्राकृति की विशाल पाठशाला का छात्र बन गया। युवा होने पर कवि का विवाह हुआ, वह पारिवारिक सुख अधिक दिनो तक न भोग सका । कुछ दिनो के पश्चात ही उसकी प्रियतमा का देहावसान हो गया । इस विरह–वेदना की अभिव्यक्ति उन्होने भोजपुरी बिरहों में की है। पत्नी का शव शमशान जाते देखकर कवि की जो मनोदशा हुई थी उसका वर्णन इस प्रकार है–

आजु मोरी धरनी निकरली मोर घर से,
मोरा फाटि गइले आल्हर करेज ।
"राम नाम सत" ही सुनि मैं गइलो बउराई
कवन रंछसवा गइले रानी के होरवाई
सुखि गइले आँसू नाही खुलेले जबनियाँ,
कहम के निकारो मै त दु खिया वचनियाँ।

तेग अली

ये बनारस के रहने वाले मुसलमान थे। इनकी एकमात्र रचना "बदमाश–दर्पण" है, जो बनारसी बोली मे लिखा गया है। ये बडे ही मस्त जीव थे। काशी

---

1 डा0 उदयनाराया तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 268

और आशु कविता करते हुए लोगो का मनोरजन करते थे। तेग अली की कविता मे मुहावरो की सफाई है, उदाहरण–

> भौ चूमि लेइला, केहु सुन्नर जे पाइला,[1]
> हम तउ हईं जे ओल पर तरूआरि उठाइला।
> हम उनसे पूछली जे आँखि मे सुरमा काहे बदे लगाइला,
> तऊ हँस के कहलन, छूरि पत्थर से चलाइला ।

बाबू रामकृष्ण शर्मा :

ये काशी के ही निवासी थे । सरसता तथा मधुरता इनके जीवन मे कूट–कूटकर भरी थी । यही कारण है कि इनकी कविता मे भी ये गुण विशेष रूप से पाये जाते है। इन्होंने बिरहा, नायिका भेद नामक पुस्तक लिखी है, जो अल्पकाय होने पर भी साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उदाहरण–

> भरली गगरिया उठौली जैसे गोइयाँ,[1]
> जैसे बिछलत गोड़ बा हमार ।
> जौ पै बलबिरवा न बहियाँ धरत,
> तौ पै बहितो जमुनवाँ के धार ।

प0 दूधनाथ उपाध्याय

इनका जन्म बलिया जिले के छया छपरा नामक गाव मे हुआ था। ये बलिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अन्तर्गत मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे। ये भोजपुरी के प्रतिभाशाली कवि थे । इनकी वाणी मे ओज था और इनकी कविता का भोजपुरी

---

1 वही पृ0 269

पाठको पर अत्यधिक प्रभाव पडा। पिछली शताब्दी के अन्तिम चरण मे उत्तर प्रदेश के भोजपुरी भाषा–भाषी पूर्वी जिलो मे गो–रक्षा को लेकर एक प्रबल आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था । उस समय विशेषत बलिया तथा आजमगढ़ इन दो जिलो मे अनेक गो–रक्षकी सभाओ की स्थापना हुई थी । उपाध्याय जी भी इस आन्दोलन प्रवर्तको मे से थे । आपने गो–विलाप सम्बन्धी अपने पदो की रचना भोजपुरी मे की थी । उस समय की सरकार ने इन पदो को जप्त कर लिया था और आन्दोलन करने वाले को बडी सजा दी थी । पण्डितजी के ये छन्द आज अनुपलब्ध है। कहा जाता है कि पण्डित जी द्वारा रचित पद इतने उत्तेजनापूर्ण थे कि वे कायरो के हृदय मे भी वीर रस का सञ्चार कर देते थे ।

इन्होने प्रथम महायुद्ध के अवसर पर सन् 1914 ई0 मे "भारती का गीत" नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी जो आज भी उपलब्ध है। नीचे पद उद्धृत है–

हमनी की सब केहू बाम्हन क्षतिरि हो के,
रन मे चलबि नाही तनीको डेराइबि ।
अब ले चूकली बड बाउर कइलिहाँ जा,
अब पुजरवनि के ना नइयाँ हँसाइबि ।
जरमन छुहुट के नाहत कईला बिना,
अब ना मानवि बलु भरि मिटि जाइबि ।
सगरे मुलुक लकारि के चलबि अब
दूधनाथ रत्न से ना पयर हटाइबि ।

उपाध्याय जी की दूसरी रचना "भूकम्प–पचीसी" है। इसमे बिहार के प्रलयकारी भूकम्प का बडा ही सजीव चित्रण किया गया है।

---

1 वही पृ0 270

बाबू अम्बिका प्रसाद

ये बिहार प्रान्त के निवासी थे और आरा मे बहुत दिनो तक मुख्तारी करते थे । इनकी कविताओ की अभी तक सग्रह तथा प्रकाशन नही हुआ है। नीचे इनके पद उद्धृत है –

कवना गुनहिए चुकलोए बालम,[1]
तोर नयना रतनार ।

रघुबीर नारायण [2]

इनका जन्म एक सम्भ्रान्त कायस्थ परिवार मे बिहार के अन्तर्गत छपरा शहर में बृहस्पतिवार 20 अक्टूबर, 1884 ई0 को हुआ था। इनके पिता बाबू जयदेव नारायण छपरा में ही वकील थे । इनकी शिक्षा–दीक्षा छपरा मे ही हुई थी । इनकी "बटोहिया" शीर्षक कविता भोजपुरी भाषा–भाषी प्रान्तो मे अत्यधिक प्रसिद्ध है। इसे यदि भोजपुरी प्रदेश की राष्ट्रपति कहा जाए तो इसमें अत्युक्ति न होगी । इस गीत में अखण्ड भारत का मनोरम चित्र खीचा गया है। इसमे एक ओर भारतीय एकता को अक्षुण्य रखने वाले पर्वतराज हिमालय, गगा, यमुना आदि के प्राकृतिक दृश्यो का चित्रण है तो दूसरी ओर नानक, कबीर, शकराचार्य तथा परमहस रामकृष्ण की अमरवाणी की चर्चा है। कालीदास, जयदेव, विद्यापति तथा सूर एव तुलसी की अमर कृतियो ने भी भारतीय सस्कृति एव जीवन को समुन्नत बनाया है। श्री रघुबीर नारायण जी ने "बटोहिया" मे इन अमर आत्माओ की ओर इगित किया है। "बटोहिया" की कतिपय पक्तिया ये है –

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोर प्रान बसे हिम खोहरे बटोहिया:

---

1 सेवेन ग्रामर्स आफ द डायलेक्टस एण्ड सबडायलेक्ट्स आफ द बिहारी लैग्वेज, पार्ट 2, भोजपुरी डायलेक्ट, पृ0 138

2 भोजपुरी पत्रिका, वर्ष 1, अक 1, पृ0 52–53

एक द्वार घेरे रामा हिम कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया ।

भिखारी ठाकुर

भोजपुरी के कवियों मे भिखारी ठाकुर का नाम उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो और बिहार के पश्चिमी जिलो मे प्रसिद्ध है। भिखारी ने नाटक-मण्डली स्थापित कर "बिदेसिया" नाटक की अद्वितीय सफलता के साथ अभिनय कर, इस नाटक का एक सम्प्रदाय स्थापित कर दिया है। इनके नाटक के अनुकरण पर अन्य बिदेशिया नाटक भी तैयार हुए है।

यद्यपि भिखारी ठाकुर शिक्षित नही है किन्तु ये प्रतिभावान व्यक्ति अवश्य है। "बिदेसिया" नाटक मे परदेसी पति के वियोग मे उसकी पत्नी की विरह-वेदना की तीव्र अभिव्यजना मिलती है- इस नाटक से एक गीत की कतिपय पक्तिया निम्न है -

दिनवा न बीते रामा तोरी इन्तजरियामे,
रतिया नयनवा ना नीद रे बिदेसिया
घरी राति गइली राम पिछली पहरवा से,
लहरे करेजवा हमार रे बिदेसिया ।

मनोरञ्जन प्रसाद सिन्हा

ये प्रिंसिपल मनोरञ्जन के नाम से विख्यात थे और कई वर्षों तक राजेन्द्र कालेज छपरा मे प्रिसिपल रहे । इनका जन्म बिहार प्रान्त के शाहाबाद

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 272

जिले मे डुमरॉव नामक स्थान मे एक सम्भ्रान्त कायस्थ परिवार मे हुआ था। मनोरञ्जन बाबू प्रयाग के कायस्थ पाठशाला – कालेज तथा हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी मे अनेक वर्षों तक अंग्रेजी के प्रोफेसर पद पर काम कर चुके थे। इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना "फिरगिया" है। इसकी रचना इन्होने सन् 1921 ई0 के "असहयोग आन्दोलन" के तूफानी दिनो मे बाबू रघुबीर नारायण जी के "बटोहिया" के वजन पर की थी। नीचे इसकी कुछ पक्तिया उद्धृत है–

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा ।[1]
आज उहे भइल ससानरे फिरँगिया ।।
अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नाश भइल ।
कौनो के ना रहल निशान रे फिरगिया ।।

राम विचार पाण्डेय

ये उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के निवासी है। ये नागपुर विश्वविद्यालय से एम0ए0 है। आजकल बलिया मे ये वैद्यक करते है तथा डाक्टर पाण्डेय के नाम से प्रख्यात है । ये आयुर्वेद्र के अतिरिक्त होम्योपैथिक प्रणाली से भी चिकित्सा करने मे दक्ष है ।

इनकी काव्य–भाषा बडी प्राञ्जल है। यद्यपि इन्होने ठेठ शब्दो के माध्यम से ही अपने विचारो की अभिव्यक्ति की है, तथापि उसमे काव्य के उपकरण–स्वरूप विधि अलकार नितान्त स्वाभाविक ढग से आ गये है। इनकी भोजपुरी कविताओ का प्रकाशन "बिनिया–बिछिया" नाम से हुआ है। इसमे कुल 12 कविताओ का सग्रह है। पाण्डेय जी कुशल नाटककार और अभिनेता भी है। उन्होने कुँवर सिह नामक एक नाटक भी लिखा है– नीचे इनकी ऊँजोरिया शीर्षक कविता उद्धृत है–

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 273

तिसुना जागलि सिरी किसुना के देखे केत,
आधी रतियै ख्वॉं उठि चलली गुजरिया ।
पान का निपर मुँह चमकेला रधिका के,
चमचम चमके ले धरिके चुनरिया ।
चकमक चकमक लहरि उठे ले ओ मे,
मधुरे मधरे डोले कान के मुनरिया ।
गोखुला के लोग ईत् देखि चिहइले कि,
राति में अमावसा का अगली अँजोरिया ।

प्रसिद्ध नारायण सिंह

ये बलिया जिले के चीत–बडागाव के निवासी है। आरम्भ से ही इनकी प्रवृत्ति साहित्यिक रही है। इनकी प्रथम कृति बलिया जिले के कवि और लेखक नामक पुस्तक है, जिसमे इन्होने अपने जिले के कवियो और लेखको की कृतियो का बड़ा सुन्दर परिचय दिया है। ये बलिया चकहरी मे मुख्तारी कर रहे थे। इन्होंने 1930 तथा 1942 के आन्दोलनो मे बाबू प्रसिद्ध नारायण जी ने विशेष भाग लिया था । इन्हें कठोर कारावास का दण्ड भी भुगतना पडा। सन् 1942 ई0 के भयानक विद्रोह के पश्चात निरकुश ब्रिटिश शासन की ओर से बलिया की जनता पर जो अत्याचार हुआ वह भारतीय इतिहास मे एक असाधारण घटना है। बाबू प्रसिद्ध नारायण जी ने इसी विषय को अपने काव्य का आधार बनाया।

सन् 1942 में बलिया के विद्रोहियो द्वारा दिये गये वीरतापूर्ण कार्यो का वर्णन करते हुए लिखते है–

आइल अगस्त के आन्दोलन,[1]
फरके लागल सबके तन, मन,

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 276

बिजुली दौडल जगाल बलिया,[1]

चलेले मुसलिम, हिनदू, हरिजन,

मचि गइल लडाई बस जुझार ।

प० महेन्द्र शास्त्री

भोजपुरी के उन्नायकों और प्रचारको मे प० महेन्द्र शास्त्री का स्थान बहुत ऊँचा है। बिहार तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो मे जहा समय–समय पर भोजपुरी सम्मेलन होते है, उनमे प्राय शास्त्री जी की प्रेरणा रहती है। पटना से प्रकाशित होने वाली "भोजपुरी" नामक पत्रिका के ये ही सम्पादक थे । ये भोजपुरी गद्य तथा पद्य के सफल लेखक है। इनकी "आज की आवाज" नामक भोजपुरी कविताओ की एक छोटी सी पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसमे सामाजिक विषयो पर सुन्दर तथा सरस कतिवाएँ है ।

श्याम बिहारी तिवारी

ये बिहार प्रान्त के बेतिया जिले के निवासी है। ये भोजपुरी मे सुन्दर तथा सरस कविताएँ लिखते है। इनकी "देहाती–दुलकी" नामक पुस्तक तीन भागो मे प्रकाशित हुई है। इनका उपनाम देहाती है और ये इसी नाम से प्रसिद्ध है। देहाती–दुलकी भाग 1 मे इनकी चौदह चुनी हुई कविताओ का सग्रह है। जिनमे देहाती विषयो को लेकर कविता की गई है ।

इन्होने पति का भँवरा से रूपक बाधकर उसका कितना सुन्दर उपालम्भ नीचे के पद में किया है–

---

1 डा० उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० 277

कइसे मानी उनकर बतिया,[1]

सुखले सूखल बीतल रतिया,

कहॅा जुडाइब आपन छतिया,

छतवर तुरले जाय,

भँवरा रसवा चूसले जाय ।

कविवर चञ्चरीक

कविवर चञ्चरीक जी भोजपुरी के लब्ध प्रतिष्ठ कवियो मे से है। ये गोरखपुर जिले के निवासी है। इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना "ग्राम–गीताजलि" है। यह गोरखपुर से ही प्रकाशित हुई है ।

ग्राम–गीताञ्जलि मे कुल 240 पृष्ठ है, जिनमे चञ्चरीक जी ने राष्ट्रीय तथा सामाजिक विषयो को लेकर काव्य–रचना की है – यह पुस्तक दो भागो मे विभक्त है–

1 राष्ट्रीय सोपान

2 सामाजिक सोपान

"राष्ट्रीय–सोपान" मे इन्होंने राष्ट्रीय तथा देशभक्ति के विषयों को लेकर सोहर, विवाह के गीत, मेला, निसैनी, हिंडोला, जनेऊ, कहरवा आदि के गीत लिखे है ।

"सामाजिक सोपान" मे इन्होने आदर्श गारी, शिक्षाप्रद गीत, बेटी–बिदाई के समय के गीत आदि लिखे है।

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 277

"ग्राम–गीताञ्जलि" की भाषा सरस, सरल और मधुर है। राष्ट्र के कर्णधार स्वर्गीय मोतीलाल जी की मृत्यु पर लिखते है–

भारत के नैया के डारि मँझधरवा मे,[1]
असमय चलि गइले मोतीलाल नेहरू ।
कइसे के पार होइहे देसवा के नइयारे,
पतवार रहलै मोतीलाल नेहरू ।

बाबू रणधीर लाल श्रीवास्तव

ये भोजपुरी के उदीयमान कवियो मे से है। ये बलिया जिले के सोनबरसा नामक गाव के निवासी है। आजकल ये बलिया के एल डी मेस्टन हाईस्कूल मे अध्यापन कार्य करते है। इधर ये भोजपुरी मे बरवै छन्द मे काव्य–रचना करने मे सलग्न है तथा "बरवै–शतक" नामक काव्य की रचना की है। यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। इनकी भाषा सरल और सुबोध होती है। इसमे भोजपुरी मुहावरो का सुन्दर प्रयोग होता है– उदाहरण–

पति के वियोग मे विरहिणी के नेत्रो से आँसू गिर रहे है– इसका सुन्दर चित्रण कवि ने इस रूप में किया है–

बिरह अगिनिया छतिया धधके मोर,[2]
गलि गलि बहेला करेजवा, अँखियन कोर ।

आगे के पद मे कवि कहता है कि यह कितने आश्चर्य की बात है कि पानी मे पडने से आग तो बुझ जाती है, परन्तु आँसुओ के जल से विरहाग्नि और भी धधक उठती है ।

---

1 चञ्चरीक–ग्राम गीताजलि।

2 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 279

इ कतहू ना देखनी सुनली भाइ,
विरह अगिनिया धधके ला पनिया पाइ ।

स्वामी जग्गन्नाथ जी .

स्वामी जी का जन्म स्थान ग्राम रामपुर पो0 भगवानपुर, थाना–बसन्तपुर जिला छपरा है। इनका जन्म एक सम्भ्रान्त वैश्य परिवार मे सवत् 1959 की कृष्ण अमावस्या को हुआ था और गोलोक वास सवत 2002 भाद्र कृष्ण 11 को इनके शिष्य परमहस श्रीशुकदेवजी ने इनके दो ग्रन्थ श्री सद्गुरू सागर प्रथम तथा द्वितीय भाग प्रकाशित किये है। कबीर, दादू, नानक आदि महात्माओ की भांति इन्होने भी बड़े सरल शब्दों मे जनता को उपदेश दिया है। अधिकाश पदो की भाषा सुबोध भोजपुरी है। ये पद आध्यात्मिक भावना से ओत–प्रोत है–नीचे कतिपय पद उत्द्धृत है–

भला रे समइया राम लागल बाटे बदरी,[1]
माघ महीना सुदी तिथि हउए पचमी ।
हमहुँ पहुँच अइली सतगुरूजी का नगरी,
धरम के भटकी छोड मन मूरख,
नाही, तौं जन्हु धके तोहरा के रगरी।
हित कुटुम कोई काम ना अइहे,
धन दौलत तोर छूटी जाई सगरी ।
दीन दयाल सतगुरूजी हमारो
अधम जगन्नाथ के लखा देली डगरी ।

अशान्त .

भोजपुरी के कवियो मे अशान्त भी एक है। इनकी भाषा प्राञ्जल और भाव उच्चकोटि के होते है। भोजपुरी में लिखित इनके गीतो को हम इतने

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 280

सुन्दर ढग से गाते है कि स्वाभाविक भाव से उसे सुनकर लोग आकर्षित हो जाते है। नीचे इनकी "ऋतु-गीत" उद्धृत है-

कुहुकि कुहिक कुहुकावे कोइलिया,
कुहुकि कुहुकि कुहुकावे ।
पतझर आइल उजडल बगिया,
मधु ऋतु मे तुसियाइल फुनुगिया,
इन हरियर हरियर कलइन मे,
सूतल सनेहिया जगावे कोइलिया ।

– कुहुकि0

अन्य पुस्तकें

जैसा कि यह ज्ञात हो चुका है कि भोजपुरी एक जीवित भाषा है। अतएव भोजपुरी प्रदेश से बहुत छोटी-छोटी पुस्तके प्रकाशित होती रहती है। भोजपुरी प्रदेश मे सोनपुर मे हरिहर क्षेत्र तथा बलिया मे ददरी के मेले उत्तर भारत मे प्रसिद्ध है। इन मेलो मे स्त्रियो को लक्ष्य करके "मेला घुमनी", "गगा-नहवनी" आदि पुस्तके लिखी गयी है।

भोजपुरी क्षेत्र के बाहर भोजपुरियो का सबसे अधिक केन्द्रीकरण कलकत्ता मे हुआ है। कलकत्ता मे भोजपुरी क्षेत्रो मे प्रचलित "लोरिकी", "सोभनयका" और "सोरठी" आदि लोक-कथाओ को भी यहा लोग गाते है।

बनारस से प्रकाशित पुस्तके- 1.झरबेलाझरेलिया बहार, 2 मैनाकी जैंतसार, 3 पूरबीपरी, 4 चम्पा-चमेली की बातचीत, 5 गारी-मनोरंजन, 6 बारहमासा, 7 प्यासी सुन्दरी वियोग, 8 सोरठ सिगार, 9 सीता हरण, 10 नन्ही भौजरया, 11 बड़ी गोपाल-गारी, 12 भिखारी नाटक, 13 बापू

गीत, 17 सोभ नयका बजारा, 18 बनवीर–गीत, 19 सास–पतोह का झगडा आदि ।

दूधनाथ प्रेस हावडा से जो पुस्तक प्रकाशित हुई है, उनमे से अधिकाश के लेखक बिहार प्रान्त के आरा जिले के निवासी बाबू महादेव प्रसाद सि० है। इनमे कतिपय प्रसिद्ध पुस्तको के नाम इस प्रकार है–

1 लोरिकायन 2 बिहुला–विषहरी 3 बाला–लखन्दर 4 नयकाबजारा, 5 कुँवर विजयी 6 राजा ढोलन का गीत ।

ये अधिकाश वीरगाथाए गावो मे पायी जाती है। इन गाथाओ के कथानक भी लम्बे है। इन्हे एकत्र करने की अपेक्षा बाबू महादेव प्रसाद सिह ने इनके कथानक तथा छन्द को लेकर स्वय रचना कर डाली है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन भोजपुरी गीतो को गवाकर डिक्तो फोन की सहायता से एकत्र करके इनका सम्पादन किया जाय । इस प्रकर के सस्करण से भारत के लोग–साहित्य की अभिवृद्धि होगी ।

भोजपुरी लोकसाहित्य

भोजपुरी लोकसाहित्य को हम चार भाग मे विभक्त कर सकते है–

1 लोकगीत

2 लोकगाथा

3 लोककथा

4 प्रकीर्ण साहित्य ।

भोजपुरी लोकगीतो मे दो प्रकार है। प्रथम सस्कार सम्बन्धी गीत तथा द्वितीय ऋतु सम्बन्धी गीत। इसके अतिरिक्त देवी देवताओ से सम्बन्धित गीत भी है। भोजपुरी लोकगीतो के निम्नलिखित प्रकार है –

1. सोहर– पुत्र जन्म के अवसर पर गसए जाने वाले गीत ।

2 खेलवना – पुत्र जन्म के पश्चात् गाए जाने वाले गीत ।

3 जनेऊ के गीत – यज्ञोपवीत तथा मुन्डन सस्कार के गीत ।

4 विवाह के गीत – इसमे विवाह सम्बन्धी सभी सस्कारो के गीत रहते है ।

5 वैवाहिक परिहास के गीत – इसमे परस्पर हास–परिहास तथा गाली देने के गीत रहते है।

6 गवना के गीत – द्विरागमन के अवसर पर गाए जाने वाले गीत ।

7 छठी माता के गीत – कार्तिक शुक्ल मे सूर्यषष्ठी व्रत के निमित्त गाये जाने वाले गीत ।

8 शीतला माता के गीत– चेचक निकलने पर शीतला माता को प्रसन्न करने के गीत ।

9 बहुरा– भाद्र कृष्ण चतुर्थीको बहुरा के अवसर पर गाये जाने वाले गीत ।

10 कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोधन व्रत मनाया जाता है। गोवर्धनपूजा से सम्बन्धी गीत इसमे गाए जाते है ।

11 पिड़िया– गोधन व्रत के दिन कुमारी कन्याए भाई की मगल कामना के लिए गीत गाती है ।

12 बारह मासा– यह बिरह गीत है। सावन के गीत, चौमासे के गीत तथा झूले के गीत इसी श्रेणी मे आते है।

13 चैता– बसंत के आगमन के साथ पुरूषो द्वारा गया जाने वाला गीत। इसे घाटो भी कहते हैं ।

14 कजली– वर्षा ऋतु का गीत ।

15 फगुआ– होलिकोत्सव पर गाए जाने वाले गीत।

16 नागपचमी– नागपूजा से सम्बन्धित गी। वर्षा के गीत भी इसमे सम्मिलित रहते है ।

17 जतसार– ग्राम बधुओ द्वारा चक्की चलाते समय का गीत ।

18 बिरहा– अहीर लोगो कायह जातीय गीत है। वीर और श्रृगार से ओत–प्रोत रहता है ।

19 झूमर– यह एक फुटकर गीत है। नवयुवतियाँ समवेत स्वर मे गाती है।

20 सोहनी के गीत– वर्षा के प्रारम्भ मे खेतो मे हानिकर पौदो और कीडो को निकालते समय गाए जाने वाले गीत। इसे स्त्रियां ही विशेष रूप से गाती है ।

21 भजन– जीवन के रहस्यात्मक एव क्षणभगुरता पर प्रकाश डालने वाले गीत ।

22 विविध गीत–

क) अलचारी– लाचारी अवस्था मे गाए जाने वाले गीत। इसमें विरह प्रधान रहता है ।

ख) पूर्वी– यह भी एक विरह गीत है। पूरब देश जाने का प्रसग वर्णित रहता है ।

कुछ अन्य भी भोजपुरी लोकगीत अनेक अवसरो पर गाए जाते है।

———

भोजपुरी लोकगाथाये–

समस्त भोजपुरी जनपद मे प्रधान रूप से नौ लोकगाथाओ का प्रचलन है, ये इस प्रकार है–

1 **आल्हा–** मूलतया और प्रधानतया यह बुन्देली लोकगाथा है।

2 **लोरिकी–** अहीर जाति का यह "जातीय काव्य" है।

3 **विजयमल–** मल्ल के क्षत्रियो का युद्ध वर्णन है ।

4 **बाबू कुअर सिह–** भोजपुरी वीरता का प्रतिनिधित्व करने वाली अमरगाथा है ।

5 **शोभानयका बनजारा–** यह लोकगाथा व्यापारी जाति से सम्बन्ध रखती है।

6 **सोरठी–** प्रेमियों का मिलन कितना कष्ट–साध्य होता है, इसमे यही चित्रित है ।

7 **बिहुला–** दूसरा नाम "बालालजन्दर" भी है। यह पतिव्रत धर्म की एक अमरगाथा है ।

8 **राजा भरथरी–** राजा भरथरी एब रानी सामदेई की प्रसिद्ध कथा ही इस लोकगाथा का विषय है। इस गाथा को जोगी लोग ही जाते है।

9. **राजा गोपीचन्द–** गोपीचन्द के त्याग की गाथा ।

भोजपुरी के आधुनिक काल के कवि

आधुनिक काल के प्रमुख भोजपुरी कवि इस प्रकार है–

1 बाबा बुलाकीदास– यो तो भोजपुरी प्रदेश मे हजारो की सख्या मे "चैता" के गीत उपलब्ध होते है परन्तु बुलाकीदास के गीतो मे जो रमणीयता, सरसता, कोमलता और मधुरता है वह अन्यत्र कही नही है।

"पिया पिया मति करू पिया के सोहागिनि हो रामा ।
तोर पिया, लोभोले बारिनि, तमोलिया हो रामा ।।

2 बाबू रामकृष्ण वर्मा– बाबू रामकृष्ण वर्मा कविता मे अपना उपनाम "बलवीर" लिखा करते थे। इनका एक विरहा इस प्रकार है–

भरली गगरिया उठवले जइसे गोइयाँ,
तइसे बिछवल गोडवा हमार ।
जो पै 'बलबीरवा' ना बहियाँ धरत,
तो पै बहिती जमुनवा के धार ।।

3 श्री तेग अली 'तेग'– इनकी एकमात्र रचना 'बदमाश–दर्पण' है। आखो मे सुरमा लगाने के कारण की सफाई–

"हम उनसे पुछली, आँखि मे सुरमा काहे बदे लगाइला,
ऊ हँस के कहलन, छुरी पत्थर से चताइला ।।"

4 बाबू अम्बिका प्रसाद– इनकी "भजनावली" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है ।

5 बिसराम ।

6 प0 दूधनाथ उपाध्याय ।

7 बाबू रघुबीर नारायण ।

8 प0 महेन्द्र सिह ।

9 भिखारी ठाकुर ।

10 मनोरंजन प्रसाद सिनहा ।

11 महाराज खड्गबहादुर मल्ल ।

12 बाबू दुर्गा शकर प्रसाद सिह ।

13 बाबू प्रसिद्ध नारायण सिह ।

14 डा0 राम विचार पाडेय ।

15 आचार्य महेन्द्र शास्त्री ।

16 श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' ।

17 कविवर 'चचरीक' ।

18 अर्जुन कुमार सिह "अशान्त" ।

19 महादेव प्रसाद सिह 'घनश्याम' ।

20 श्री रामेश्वर सिह 'काश्यप' ।

21 श्री विश्वनाथ प्रसाद "शैदा" ।

22 श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' ।

23 श्री मोती बी0ए0

24 डा0 मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' ।

25 श्री 'राहगीर' ।

26 श्री भोलानाथ 'गहमरी' ।

27 श्री चन्द्रशेखर मिश्र ।

28 श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' ।

29 श्री श्याम सुन्दर ओझा 'मजुल' ।

30 श्री राधा मोहन 'राधेश' ।

31 श्री सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'।

32 श्री विवेकी राय ।

33 श्री राम वृक्ष राय 'विधुर' आदि भोजपुरी के आधुनिक काल के प्रमुख कवि है ।

नेपाली साहित्य

नेपाली भाषा के प्रादुर्भाव और व्यवस्थित विकास के पीछे पृष्ठभूमि के रूप मे प्राचीन साहित्यिक परम्परा रही है जो मुख्यत सस्कृत के माध्यम से व्यक्त होकर फल-फूली । प्राचीन नेपाल का साहित्य सस्कृत भाषा मे लिखे गये शिलालेखो और अभिलेखो मे मिलता है। लिच्छवी राजाओ के शासनकाल में सस्कृत राजकाज और साहितय दोनों की भाषा रही । पहली से बारहवी शताब्दी तक सस्कृत का प्रयोग विस्तृत रूप से साहित्य और शिलालेखो मे हुआ। लिच्छवी वश के पूर्व सोम वश के राज्यकाल मे भी भले ही किराती भाषा प्रमुख रही हो, सस्कृत का साहित्य की भाषा के रूप मे प्रचलन था । चागु नारायण मन्दिर मे लिच्छवी वश का सबसे पुराना शिलालेख सस्कृत मे है और काव्यात्मक है। जब महायान बौद्ध धर्म का नेपाल मे प्रचार हुआ तो बौद्ध साहितय पाली के अलावा सस्कृत मे लिखा गया । कर्नाट राज्यवश के राज हरिसिह देव के शासनकाल मे मैथिली भाषा का विकास शुरू हुआ और भक्तपुर मे मल्ल राजाओ के शासनकाल मे मैथिली साहित्य की प्रमुख भाषा बन गई ।

राज्याश्रय पाकर भक्ति रस और वीर रस प्रधान साहित्य की रचना सस्कृत और मैथिली दोनो मे 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक होती रही और भक्तपुर और कीर्तिपुर के कई राजाओ ने नाटक और कविता के क्षेत्र मे न केवल रूचि ली बल्कि अपना विशिष्ट योगदान दिया । मल्लकालीन गीति-नाट्य की अमूल्य धरोहर आज भी अभिलेखागार की अनुपम निधि है जो शोधकर्त्ताओ के लिए वरदान सिद्ध होती रही है ।

उस समय साहित्यिक होना बड़े सम्मान और प्रतिष्ठा का विषय माना जाता था । कीर्तिपुर के राजा जग विजय मल्ल ने स्वरचित 'प्रबोध चन्द्रोदय'

नाटक मे स्वय को वाचस्पति की उपाधि दे डाली है –

"कीर्त्या चन्द्र इव प्रतापनिकरौ चण्डा शुवत् सगरे
वीर पार्थइव प्रबन्ध–कविता–शास्त्रेषु वाचस्पति ।।"

नेपाल के इतिहास मे मल्ल नरेशो का शासन काल साहित्य और ललित कला की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय रहा है। कई विद्वानो का मत है कि मल्ल नरेशो का शासन–काल कला, सगीत और साहित्य के लिये स्वर्ण–युग था। इन दिनो अनेकानेक गीतिनाट्य लिखे गये और मचित हुए। इतना ही नही कई मल्ल नरेश स्वय जाने–माने कवि थे। उनकी रचना की भाषा मैथिली थी ।

उन दिनो इस क्षेत्र मे भक्ति–भावना का विशेष प्रभाव था और देवी–देवताओ के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति के पद विशेषण से रचे गये। मल्ल–नरेश प्रताप मल्ल की यह रचना देखें (जिसमे स्थानीय तथा तात्कालीन प्रभाव के कारण 'ख' की जगह 'ष' वर्ण का प्रयोग हुआ है)। यह पद पहाडी राग मे गेय है –

"हेरह हरषि दूष हरह भवानि । तुअ पद सरण कएल मने जानि।।[1]
मोय अति दीन हीन मति देषि । कर करूणा देवि सकल उपेषि।।
कुतनय करय सहज अपराध । तैअओ जननि रु वेदन बाध ।।
परताप मल्ल कहए कर जोरि । आपद दूर कर करनाट किशोरि।।

इस पद मे करनाटक से लायी गयी अपनी कुलदेवी की वदना प्रताप मल्ल ने की है ।

---

1 प्रताप मल्ल – कुलदेवी की वन्दना।

एक अन्य शिला–लेख पद मे जितामित्र ने शिव की वदना करते हुए भैरव राग मे कहा है–

जय जय शकर आदि महेश्वर सानन्द सहज स्वरूपे ।
त्रिभुवन नाथ विकट नट नायक भूषण फणि गण भूपे।।

सहज सबहि हित नृपति जितामित्र हर पद आन विभावे।
निय पद पकज तरूण दिवाकर समुचित ई रस गावे ।।

मालश्री राज विजय की 'स्वर–लहरी' मे इनकी दूसरी रचना शक्ति–आराधना मे मुखरित हुई है –

"जय भूप पालनि चडिके ।
डिडिम डिम डिम डमरू वादिनि विकट कट कट हासिके ।।

विनत गोचर जननि पुनु पुनु श्री जितामित्र भूपति ।
कुमति दम्भ कुसग तेजि कहुँ होअओ तुअ पद मन्मति ।।

इन शिलालेखो मे अकित पदो से यह भी प्रमाणित होता है कि उन दिनो यहा की राजभाषा मैथिली थी। वर्तमान नेपाली और भोजपुरी के स्वरूप निर्धारण मे अन्य क्षेत्रीय भाषाओ के साथ मैथिली का विशेष योगदान रहा है। जनसख्या की दृष्टि से नेपाल मे आज भी मैथिली का द्वितीय स्थान है ।

नेपाल के मल्ल नरेशो मे राजा जगज्योतिर्मल्ल, राजा प्रताप मल्ल, राज भूपतीन्द्र मल्ल, राजा रणजीत मल्ल के नाम उल्लेखनीय है इन मल्ल नरेशो

सम्पर्क हुआ और उनका प्रभाव इस पर पड़ा, लेकिन उतना नही जितना सस्कृत और सस्कृत से निकली भारतीय भाषाओं का विशेष कर भोजपुरी, बगाली और उनकी विभिन्न बोलियो का। देवनागरी मे लिखी जाने के कारण भी आधुनिक भारतीय भाषाओ और विशेषकर भोजपुरी से इसका सगी बहिन का सम्बन्ध है। भाषा विज्ञान और उद्‌भव की दृष्टि से नेपाली का आर्यभाषा सस्कृत से वैसा ही सम्बन्ध है जैसे लेटिन भाषा का इटालियन, फ्रेंच या स्पेनिश भाषाओ से है।

वैसे नेपाल मे एक ओर आस्ट्रेलिया एशिया भाषा परिवार की दरभिया, व्यासी, खम्बू, लिम्बू, थामी, हायु आदि बोलियाँ बोली जाती है और दूसरी ओर है प्रचलित तिब्बती-बर्मी कुल की बोलियाँ जैसे गुरूग, मगर, नेवारी, सुनवादी, मुर्मी आदि। परन्तु इन बोलियो से नेपाली का कोई भी प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही है। डा० दीनानाथ शरण अपनी पुस्तक "नेपाली सहितय का इतिहास" मे लिखते हैं कि इन बोलियों के कतिपय शब्द भले ही नेपाली मे समाविष्ट हो गये हो, किन्तु इतना नि`सदिग्ध है कि नेपाली का मूल ढाचा आर्य भाषा सस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओ जैसे भोजपुरी, मैथिली, गुजराती आदि के अनुकूल है, नेपाली और भोजपुरी के व्याकरण और वाक्य रचना मे बहुत एकरूपता है।[1] अधिकतर स्वर, व्यजन और उच्चारण मे भी दोनो भाषाये मिलती जुलती है और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि दोनो भाषायें एक ही लिपि-देवनागरी-मे लिखी जाती है। नेपाली में सस्कृत के शब्द प्रचुर मात्रा में है- उसी तरह जिस तरह वे सस्कृत से निकली भारतीय भाषाओ मे है। नेपाली भाषा और आर्य भाषा सस्कृत की ध्वनि और शब्द गठन मे काफी साम्यता है जैसा निम्नाकित कतिपय शब्दो से स्पष्ट होता है। कई शब्द सस्कृत के मूल रूप मे प्रयुक्त है और कई में थोडा परिवर्तन आ गया है

---

1 डा० दीनानाथ शरण – नेपाली अध्ययन

सस्कृत	नेपाली	सस्कृत	नेपाली
देवता	देउता	पूजा	पुजा
सत्य	सौंच	रम्य	राम्रो
वृद्ध	बुढा	काष्ठ	काठ
त्यौहार	तिहार	अवसर	ओसर
मध्यदेशी	मधेसी	स्वादिष्ट	स्वादिलो
भूमि	भुईं	नव	नयाँ
पवित्र	पबित्र	उपहार	उपहार
नि सहाय	नि सहाय	उपलक्ष्य	उपलक्ष्य
समारोह	समारो	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठा
चचल	चाचर	राक्षस	राकस
जमाई	ज्वाईं	हस्तान्तरण	हस्तान्तरण

भोजपुरी भाषा की तरह नेपाली मे सस्कृत की विरासत स्पष्ट झलकती है। बल्कि कुछ हद तक तो नेपाली मे सस्कृत का प्रभाव आज की सामान्य बोलचाल की भोजपुरी से अधिक है और सस्कृत पर आधारित शब्द अधिक मात्रा मे सामान्य प्रचलन और प्रयोग मे आ गये है ।

इनके अलावा आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे– हिन्दी, भोजपुरी, गुजराती, पजाबी, बगाली, मराठी, उर्दू, मैथिली, अवधी और बोली जैसे मारवाडी के कई शब्द ऐतिहासिक और निरतर तथा व्यापक जनसम्पर्क की परम्परा के कारण नेपाली मे स्वाभाविक रूप से आ गये है। सामान्य प्रयोग मे सम्मान सूचक, आदर सूचक शब्द "तपाईं" पर भोजपुरी की और "हुजूर" पर उर्दू की छाप स्पष्ट नजर

आती है। भोजपुरी की तरह नेपाली मे भी कई उर्दू, फारसी और अरबी के शब्द भी प्रचलन मे आ गये है। भारत के मुसलमान राजाओ के दरबारो मे प्रचलित फारसी और अरबी के शब्द दरबारी और कोर्ट कचहरी की भाषा मे आ गये है

उर्दू इनाम, जिरह, तारीफ, निशान, दरख्वास्त, फजूल, तर्जुमा, माफ हैजा, दलाल ।

आरबी . अखबार, अदालत, अमीर, नीयत, इज्जत, किफायत, गरीब, जुलूस, तजबीज, तलब, दौलत, फौज, मुश्किल, लायक, सनद, सवाल, साबित, हाजिर, दर्जा, दखल ।

फारसी · अन्दाज, कारबार, खूब, गर्दन, जमीन, दुरूस्त, दरबार, बन्दोबस्त, रोजगार, शहर, सरकार, सरदार, सलाम, एतबार, मार, सुब्बा, मीआद, मिहनत, दस्तूर, दस्तावेज, दम ।

नेपाली भाषा 'खस'[1] प्राकृत से निकली है और प्रारम्भ मे खसकुरा पर्वतिया और गोरखाली के नाम से प्रचलित हुई। लेकिन श्री प्रबोध पडित ने अपनी पुस्तक "लिग्विस्टिक हिस्ट्री रिलेशनशिप इन लैग्वेजेस" मे लिखा है कि उत्तर–पश्चिम समूह की भाषाओ का निकट सम्बन्ध सस्कृत से अधिक है और प्राकृत से उतना नही। कर्नाली प्रदेश मे पाये गये अशोक के शिलालेखो मे नेपाली का सर्वप्रथम प्रयोग चौदहवी शताब्दी में पाया गया है। पूर्वी नेपाल के करनाली प्रदेश से लोग नेपाल की गडकी घाटी मे आये और यहा उनका सम्पर्क उत्तरी भारत से आये हुए लोगो और उनकी "पहाडी भाषा" से हुआ। इस तरह नेपाली की बोलचाल का प्रारम्भ हुआ और साथ ही उसमे लेखानुक्रम का भी।

---

1 पारसमणि प्रधान, माडर्न नेपाली लिरेचर एड इडिया

"भास्वती"[1] का सस्कृत से नेपाली मे अनुवाद शायद नेपाली भाषा का सर्वप्रथम लिखित उदाहरण है। उनके अनुसार यह अनुवाद सन् 1343 ई0 या उससे कुछ पहले लिखा गया हो ।

स्वर्गीय राजा पृथ्वी नरायण शाह के राज्यकाल (सन् 1768-69 ई0) मे नेपाली एक व्यापक राष्ट्रभाषा का रूप ले बैठी थी। उनके शासनकाल मे शासकीय कार्य-कलाप, पत्र-व्यवहार और दस्तावेजो मे इसका प्रयोग हुआ और साथ ही साथ विकास भी । स्वय पृथ्वीनारायण शाह के भाषणों का और भक्ति प्रधन कविताओ मे उसका उपयोग हुआ और उसके जरिये उसका प्रचलन । इस प्रकार नेपाल के राजनैतिक एकीकरण के साथ ही साथ नेपाली भाषा की साहित्यिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ । सन् 1768 ई0 से पहले नेपाली साहित्य मुख्यतया धार्मिक ग्रथो और सामाजिक विवरणो तक ही सीमित थी। उस साहित्य का "ऐतिहासिक सदर्भ" मे महत्व था लेकिन "साहित्यिक सदर्भ" मे नही। सही अर्थ मे नेपाली भाषा मे साहित्यिक परम्परा 19वी शताब्दी मे प्रारम्भ हुई। प्राचीन गोरखाली या पर्वतियों की तुलना मे आधुनिक नेपाली मे बोलचाल की भाषा की सरलता और स्वाभाविकता प्रचुर मात्रा मे है। रोजमर्रा के व्यवहार की जनभाषा ही शिष्ट भाषा है, वही साहित्य की भाषा भी । यही कारण है कि प्रारम्भ से ही इस भाषा मे साहित्य सृजन जनमानस के विचार दर्शन का बहुत करीब से और बडी स्वाभाविकता एव सहजता से प्रतिनिधित्व करता आया है ।

भाषा का विकास और साहित्य की प्रगति विशेषकर नजदीक की और एक ही काल और प्रदेश की भाषाओ के बीच साहित्यिक सम्बन्ध और आदान-प्रदान से होती रहती है। एक ही लिपि-देवनागरी-का प्रयोग होने से नेपाली और

---

1 डा0 जे0सी0 रेग्मी - नेपाली अध्ययन

भोजपुरी व अन्य उत्तर भारत की भाषाओ के बीच आदान–प्रदान सरल है। कई पुराने नेपाली लेखक, कवि और साहित्यकार नेपाली के साथ–साथ भोजपुरी और मैथिली मे भी लिखते रहते है। इसलिए उस समय के रचित साहित्य मे पारस्परिक प्रभाव स्पष्ट दिखता है। अभी सुवेदी ने अपनी पुस्तक "नेपाली लिटरेचर–बैकग्राउण्ड एण्ड हिस्ट्री" मे मत व्यक्त किया है कि कुमायूँ के पहाड़ो मे रहने वाले कवि मुमानी पत ने, जो शायद खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते है, नेपाली भाषा मे भी कविताये लिखी। उनकी एक कविता मे पहली तीन पक्ति सस्कृत मे हैं और अतिम पक्ति नेपाली मे। उनकी भाषा मे कुमायूँ, सस्कृत और नेपाली शब्दो का भी काफी आदान–प्रदान हुआ है।[1] वस्तुत प्रारम्भिक काल में भोजपुरी भाषा के प्रख्यात कवियो और लेखकों का प्रभाव भाषा, शैली और विचार प्रतिपादन के दृष्टिकोण से नेपाली साहित्य पर काफी हुआ ।

साहित्य मे काल विभाजन, ऐतिहासिक काल विभाजन की तरह सुगम नही होता । नेपाल की सास्कृतिक परम्परा की तुलना मे नेपाली साहित्य का इतिहास बहुत पुराना नही है। आदि कवि भानुभक्त का जन्म सन् 1814 ई0 का है। उनके पूर्ववर्ती पडित उदयानद अर्ज्याल का समय सन् 1776 ई0 कहा गया है। इस तरह नेपाली साहित्य का इतिहास लगभग दो सौ वर्षों का ही है। श्री रत्न ध्वज जोशी ने सन् 1908 ई0 तक के समय को मध्यकाल और तदुपरात के समय को आधुनिक काल माना है। डा0 दीनानाथ शरण ने काल विभजन समय के अनुसार यो किया है आदिकाल – सन् 1776–1841 ई0, पूर्व मध्यकाल सन् 1841–1882 ई0 उत्तर मध्यकाल – सन् 1883–1912 ई0, आधुनिक काल– सन् 1913 ई0। श्री यज्ञराज सत्याल ने प्रमुख साहित्यकारो को आधार मान कर काल विभाजन किया है जो उपरोक्त काल विभजन से मेल खाता है। उदयानद अर्ज्याल

---

1 अभीसु देवी – नेपाली लिटरेचर – बैक ग्राउण्ड एण्ड हिस्ट्री

के समय को आदिकाल, भानुभक्त के समय को पूर्व मध्यकाल, मोतीराम भट्ट के समय को उत्तर मध्यकाल और लेखनाथ पौड्याल के समय से लेकर अब तक के समय को आधुनिक काल की सज्ञा दी गई है। अपने विश्लेषण के लिए मैने मोटे रूप से इसी काल विभाजन के आधार पर नेपाली कविता के इतिहास का अवलोकन किया है ।

। आदिकाल

राजनैतिक एकीकरण के बाद आधुनिक नेपाल के प्रारम्भ का काल नेपाली साहित्य का आदिकाल है, जो मोटे रूप से सन् 1776–1841 ई0 तक लिया गया है। एकीकरण के बाद शाति, स्थायित्व और सर्वोन्मुखी प्रगति के वातावरण मे साहित्य और ललित कलाओ का विकास स्वाभाविक था। आदि कवि का सम्मान यद्यपि स्व0 भानुभक्त आचार्य को ही मिला है किन्तु नेपाली साहित्य के अनुसधान के क्रम मे उनसे पूर्व अनेक कवियो के नाम आते है। पंडित उदयानद अर्ज्याल, सुवानन्द दास, इन्दिरस, विद्यानन्द केसरी, बसत शर्मा, यदुनाथ पोखर्याल, रघुनाथ पोखर्याल, भट्ट और पतजलि के नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।[1]

इस काल मे उभरती हुई नेपाली भाषा पर ब्रज भाषा, मैथिली, भोजपुरी और हिन्दी का गहरा प्रभाव दिखता है। नेपाली भाषा परिष्कृत और परिमार्जित होकर बाद मे निखरी लेकिन उसकी भूमिका इस काल मे तैयार हुई। इस दृष्टि से इस काल की रचनाओ का अपना महत्व है । श्री यज्ञराज सत्याल[1] ने लिखा है– भाषा मे परिवर्तन आना स्वाभाविक है फिर भी इस काल की रचनाओ की श्रेष्ठता

---

1 यज्ञराज सत्याल, "नेपाली साहित्य को भूमिका"

को स्वीकार करना पड़ेगा, क्योंकि इनके ही जरिये एक नवीन साहित्यिक भाषा की सृष्टि हुई और इसी ने क्रमश एक बडे अभाव की पूर्ति की और नेपालियो के लिए एक राष्ट्र भाषा को जन्म दिया ।

इस काल के कवियो की रचनाओ मे मुख्यत भक्ति की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इसलिए इसे किन्ही मानो मे भक्तिकाल की सज्ञा दी जा सकती है। अधिकाश कवियो ने भक्ति की रचनाये की है। भक्ति मे कृष्ण–भक्ति, राम–भक्ति और सत धारा के कवि आते है । सत धारा मे कबीर की निर्गुण भक्ति और अन्य कवियो की सगुण भक्ति की भी स्फुट रचनाये है। कृष्ण–भक्ति की कविताओ मे रीति काव्य, की छाप है। यो राज्याश्रय मिने से वीर रस और राष्ट्रीयतापूर्ण रचनाये भी लिखी गई। वीर रस की झलक विशेष कर उदयानद अर्ज्याल और यदुनाथ पोखर्याल की रचनाओ मे मिलती है।

इस काल के नेपाली भक्ति सहित्य का मूल आधार भारतीय भाषाओ के तत्कालीन साहित्य की तरह श्रीमद्भागवत, रामायण आदि मूल सस्कृत ग्रथ रहे है।दोनो देशो की समान सस्कृति, धर्म और विश्वास होने के कारण यह प्रक्रिया स्वाभाविक भी थी। दूसरा एक और स्वाभाविक कारण नेपालियो का शिक्षण केन्द्र भारत होना भी रहा है। काशी जो भारतियो के लिए शिक्षा का केन्द्र था, नेपालियो के लिए भी उतने ही महत्व का था। कृष्ण पथी विद्यानद केसरी अपने पिताजी के साथ काशी मे आकर पढ़े थे। राम पथी श्री भानुभक्त आचार्य ने काशी में शिक्षा पाई थी। सस्कृत मे विद्वत्ता प्राप्त करने के बाद इन महापुरूषो ने अपने देश की आम जनता को इन ग्रथो का परिचय प्राप्त कराने के लिए इन ग्रथो का प्रणयन नेपाली में किया। इससे नेपाली भाषा का रूप जो सामने आया वह मुख्य

रूप से सस्कृतनिष्ठ था । वह यही तक सीमित नही रहा, कुछ कवियो की रचनाओ मे अवधी, भोजपुरी और नेपाली का मिलाजुला प्रयोग भी देखा जा सकता है।

वर्तमन शाह वश के अधिष्ठाता पृथ्वीनारायण शाह की एकमात्र कविता उपलब्ध है। यह रचना भक्तिगान के रूप मे रेडियो नोपाल से भी प्रसारित होती रहती है –

बाबा गोरखनाथ सेवक सुषदाये, भजहुँ तो मनलाये ।
बाबा चेला चतुर मछिन्द्रनाथ को, अधबुध रूप बनाये ।।
शिवको अश शिवासन काये, सिद्धि माहा बनि आये।।1।।बाबा0।।
विधिनाद जटाकवरि, तुम्बी बगल दबाये ।
सम्प्रथम बाघ बघम्बर बैठे, तिनहि लोक वरदाये।।2।।बाबा0।।
मुन्द्रा कान मे अति सोभिते, गेरूवा वस्त्र लगाये।
गालेमालं रूद्राच्छे सेली, तनमे भसम चढाये।।3।।बाबा0।।
अगम कथा गोरखनाथ कि महिमा पार न पाये ।
नरभूपाल साह जिउको नन्दन पृथ्विनारायण गाये ।।4।।बाबा0।।
बाबा गोरखनाथ सेवक सुष दाये, भजहुँ तो मन लागे[1]।।

रोचक होगा यदि इस क्षेत्र मे शोध कार्य हो और उनकी अन्य कविताये भी प्रकाश मे आये। इतने महान राजनैतिक व्यक्तित्व ने निश्चय ही भक्ति रस के अलावा राष्ट्रीयता के पुट भरी कविताये जरूर लिखी होगी ।

इस काल की नेपाली कविता मे कही–कही वीर रस और धार्मिक भावना का सुन्दर सम्मिश्रण देखने को मिलता है।

---

1 जनकलाल शर्मा, जोसमनी हीन परम्परा साहित्य–पेज 427

विश्वेश्वर के दर्शन और ढाल तलवार दोनो साथ है। यह सुवानद की कविता कवित्त के रूप मे है जो नेपाली मे साढ़े का कवित्त के रूप मे बहुत लोकप्रिय हुई। नेपाली कवित्त लोक-गीत है। साढे के कवित्त वीरो के यशगान गाने की लोक-शैली है। वीर रस मे सुवानन्द दास[1] की कवितायें इस काल की अनुपम उपलब्धि है । राजा पृथ्वीनारायण की विजय से सबधित निम्नाकित कविता वीर रस और राष्ट्रीयता का सुन्दर उदाहरण है और भाषा का भी जो हिन्दी और व्रज भाषाओ के नजदीक है । लेकिन साथ ही विषय-वस्तु की मौलिकता, लय का नेपालीपन और भाषा की सरलता भी निखर आती है ।

उदयानद अर्ज्याल ने सन् 1777 मे चितवन पर हुए आक्रमण का विवरण अपनी रचना मे दिया है। इनकी रचना मे ठेठ नेपाली शब्दो का अत्यधिक प्रयोग है। यो कही-कही उर्दू शब्दो की झलक भी मिलती है। अब तक उपलब्ध नेपाली रचनाओ मे इनकी कविता को ही सबसे पुरानी नेपाली कविता माना गया है। जिस प्रकार चन्दरबरदाई की रचना मे महाराज पृथ्वीराज चौहान की प्रशस्ति गाई गई है, उसी प्रकार उदयानद अर्ज्याल की रचना मे गोरखा राजा पृथ्वी नारायण शाह के यश-गौरव का गान है ।

पृथ्वी नारायण शाह का व्यक्तित्व कवि के लिए प्रेरणा का स्रोत था। साथी ही उन्होने पृथ्वीनारायण के पुत्र सिह प्रताप शाह के गौरव गान मे भी कवितायें लिखी और उसमे भानुभक्त की शौली का आभास मिलता है।

इनकी भी भाषा सरल और सरस है और बड़े स्वाभाविक रूपसे पडोसी भाषाओ से प्रभावित है।

---

1 ताना शर्मा, "नेपाली साहित्य को इतिहास"

इन्दरस की कृति 'गोपिका–स्तुति' श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के पूर्वार्द्ध का अनुवाद है। इसमे सस्कृत के वर्णवृत्त का प्रयोग किया गया है और भाषा की दृष्टि से मैथिली, भोजपुरी और अवधी के शब्दो के प्रयोग भी हुए है। अरबी और फारसी शब्दो का प्रयोग भी इनकी रचना की विशेषता है। भक्ति काव्य का श्री गणेश इनके द्वारा ही माना जाता है।

विद्यारण्य केसरीकी शिक्षा–दीक्षा वाराणसी मे होने के कारण भोजपुरी के प्रति भी इनकी रूचि स्वाभाविक थी। हिन्दीमे 'बशी चरित्र' और नेपाली मे 'युगल–गीत' और 'द्रोपदी–स्तुति' इनकी प्रसिद्ध कृति है। "द्रोपदी स्तुति" के प्रथम श्लोक मे हिन्दी का प्रभाव स्पष्ट है और महाभारत से सीधी प्रेरणा प्राप्त की है।

"युगल गीत" श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के अध्याय पर आधारित है। मूल ग्रन्थ मे प्रयोग हुए शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग ही कवि ने अपनी रचना में किया है।

वसन्त शर्मा ने 'कृष्ण चरित' और 'समुद्र लहरी' की रचना की थी। 'कृष्ण चरित्र' श्रीमद्भागवत तथा महाभारत पर आधारित तो है किन्तु किसी ग्रथ विशेष का अनुवाद नही है। इस मे बसत शर्मा जी ने अपनी कल्पना का सफल समावेश किया है जिससे इसे मौलिक कृति कहना उपयुक्त है। नेपाली साहित्य मे इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी शैली सरल है। ठेठ नेपाली शब्दो के प्रयोग से इन्होने अपनी रचना को प्रभावशाली बना दिया है। 'कृष्ण चरित्र' नेपाली का प्रथम काव्य ग्रथ माना जाता है। कवित्व तत्व की कमी होने पर भी इनकी इस कृति मे विचार प्रवाह है और कृष्ण–भक्ति काव्य होने के कारण इसे महत्त्व दिया गया है ।

यदुनाथ पोखर्याल की कृतियो मे "स्तुति पद्य" और "कृष्ण चरित" का उल्लेख है। इन कृतियो मे सुन्दर शब्द–योजना, पद–लालित्य और वर्णन सामर्थ्य के अच्छे उदाहरण मिलते है। श्री कृष्ण की लीला का वर्णन सस्कृत के छद मे सगीतात्मकता पूर्ण है।

शैली पर असाधारण अधिकार और सस्कृत छदो के प्रयोग मे ये बड़े प्रवीण रहे है। राष्ट्रीय भावनाओ को प्रखरतापूर्वक व्यक्त करने मे सिद्ध हस्त कवि के रूप में यदुनाथ पोखर्याल का नाम सदा ही लिया जायेगा ।

रघुनाथ भट्ट (पोखर्याल) ने सपूर्ण अध्यात्म रामायण का नेपाली मे अनुवाद किया है। किन्तु केवल सुन्दर काण्ड का अनुवाद ही उपलब्ध हो सका है। राजनैतिक परिवर्तनो के वर्णन इन्होने कूट शैली मे किये है। इन्होने नेपाली जनता को रामभक्ति की ओर आकृष्ट किया है। इनकी भाषा क्लिष्ट है सस्कृत शब्दो की भरमार इनकी रचना मे देखने को मिलती है। नेपाली साहित्य के आदिकालीन कवियो मे इन्हे स्थान दिया गया है ।

पतजलि गजुर्याल जी को नेपाली मे कविता लिखने की प्रेरणा बहुत पहले ही मिली थी। इनकी प्रथम कृति "चौर पचाशिका" एक अनुवाद ग्रथ है। 'मत्स्येन्द्रनाथ को कथा', 'हरि भक्त माला', 'बालगोपाल–वाणी' इनकी प्रसिद्ध रचनाये है। इनकी कृतियो का आधार पौराणिक और धार्मिक है। इनकी कतिवाये ऊपर से रूक्ष किन्तु भीतर से सरस सुमधुर होती है।

जोसमणि शाखा निर्गुण भक्तो की धारा है। हिन्दी मे नाथ सम्प्रदाय से प्रभावित निर्गुण स्वरूप से प्रेरणा प्राप्त की । मूल शब्द ज्योतिर्मयी का रूप

बदलते हुए ज्योतिषमयी से जोसमणि रूप स्थिर हुआ। इनके आदि गुरू शशिधर माने जाते है। अन्य मुख्य कवियो मे ज्ञान दिलदास, धर्म दिलदास, स्वामी अभयानन्द आते है।

सधुक्कडी भाषा और कबीर के लोकप्रिय दोहो और उतियो का प्रभाव यह हुआ कि उन्हे जोसमणि सतो ने हूबहू नेपाली मे लिख दिया।

इन कवियो के अतिरिक्त इस काल के अनेक कवियो के नाम तो लिये जाते है किन्तु रचनाये उपलब्ध नही होने से उनके हत्व का मूल्याकन करना सभव नही। ऐसे लेखको और कवियो मे जो उल्लेखनीय नाम मिलते है उनमे परमानद, वीरशाली पत, षडानद लोहनी, बिहारी लाल छविला आदि है। शाहवश के दूसरे कवि नरेश श्री 5 रणबहादुर शाह (सन् 1778–1807ई0) है जिन्होने निर्वाणानन्द के नाम से कविताये लिखी थी ।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आदि कवि भानुभक्त आचार्य के पूर्व के कविगणो मे धर्मोन्मुखी रचना की प्रवृत्ति ही प्रमुख स्थान रखती है। नेपाली कविता के क्रमश विकास का रास्ता इस युग से खुला। इस युग की काव्य रचनाओ का बारीकी से विश्लेषण अभी तक नही हुआ है। इस पर शोध कार्य किया जाये तो यह और भी स्पश्ट होगा कि नेपाली कविता का प्रारम्भ न केवल प्रेरणात्मक था बल्कि शैली, शाब्द–विन्यास और भाषा के आकार–प्रकार की दृष्टि से बडा रोचक और प्रयोगात्मक था। कवियो के भाषा प्रयोग, शब्द चयन और लय मे नेपाली भाषा साहित्य की सुदृढ़ नीव डालने का स्पष्ट अभाव मिलता है ।

।। पूर्व मध्यकाल
(भानुभक्त काल)

साहित्य के इतिहास मे कभी–कभी ऐसा होता है कि किसी काल विशेष मे ऐसा साहित्यकार अवतरित होता है जो न केवल उस काल मे साहित्य सृजन का नेतृत्व करता है बल्कि जो साहित्य पर सीमित काल से परे सपूर्णता से छा जाता है और उसे विकास की नई दिशा, सवर्धन की प्रेरणा और गतिशीलता तथा अभिव्यक्ति का समार्थ्य प्रादन करता है। नेपाली साहित्य मे आचार्य भानुभक्त का यही स्थान है। भानुभक्त ने सस्कृत को छोड लोक–भाषा नेपाली को साहित्य सृजन का माध्यम बनाया । इस युगान्तकारी घटना से जनभाषा को बडा प्रबल प्रोत्साहन मिला और वह बोल–चाल के साथ–साथ साहित्य की भाषा के पद पर भी प्रतिष्ठित हो गई। उनकी काव्य रचनाओ मे अभिव्यक्ति का सौदर्य है, रस है, लालित्य है साथ ही बोधगम्यता और भाषा सरलता है। उनकी साहित्य की भाषा और शैली का आधार लोकतान्त्रिक है और साहित्य सृजन का उद्देश्य "कला के लिए कला" न हो कर व्यापक लोक हित और कल्याण है ।

भानुभक्त से ही वास्तव में नेपाली साहित्य के स्वतत्र अस्तित्व का प्रारभ हुआ। इसलिए भानुभक्त को "आदि–कवि" की प्रतिष्ठा मिली है। जब तक भाषा मे रूप और शैली का स्तर और स्थिरता नही आती, तब तक उसमे विकास और प्रगति नही हो सकती, यही नेपाली भाषा को भानुभक्त की बहुत बडी देन है। नेपाली भाषा को आज जो वर्तमान रूप और शक्ति प्राप्त है, वह भानुभक्त की देन है। भानुभक्त ही इसके जन्मदाता है।

भले ही कोरी तिथियो के दृष्टिकोण से भानुभक्त नेपाली भाषा के प्रथम कविन न रहे हो, फिर भी यह तो एक निर्विवाद सत्य है कि भानुभक्त का नेपाली साहित्य मे सर्वोपरि स्थान है। इस महान विभूति को "प्रथम कवि" कहना सर्वसगत और उपयुक्त है। इनसे पहले कवि और कविता अवश्य थी, परन्तु भानुभक्त ने भाषा की दृष्टि से, शैली की दृष्टि से, विषय–वस्तु की दृष्टि से, लय और माधुर्य की दृष्टि से रामायण और अन्य ग्रन्थो की रचना कर बोल–चाल मात्र की नेपाली भाषा को साहित्यिक भाषा का ऊँचा दर्जा प्राप्त करवाया।

भानुभक्त कवि होने के साथ ही एक महान समाज सुधारक एव राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले अनन्य सेनानी थे। इतना ही नही उन्होने अपने साहित्य मे समाज के सभी वर्गों और अगो का ध्यान रखा है। यही कारण है कि भानुभक्त की रामायण अमीर–गरीब, शहरी–ग्रामीण, पढ़े–लिखे, अपढ़ सभी वर्गों मे लोकप्रियता एव श्रद्धा से आज तक पढी जाती है। वस्तुत भानुभक्त राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले कवियो में प्रमुख थे ।

भानुभक्त को नेपाल का तुलसीदास कहा जाता है। जितनी लोकप्रियता तुलसीदास को भारत मे मिली उतनी ही लोकप्रियता भानुभक्त को नेपाल मे मिली। भानुभक्त और तुलसीदास दोनो ही सस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान थे। उस युग मे सस्कृत मे ही रचना करने से साहित्य के क्षेत्र मे प्रतिष्ठा और गौरव प्रापत होता था। फिर भी दोनो मे समाज सुधार की भावना प्रमुख रही और दोनो ही ने अपने–अपने देश की जनभाषा मे महाकाव्य लिखे ।

भानुभक्त ने अध्यात्म रामायण का अनुवाद किया। उनकी भाषा और शैली इतनी सरल, सहज और कर्णप्रिय है कि उनकी रामायण नेपाल मे घर–घर

मे आज भी बडे चाव और श्रद्धा से पढी जाती है। भानुभक्त के पिता और गुरू राम–उपासक थे । अत राम–भक्ति के प्रति उनकी श्रद्धा होना स्वाभाविक था। भानुभक्त के पूर्व किसी भी नेपाली कवि ने राम के आदर्श चरित्र को उतनी स्वाभाविकता से जनभाषा मे प्रस्तुत नही किया था। भानुभक्त की रामायण के नायक राम भगवान होते हुए भी नेपाल के आदर्श पुरूष के व्यक्तित्व से बहुत दूर नही थे। यही कारण है कि भानुभक्त की रामायण से भक्ति की लहर नेपाल के जनमानस मे जागी और आज भी उसे पढ़ कर और उसे सुनकर प्रेरणा मिलती है। भानुभक्त की रामायण का रचनाकाल सन् 1834 ई0 से 1853 ई0 तक है। 1841 ई0 मे इन्होने बालकाण्ड लिखा और 1853 ई0 मे युद्धकाण्ड और उत्तराकाण्ड लिखे। रामायण की प्रमुख विशेषता है उसकी भाषा। यही से नेपाली भाषा साहित्यिक रूप मे प्रतिष्ठित हो सकी । इसीलिए भानुभक्त को नेपाली के "आदि–कवि" की सज्ञा दी जाती है। भानुभक्त की प्रतिभा ने ही सामान्य बोलचाल की भाषा को साहित्यिक भाषा बना दिया। भानुभक्त की भाषा मे विशुद्ध नेपालीपन है, इसीलिए नेपाली साहित्य के स्वतत्र अस्तित्व का प्रारभ भानुभक्त की रचनाओ से मानते है। इनकी भाषा की सरलता और माधुर्य ने ही रामायण को असाधारण ग्रथ बना दिया। राष्ट्रीय चेतना जगाने मे भानुभक्त की रामायण का महत्वपूर्ण स्थान है, जो काम भारत मे रामचरित मानस लिखकर तुलसीदास ने किया था वही कार्य नेपाल मे भानुभक्त ने रामायण के माध्यम से किया ।

इस काल के अन्य कवियो को मोटे रूप से तीन श्रेणियो मे बाट सकते है। एक है रामभक्ति शाखा के कवि, दूसरे कृष्ण भक्ति शाखा के एव तीसरे निर्गुण भक्ति से प्रभावित जोसमणि सप्रदाय के कवि ।

राम भक्ति शाखा के कवियो मे कुलचन्द गौतम, खड्ग प्रसाद श्रेष्ठ एव होमनाथ खतिवडा के नाम उल्लेखनीय है।

श्री कुलचन्द्र गौतम (जन्म सन् 1875 ई0) ने भारत मे तुलसी कृत रामचरितमानस की टीका नेपाली मे प्रस्तुत की ।

श्री खड्ग प्रसाद श्रेष्ठ (जन्म सन् 1862 ई0) ने भारत मे बहुत लोकप्रिय राधेश्याम रामायण की तर्ज पर बालकाण्ड का नेपाली अनुवाद किया।

श्री होमनाथ खतिवड़ा (जन्म सन् 1845 ई0) के ग्रथ "रामाश्वमेध", का अपना विशेष महत्त्व है।

राम भक्ति धारा निरतर बहती रही । सभी कालो मे राम भकित को विषय-वस्तु बना कर नेपाली कवियो ने काव्य लिखे। इसी काल से आगे इस परम्परा मे आने वाले कवियो मे श्री लेखलाथ पौड्याल, रेवती रमण न्यौपाने, पद्म प्रसाद ढुगाना, शिखर नाथ सुवेदी, हरदयाल सिह हमाल के नाम उल्लेखनीय है।

श्री पद्म प्रसाद ढुगाना की पुस्तक "रामायण शिक्षा सदन" और "रामायण सप्त रत्न" देखने मे आई है।

श्री रेवतीरमण न्यौपाने ने अपनी पुस्तक "अग्निवेष रामायण" मे तुलसी के रामचरितमानस के कुछ अश का अनुवाद प्रस्तुत किया है। भोजराज भट्टराई ने सन् 1901 ई0 मे "आनन्द रामायण" की रचना की थी ।

राम भक्ति परम्परा के उल्लेखनीय ग्रथो मे श्री लेखनाथ पौड्याल का "मेरा राम" बहुत अच्छा ग्रथ है। इसके साथ ही वाणी विलास पाडेय का

"चित्रकूटोपाख्यान", शिखरनाथ सुवेदी का "रामाश्वमेध राजा" तथा हर दयाल सिह हमाल द्वारा रचित "श्री राम बाल विलास" अच्छी रचनाए है।

नेपाली साहित्य के आधुनिक काल मे तुलसी प्रसाद ढुगले ने नेपाली सगीत रामायण की रचना की परन्तु मौलिकता के अभाव मे इसे विशेष स्थान नही मिला । इसी काल मे सुब्बा ऋषि भक्तोपाध्याय ने "राम कीर्ति वर्णन" और उदय सिह थापा ने "कैकेयी वर प्राप्ति" शीर्षक ग्रथो की रचना की। परन्तु इनमे मात्र आख्यान प्रवृत्ति है। नवीनता एव मौलिकता के अभाव में इन्हें मान्यता प्राप्त नही हुई ।

सुब्बा खड्ग प्रसाद श्रेष्ठ लिखित "राधेश्याम रामायण" स्पष्टत हिन्दी की राधेश्याम रामायण का अनुवाद है। गणेशमान श्रेष्ठ रचित "सुन्दर काण्ड" मे राधेश्याम रामायण का प्रभाव है परन्तु मौलिकता के अभाव मे अनुवाद अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न नही कर सका। पद्म प्रसाद ढुगाना की पुस्तक "रामायण" पर तुलसी के रामचरितमानस का स्पष्ट प्रभाव है।

रामभक्ति परम्परा मे आधुनिकता एव मौलिकता लिए हुए नेपाली मे बहुत अच्छा काव्य "आदर्श राघव" है। सोमनाथ शर्मा रचित इस ग्रथ मे पौराणिक लीक से हटकर आधुनिकता और नवीनता का पुट मिलता है। इस ग्रथ को देखकर मैथिली शरण गुप्त रचित "साकेत" का स्मरण आता है जिसमे रामायण मे विस्मृत उर्मिला और कैकेयी जैसे पात्रो को नये ढग से प्रस्तुत किया है। "आदर्श राघव" मे भी राम के इश्वरत्व से अधिक राम के मनुष्यत्व को उद्घटित किया है। इसके अलावा भोजराज लिखित "आनन्द रामायण" और रमाकान्त रचित "अद्भुत रामायण" भी नेपाली मे मिलती है। शिवनाथ जोशी रचित "सीता भारत बाहून" और चूड़ामणि बधु

रचित "बनवासिनी" मे सीता की करूण कथा को मार्मिक ढग से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी और भोजपुरी मे तो कृष्ण काव्य का अथाह सागर है जिसमे सूरदास, नन्ददास, अष्टछाप के कवि, विद्यापति, जयदेव, ब्रजभाषा के सैकडो कवित तथा रीतिकाल के अनेकानेक श्रेष्ठतम कवियो ने कृष्ण के अलग-अलग रूपो का विस्तार से वर्णन किया है। सूर द्वारा बाल-कृष्ण को लेकर रचा गया साहित्य तो विश्व साहित्य मे अद्वितीय है तथा कृष्ण की भक्तिपरक रचनाओ एव काव्यात्मक विलक्षणता की दृष्टि से भ्रमर गीत भी अनुपमेय है। यानी हिन्दी साहित्य मे तो कृष्ण के विविध पक्षो को लेकर अपनी काव्य प्रतिभा प्रतिष्ठित करने का सैकड़ो कवियो प्रयत्न किया जिसमे भक्ति और श्रृगार रस के वृहद् साहित्य का सृजन हुआ परन्तु नेपाली साहित्य मे कृष्ण भक्ति की परम्परा मे वैसा कुछ नही है। कवियो ने कृष्ण के ईश्वर रूप को ही मान्यता दी एव श्रीमद्भागवत जैसे ग्रथो का अनुवाद मात्र ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।

इस काल के उत्तरार्द्ध मे श्री केदारनाथ खतिवडा ने महाभारत के कुछ पर्वों का नेपाली मे अनुवाद किया। इनके द्वारा किया गया गीता का नेपाली अनुवाद एक अच्छी रचना है। श्री ज्योति प्रसाद गौतम रचित "कृष्ण क्रीडा निकुज" कुछ अच्छी रचना है। यह पौराणिक शैली का काव्य है। इसमे श्रीमद्भागवत के दशम स्कध की कथा सक्षेप मे कही गई है। श्री बैजनाथ सेढ़ाई की रचना "श्री काला प्रताप माला" भी तुकबदी मात्र है परन्तु इसकी भाषा पर हिन्दी का प्रभाव काफी है।

हिन्दी के रीति कालीन कवियो जैसी रचना काठमाण्डू निवासी श्री अब्जनाथ ओझा की रचना "गोपिका-स्तुति" है ।

नेपाली कृष्ण भक्ति के कवियो मे रहर सिह राई का नाम उल्लेखनीय है। इनकी पुस्तक "गोपिनीको श्लोक" मे सर्वप्रथम राधा की चर्चा हुई परन्तु वह मात्र ब्रह्म के साथ माया के रूप मे। इस परम्परा को श्री गोविन्द बहादुर ने अपनी रचना "सर्वहरी" मे आगे बढाने का प्रयत्न किया परन्तु भोजपुरी काव्य जैसी कृष्ण की प्रेमिका राधा, नायिका भेद की राधा का वह काव्यात्मक श्रृगार - रस - सिक्त रूप नेपाली कृष्ण साहित्य मे नही उभर पाया।

कृष्ण भक्ति काव्य रचनाकारो मे श्री मुरारी ढुगाना का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी पुस्तक "श्रीमद्भागवत कथासार" एक अच्छी रचना है। भागवत की कथा को नेपाली मे छदोबद्ध करके इन्होने एक बहुत बडा कार्य किया परन्तु इन्होने भी मार्मिक प्रसगो को अनदेखा करके धार्मिक और आध्यात्मिक प्रसगो पर ही विशेष बल दिया है ।

श्री कृष्ण प्रसाद घिमिरे रचित "रूकमणी विवाह" कुछ श्रृगार प्रधान रचना है। इसमे पौराणिक रूक्मणी कथा का सरस ढग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । रूक्मणी प्रसग को लेकर काठमाडू निवासी श्री बद्रीदास ने भी एक पुस्तक "रूक्मणी हरण लीला" लिखी है ।

नेपाली मे कृष्ण भक्ति काव्य के मूल प्रेरणा–स्रोत महाभारत और श्रीमद्भागवत रहे है और प्राय सभी कवियो ने नेपाली मे अनुवाद ही किया है। महाभारत के अनुवादको मे दीर्घमान, शभू प्रसाद ढुगेल और पद्म प्रसाद उपाध्याय के नाम उल्लेखनीय है। अत यह स्पष्ट है कि नेपाली कृष्ण काव्य मे काव्यात्मक सौदर्य की कमी है और अधिकाश अनुवाद मे भक्ति को प्रधानता है। हिन्दी साहित्य की तरह कृष्ण के विविध रूपो को लेकर नेपाली साहित्य में काव्यात्मक रचनाए

इस काल के शेष कवियो मे निर्गुण भक्ति शाखा के जोसमणि सप्रदाय के कवि आते है। जोसमणि सप्रदाय के कवियो मे भक्ति और वेदान्त का अद्‌भुत सम्मिश्रण्ण है। इन्होने भारतीय वेदान्त से निर्गुण भावना ग्रहण की और उसको आम आदमी के लिए सरल ढगसे ग्राह्य बनाने के लिए सूफी प्रेमतत्व का पुट दिय। इन्होने रूढ़ि, परम्परा और कर्मकाण्ड का विरोध किया। ब्राह्मणवाद का विरोध किया। इन पर कबीर का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

जोसमणि सप्रदाय के सतो मे अपने नाम के साथ "दिल" या "दिलदास" जोडने का प्रचलन था । जोसमणि सप्रदाय के आदि गुरू कौन थे, इस प्रश्न पर विद्वानो मे मतभेद है परन्तु इस सप्रदाय की सुव्यवस्थित प्राचीनतम रचना श्री शशिधर की मिलती है ।

शशिधर का जन्म सन् 1747 ई0 मे नेपाल के रेगुआ ग्राम मे हुआ था । वे जाति के ब्राह्मण थे और सस्कृत के प्रकाड पडित थे। इनके पिता का नाम विष्णु उपाध्याय था और इनके गुरू श्री हरिभक्ति दिल कहे जाते है। इससे यह सिद्ध होता है कि शशिधर से पूर्व भी जोसमणि सत हुए होंगे। परन्तु काव्यात्मक दृष्टि से व्यवस्थित रचनाकाल शशिधर से ही शुरू होता है। शशिधर उत्तरी भारत के सत श्री दरिया साहब से बहुत प्रभावित थे । उन्होने जगन्नाथपुरी की यात्रा के बाद कुछ समय दरिया साहब के साथ भी बिताया था। इनकी पुस्तक "सच्चिदानद लहरी" मे अनेक अवसरो पर दरिया साहब का उल्लेख मिलता है।

पश्चिम नेपाल मे जोसमणि मत का काफी प्रचार हुआ। काठमाडू मे भी इसकी खूब चर्चा हुई। "अमर भाषा" नाम से शशिधर का विशाल ग्रथ उपलब्ध है जो

उनकी प्रतिभा का परिचायक है। सस्कृत मे "तत्व गीता" बहुत ही विद्वतापूर्ण ग्रथ है। काठमाडू मे इनके प्रमुख शिष्यो मे जनरल रणवीर सिह थापा थे जो जनरल भीमसेन थापा के भाई थे और आगे चल कर अभयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। कबीर का प्रभाव इनकी कृतियो मे स्पष्ट दिखाई देता है।

शशिधर के शिष्यो मे प्रेम दिलदास का प्रमुख स्थान है। इन्होने पूर्वी नेपाल मे जोसमणि सप्रदाय का प्रचार किया था। इस पथ मे आने से पूर्व वे पृथ्वी नारायण शाह के दरबार मे नियुक्त थे। कबीर की तरह इनकी रचनाओ मे भी उलटबासियो का प्रयोग मिलता है।

जोसमणि सप्रदाय के सतो मे ज्ञान दिलदास सर्वाधिक जनप्रिय एव प्रभावशाली संत हुए। इनका जन्म सन् 1821 ई0 में इलाम जिले के फिकल गाव मे हुआ था और मृत्यु सन् 1883 ई0 मे दार्जीलिग के समीप गैलिग मे हुई। इन्होने जनसाधारण की बोलचाल की भाषा मे अपने मत का प्रचर किया जिसमे ब्राह्मणवाद का विरोध तथा कर्मकाड एव परम्परागत रूढ़ियो पर तीखा व्यग्य और कठोर प्रहार किया। यही कारण था कि निम्न समाज मे ये बहुत लोकप्रिय हुए और बहुत बडी सख्या मे इनके अनुयायी हो गये । इनकी लोकप्रियता से जलकर राज्याश्रय प्राप्त ब्राह्मणो ने इन्हे जेल मे डलवा दिया, अनेक यातनाए दिलवाई जिसके फलस्वरूप ये दार्जिलिग की ओर चले गये और अत समय तक वही रहे । इनके प्रसिद्ध ग्रथ "उदयलहरी" मे इन्होने ब्राह्मणवाद का घोर विरोध किया है।

ज्ञान दिलदास की रचनाए नेपाली, नेवारी और हिन्दी मे भी मिलती है। "उदयलहरी" इनका नेपाली मे लिखा गया बहुत ही जनप्रिय ग्रथ है।

विषय और शैली की दृष्टि से ज्ञान दिलदास और कबीर मे काफी साम्य है। दोनो ही सत समाज सुधारक थे। धर्म के नाम पर फैले आडबर, अनाचार और कुप्रवृत्तियो का दोनो ही सन्तो ने घोर विरोध किया। दोनो ही गण के ग्राहक रहे है, जहा से अच्छा लगा उसे अपने अनुयायियो को सीधे शब्दो मे कहा । धर्म को अगम्य, जटिल, दु साध्य और केवल कुछ लोगो की चीज बनाने का विरोध किया। इसी कारण दोनो ही सतो को ज्यादा से ज्यादा सम्मान प्राप्त हुआ। शैली की दृष्टि से भी ज्ञान दिलदास और कबीर मे काफी नैकट्य है। दोनों ने ही जन-भाषा मे आम जनता को धर्म और सदाचरण का उपदेश दिया। दोनो मे प्रतीक शैली पाई जाती है तथा झूठ, आडम्बर पर कठोर व्यग्य करने की प्रवृत्ति दोनो सतो में बराबर मिलती है। ज्ञान दिलदास को "नेपाली का कबीर" कहना अतिश्योक्ति नही होगी ।

।।। उत्तर मध्यकाल

मोतीराम भट्ट काल

उत्तर मध्यकाल सन् 1883-1912 ई0 तक माना जाता है। इस काल के प्रमुख कवि मोतीरम भट्ट थे और उन्ही के नाम पर इस काल को साहित्य के इतिहास मे पुकारा जाता है। नेपाली साहित्य मे मोतीराम भट्ट का आविर्भाव एक ऐतिहासिक घटना है। जनता की रूचि भाषा और साहित्य मे बढने लगी थी और साहित्यिक प्रवृत्तियो मे नये-नये भावो और विचारो की अभिव्यक्ति उभरने लगी थी। धार्मिक और आध्यात्मिक के अलावा देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावनाओ को प्राधान्य मिला। भूषण और मैथिली शरण गुप्त ने जिस प्रकार हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता का पुट डाला, उसी तरह की प्रवृत्ति नेपाली साहित्य में भी इस काल मे प्रारभ हो गई थी।

इस काल मे रीति काव्य भी लिखा गया। गोपीनाथ लोहनी ने "श्रृगाराष्टक" और शिखरनाथ ने "श्रृगार दर्पण" नामक ग्रथ लिखे। इस युग की लेखन शैली मे प्राय छन्दबद्ध रचनाये देखने को मिलती है। यद्यपि व्याकरण पर उतना ध्यान नही दिया जाता था फिर भी कुछ लेखको और कवियो ने भाषा की शुद्धता पर बहुत बल दिया। इस युग की विशेषता यह है कि नेपाली मे पुस्तको का प्रकाशन प्रारभ हो गया। पहले पहल नेपाली पुस्तको का प्रकाशन काशी मे हुआ और उसके बाद काठमाडू मे प्रेस खुले। नेपाली का पहला प्रेस पशुपति प्रेस सन् 1893 ई0 मे स्थापित हुआ। भारतीय नवजीवन प्रेस काशी में पहली नेपाली पुस्तक "भानुभक्त को रामाया" प्रकाशित की गई ।

इस काल के सबसे प्रतिभाशाली कवि थे मोतीराम भट्ट। इनका यज्ञोपवीत सस्कार और शिक्षा–दीक्षा काशी मे हुई। इन्होने सगीत और सस्कृत की शिक्षा ली। मोतीराम भट्ट कवि होने के अलावा नेपाली भाषा के प्रथम प्रकाशक भी हुए। मोतीराम भट्ट 31 वर्ष की अल्पायु मे ही स्वर्ग सिधार गये, पर वे अपनी अमिट छाप छोड गये। पचक–प्रपच, स्वप्नाध्याय सग्रह, नीति–दर्पण, उषा–चरित्र, गफास्टक–सकलन, भानुभक्त को जीवनी, कमल–भ्रमर सवाद और पिकदूत आदि अनेक ग्रथो का प्रणयन स्वर्गीय भट्ट ने किया। इनकी अनेक मौलिक कृतिया है जैसे गजेन्द्रमोक्ष और प्रल्हाद भक्ति–कथा। उषा–चरित्र सहित ये कृतिया पौराणिक आधार पर लिखी गई है। कालिदास का अनुकरण कर इन्होने मेघदूत की भाति पिकदूत की रचना की । "पिकदूत", मेघदूत की शैली पर प्रकृति वर्णन और विरहिनी की विकल वेदना व्यक्त हुई है –

फैला पख मयूर नाचते चन्द्र देखती रही चकोरी[1]
पी रस भ्रमर झूमते फूलो पर मडराते 'भन–भन गाते'

---

1 मोतीराम भट्ट, "पिकदूत"

जूही बेली और चमेली प्रभृति पुष्प के सौख्य देखकर
मै तो दु खी हुई हूँ मन मे, उधर गये जो यो हो जाते
वे परदेस–सरस–रस लेकर––कभी अघाकर घर लौटेगे
इस आशा मे हुई दु खी हूँ जाने मैने क्या सुख पाया
यह पापी मन हुआ नही थिर अब भी है दर्शन की आशा
'कल, हाँ कल' कह रही भुलाती बहुत बडा धोखा है खाया

उनकी कृतियो की विषय–वस्तु को देख कर लगता है कि इस अर्थ मे ये भानुभक्त से आगे निकल गये है। मोतीराम भट्ट को साहित्य साधना की प्रेरणा काशी मे विद्वानो के सपर्क से प्राप्त हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की मडी ने उन्हे नेपाली साहित्य मे नई परम्परा चलाने की ओर प्रोत्साहन और प्रेरित किया। उन्होने विभिन्न रसो और विषयो मे साहित्य रचकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया ।

मोतीराम भट्ट पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव था। सन् 1884 ई0 के मार्च में काशी से श्री रामकृष्ण वर्मा जी ने "भारत–जीवन" नामक पत्र प्रकाशित किया था। इसका नामकरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही किया था और इसका नेपाली सस्करण मोतीराम भट्ट जी की प्रेरणा से प्रकाशित हुआ करता था। यही नेपाली का सर्वप्रथम समाचार–पत्र कहा जायेगा। सच पूछिये तो हिन्दी के उत्थान के लिए जो कार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया वही कार्य मोतीराम भट्ट जी ने नेपाली के लिए किया ।

स्वर्गीय भट्ट जी ने नेपाली भाषा को बहुत ही प्रचार–प्रसार दिया और इनकी प्रेरणा से अनेक साहित्य सेवी आगे बढ पाये। मोतीराम जी अपनी मौलिक

कृतियो के माध्यम से अमर है। साथ ही उन्होने कई साहित्यिको को भी आगे बढ़ाया। भानुभक्त की व्यापक चर्चा का आधार भी, उनकी रामायण प्रकाशित कर तथा जीवनी लिखकर, मोतीराम जी ने ही दिया। सच पूछिये तो स्वर्गीय मोतीराम भट्ट जी ने नेपाली साहित्य को नये-नये दिशा-बोध देकर युगानतर उपस्थित कर दिया।

मोतीराम भट्ट ने जो दिशा बोध की विविधता प्रदान कर नेपाली साहित्य की व्यापक आधारशिला रखी, उस पर आज भी नित नये भवन निर्मित हो रहे है।

मोतीराम भट्ट युग के अन्य उल्लेखनीय कवि है- राजीव लोचन जोशी, होमनाथ खतिवडा, शिखरनाथ सुवेदी, गोपीनाथ लोहनी, कुलचंद गौतम, पडितराज सोमनाथ सिग्देल, चक्रपणि चालिसे, लाल बहादुर, राममणि आचार्य, राजा जय पृथ्वी बहादुर सिह, सिद्धि बहादुर बस्नेत और कृष्ण प्रसाद रेग्मी।

राजीव लोचन जोशी रूढ़िवादी कवि थे। वे नारी के उत्कर्ष का अस्वीकार कर उसे दासी मात्र समझते थे। उनकी रचनाओ मे युगोन्मेष का अभाव है ।

लाल बहादुर ने वीर रस प्रधान सवाइयाँ लिखी जिनमे युद्ध के प्रसगो का प्रभावशाली वर्णन है।

होमनाथ खतिवडा का नाम रामभक्त कवियो की श्रेणी मे लिया जाता है। रामाश्वमेध, कृष्ण चरित्र तथा नृसिह चरित्र इनकी कृतियाँ है। इन्होने भगवती स्त्रोत भी लिखा जो इनके जीवनकाल मे ही लोकप्रिय हो गया था।

वाक्चातुरी और रसिकता के लिए ख्याति प्राप्त कवि शिखरनाथ सुवेदी ने यद्यपि हास्य और श्रृगार रसो मे भी रचनाये की है, फिर भी ये मूलत भक्त रस के कवि ही कहे जाते है। श्रृगार दर्पण के अतिरिक्त "बृहत कृष्ण चरित्र", "दुर्गा कवच" और "रामाश्वमेघ राजा" इनकी उल्लेखनीय रचनाये है। वाक्चातुरी तथा रसिकता की दृष्टि से इनकी कृति "शिखरनाथ भाष्य" विशिष्टता रखती है।

'सत्य दुर्गा कथा', 'ध्रुव चरित्र' और 'मृग चरित्र' आदि पुस्तको के साथ "श्रृगाराष्टक" रचना के प्रसिद्ध कवि गोपीनाथ लोहनी की रचनाओ म भक्ति–भावना ही प्रधान है। कहा जाता है कि हाल ही उनके द्वारा रचित एक महाकाव्य की प्रति मिली है। जब ऐसी रचनाये उपलब्घ होगी तो इस युग के साहित्य का पूर्णरूप से विश्लेषण किया जा सकेगा ।

नेपाली साहित्य के मध्यकाल के अत में जो कवि हुए है उनमे कुलचन्द गौतम जी का विशिष्ट स्थान है। इन्हे नेपाल सरकार ने कवि शिरोमणि की उपाधि दी थी। इन्होने 'राघवालकार' और 'अलकार चन्द्रोदय' आदि अनेक ग्रथ लिखकर नेपाली साहित्य की श्री वृद्धि की । 'अलकार चद्रोदय' इनका प्रमुख ग्रथ है। तुलसी कृत रामचरितमानस की नेपाली मे की गई इनकी टीका बहुत ही लोकप्रिय हुई। भारतीय राजूतवास द्वारा उपहार स्वरूप यह ग्रथ सैकडो की सख्या मे वितरित किये गये। चार–चार दिन तक पहाडो से चल कर यह ग्रथ प्राप्त करने को लोग भारतीय राजदूतवास काठमाडू मे आते थे। इसकी माग अभी भी बनी हुई है।

सोमनाथ सिग्देल की कृतियो मे 'सूक्ति–सिधु', 'मध्य चन्द्रिका', 'साहित्य प्रदीप' और 'आदर्श राघव' अत्यधिक प्रशसित है। नेपाल नरेश द्वारा इन्हे पडितराज की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इनकी कविताये वीर रस से प्रेरित और अलकारपूर्ण है ।

मौलिक तथा अनुदित रचनाओ से नेपाली साहित्य का विकास करने वाले चक्रपाणि चालिसे थे। वे भक्त कवि के रूप मे माने जाते है। 'मछिन्द्रनाथ को कथा' इनकी भक्ति भावनापूर्ण कृति है। नेपाली गद्य को आधुनकि रूप देने वालो मे चक्रपाणि का नाम अग्रगण्य है।

लेखनाथ पौड्याल और चक्रपाणि चालिसे की कविताओ का सकलन, 'लालित्य' का सपादन और 'माधवी' मासिक पत्रिका का सम्पादन करने वाले राममणि आचार्य दीक्षित भी मोतीराम भट्ट युग के उत्तरकाल मे नेपाली साहित्यकारो मे उल्लेखनीय बने ।

राजा पृथ्वी बहादुर सिह ने बालोपयोगी साहित्य के प्रकाशन मे और नेपाली भाषा की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया। साहित्य के अतिरिक्त भूगोल विद्या, पदार्थ तत्व विवेक, शिक्षा–दर्पण, भाषा कोष आदि के निर्माण का श्रेय इन्हे है। इनसे नेपाली साहित्य उपकृत हुआ है। भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे इन्होने क्राति का नया दौर आरभ किया ।

'भोट को लडाई को सवाई' के रचयिता सिद्धि बहादुर बस्नेत सवैया छन्द के सफल प्रयोगकर्ता के रूप मे मान्य है। भोजपुरी के रीतिकालीन कवियो की तरह इन्होने भी शब्द विन्यास और अनुप्रासो के प्रयोग की नेपाली साहित्य मे अनूठी परपरा ला दी ।

कहा जाता है कि मोतीराम काल मे शम्भू प्रसाद ढुगेल ने सबसे सुन्दर कविता बड़ी परिष्कृत भाषा मे लिखी। ये समाज सुधारक थे। शैली सरल, सरस और आकर्षक थी ।

इस प्रकार हम देखते है कि मध्यकाल के नेपाली साहितय पर भक्ति और श्रृंगार रस की छाप तो है परन्तु विविध विषयो की भरमान मे कमी नही हो पायी। राष्ट्रीयता, प्रगतिशीलता, प्रकाशन–कार्य, पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन, पुस्तको का प्रकाशन, वितरण और युग बोध की शुरूआत भी इस काल की देन है ।

आधुनि काल

इस काल मे कविता साहित्य का व्यवस्थित रूप से विवेचन करने के लिए इस काल को क्रान्ति से पूर्व का काल (सन् 1913 से 1950 ई0), क्रांति–उत्तरकाल पूर्वार्द्ध (सन् 1950–1960 ई0), क्रांति उत्तर काल उत्तरार्द्ध (सन् 1960–1970 ई0) और सन् 1970 ई से अब तक को वर्तमान युग मे विभाजित करना उपयुक्त और उपादेय होगा ।

इस काल के प्रारम्भ मे नेपाल के विचार दर्शन मे एक नयी सवेदनशीलता का प्रस्फुटन हुआ। प्रथम विश्व युद्ध से लौटे गोरखा सिपाहियो ने स्वतत्रता का मत्र सुन लिया था और स्वातत्र्य सघर्ष की हवा को भारत और अन्य देशो मे बहते हुए देख लिया था। उपनिवेशवाद के दिन लदने लगे थे और राष्ट्रीयता और सर्वांगीण राष्ट्रीय विकास की भावना विश्व मे सशक्त हो चली थी। साथ ही साथ नेपाल का सम्बन्ध विश्व के अन्य देशो के साथ होने लगा था। भारत मे होने वाले अनेक सामाजिक सुधार के आन्दोलनो की भनक नेपाल की जनता के कानो मे बराबर पड रही थी। भारत मे स्वराज्य के लिए हो रहे आन्दोलन से नेपाल की प्रबुद्ध जनता बेखबर नही थी। स्वतत्रता की ललक हर व्यक्ति मे आ पहुची थी। राणा शासन के दमन चक्र से नेपाली जनता बुरी तरह त्रस्त थी और उसे समाप्त करने की भावना सर्वत्र व्याप्त हो रही थी ।

साहित्यिक दृष्टि से अग्रेजी के रोमाटिज्म और हिनदी के छायावाद का प्रभाव इस काल के प्रारम्भ मे नेपाली साहित्य पर पडा। भक्ति तथा श्रृगार, जिस पर पुराने युग मे साहित्य–सृजन आधारित था, अब धीरे–धीरे साहित्य रचना का प्रेरक केन्द्र बिन्दु नही रहा। आधुनिकता का पुट नेपाली साहितय मे अब तीव्र गति से और स्थाई रूप से आ चला। नेपाली भाषा का रूप भी सरस निखर आया और साहित्य सृजन मे सरल सहज अभिव्यक्ति ने भाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त किया । श्री सिद्धिचरण श्रेष्ठ और स्व0 लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा की कविताओ मे स्वप्निल जीवन और कल्पित ससारकी झलक स्पशट है। परन्तु इस काल मे विशेष प्रभावशाली और दिशा प्रेरक कवि स्व0 लेखनाथ पौड्याल थे जिनकी - कविता मे बौद्धिकता और आधुनिकता का प्राधन्य रहा। कविता के विषय युग की गभीर समस्याओ से सम्बन्धित होने लगे। सामाजिक कुरीतियो को समाप्त करने के लिए स्व0 लेखनाथ जी ने "बुद्धि विनो" नामक पुस्तक लिखी। इस काल मे स्व0 धरणीधर कोइराला जी ने 'नैवेद्य' लिखी जिस मे गरीबो के प्रति गहरी सहानुभूति जगाई है। इसी काल मे स्व0 बालकृष्ण 'सम' जी के नाटक 'ध्रुव' और मुटुको व्यथा' प्रकाशित हुए जिन्होने नेपाली साहित्य को आधुनिक धरातल परला खडा किया ।

नेपाली साहित्य का आधुनिक काल देश के इतिहास का भी आधुनिक काल होने के कारण इस युग मे साहित्य को राजनैतिक उथल–पुथल से नई प्रेरणा, दिशा–दर्शन, लक्ष्य और मोड मिला। इस काल की सबसे महत्वपूर्ण युगान्तकारी ऐतिहासिक घटना थी सन् 1950 ई0 की क्रान्ति, जिसने निरकुश राणाशाही का अत कर दिया और देश मे जन जागृति, राजनैतिक चेतना और बौद्धिक विकास का नया वातावरण पनपने लगा। जन समाज की आकाक्षाये सजीवित हुई और प्रगति एव विकास के लक्ष्य की ओर दृष्टि पड़ने लगी। कवि, लेखक, समालोचक और

समीक्षक इस वातावरण से प्रभावित और प्रेरित हुए। साथ ही साथ विचार प्रवृत्ति मे और विचार अभिव्यक्ति मे एक व्यापक दृष्टिकोण का आभास दिखने लगा क्योंकि इस काल मे नेपाल का देश-विदेशो से एक नई चेतना की पृष्ठभूमि मे सम्पर्क प्रारम्भ हुआ । साहित्य के क्षेत्र मे प्रकाशन की व्यवस्था हो जाने से नई पत्र-पत्रिकाये प्रकाशित होने लगी। शिक्षण सस्थाओ की स्थापना के कारण उच्च शिक्षा की व्यवस्था ने भी साहित्य मे अधिक रूचि पैदा की । तत्कालीन भोजपुरी साहित्यकारो से निकट सम्पर्क, साहित्य सृजन और पुस्तक प्रकाशन मे, विशेष रूप से सहायक रहा ।

नेपाली साहित्य को नई दिशा मे अग्रसर करने मे श्री 5 महाराजाधिराज त्रिभुवन का क्रान्ति से पूर्व के काल मे बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। राणा शासनकाल में नेपाली साहित्य की प्रेरणा का स्रोत सूख-सा गया था। लेकिन जैसे ही श्री 5 त्रिभुवन के राज्यकाल मे प्रजातत्र की हवा चलनी शुरू हुई, प्रबुद्ध वर्ग के राणा शासन को समाप्त करने का भाव मुखरित होने लगा। इस भावना ने लेखको, कवियो और कलाकारो को निराशा, कुण्ठा, भय और अवसाद से धीरे-धीरे बाहर निकालकर और उन्हे निर्भीक होकर, अपने विचार और कल्पना को अभिव्यक्त करने की ओर प्रेरित किया । ऐसे परिवर्तन मे स्वाभाविक ही था कि साहित्य सृजन मे रूढिवादी परम्परा के प्रति लगाव कम हो गया और नवीनता के प्रति आकर्षण बढ़ता गया ।

क्रांति से पूर्व
(सन् 1913 से 1950 ई०)

आधुनिक काल मे कवि शिरोमणि श्री लेखनाथ पौड्याल सूर्य के तेज के समान साहित्य के क्षितिज पर उदित हुए। इनकी कृतियो मे बौद्धिकता की प्रखरता के साथ कवि सुलभ तीव्र सवेदना है। इनकी शैली सहजता और कृत्रिमता के बीच की शैली है जिसमे भाषा के परिष्कार के साथ हृदयस्पर्शी स्वाभाविकता बनी हुई है। गहन दर्शन, चिन्तन मे भी कवि ने साहजिक अनुभूति को बनाये रखा है।

इनकी रचनाओ मे स्वामी विवेकानन्द, टाल्स्टाय, रवीन्द्रनाथ तथा महात्मा गाधी के दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। सक्षेप मे दार्शनिकता, सौन्दर्य एव स्वाभाविकता लेखनाथ जी की कविता की विशेषता है। इनमे जीवन के नैतिक गुणो एव आध्यात्मिक उन्मेष के प्रति जागरूकता भी बनी हुई है। राष्ट्रीयता के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व एव मानवतावादी दृष्टिकोण भी इनकी कविता की विषय-वस्तु है। इनकी कविता मे समसामयिक जीवन के विभिन्न पक्षो का अच्छा चित्रण हुआ है। प्राचीन रूढिवादिता के विरोध के साथ-साथ नये विचारो को अपनाने का समर्थन भी किया है। इनकी प्रमुख कृति "पिजरा को सुग्गा" मे तोते के रूप मे न केवल कवि की आत्मा ही अपितु तत्कालीन समस्त राष्ट्र की आत्मा छटपटाती है।

इनका 'तरूण तपस्वी' काव्य भी भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से अच्छा ग्रथ है जिसमे कवि युगद्रष्टा के रूप मे उपस्थित हुआ है फिर भी सरलता, सहजता और तत्कालीन सामाजिक दृष्टि को ठीक-ठीक अभिव्यक्ति दे सकने की दृष्टि

से इनकी कृति "पिजरा को सुग्गा" इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसका अनुवाद इस ग्रथ मे दिया गया है। राणा शासन के पिजरे मे कैद नेपाली जनता के रूप मे तोते का करूण क्रदन है। तोते के माध्यम से कवि ने सामज के मन की बात कही है परन्तु कठोर शासन को यह सब सुनने समझने की फुर्सत कहा थी। कुछ समीक्षक दार्शनिक अर्थ मे पिजरा और तोता को क्रमश तन और मन का प्रतीक मानते है जिससे आधुनिक भौतिकवाद से सत्रस्त मानव को कैसे त्राण मिल सकता है इसका समाधान ढूँढ़ा है। लोकप्रियता और साहित्यिक महत्व की दृष्टि से भानुभक्त की "रामायण", लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा का "मुना मदन" और लेखनाथ पौड्याल का "पिजरा को सुग्गा" नेपाली साहित्य की अमूल्य निधि है।

श्री लेखनाथ पौड्याल की पुस्तक "मेरा राम" भी उल्लेखनीय है। यह ग्रथ कवि ने अपने आराध्य देवता राम की भक्ति एव गुणगान मे लिखा है। यह प्राचीन परम्परावादी शैली का है। इसमे आधुनिकता एव सामाजिक चेतना का अभाव है। भाषा सस्कृतनिष्ट है और इसमें सस्कृत के तत्सम शब्दो का प्रयोग बहुत हुआ है ।

इतना अवश्य है कि स्व0 श्री लेखनाथ पौड्याल नेपली की आधुनिक कविता के जन्मदाता है। "मेरा राम" के बाद की कविताओ मे बौद्धिकता, सामाजिक जागरण की विषय–वस्तु मिलती है और भाषा भी तत्सम के जाल से निकलकर सहज, सुबोध होकर जन–मानस के निकट की है ।

स्व0 बालकृष्ण 'सम'

स्व0 बालकृष्ण 'सम' का जन्म सन् 1902 ई0 में हुआ था और मृत्यु मई 1981 मे हुई। इनकी राजकीय सम्मान के साथ अत्येष्टी हुई थी। इनके अतिम दर्शन के लिए जो अपार भीड एकत्र हुई थी उसमे नेपाल के हर वर्ग के

व्यक्ति विद्यमान थे। वह उनकी लोकप्रियता का बडा सबूत था। हजारो नर-नारी अश्रु विगलित नेत्रो से इन्हे अतिम नमस्कार करने आए थे। 'सम' जी नेपाल के अत्यधिक लोकप्रिय साहित्यकार थे वे महान नाटककार एव कवि के रूप मे सर्वमान्य थे । इन्हे नेपाल का शेक्सपियर कहा जाता है। नाटक इन्हे विरासत मे मिला था। इनके दादा का एक थियेटर था, ये स्वय भी स्टेज के अच्छे अभिनेता भी रहे थे परन्तु कविता इन्हे प्रभु-प्रदत्त प्रतिभा के रूप मे प्राप्त थी। इनका अध्ययन बहुत गभीर था। सस्कृत मे वेद व्यास से लेकर कालिदास तक का बहुत ही मनोयोग से अध्ययन किया था जिसका प्रभाव इनकी कविता मे स्पष्ट दिखाई देता है। अग्रेजी मे शेक्सपियर एव इलियट इनके प्रिय लेखक थे। हिन्दी मे महावीर प्रसाद से लेकर प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी, बच्चन और दिनकर इनके प्रिय कवि थे जिनकी कविता और विचारधारा का प्रभाव भी इनकी कविता में दिखाई देता है।

राणा शासन की कुछबाते स्वय उनके वशजो और उत्तराधिकारियो को भी खल गयी और उनमे भी परिवर्तन की आकाक्षा जगी। वे भी जन-जीवन से एकाकार होने मे गौरवान्वित होने की बात सोचनेलगे। स्व0 बालकृष्ण जी का उपनाम 'सम' इस भावना का द्योतक है।

स्व0 'सम' जी दार्शनिक कवि थे इनकी कविता मे दर्शन और प्रौढ़ कवित्व का अद्भुत एव दुर्लभ मणि-काचन सयोग देखने को मिलता है। वे कवि पहले थे या दार्शनिक, पहले यह विवाद का विषय हो सकता हे परन्तु उनका दर्शन कविता पर हावी होकर उसे क्लिष्ट, जटिल नही बना सका है। इनकी कविता मे बौद्धिकता की प्रखरता होते हुए भी हृदय की अनुभूतिशीलता बनी रही है ।

इनकी शैली मे सामासिकता का गुण अद्वितीय है। गागर मे सागर भर देने की क्षमता, दर्शन और कवित्व का अद्भुत सम्मिश्रण एव नाटककार के रूप मे सफल कृतित्व के गुण हमे जयशकर प्रसाद की याद दिलाता है जिनमे अनायास ये सभी गुण एक साथ विद्यमान थे। "आगो र पानी" तथा "चिसो चूल्हो" इनके प्रसिद्ध काव्य ग्रथ है। "चिसो चूल्हो" बत्तीस सर्गों मे लिखा महाकाव्य है जिसमे नायिका गौरी उच्चकुल की है और नायक स्रते नीच कुल उत्पन्न है। इनके प्रणय की परिणति विवाह मे होती है। इस विचारधारा को समाज के वृहत् कैनवास पर विविध समस्याओ, कठिनाईयो, कुरीतियो पर प्रबल आघात-प्रत्याघात करते हुए विशाल रूप मे प्रस्तुत किया है। इन्हे प्रगतिवादी काव्यधारा का उन्नायक कहा गया है ।

"इच्छा" 'सम' जी की एक प्रसिद्ध कविता है इसमे इनका देश-प्रेम मुखरित हुआ है। इन्हे काशी या काबा मे मरना पसद नही था, वे नितात स्वदेशी थे और अपने देश की धरती पर अपने देश से बने कपडो को ओढकर अतिम यात्रा पर जाना चाहते थे ।

"मर्नेमेला" 'सम' जी की उत्कृष्टतम कविता है। यहा भी कवि की देशभक्ति व्यक्त हुई है परन्तु इसमे वीर रस है जबकि "इच्छा" मे करूण रस था। देशभक्ति और राष्ट्रीयता से ओतप्रोत इस कविता मे कवि नेकामना की है- रणभूमि मे मातृभूमि के लिए मृत्यु का वरण करने की।

वि0स0 1986 (सन् 1923 ई0) मे बालकृष्ण 'सम' जी का नाटक 'मुटुको व्यथा' प्रकाशित हुआ। इसमे राणा परिवार से ही विद्रोह की चिन्गारी फूटने का सकेत है। इस काव्य-नाटक मे कवि ने भाव, भाषा और शैली का सर्वथा

नवीन प्रयोग किया है। कवि के अनुसार –"कविता बौद्धिक चेतना की कोमलता है"। यानी चेतना बौद्धिक होते हुए भी कविता मे उसका प्रस्तुतीकरण कोमल ढग से होना चाहिए। इसीलिए 'सम' जी की कविता पाठको के हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क को अधिक भाती है ।

इनकी सभी कृतियो मे दृष्टि की तीव्रता झलकती है। कवि ने सभी प्रमुख दार्शनिको के चिन्तन को पचाकर अपनी पैनी दृष्टि से उसे देखा, परखा है और अपने विचार और दर्शन को ठीक–ठीक वहनकर अभिव्यक्त करने वाली स्वस्थ स्पष्ट शैली मे उेस प्रस्तुत किया है।

इस काल मे नेपाल से बाहर रहकर राष्ट्रीय जागरण का जयघोष करने वाले तथा देशभक्ति की कविता करने वालो में स्व0 धरणीधर कोइराला और श्री महानन्द सापकोटा के नाम उलेखनीय है ।

इन्होने अपने सरल गीत और कविताओ मे विद्रोह की भावना को पर्याप्त अवसर दिया है। स्व0 धरणीधर कोइराला का राष्ट्रीय गीत–"जाग जाग अब जागन जाग" बहुत लोकप्रिय हुआ। 'अब त विधिको पनिआयु पुग्यो' कविता में राणा शासन की समाप्ति का सकेत था। इस प्रकार इन दोनो महान कवियो नेअपनी सरल कवितओ के माध्यम से देश के बाहर रह कर नेपाल की जनता को जागरण का सदेश दिया और नेपाल को प्रजातन्त्र की ओर बढने को प्रेरित किया ।

स्व0 लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा नेपाली के आशु कवि थे। प्रकृति से पूरी तरह मस्तमौला, अल्हड एव मनमौजी थे। कविता इनका जीवन थी। इन्होने अपनी कविता को कभी भी सजाया, सवारा नही, यहा तक कि लिखकर दूसरी

बार पढा भी न हो । तरग आते ही कविता करते थे और जिस रूप मे फूल के साथ काटे, आसपास मे घासफूस भी निकल पडती है, इनकी कविता का वैसा ही अतिम रूप होता था। यह रूप इनकी कविता मे स्पष्ट दिखाई देता है।

इन्होने नाटक, अनुवाद जैसी साहित्य की अन्य विधाओ पर भी कलम चलाई, परन्तु मुख्य रूप से ये कवि के रूप मे पदस्थ हुए। देवकोटा जी पर हिन्दी की छायावादी कविता का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगत होता है। विशेष रूप से प्रकृति चित्रण देवकोटा नेबहुत अच्छा किया है जो बहुत कुछ उन्हे सुमित्रानन्दन पत के निकट ला देता है। भावना की प्रखर अभिव्यक्ति, कल्पना का अतिरेक, प्रकृति सौन्दर्य के प्रति मोह, नारी के प्रति श्रृगारिक दृष्टिकोण एव शैली की सुकुमारता इनकी कविता की विशेषता है ।

इनकी प्रकाशित रचनाओ मे "मुना–मदन", "सत्यवान सावित्री", "कुजिनी", "सुलोचना" और "शकुन्तला" काफी लोकप्रिय है। कुछ निबन्ध सग्रह भी प्रकाशित हुए है। इसके अलावा इनकी कुछ फुटकर कविताओ को भी काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई है। "मुना–मदन" नेपाल का लोक कठहार बन चुका है।

"मुना–मदन" देवकोटा जी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। यह एक अत्यत मार्मिक कथानक है। मूलरूप से नेवारी भाषा मे सास–बहू के सवाद–रूप मे लोक शैली मे यह कथा पहले से प्रचलित थी। इसे ही कवि की लेखनी ने अमर कर दिया है। आर्थिक दुरावस्था ने मदन को अपनी वृद्धा माँ और नवोढा पत्नी को छोडकर विदेश जाने को विवश कर दिया था। इधर पत्नी पति के वियोग मे विदग्ध है साथ ही वह धन की विवशता स्वय अनुभव करती है। न चाहते हुए भी विवशता मे पति की मानसिक आकुलता, व्याकुलता, विह्वलता बहुत ही मर्मस्पर्शी।

ढग से अभिव्यक्त हुई है। आदर्श और यथार्थ की टकराहट मे यथार्थ की विजय होती है, मुना की मृत्यु, मदन की बूढ़ी माता की मौत और अत मे स्वय मदन की आकस्मिक मौत पाठको को हिला देती है ।

"मुना–मदन" मे मदन की मृत्यु की परिस्थिति के वर्णन मे सभवत कवि ने अपनी असामयिक मृत्यु का आभास दे दिया था।

देवकोटा जी ने जहाँ अपनी रचनाओ का प्रारभ मगलमुखी कविताओं से किया है, वही कवि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध मे भयकर क्रातिकारी, विकराल और उग्र रूप धारण कर लेता है। पागल, साढे, दाल–भात–ढुकु, बाघे बच्चा किन खान्छ, प्रभुजी मलाई भेडो बनाऊ, झझावीर और हुरी को गीत इन कविताओ मे कविका उपरोक्त बदला हुआ रूप देखा जा सकता है।

स्व0 भवानी 'भिक्षु'– इनका जन्म सन् 1914 ई0 मे कपिलवस्तु (नेपाल) मे हुआ था और मृत्यु सन् 1980 ई0 मे काठमाण्डू में। स्व0 "भिक्षु" नेपाली के प्रतिभावान साहित्यकार थे। नेपाली के साथ–साथ वे हिन्दी, उर्दू मे भी उतनी ही अच्छी रचना करते थे। खडी बोली हिन्दी से पहले उन्होने कुछ कविताये ब्रजभाषा मे भी लिखी थी। कविता के साथ–साथ इनके निबध, कहानी एव उपन्यासो ने नेपाली साहित्य की श्री वृद्धि की है।

"छाया", "प्रकाश" और "परिष्कार" भिक्षुजी के उल्लेखनीय कविता सग्रह है। "छाया" मे हिन्दी के छायावाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। "प्रकाश" मे प्रगतिवाद की भावना व्यक्त हुई। "परिष्कार" मे मिली जुली रचनाएं है।

से सम्मानित किया गया था। इनकी कुछ कृतियों का रूसी, हिन्दी और सस्कृत मे भी अनुवाद हुआ है।

नेपाली साहित्य की कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि सभी विधाओ मे लिखने वाले स्व0 भीमनिधि तिवारी का अपना अलग स्थान है। अपने समसामयिक साथियो द्वारा कटु आलोचना के पात्र बनने पर भी ये अपनी साहित्य–साधना से कभी विचलित न हुए और बराबर लिखते रहे। इनका कविता–सग्रह "काम्यो लुग्लुग त्यो" मे समसामयिक सामाजिक स्वर प्रच्छन्न रूप मे मुखरित हुआ है। करूण रस की कविता मे भी ये काफी सफल रहे है। क्राति के प्रमुख योद्धा के रूप में दिवगत श्री 5 त्रिभुवन के सम्मान मे " यशस्वी शव" काव्य लिखकर क्राति मे अपनी आस्थ का परिचय दिया था। इस काव्य पर इन्हे पुरस्कार भी मिला था ।

आधुनिक काल के सशक्त कवि **श्री विजय बहादुर मल्ल जी** ने देशो की विभाजक रेखाओ को अस्वीकार कर एक विश्व की परिकल्पना की है। इन मे धरती के प्रति गहरा लगाव दीखता है।

इस प्रकार हम देखते है कि वर्तमान युग वास्तविकताओ का काल है। इन दिने काल्पनिक लोक की अपेक्षा धरती पर पैर जमाने मे ही गौरव दीखता है। यह समय कुछ ऐसा है जिसमे मृत्यु–भय नही सताता बल्कि सघर्ष म जूझने को जन–मानस तैयार है, पर सघर्ष के क्रम मे मानव का रागात्मक भाव अतर्मुखी होकर दबा रहता है ।

क्रान्ति–उत्तरकाल–पूर्वार्द्ध

इस काल मे नये और तरूण कवियो ने अपनी रचनाओ मे निराशा, भय और भविष्य कीअनिश्चितताको व्यक्त करना आरभ किया।

श्री वासु शशि को समय–समयपर एकान्त मे जाकर अपने रूदन को पचाना पड़ा पर्यटको की छाप भी जन–मानस पर पडी और युवा समाज वास्तविकता से घबडाकर हिप्पीवाद की प्रवृत्तियो से आकर्षित हुआ ।

साहित्य मे जीवन प्रवाद अवरूद्ध होने की झलक दिखाई देने लगी। इन भावो को विभिन्न प्रतीको और बिम्बो के माध्यम से कवियो ने प्रकट किया है।

कुठा, निराशा और भय–त्रास का जीवन स्थायी नही होता और इसमे परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है। क्राति के उत्तर काल के पूर्वार्द्ध मे फैली इस मानसिक स्थिति मे क्रमश अन्तर आया और प्रगतिशीलता की ओर साहित्यकारो का झुकान बढ़ा। क्राति–उत्तरकाल का उत्तरर्द्ध आस्था, विश्वास और नव–निर्माण की उत्कठाओ से भरा दिखाई पड़ा। यही नेपाली साहित्य की वर्तमान काव्य धारा है।

क्रांति–उत्तरकाल–पूर्वार्द्ध ।।

नेपाली जनक्रान्ति सन् 1950 ई0 मे हुई और इसी के फलस्वरूप राणा शासन का अत हुआ। इसके साथ ही नेपाली साहित्य मे भी नयी क्रान्ति के दर्शन हुए। राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत वातावरण मे नयी पीढी के कवि नवीन शैली, कथावस्तु और अभिव्यक्ति से साहित्य कको सवारने लगे। स्व0 म0वी0वि0 शाह की रचना मे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के स्वर मुखरित थे। श्री विजय

बहादुर मल्ल ने बेटी को मानचित्र भेजते हुए रचना मे राष्ट्रीयता की दीवार लाघकर अन्तर्राष्ट्रीय को अगीकार करने का स्वप्न देखा। श्री मोहन कोइराला ने छद, अभिव्यक्ति, शैली, उपमा–उपमेय मे और विषय–वस्तु के सभी क्षेत्रो मे नवीनता ला दी । श्री भूमि शेरचद ने हास्य–व्यग्य के माध्यम से जनमानस को झकझोरने की सफल चेष्टा की । श्री ईश्वर बल्लभ ने एक पुरातन युग के अत की घोषणा कर कहा– "सूर्य अस्त हो चुका है"। इस समय छन्दबद्धता की परम्परा शेषप्राय हो रही थी परन्तु यदा–कदा कुछ छन्दबद्ध अच्छी कतिवाये भी दीखती थी। मानवीय मूल्यो की नयी परख आरभ हो गयी थी । क्राति–उत्तरकाल का पूर्वार्द्ध विषय वस्तुओ की विविधताओ के साथ आया और हर दिशा तथा हर क्षेत्र मे नित नूतन अनुभूतियो को अभिव्यक्ति देने लगा।

प्रगतिवादी विचारधारा को सशक्त करने वालो मे अग्रगण्य **श्री मोहन कोइराला अपनी कविता मे विषय–वस्तु और अभिव्यक्ति की दृष्टि से सर्वथा नवीन** प्रयोगो के साथ सामने आये। मार्मिकता मे वे अपने समय के अन्य कवियो को काफी पीछे छोड गये है। परम्परागत आदर्शो की अपेक्षा बुद्धिवादी निष्कर्षों का आदर्श ही इन्हे स्वीकार्य है। "आम भलाई वाच्न दे" रचना मे उनकी इस प्रवृत्ति का अच्छा परिचय मिलता है। उपमा–उपमेय की नवीनता की दृष्टि से इस सकलन के 'कार्टून का शहर' भी देख सकते है।

नेपाली साहित्य के इस आधुनिक काल मे मनुष्य द्वारा ही मनुष्य के चिन्तन की बात करना यथार्थ युग–बोध का अद्भुत दृष्टात है।

स्वर्गीय **हरिभक्त कटुवाल** जी वर्तमान को वेदना और व्यथा से खोखला हो गया मानते थे इनकी दृष्टि मे काच की चूड़ियो और सस्ते चप्पलो के तुल्य इस जिन्दगी को कभी भी टूटने का खतरा था।

श्री रिजाल जी ने हास्य और व्यग्य के तीखे प्रहारो से राजनीति के व्यवसायियो को कभी नही बक्सा साथ ही मौन बने जन–साधारण को भी उन्होने अपना निशाना बनाया ।

नेपाली साहित्य मे हास्य–व्यग्यपूर्ण रचनाये कम ही लिखी गयी है पर जो भी रचनाये लिखी गयी है । उनमे श्री रिजाल की रचनाये उत्कृष्ट मानी जायेगी ।

श्री रत्न थापा ने जीवन को नये परिप्रेक्ष्य मे देखा है और आशावान विचार दर्शन अपनाया है। श्री रत्न थापा का विश्वास है कि "एक लम्बे युग के पश्चात, एक बड़ी प्रगति के पश्चात, उपकार का ऋण ढुलवाने के लिए तेजस्वी दिन आयेगा ।"

पिछले दशको मे नेपाली साहित्य मे निराशा की जो झलक मिलती है, उसी के साथ आशा की किरणो के आभास भी होने लगे थे। तेजस्वी दिन आने की बात इसी ओर सकेत करती है।

अति यथार्थवादी यौन–भावना से अनुप्राणित रचनाओ के कवि के रूप मे **श्री हरि अधिकारी** की चर्चा भी की जा सकती है।

श्री विष्णु विभू घिमिरे की यह कविता वर्तमान काल की परिवर्तित मनोदशा का परिचय देती है। सहभागी विश्व की परिकल्पना भी अब जोर पकडती जा रही है।

श्री 'अनुभवी जीव' शीर्षक रचना मे श्री **महेश प्रसाई** ने गरीबी के साथ समझौता करने वालो के प्रति अपने विचार प्रकट किये है, वही सृजना के नाम नयी पीढी मे आस्था पनपी है, विश्वास बढ़ा है और सृजनात्मक भावनाओ को बल मिला है। आधुनिक काल के इस उत्तरार्द्ध मे नेपाली साहित्य मे विश्वास के साथ विकास की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति जगी है।

क्रांति–उत्तरकाल–उत्तरार्द्ध

नेपाली काव्य साहित्य में वर्णित भय, सत्रास, निराशा के भाव कुछ ही वर्षों तक व्याप्त रहे। चेतना ने नयी करवट ली। कवियो ने इन भावो को नकारा और इनके स्थान पर आशा, आस्था और विश्वास का उदय होना आरभ हो गया। नेपाली काव्य साहित्य मे परिवर्तन के लिए अकुलाहट व्यक्त होने लगी।

श्री **दिनेश अधिकारी** ने पहाड़ को प्रतीक बनाकर सत्ताधिकारियो के घमण्ड की चर्चा की ।

श्री **द्वारिका श्रेष्ठ** ने प्रगति और सफलता के लिए सतत् प्रयत्नशील बने रहने और सघर्षशील रहने मे आस्था व्यक्त की है। वे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्वीकृति देते हुए कहते है –

जब तुम अवतरित होकर आये
वन, पहाड की तलहटी पर्वत श्रेणियो और
युग केकी वैतरणी लाघ कर आये
यह अवतरण मेरा भी है

कही दूर-दूर एक स्वीकृति का, एक अर्थ का ।
यह अर्थ है गीता का
और यह स्वीकृति है एक धर्मयुद्ध की ।

वर्तमान युग
(सन् 1970 ई0 से अब तक)

नेपाली साहित्य का वर्तमान युग कुण्ठा, भय-त्रास, निराशा से छुटकारा पाने के साथ आस्था, विश्वास और निर्माण का आकाक्षावादी हो गया है। वर्तमान युग मे युग, समय और समाज की विचारधारा के अनुकूल साहित्य मे एक नवीनता का प्रादुर्भाव हुआ। कवि की कलम और खुली और उसने खुले हृदय से अपने उद्गार व्यक्त करने का साहस पाया । युग के विश्वव्यापी परिवर्तनो का प्रभाव नेपाल के साहित्यकारो पर भी पडा और उन्होने व्यथित जनजीवन को एक व्यापक राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि मे देखा और परखा। इससे पहले तो अपने सीमित दायरे में समस्याओ मे जकड़े रहने से और सामाजिक व आर्थिक शोषण से त्रस्त रहने के कारण साहित्य में भय, त्रास, निराशा, कुण्ठा और चिता की भावना झलकती थी । लेकिन वर्तमान युग मे इतिहास के पन्ने पलटे। युवा साहित्यकार ने आस्था, विश्वास, सिद्धात प्रेम, राष्ट्रीयता और निर्माण तथा विकास की उदात्त, भावनाओ से प्रेरित होकर निर्भीक लिखना शुरू किया। कल्पना सूखी नही, उसे तो पनपने को एक नया धरातल मिला और भविष्य की ओर साहस से, आशा से और नई मगलमयकामना से देखने की प्रवृत्ति सशक्त हो गई।

साथ ही साथ साहित्यकार समाज को बदलता देखने के लिए बेचैन हो उठा। उसमे युवा हृदय का जोश उमडा और रोष भी और वह सब कविता,

कहानी, गद्य और पद्य मे अभिव्यक्ति होने लगा। इस प्रकार नेपाली कविता को नया रूप मिलना शुरू हुआ, जिसमे मार्मिकता और भावुकता के साथ-साथ प्रखरता और यथार्थवाद ने प्रमुख स्थान पाया । आज का कवि लिख रहा है और खूब लिख रहा है- लम्बी कविताए जिनमे जीवन के सघर्ष के प्रति वह अपना हृदय उडेल देने पर भी जैसे अघाता नही। यह वर्तमान युग की सक्रमण अवधि है। धीरे-धीरे इस प्रवृत्ति मे कला का पुट निखरेगा, लेखन शैली को सवारा जायेगा, अभिव्यक्ति मे निखर आयेगा। आज हो रहे प्रयोग नेपाली कविता मे आने वाले एक नये युग की आहट मात्र है। आज के कवियो मे लिखने की चाह और आतुरता है, विषय-चयन की विविधता है, जीवन की कसक है, और एक जवाबदार सामाजिक दृष्टिकोण है जो सृजनात्मक और रचनात्मक है।

साहित्य जीवन के प्रति जागरूक है। आकुलता अैर छटपटाहट व्यक्त हो रही है लेकिन उसके पीछे उदासीनता का तत्व नही बल्कि परिवर्तन लाने की माग और आशा है। जीवन की समस्याओ से सम्बन्धित रोष है लेकिन जीवन के प्रति गहरी अनुभूति और सवेदनशीलता है, अभिव्यक्ति और लेखन शैली चौराहे पर है और नई दिशा की खोज मे है। अन्य भाषाओ के साहित्य की प्रवृत्तियो के बारे मे जानकारी की जिज्ञासा बढ़ रही है और आदान-प्रदान की इच्छा तीव्र हो रही है।

श्रीमती बेजू शर्मा की कविता मे युगो से कर्तव्यनिष्ठा की मूर्ति बनी 'नारी' ने अब अपने अधिकार के लिए भी सचेष्ट होकर धर्मयुद्ध का प्रारभ चाहा है। श्री देवज्ञराज न्यौपाने धरती पर स्वर्ग उतारने को आतुर है। श्रीमती मजू दुबे "कांचुली" एक नये युग लाने के लिए स्थिर तैयारी में लगी है। श्री अशोक मल्ल

एक नये कर्मयोग के आकाक्षी होकर एक नये कृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा मे है। मानवीय मूल्यो को श्रेष्ठतम सम्मान देने को आज का नेपाली साहित्य तत्पर है।

आज का युवा नेपाली कवि अन्न, वस्त्र, दवा आहैर वासस्थान की समस्या को सुलझाना चाहता है। युग की समस्याओ से परिचित पीढ़ी समस्याओ का समाधान खोज रही है। अब न उनमे निराशा है और न भय–त्रास । अपने पौरूष पर विश्वास करने वाली नेपाल की नयी पीढ़ी सफलता के लिए साहित्य के क्षेत्र मे भी सक्रिय हो गई है। इसी मनोभूमि पर आज के युग मे नेपाली काव्य–साहित्य का निर्माण हो रहा है ।

श्री गोविन्द गिरि 'प्रेरणा' ने पर्यटकों के पीछे हाथ फैलाते काठमाण्डू की दशा पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है। "जाड़े मे काठमाण्डू" शीर्षक रचना मे इन्होने अपने आर्थिक विकास करने की प्रवृत्ति के अभाव मे विदेशो से आर्थिक सहायता की निर्भरता पर तीखा व्यग्य किया है।

नयी पीढी के तरूण कवि श्री जीवन आचार्य ने वर्तमान युग की राक्षसी प्रवृत्ति पर करारा वार किया है।

श्री कृष्ण भक्त श्रेष्ठ ने अपनी कविता मे छिपकली के प्रतीक द्वारा बहुत कुछ गहन गभीर बात कहने की चेष्ठा की है। प्रकाश के भूखो पर दाव लगार आक्रमण किया जाता है और उन्हे निगल लिया जाता है ।

"मिरजई, चुस्त पायजाता, कोट–टोपी" शीर्षक रचना मे भी इन्होने प्रतीकार्थ मे ही अपनी बात कह डाली है। परम्परागत आवरणो को लोग अपने युगानुकूल बनाकर व्यवहार मे लाये – श्री कृष्ण भक्त श्रेष्ठ जी यही कहना चाहते है ।

श्री चेतन कार्की उर्दू शायरी से प्रभावित दीखते है। विषय–वस्तु और कहने के तर्ज से भी वे उर्दू के निकट ही लगते है। एक शराबी जिस प्रकार शराब न पीने की कसमे खाकर भी मायखाना तक पहुँच ही जाता है, उसी प्रकार रसिकगण प्रेमिका के द्वार तक न जाने की कसमे खाकर भी अनायास वही पहुच जाते हैं।

श्री विनोद अश्रुमाली ने मुक्तको की भाति लघु कविताओ के माध्यम से अपनी मान्यतायें प्रकट की है। वे मनुष्य के दोनो रूपो को निकट से देखकर उससे प्रेम और घृणा दोनो ही करते है। वस्तुत ये दोनो ही एक ही सिक्के के दो पहलू की भाति है। अत हम इन्हे मानवता के प्रति, मनुष्य के प्रति, साकाक्षी देखते है। श्री अश्रुमाली जी मानव की उन्मुकता और स्वतन्त्रता के पक्षधर है।

श्री वैरागी काइंला जी मनुष्य का दैन्य खतला है और वे "मदहोश मनुष्य का भाषण आधी रात के बाद सडक से" शीर्षक रचना मे इसे उद्धृत किया है । श्री काइला जी वस्तुत परिवर्तन के पक्षपाती है। नये बिम्बो और प्रतीको के माध्यम से वे नयी आस्था की स्थापना करना चाहते है।

इस प्रकार श्री वैरागी जी आस्था और प्रकाश के कवि प्रतीत होते है।

इस शोध मे वर्तमान युग की कुछ रचनाओ को सामयिक सकलन सुविधा न होने के कारण शामिल नही किया जा सका। उस वजह से उनकी साहित्य-साधना का सक्षिप्त परिचय के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है। ये सब कवि अपनी शैली और अभिव्यक्ति-सामर्थ्य से साहित्य के कविता भण्डार को समृद्ध कर रहे है ।

श्री ध्रुव दुवाड़ी (1918 ई0)

"ज्वाला" और "हिमालय चुली" कविता सग्रह के कवि श्री ध्रुव दुवाडी की भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण थी ।

श्री रामकृष्ण शर्मा (सन् 1921 ई0)

समीक्षकके रूप मे जाने माने रामकृष्ण शर्मा की काव्य-कृति "बलिदान" "झ्याउरे" छन्द, लोक-छन्द, मे लिखा मर्मस्पर्शी विरह का उत्कृष्ट उदाहरण है। लौकिक विरह वेदनामय इस काव्य मे उमग और भावुकता की गहराई है।

श्री श्यामदास वैष्णव (सन् 1922 ई0)

रोमाटिक भावनाओ से काव्यारभ कर श्यामदास वैष्णव बाद मे लोक-समस्याओ के प्रति रूचि लेते दिखाई पड़े और व्यष्टि को समष्टि मे समाने की कामना की ।

श्री धर्मराज थापा

कोमल कठ के कारण धर्मराज थापा ने बडी ही लोकप्रियता प्राप्त की । "रत्न जुनेली" उनकी कविताओ का प्रसिद्ध सकलन है। नेपाली मे छायावादी

प्रवृत्ति के अतिम चरण के कवि के रूप मे थापा जी की चर्चा तो हुई है पर वे अपने देश और मिट्टी के प्रति भी सजग रहे है। अंत वे लोककवि के रूप मे भी जाने माने गये है।

श्री माधव लाल कर्माचार्य :

"खरानी को थुप्रो" कविता सग्रह के कवि माधव लाल कर्माचार्य उमग, उल्लास, सौन्दर्य, प्रेम, आशा, आस्था और विश्वास के कवि है।

श्री भीम दर्शन रोक्का

प्रेम विषयक कविताये लिखते हुए भीम दर्शन रोक्का जी प्रयोग और नयी कविता की ओर बढ गये है। देश–प्रेम सम्बन्धी कविता भी इनके द्वारा लिखी गयी है ।

श्री माधव प्रसाद देवकोटा (सन् 1903)

"होरी तरग" के लोकप्रिय कवि और "हुस्सु पथिक" के प्रणेता माधव प्रसाद देवकोटा गभीर भावो को सरल ढग से प्रस्तुत करने मे निपुण है, वार्णिक और मात्रिक छन्दो के प्रयोग भी करते है।इनकी रचनाओ मे युग–बोध के उन्मेष मिलते है ।

श्री युद्ध प्रसाद मिश्र (सन् 1907 ई0)

"चरी" नाम के कविता सग्रह देने वाले युद्ध प्रसाद मिश्र माधुर्य गुण सम्पन्नता के साथ प्रकृति के प्रति विस्मय व्यक्त करने वाले कवि कहे जाते है। यथार्थता और मार्मिकता इनकी कविताओ मे यथेष्ट है।

श्री ऋषभदेव (सन् 1913 ई0)

ऋषभदेव जी अपनी रचनाओ मे प्रकृति के प्रति अनुरक्त, परम्परागत छन्दो के साथ मुक्त छन्द मे लिखने के सुभ्यस्त तथा शैली मे गीतात्मकता और प्रवाह देने वाले है। "मध्यान्ह" और "फूल" इनकी प्रसिद्ध रचनाये है।

श्री लक्ष्मी नन्दन (सन् 1913 ई0)

लक्ष्मीनन्द जी आर्थिक विषमता और राजनैतिक अत्याचारो के विरुद्ध स्वर बुलद करने वाले कवि होने के नाते राणाओ के कोपभाजन बननेवाले कवि की श्रेणी मे आते है ।

श्री गोपाल पाण्डेय (सन् 1913 ई0)

श्री गोपाल पाण्डेय जी भावना प्रधान कवि के रूप मे जाने जाते है जिन्होने वार्णिक छन्द के साथ मुक्त छन्द को भी अपनाया। "बिजुली कविता", "कवि बसत को बगैया" इनकी प्रसिद्ध कविताये है ।

श्री श्यामराज (सन् 1913 ई0)

श्री श्यामराज की कविताओ मे मानवीय जीवन दर्शन के उन्मेष मिलते है। इनकी अधिकतर कविताओ मे वार्णिक छन्दबद्धता है।

श्री भेषराज पाण्डेय (सन् 1915 ई0)

श्री भेषराज पाण्डेय जी ने प्रकृति चित्रण की अपनी कविताओ का आधार बनाया है।

श्री गोविन्द प्रसाद ढुंगाना (सन् 1918 ई0)

ये अल्पायु हुए फिर भी ये पुरानी विचारधारा की बाते नये ढग से कह गये । "बिजुली" और "अभिलाषा"इनकी अत्यधिक लोकप्रिय कविताये है।

श्री कृष्ण चन्द्र सिह प्रधान (सन् 1920 ई0)

श्री कृष्ण चन्द्र सिह प्रधान की कविताये मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित तथा प्रचारात्मक हो गयी हैं ।

श्री जनार्दन सम

श्री जनार्दन सम की कविताये विचार प्रधान कही गयी है जिन पर सौदर्य प्रेम, वेदना और निराशा की थोडी सी छाप पड़ी हुई है।

श्री कुलमणि देवकोटा

श्री कुलमणि देवकोटा की कविताओ का सग्रह है– "छरिएका फूल– सुन्दर शब्द–विन्यास, विचार गाभीर्य और हास्योक्ति इनकी कविताओ की विशेषता कही गयी है। इन्होने नेपाली साहित्य मे अच्छा योगदान दिया है।

श्री आनन्द देव भट्ट

श्री आनद देव भट्ट की कविताये ओजस्वी और आग उगलने वाली होती है। अनोखी अभिव्यजनाओ और सटीक व्यग्य से भट्ट जी झकझोर देते है। फडकती हुई भाषा मे अनुभूमि को व्यक्त करने मे ये सिद्धहस्त है। नेपाली जन–जीवन की जर्जरता को इन्होने सबसे बढकर दिखा दिया है। हृदय की अपेक्षा

बुद्धि को ये अधिक स्पर्श करते है। इनकी कविताओ मे देश–प्रेम, श्रृगार और दार्शनिक चिन्तन के चिन्ह भी मिलेंगे ।

श्री टेक बहादुर नवीन

श्री टेक बहादुर जी प्रगतिवादी कवि के रूप मे आगे आ चुके है। "चोईटा" नाम से इनकी कविताओ का सग्रह प्रकाशित हो चुका है।

श्री कुमार नेपाल

इन्होने प्रतीको मे माध्यम से बहुत कुछ कहने की सफल चेष्ठा की है। इनी कविताओ का सग्रह है – "चर्की पर्खाल" । इनकी कविताओ मे युग–बोध और कही–कही यौन भावनाओ की अभिव्यक्ति हुई है।

श्री वीरेन्द्र सुब्बा की कविताओ का सकन "मेघमाला" है। ये दार्जिलिग के निवासी है। युग की निराशा और दुरव्यवस्थाओ का दिग्दर्शन इनकी रचनाओ मे मिलेगा ।

श्री महानन्द सापकोटा ने अपनी कविताओ मे नेपाली भाषा के प्रयोगको महत्वदेर विदेशी भाषा के शब्दो को बहिष्कार करने की नीति अपनायी है। इस कारण इन्हे शब्दो को काफी तोडना–मोडना पड़ा। इन्होने व्यग्य के माध्यम से बात साफ–साफ कह डाली है।

श्री चितरजन नेपाली (सन् 1931)

श्री चितरजन नेपाली केवल नेपाली भाषा ही के कवि नही बल्कि इन्होने नेवारी भाषा मे भी रचनाये की है। साहित्य के अतिरिक्त अन्य विषयो पर

भी इनकी पुस्तके प्रकाशित हुई है। इनका वास्तविक नाम है एन0पी0 राजभडारी।

श्री बालकृष्ण पोखरेल (सन् 1933)

बालकृष्ण पोखरेल "शान्ति–सेना" नामक कविता सग्रह के कवि है। नवीन विषय–वस्तु को सीधी सादी शैली मे कहने वाले कवि पोखरेल की अपनी अलग ही विशेषता है ।

कवयित्री पारिजात

कवयित्री पारिजात की "आकाक्षा" नामक कविता–सग्रह (सन् 1957 ई0) देने से पूर्व ही पत्र–पत्रिकाओ में आ चुकी है। इन्हे डा0 वासुदेव त्रिपाठी ने "व्यथा की मधुर कोयल" कहा है। मन को छूनेवाली पीडाओ को सरल प्रवाहपूर्ण ढग से गानेवाली इस कवयित्री का जन्म दार्जिलिग मे हुआ है, पर ये काठमाडू मे रहने लगी। इनकी कविताओ पर बौद्ध धर्म का प्रभाव भी दिखता है।

श्री **तुलसी दिवस** के नाम से जाने–माने कवि का पूरा नाम तुलसी प्रसाद जोशी है। छात्र–जीवन मे पुरस्कृत होने से कविता के क्षेत्र मे ये अधिकाधिक उत्साह से आगे बढ़े । बुद्धिवादी रचनाओ मे सामाजिक विषमताओ का उल्लेख इनकी विशेषता रही है।

श्री मोदनाथ प्रश्रित सन् 1942 ई0 मे "मानव" महाकाव्य के माध्यम से "मदन पुरस्कार" प्राप्त कर चुके है। वे विश्व–विभाजक रेखाओ को नही मानकर सपूर्ण मानवता के लिए अपनी रचनाओ मे मुखर है।

श्री बटु कृष्ण खड़का (सन् 1941 ई0)

श्री बटु कृष्ण जी व्यवसायिक रूप से अभियता है, फिर भी आप सुन्दर कवितायें लिखते है और यदा कदा पत्र–पत्रिकाओ मे आपकी रचनाये देखने को मिलती है ।

आधुनिक काल मे काव्य शैली

नेपाली साहित्य की गीति–विधा मे लिखने वाले बहुत ही कम कवि है। इसका मुख्य कारण मुक्त छन्द मे लिखने की सुविधाजनक नयी परम्परा है। गीति–विधा मे सर्वथा गेय गीत और साहित्यिक गीत मे थोडी भिन्नता है। इस ग्रथ मे कुछ ऐसे गीत अनुवाद के लिए चुने गये है जो साहित्यिक दृष्टि से भी उत्कृष्ट है और साथ ही उनमे गेयधर्मिता भी है। इन गीतो मे कुछ रेडियो नेपाल से सगीतबद्ध होकर प्रसारित होते रहे है तो कुछ साहित्यिक कार्यक्रमो मे प्रसारित हुए है।

श्री माधव प्रसाद घिमिरे की रचनाओ मे, गीतो मे, हम नेपाली लोककठ मे बसी "झ्याउरे" धुन की मधुरिमा पाते है। इनके छोटे–छोटे गीतो में भावनाओ की गहराई है। ये गेय गीतो मे भी सहज ढग से कुछ ऐसी बाते कह जाते है, कुछ ऐसे सकेत कर देते है जिस पर सोचने को मन बार–बार विवश होता है।

नेपाली की गीति–विधा मे लिखने वालो मे **स्व0 म0वी0वि0 शाह** का नाम विशेष गौरव के साथ लिया जाता है। रेडियो नेपाल से प्रसारित इनके गीत बडे ही लोकप्रिय हुए है। इनके देश–प्रेम, लौकिक प्रेम तथा ईश्वर भक्ति के पद बडे मर्मस्पर्शी है ।

साहित्यिक गीतो, गेय गीतो, सगीत रूपको, सगीत कथाओ के कवि **श्री अनन्त बिहारी लाल दास "इन्दु"** ने रेडियो और फिल्म लेखन कार्य कर लोकप्रियता प्राप्त की है। रेडियो नेपाल से इनके साहित्यिक गीत प्रसारित होते रहे है। इन गीतो मे मैथिली की लोक–धुन का मिश्रण माधुर्य और रस बखूबी ले आया है।

श्रीमती चाँदनी शाह के सुकोमल और सुमधुर गीत रेडियो नेपाल से बराबर प्रसारित होते रहे है। इनके गीतो मे नारी हृदय की रागात्मक अनुभूति मुखरित होती रहती है। मातृत्व का स्नेह, देश–प्रेम की भावना और प्रकृति की सुन्दरता को इन्होने अपने गीतो मे मुखरित किया है।

श्री राजेन्द्र थापा का नाम लोकप्रिय गीतकार कवि के रूप मे लिया जाता है। "पोहर सा खुशी फाट्दा " शीर्षक गीत बहुत मर्मस्पर्शी बन पाया है।

सगीतबद्ध रचनाओं के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इसकी चर्चा करते समय उसके साहित्यिक पक्ष को अधिक उजागर नही कर, सगीत पक्ष की विशद विवेचना युक्ति–युक्त होगी।

आधुनिक काल मे यद्यपि मुक्तछन्द मे ही लिखने की ओर अधिकाश कवि तत्पर रहे है, फिर भी यदा–कदा कुछ कविगण छन्दबद्ध रचना भी करते रहे है। छन्दबद्ध रचनाकार प्राय सस्कृत और हिन्दी छन्दो के ज्ञाता है। **श्री भरत राज पत** ने छन्दबद्धता से अपने को आबद्ध कर रखा है। "भिखारी", "राष्ट्रगान" तथा "नयन की उपमायें" मूल नेपाली मे छन्दबद्ध है और इनका अनुवाद भी छन्दबद्ध रूप मे ही प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविताओ की विषय–वस्तु मे विविधता

है और इन्होने प्रगतिशील भवनाओ को लेकर "भिखारी" कविता की रचना की है। "राष्ट्रगान" राष्ट्रीय भावनाओ के अनुकूल है और "नयन की उपमायें" काव्य–कल्पना कौशल का परिचायक है ।

श्री नीर विक्रम प्यासी जी छन्दबद्ध रचना के साथ मुक्तछन्द मे भी लिखते रहे है। इनकी रचनाओ मे विषय–वस्तु की विविधता के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य और मानवीय सवेदनाओ के सहज वर्णन हुए है।

श्री कंचन पुड्सैनी मुख्यरूप से छन्दबद्ध कविताये लिखा करते है। इनकी प्रकाशित कृतिया इस बात के प्रमाण हैं। यो इन्होने मुक्तछन्द मे भी रचना की है। छन्दबद्ध रचनाओ मे कही–कही तुक या अनुप्रासो के व्यामोह भी परिलक्षित होते है।

डा0 वासुदेव त्रिपाठी ने सस्कृत छन्दो का मोहक प्रयोग कर नेपाली साहित्य को समृद्ध किया है। "वसत" और "क्या लब्धि कहू क्या शेष कहू" शीर्षक रचनाओ मे त्रिपाठी जी ने पद–लालित्य के साथ शब्द–विन्यास पर भी जोर दिया। राग–रग–बसत सम्बन्धी उनकी रचनाये निश्चित रूपेण मर्मस्पर्शी बन पायी है।

श्री ददैवज्ञराज न्यौपाने जी की रचनाओ मे राष्ट्रीय भावनाये और प्रेमाभिव्यक्ति सहज रूप से मिलती है। इन्होने फूल और काटे दोनो के महत्त्व को स्वीकारा है। इनकी रचनाओ मे परम्परागत उक्तियो का समावेश भी मिलेगा। अनास्था से दूर विश्वास औन नवनिर्माण की प्रवृत्तियो को पल्लवित–पुष्पित करने वालो मे हम इनका नाम भी आदर के साथ ही लेंगे। इनमे वैचारिक सकीर्णता के स्थान पर उदारतापूर्ण सम–भावना की झलक मिलेगी।

नेपाली साहित्य के वर्तमान काल मे जिन कवि की कृतियो मे विश्वासपूर्वक निर्माण की प्रवृत्तिया जगी है उनमे श्री दैवज्ञराज न्यौपाने जी भी एक है।

नेपाली साहित्य के आधुनिक काल के वयोवृद्ध कवियो की रचनाओ मे छन्दबद्धता तो है ही साथ ही कुछ एक प्रौढ कविगण भी छन्दबद्ध रचना करते रहे है। छन्दबद्ध रचनाकारो मे गीतकार भी है जैसे– श्री माधव प्रसाद घिमिरे, स्व0 म0वी0वि0 शाह, अ0वि0 लाल दास 'इन्दु' तथा श्रीमती चादनी शाह का उल्लेख यथास्थान किया गया है।

समसामयिक कविता ने सर्वप्रथम अपने को छन्द के बन्धनो से मुक्त किया। इस छन्दबद्धता से छुटकारे के साथ ही कविता गद्य रूप में अवतरित हुई है। रिमाल जी की कविता "कविको गान" रचना को प्रथम गद्य कविता माना गया है। नेपाली जनक्रांति के बाद के युग को गद्य काव्य का युग कहा गया है। इन दिनो छन्दबद्ध रचना करने वाले कवि बहुत कम है। शास्त्रीयता से मुक्त होकर आज के कवि अपने ढग से लिखने लगे है और किसी एक पद्धति या प्रणाली के अन्तर्गत वे नही आते। इनका आदर्श पाश्चात्य कवि हो गये है। कही–कही पश्चिमी भाषा के शब्दो के भी प्रयोग इनकी रचनाओ मे मिलते है। नये प्रतीको और बिम्बो की खोज भी इन कवियो ने की है ।

पहले प्रणय निवेदन सीधा नही किया जाता था, अब यह बात नही रही। कवि अपनी प्रियतमा को सीधे प्रणय निवेदन करते दीखते है। रिमाल जी और विजय बहादुर मल्ल जी की रचनाओ मे ये बाते स्पष्ट दीखती है। तरूण कवि भी इसी राह पर चलते नजर आते है। आज की कविता की विषय–वस्तु अतिरिक्ता मे ही उलझी नही रही बल्कि वह देश की सीमा लाघकर अतर्राष्ट्रीय

क्षेत्र मे पहुच चुकी है। भूपि शेरचन की रचना "हो चि मिन्हलाई चिट्ठी", स्व0 बालकृष्ण सम, स्व0 भवानी भिक्षु, श्री केदारमान "व्यथित" तथा श्रीमाधव प्रसाद घिमिरे की रचनाये नेहरू और गाधी जी पर देखने को मिलती है। आज की नेपाली कविता की जड़ शहरी क्षेत्र मे जमी दीखती है। शहरी जीवन के दु ख-दैन्य, गदगी, फूहडपन, अभिशाप और अव्यवस्था की झलक आज की कविता की विषय-वस्तु बनी है। हम यह भी कह सकते है कि आज की कविता न तो उपदेशात्मक है और न रीतिकालीन परम्परा से प्रभावित । रीति-प्रीति की बाते भी नये परिवेश मे, फ्रायड के मनोवैज्ञानिक परिवेश मे या सीधी तरह कह दी है। रोमाटिक कवियो की शैली मे अमूर्तता, साकेतिकता और ध्वन्यात्मकता भी परिलक्षित होती है। शैली मे नवीनता, विधिता और प्रयोगात्मकता दीखती है। श्री मोहन कोइराला इस रूप मे विशेष उल्लेखनीय है।

आधुनिक काल के पूर्वार्द्ध के अत तक, प्राय दो-तीन दशक पूर्व तक जनाकाक्षा की परिपूर्ति के अभाव मे गहरी निराशा का वातावरण बना और कवियो के स्वर मे स्वर मिलाकर कवयित्रियो ने निराशापूर्ण भावनाये ही व्यक्त की।

- उपसहार -

नेपाली भाषा का साहित्य प्रारम्भ से ही कविता-प्रधान रहा है। नेपाली कविता के दो सौ वर्षो का विश्लेष्ण वस्तुत पूरे साहित्य की प्रवृत्तियो, धाराओ, उतार-चढाव और उभरती शैलियो और अभिव्यक्ति-शक्ति प्रतिबिम्बित करता है । नेपाली भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से सशक्त हो गई है। भाषा को कवियो और कवयित्रियो ने सवारा है, सजाया है और परिष्कृत तथा परिमार्जित किया है।

छठा अध्याय

नेपाली और भोजपुरी ध्वनि प्रकरण

ध्वनि – प्रकरण

नेपाली तथा भोजपुरी के तुलनात्मक अध्ययन के लिए सक्षेप मे दोनो भाषाओ के ध्वनिग्रामो अर्थात् स्वनिमो का विवेचन आवश्यक है। भिन्न–भिन्न विद्वानो के द्वारा विवेच्य भाषाओ की ध्वनियो के अब तक के जो अध्ययन प्रस्तुत किए गए है, उनमे सर्वत्र एकरूपता नही मिलती, ऐसी स्थिति मे हमारे लिए उन मत–मतान्तरो में पड़कर उनसे भिन्न कोई स्वतन्त्र निष्कर्ष देना सभव नही था, इसलिए हमने दोनो भाषाओ के अधिकारी विद्वानो मे से एक को चुन लिया है। वस्तुत हम जिन दो विद्वानों के विवेचन को नीचे उद्धृत कर रहे है, उनके चुनाव का एकमात्र कारण उनके विवेचन का सक्षेप मे एकसाथ उपलब्ध होना ही रहा है ।

नेपाली के ध्वनिग्रामो का विवेचन हमने नेपाली के प्रसिद्ध विद्वान श्री चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी की "नेपाली भाषा को उत्पत्ति" शीर्षक पुस्तक से तथा भोजपुरी के ध्वनिग्रामो का विवेचन डा0 उदयनारायण तिवारी की पुस्तक "भोजपुरी भाषा और साहित्य"से ग्रहण किया है ।

---

1. (a) A minimum unit of distinctive sund feature(Bloom Field-Language P.F.)

   (b) A Phenemeis a class of Phenemersty similar sunds contrasting and mutually exclusive with all similar classes in the language. (Block and Trager-An outline of Linguistic Analysis pp. 40).

नेपाली – स्वरवर्ण[1]

नेपाली भाषा के स्वरवर्ण निम्नलिखित है–

इ		उ
ए	अ	ओ
	आ	

नेपाली भाषा के व्यतिरेकी स्वरवर्ण ये ही है। नेपाली मे ह्रस्व और दीर्घ स्वर में भी व्यतिरेक न होने के कारण इ और उ भी एक ही तरह के है। ध्वनि–तात्विक दृष्टि से किसी स्वर के उच्चारण मे कम और किसी स्वर के उच्चारण मे ज्यादा समय लगता है, और कुछ शब्दो मे अर्थ की दृष्टि से दो रूप (अभिलो, अभीलो, सेतो, सेऽतो, कालो, काऽलो) हो सकते है लेकिन इसी आधार पर दीर्घता को वर्ण के स्तर पर स्वीकार नही किया जा सकता। वैसे सभी नेपाली स्वर अनुनासिक हो सकते है, अलग अर्थ मे जैसे त, तँ, बास, बाँस, गाउ, गाउँ इत्यादि दूसरे अनुनासिक स्वर के आगे पीछे आने पर वा नासिक्य वर्ण के साथ आने पर उच्चारण मे स्वर मे अनुनासिकत्व जोडा जाता है। श्वसित व्यजन ध्वनि के साथ उच्चरित स्वर भी श्वसित होते है। नेपाली स्वरो के इस संक्षिप्त वर्णन मे स्वर के ध्वनि–तात्विक भेदो की चर्चा यहा नही की गयी है।

अ – यह केन्द्रीय, मध्य और अगोलित स्वर है। (नेपाली के कुछ भाषिक क्षेत्र मे) यह पद के आदि, मध्य और अन्त मे पाये जाते है ।

खल, कर, अगर, त, जन्म, खर, घर, तल ।

---

1 श्री चू0उ0 रेग्मी – नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 81

आ – यह केन्द्रीय, निम्न और अगोलित स्वर है। किसी स्थिति मे दूसरे वर्षा के साथ आने पर यह आगे के तरफ बढ़ सकता है। यह पद के आदि, मध्य और अन्त सभी स्थिति मे मिलते है ।

आभा, खाल, खार, बाला, धान, मामा ।

इ – यह अग्र, उच्च और अगोलिक स्वर है। लिखित भाषा मे इ, ई दोनों का ही प्रयोग मिलता है फिर भी बोलचाल मे ऐसा भेद नही है। यह शब्द के शुरू, मध्य और अन्त मे पाये जाते है –

ईच्छा, ईश्वर, खीर, खील, दिदी, यही ।

उ – यह पश्च, उच्च और गोलित स्वर है। इ की तरह इसके भी लिखित साहित्य मे उ, ऊ दोनो रूप प्रचलित है, फिर भी नेपाली मे उच्चारण मे सामान्यत एक ही किस्म का प्रयोग होता है । यह शब्द सभी स्थिति मे आते है।

उता, हलो, खुल, खुर, घुलो, ढुटो, कुरा ।

ए – यह अग्र, मध्य और अगोलित स्वर है। यह शब्द क़ी सभी स्थितियो मे मिलता है ।

एक, देउता, खेल, खेर, पाले, जाले ।

ओ – यह पश्च, मध्य और केन्द्रीय स्वर है। यह पद के शुरू, मध्य और अन्त मे आते है ।

ओखर, खोल, खोर, जाओ, कालो ।

आ — यह केन्द्रीय, निम्न और अगोलित स्वर है। किसी स्थिति मे दूसरे वर्ष के साथ आने पर यह आगे के तरफ बढ सकता है। यह पद के आदि, मध्य और अन्त सभी स्थिति मे मिलते है ।

आभा, खाल, खार, बाला, धान, मामा ।

इ — यह अग्र, उच्च और अगोलिक स्वर है। लिखित भाषा मे इ, ई दोनो का ही प्रयोग मिलता है फिर भी बोलचाल मे ऐसा भेद नही है। यह शब्द के शुरू, मध्य और अन्त मे पाये जाते है —

ईच्छा, ईश्वर, खीर, खील, दिदी, यही ।

उ — यह पश्च, उच्च और गोलित स्वर है। इ की तरह इसके भी लिखित साहित्य मे उ, ऊ दोनो रूप प्रचलित है, फिर भी नेपाली मे उच्चारण मे सामान्यत एक ही किस्म का प्रयोग होता है । यह शब्द सभी स्थिति मे आते है।

उता, हलो, खुल, खुर, घुलो, ढुटो, कुरा ।

ए — यह अग्र, मध्य और अगोलित स्वर है। यह शब्द की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

एक, देउता, खेल, खेर, पाले, जाले ।

<u>ओ —</u> यह पश्च, मध्य और केन्द्रीय स्वर है। यह पद के शुरू, मध्य और अन्त मे आते है ।

ओखर, खोल, खोर, जाओ, कालो ।

सयुक्त स्वर[1]–

मूल स्वरो के मिश्रित रूप मे दो स्वरो के एक साथ उच्चारण होने को सयुक्त स्वर कहते है। नेपाली स्वरो के साथ मे ऐ और मूल स्वर की तरह ही पढ़ा जाता है लेकिन इनको सयुक्त स्वर कहना ही उचित है। वैसे ऐसे स्वरो की प्रवृत्ति मूल स्वर की तरह ही है। कैले (कहिले) ऐसे (अहिले) है न (होइन) धोता (देवता) चौटा (एउटा) कौन (कउन) आदि। लेकिन ये सब सयुक्त स्वर के रूप मे ही ज्यादातर उच्चरित होते है ।

(क) ऐ (अइ) इसमे अ और इ का मिश्रण है।

ऐसेलु, पैसा, जनै ।

(ख) औ (अउ) मे अ और उ की सन्धि स्पष्ट है।

औला, पौल, तोल, कौ ।

इसके अलावा दो स्वर एक ही जगह मे होने के उदाहरण भी नेपाली मे बहुत मिलते है ।

अइ– गइ, भइ, चइत, भइलो ।

अए – गए, भए, सए ।

अउ – अउलो, भउलो, पउल, चउर ।

आओ – आओ, जाओ, खाओ ।

आइ – भाइत, साइत ।

---

1 श्री उ0च0 रेग्मी – नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 82

आई – गराई, खाई, आई ।

आउ – भाउ, राउत, आउलो ।

आए – धाए, गाए, कराए, सुनाए ।

आओ – गाओ, जाओ ।

इए – भनिए, गरिए, सुनिए, बसिए ।

इउ – विउ, जिउ ।

उआ – गेरूवा, हसवा, जुआडी ।

उइ – उइले (उहिले), उइ (उही)

उए – कुएको, तुएको (कुहेको, तुहेको) ।

एइ – च्ये (चेइ) गरिनेइ (गरिन्ये) छ ।

एउ – भेउ, एउटा ।

ओइ – ओइलिनु (बैलिन) पोइ, खोइ।

अनुनासिक स्वर[1]–

अनुनासिक स्वरो के उच्चारण विधि निरनुनासिक स्वरो के जैसा होने पर भी भिन्नता है । अनुनासिक उच्चारण मे उच्चारण करने पर बाहर निकलने वाली हवा कुछ मात्रा मे नाक से भी निकलती है। नेपाली भाषा के सभी स्वर अनुनासिक बन सकते है ।

हँ – अँध्यारी, अँगार, अगालो, तँ ।

आँ – आँखा, आसु, डाँडा ।

---

1 श्री चूडामणि उपाध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 83

ईं – अईंसी (भैसी) यही, इट ।

ऊँ – गाउँ, नाउँ, अउँठी (औठी), जाऊँ ।

ऐ – गएँ, भएँ, गाएँ, पाएँ, वेसी ।

ओ – ओठ, खोच ।

नेपाली व्यजनवर्ण[1]–

नेपाली भाषा के व्यजन वर्ण निम्नलिखित है –

प्	त्	ट्	च्	क्
फ्	थ्	ठ्	छ्	ख्
ब्	द्	ड	ज्	ग्
भ्	ध्	द्	झ्	घ्
म्	न्			ङ्
	स्			ह्
	ल्	र्	य्	
व्				

नेपाली भाषा के सभी व्यजन वर्णों के उच्चारण भीतर से बाहर निकलने वाले श्वास की सहायता से होता है। यहा नेपाली व्यंजन के स्थान और घोशता और प्राणत्व के सम्बन्ध मे सामान्य वर्णन करते हुए उनके वितरण के बारे मे सक्षिप्त चर्चा की जाती है । नेपाली के घोष महाप्राण वर्णों को ध्वनि तान्त्रिक दृष्टि से श्वसित व्यजन भी कहा जा सकता है और पद के सभी स्थिति मे

---

1 श्री चूडामणि उपाध्याय रेग्मी – नेपाली भाषा को उत्पत्ति, पृ0 84

उनके वितरण दिखाने पर भी स्वरमध्यगत अवस्था मे और पदान्त मे वे अल्पप्राण वर्णों के रूप मे उच्चरित होते है। इस प्रकार बाघ्, साझा, पढ़नु, वाध्नु, गाम्नु का उच्चारण बाग, साजा, पडनु, गावनू, वादनु होता है। उपरोक्त तालिका भा, नही, आए हुए" कतिपय वर्णों की चर्चा सक्षेप मे इस प्रकार है। क् ख् ग् घ्

ये कण्ठ एव स्पर्श व्यजन है। इन व्यजनो का उच्चारण करते समय जीभ के पिछले से तालु को स्पर्श करता है। इसमे पहला और दूसरा अघोष एव तीसरा और चौथा सघोष तथा पहला और तीसरा अल्पप्राण और दूसरा और चौथा महाप्राण ध्वनि है। ये व्यजन पद के आदि, मध्य और अन्त मे आते है ।

क् – कदम, काको, नाक् ।

ख् – खन्ती, पर्खाल, राज् (नु) ।

ग् – गाई, सगुन, गन (नु) ।

घ् – घर, सघार, बाघ् ।

च् छ् ज् झ् .

ये दन्तमूलीय एव स्पर्श सघर्षी ध्वनि है। इनका उच्चारण करते समय जीभ के अग्र भाग से दन्तमूल को धक्का लगता है। इसमे पहला और दूसरा अघोष एव तीसरा और चौथा घोश ध्वनि है और पहला और तीसरा अल्पप्राण तथा दूसरा और चौथा महाप्राण ध्वनि है। ये व्यजन ध्वनि पद के शुरू मध्य और अन्त मे आते है ।

च् – चिनो–विचारी, नाच ।

छ् – छाता, कछुआ, गछ ।

ज् – जात, बिजली, लाज्।

झ् – झाड़, सरझा, साझ ।

त् थ् द् ध्

ये दन्त्य और स्पर्शी व्यजन है। इनका उच्चारण करते समय जीभ ऊपर के दात को धक्का देती है। इसमे स और थ अघोष और द ध घोष्य ध्वनि एब त द अल्पप्राण थ ध महाप्राण ध्वनि है। ये सभी धनि पद के आदि, मध्य तथा अन्त मे मिलते हैं ।

त् – तार, बतास, बात् ।

थ् – थलो, पत्थर (पाथर), गाथ् ।

द् – दही, कदम्, दूब् ।

ध् – धन, पधेरो, सोंध (नु) ।

ट् ठ् ड् ढ् – ये मूर्धन्य स्पर्शी व्यंजन है। इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ का अग्रभाग जरा घूमकर कठोर तालु को धक्का देता है। इनमे ट् ठ् अघोष ड ढ घोष तथा ट् ड् अल्पप्राण और ठ ढ महाप्राण व्यजन है। यह सभी पद के आदि, मध्य और अन्त मे मिलते है। पद के मध्य और अन्त मे ड ढ ताडित होते है ।

ट् – टट्टू, काट (नु)

ठ् – ठट्टा, बैठक, काठ

ड् – डर, डँडाल, ढाड्

ढ् – ढावनु, पढनु ।

प फ ब भा – ये द्वयोष्ठय स्पर्श व्यजन है। इन ध्वनियो के उच्चारण करते समय ओठ जुड जाते है। इनमे प फ अघोष और ब भ घोष, प, ब अल्पप्राण और फ भ महाप्राण व्यजन है। पद के आगे मध्य औरअन्त मे ये वर्ण मिलते है ।

प् – पानी, कपास, पाप ।
फ् – फालो, काफल, बाफ् ।
ब् – बास, गोबर, दाब् ।
भ् – भर, जिभो, गाभ् (नु)।

ङ् ञ् ण् न् म् – ये अनुनासिक व्यजनो मे ञ् और ण् का उच्चारण कथ्य नेपाली मे नही होते । सिर्फ लिखाई मे ही इनका प्रयोगा होता है। ञ् का प्रयोग यँ का जगह मे पहले होता था, जैसे–आज्ञा, आञ्, सपिञे । ण का उच्चारण डँ के रूप मे कही–कही किया जाता है और ये तत्सम् शब्दो मे आते है। ये सभी अनुनासिक व्यजनो के उच्चारण करते समय मुख के साथ नाक से भी साँस निकलता है ।

ङ् कण्ठ अनुनासिक घोश व्यजन है। नेपाली मे ये ध्वनि पदादि मे कुछ शब्द मे मिलते है, लेकिन मध्य और पदान्त मे भी विशेष रूप से मिलते है। ङ् , ङरि, ङिच्च, कङगाल, आङ ।

म् – अल्पप्राण, घोष, द्वयोष्ठय अनुनासिक व्यजन है। इसका उच्चारण करते समय दोनो होठ मिल जाते है। यह पद के शुरू मध्य और अन्त मे मिलते है। माउ, काम्लो, काम् ।

ऱ् –   (रह–ढ) ल (हल)

यह लुण्ठित, वर्त्स्य, घोष, अल्पप्राण्ण ध्वनि है। यह पद के सभी स्थल मे आते है। यह लुण्ठित वर्त्स्य घोष महाप्राण ध्वनि है। यह ध्वनि नेपाली की तरह ब्रज, अवधी और भोजपुरी भाषा मे मिलते है। उत्तर–मध्यकालीन नेपाली मे यह ध्वनि मिलता था। आधुनिक नेपाली मे यह ध्वनि ढ से विकसित हुआ। भानुभक्त पड्‌कनस भन्या (पढ़ीनस् भने) ल पार्श्विक, वर्त्स्य, अल्पप्राण ध्वनि है। इसके आचरण मे स्वरतन्त्री मे कुछ कम्पन भी होता है। यह पद के आदि मध्य और अन्त मे आता है। महाप्राण ह भी ल मे विकसित हुआ है।

ऱ् –   रड , करम्, गऱ् ।

रह् –   पऱ्हनु (पढनु) करहाइ (कढाइ) कोऱ्ही (कोठी)।

ल् –   लाज, लाटो, पलड , चेलो, दल (नु) खोल (नु)।

हन् –   युह्नो, ओहनु ।

स् –

यह दन्तमूलीय, अघोष, सघर्षी व्यजन है। इसका उच्चारण करते समय जीभ ऊपर उठ जाता है और हवा सघर्ष करते हुए निकलता है। तालव्य श और मूर्धन्य ष का उच्चारण नेपाली मे नही होता लेकिन तत्सम शब्दों के लिखाई में मिलता है।

स् – सानो, सिस्वो, गास्नु ।

ह् – स्वरयन्त्रमुखी, सघर्षी घोष ध्वनिहै। इसका उच्चारा करते समय जीभ तालु और होठ निष्क्रिय रहते है। यह यदि और मध्य मे मिलते है।

ह – हलो, कहनु

य्, व् —

ये अन्तस्थ अथवा अर्धस्वर ध्वनि है। या का उच्चारण जीभ के अग्रभाग को कठोर तालु तक ले जाकर किया जाता है, लेकिन इसका उच्चारण तालव्यय ध्वनि और स्वर की तरह नही होता । बोलचाल की नेपाली मे इसका उचचारण प्राय इस स्वर की तरह होता है और इ तथा य मे स्पष्ट व्यतिरेक भी नही मिलता । इस कारण नेपाली मे य का अस्तित्व वर्ण रूप मे विवादास्पद होता है। यद्यपि ध्वनि तान्त्रिक दृष्टि से इसका अस्तित्व माना जा सकता है। कुछ शब्दो मे लिखित य का उच्चारण ए स्वर की तरह होता है। व द्वयोष्ठय अर्धस्वर है और यकु उच्चारण मे जीभ वर्तुलाकार होता है। यह पद के आदि और मध्य मे मिलता है। यह ध्वनि नेपाली मे बहुत ही कम है और अन्त मे नही मिलता, क्योंकि पदान्त मे यह उ हो जाता है। बोलचाल मे ँ का उच्चारण उ की तरह होता है और इन दोनो में भी स्पष्ट व्यतिरेक नही मिलता। इसका प्रश्न भी "य" की तरह ही विवादास्पद है। ये दोनो वर्ण पदान्त मे नही आते।

य् – यी, यस्टी, खचर, कायर, समय ।

व् – वार, कवल, हाव (हाउ) ।

अक्षर प्रणाली[1]–

सक्षेप मे नेपाली अक्षर प्रणाली इस प्रकार है– नेपाली मे सस्कृत के तत्सम् शब्द प्रशस्त मात्रा मे है और नेपाली और सस्कृत की अक्षर–प्रणाली अलग होने के कारण तत्सम् शब्दो को छोडकर सूत्ररूप मे बताने पर नेपाली के आक्षरिक ढाचे को इस प्रकार बताया जा सकता है–

(प्य) स्व (प्य)

द्वि

---

1 चूडामणि उ0 रेग्मी – नेपाली भाषा की उत्पत्ति, पृ0 ४०

यहा "व्य" से व्यजन "स्व" से स्वर, द्वि से द्विस्वर को सकेतिक करता है । कोष्ठ भीतर का सकेत वैकल्पिकता का बोध कराता है। इस प्रकार हम नेपाली मे निम्न प्रकार के अक्षर पाते है –

स्व – आ । इ । ए ।

द्वि – आउ । आई ।

व्यस्व – खा । जा । तँ । भ ।

व्याद्धि – दही (दै), खै ?

द्विय – ऐन, औरा ।

व्यस्वप्य – कान्, सात्, भात् ।

स्वप्य – ईट, इख्, ऊँट, अपि ।

व्यहिप्य – स्याल, प्याल ।

यहा य और व को इ और उ के भेद रूप मे मानकर द्विस्वर के घटक के रूप में दिखाया गया है। लेकिन व्यजन के रूप मे स्वीकार करके भी आक्षरिक बनावट मे दिखाया जा सकता है, फिर जहा द्विस्वर आते है वैसी स्थितियो मे देर से उच्चारण करने पर दो अक्षर बनते है, वही जल्दी उच्चारण करने पर एक अक्षर। जैसे– आउ, ऐन और स्याल के दो अक्षर मे बाट सकते है।

भोजपुरी – ध्वनियाँ

भोजपुरी स्वर[1]–

संस्कृत उच्चारण मे "अ" तथा "आ" – इन दो ध्वनियो का व्यवहार होता है, किन्तु भोजपुरी मे इनके पाच उच्चारण वर्त्तमान है। इन्हे स्पष्ट करने के लिए क्रमश ह्रस्व (अ), ह्रस्व (ऑ), दीर्घ (आ), ह्रस्व विलम्बित (अ) तथा दीर्घ विलम्बित (अऽ) कहा जा सकता है।

भोजपुरी ह्रस्व (अ) का उच्चारण थोडा वर्तुल होता है, भोजपुरी (अ) जब दीर्घ रूप मे इसका उच्चारण होता है तब यह विलम्बित हो जाता है। यथा–

अचार, अकिलि, अक्ल, दस या दश, बस या बस आदि।

भोजपुरी दीर्घ (आ) के उच्चारण मे जीभ का मध्य भाग थोडा ऊपर उठता है। यह वास्तव में केन्द्रीय स्वर है, किन्तु अँगरेजी (a) के इतना यह विवृत्त नही है। इसके उच्चारण मे होठ वर्तुलाकार नही होते ।

ह्रस्व (ऑ) का उच्चारण – स्थान दीर्घ (आ) की अपेक्षा किंचित ऊपर है। इसके उच्चारण मे जीभ का ठीक मध्य भाग ऊपर नही उठता, किन्तु मध्य तथा पश्च भाग का निचला हिस्सा ही ऊपर उठता है।

दीर्घ (आ) के उदाहरण निम्नलिखित है

आजु, आज, आमॅ, आन्हर, अन्धा, आगाँ, आगे आदि।

---

1 डा0 उदयनारायण तिवारी "ध्वनियो का विशेष विवरण" (क) स्वर पृ0 301

ह्रस्व (ऑ) मॉरलै – "मारा", पॉरलै–आदि मे मिलता है।

विलम्बित दीर्घ (अऽ) के उच्चारण मे जीभ का पिछला भाग तालु के मध्य भाग की ओर ऊपर उठता है। उसका स्थान मूल स्वर, सख्या 6, से तनिक नीचे है। इसके उच्चारण मे होठ किंचित् गोलाकार रूप धारण कर लेते है।

विलम्बित ह्रस्व (अ) का उच्चारण–स्थान भी प्राय वही है, जो दीर्घ (अऽ) का, किन्तु इसके उच्चारण मे यह अन्तर आवश्य आ जाता है कि इसमे जीभ का पिछला भाग नही, अपितु बीच का भाग ऊपर की ओर उठता है।

विलम्बित दीर्घ (अऽ) का उच्चारण एकाक्षर अथवा एकाक्षर के बाद ह्रस्व इ तथा ह्रस्व उ से अनुगामी शब्दो मे होता है। यथा–

कऽ, खऽ, गऽ, चऽ, लु, हँसु आदि मे 'च' तथा 'हँ' का उच्चारण दीर्घ विलम्बित होगा ।

ह्रस्व विलम्बित अ का उच्चारण भोजपुरी जवन, कवन, तवन आदि के 'ज', 'क' तथा 'त' मे सुन पडता है।

– ई, इ, इ –

ई यह सवृन्त दीर्घ अग्रस्वर है। भोजपुरी ई का स्थान मूल अथवा प्रधान स्वर इ की अपेक्षा कुछ नीचा है ।

अखि	ईख	ऊरिद	उर्द
लूला	बालू	नाऊ	उखाव
उधार	कर्ज	उज़ाड़	उजाड़
ससुर	सासु	सास	आजु

अति ह्रस्व उ् का व्यवहार वैकल्पिक रूप से ऊ तथा उ दोनो के लिए होता है। यथा– उ्ठे, उ्ठे, सुते, वह सोए आदि।

ए, ए ए

ए यह अर्द्ध विवृत दीर्घ अग्रस्वर है। इसका उच्चारण स्थान मूल या प्रधान (ए) स्वर से कुछ नीचा है। इसके उच्चारण मे जीभ का उठा हुआ भाग मूल स्वर (ए) की अपेक्षा थोड़ा पीछे रहता है।

भोजपुरी ह्रस्व ए का उच्चारण–स्थान मूल स्वर (ए) तथा (एँ) के लगभग मध्य मे पडता है। इसके उच्चारण मे जीभ का केन्द्रीय स्थान की ओर अधिक अग्रसर होती है । इन स्वरो का उच्चारण कुछ ढीला होता है और इनमे सन्ध्यक्षरो के उच्चारण की प्रवृत्ति पाई जाती है। शब्दान्त, विशेषत प्रत्यय–रूप मे आने वाला ए् अत्यधिक विवृत्त स्वर है।

अति ह्रस्व ए् वस्तुत सहायक ध्वनि है। इसके उच्चारण मे जीभ की नोक निचले मसूड़ोको स्पर्श करती हुई प्रतीत होती है।

ए तथा ए् शब्दान्त मे नही आते । यथा– एडी, एक , खेमा।

(8) ऍं

यह अत्यधिक विवृत्त स्वर है तथा इसका उच्चारण स्थान प्राय वही है, जो मूल स्वर ऍं का है। वस्तुत प्रत्यय के रूप मे ही इसका व्यवहार होता है। प्राचीन भोजपुरी मे, जोर देने के लिए, इसके साथ 'हि' अव्यय का व्यवहार होता था, किन्तु आधुनिक भोजपुरी में इसका लोप हो गया है। प्रत्यय-रूप में शब्दान्त मे व्यवहृत होने पर यह ए, तथा ए् का रूप धारण कर लेता है।

(9) अ ऍं

ऍं यह सन्ध्यक्षर के दूसरे भाग के रूप मे आता है। तत्सम या अर्द्धतत्सम (ऐ) जो पश्चिमी हिन्दी में (ऐ) अथवा ऐ रूप धारण कर लेता है, भोजपुरी मे अऍं हो जाता है। भोजपुरी में अग्र (अ) तथा विवृत्त ऍं सयुक्त होकर सन्ध्यक्षर हो जाता है ।

(10) ओ, ओ –

ओ तथा ओ–का उच्चारण–स्थान मूल स्वर (ओ) से थोड़ा नीचे है । ह्रस्व 'ओ¯' का स्थान पश्च तथा केन्द्र के मध्य मे है। इसके उच्चारण में होठ 'अे' की अपेक्षा अधिक वर्त्तुल तथा मूल स्वर (ओ) अथवा बगला 'ओ' से कम गोलाकार रूप धारण करते है। ये दोनो स्वर आदि, मध्य तथा अन्त मे आते है । यथा–

ओछ, छोटा, ओ¯झइत, ओझा ।

अनुनासिक स्वर[1]–

अएँ को छोड़कर भोजपुरी मे प्रत्येक स्वर का अनुनासिक रूप पाया जाता है। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण मे स्थान वही रहता है किन्तु साथ ही कोमल तालु और कौवा कुछ नीचे झुक जाता है और वर्हिगत वायु का कुछ भाग मुख द्वारा निकलने के अतिरिक्त नासिका–विवर से भी निकलने लगता है।

इसी कारण आनुनासिकता आ जाती है। यथा–

अ हँस, हँसो, फँस, फसो आदि ।

आँ गाँती ।

इ इकड़ी, छोटा ककड़, सिकरी, साँकल ।

अनुनासिक के कारण अर्थ मे अन्तर आ जाता है जैसे गोड, पैर, गोड, जाति–विशेष आदि।

संयुक्त स्वर[1]–

संयुक्त मे ए, ऐ, ओ, औ सन्ध्यक्षर है। वस्तुत दो स्वरो के सयोग से ही इनकी उत्पत्ति हुई है। आधुनिक बोलियो मे भी दो स्वरो का सयोग होता है, किन्तु इस सयोग तथा सन्ध्यक्षरोमे किंञ्चित् अन्तर है। वास्तव में सन्ध्यक्षरो मे दो स्वर–ध्वनिया मिलकर एक अक्षर मे परिणत हो जाती है, किन्तु इस दूसरे प्रकार के सयोग मे कभी–कभी विभिन्न (दो या तीन) स्वरो की सत्ता स्पष्ट रूप से दिखलाई देती है। भोजपुरी मे दो स्वरो के सयोग के अनेक उदाहरण उपलब्ध है। जैसे–

---

1 डा0 उदय नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ0 304

अइ	मइल	मैला
अई	चिरई	चिडिया ।
अउ	हउरा,	शोर ।
आई	ओकाई,	वमन आदि ।

व्यजन[1]

1 क्, ख्, ग्, घ् कण्ठ्य वर्ण है। प्राण तथा नाद के कारण इन ध्वनियो से निर्मित शब्दो के अर्थ मे परिवर्तन हो जाता है, इसलिए इन्हे पृथक् ध्वनिया समझना चाहिए। यथा–

कानि, कानी स्त्री,
खानि, काली, कालिका देवी, खाली, गिन–गिनना,
घिन, घृणा, गिर, गिरना, घिर, घिरना।

ये सभी ध्वनिया आदि, मध्य तथा अन्त मे आती है। यथा–

काम, कार्य, खेत, गेहूँ, गेहूँ,
घोड़ा, बोकला, छिलका ।

2 सघर्षी – च्, छ्, ज्, झ् ।

इनमे च्, छ अघोष तथा ज् झ् घोष एव च्, ज् अल्पप्राण तथा छ, झ् महाप्राण ध्वनिया है।

3 मूर्धन्य – ट्, ठ्, ड्, ढ् ।

इनमे ट्, ठ् अघोष, ड् ढ् घोष एव ट् ड् अल्पप्राण तथा ठ् ढ् महाप्राण ध्वनिया है ।

---

1 डा0 उदयनारायण तिवारी, "भोजपुरी भाषा और साहित्य", पृ0 306

इनमे से ट्, ठ् आदि, मध्य तथा अन्त मे आते है, किन्तु ड, ढ उस अवस्था मे इन्ही स्थानो मे आते है जब वे किसी अनुनासिक ध्वनि से पूर्व रहते है ।

4 दन्त्य त्, थ्, द्, ध् ।

इनमे त्, थ् अघोष, द्, ध् घोष एब त्, द् अल्पप्राण तथा थ्, ध् महाप्राण है ।

भोजपुरी मे ध् पूर्णरूप से घोष ध्वनि नहीं है। निम्नलिखित शब्दो मे ये ध्वनिया ऊपर के दाँतो का स्पर्श करती हैं। यथा–

कन्ता, छोटी तलवार,

खन्ता, जमीन खोदने का औजार,

कधा

गद्दी ।

5 ओष्ठ्य – प्, फ्, ब्, भ् ।

प् तथा ब् शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त मे आते है।

यथा– पानी, बार, बाल, आपन, अपना, अबीर, नाप।

फ् तथा भ् दोनो प् तथा ब् की महाप्राण ध्वनिया है।

अनुनासिक व्यजन – अनुनासिक व्यजनो के उच्चारण मे कोमल तालु के ऊपर उठने से नासिका–विवर के द्वार का अवरोध नही होता जैसा कि निरनुनासिक व्यजनो के उच्चारण मे होता है।

अ॥ ङ्, ङ् ह् – ये घोष कण्ठ्य अनुनासिक ध्वनि है। इनमे ङ् छ महाप्राण वर्ण है।

ब॥ तालव्य – ञ्

यह घोष अनुनासिक तालव्य व्यजन है और आदि मे यह नही आता। यथा– निनि्ञा, भुइञा, बढ़िञा आदि ।

स॥ वर्त्स्य – न्, न्ह ।

न्ह् का ह् पूर्ण स्वर के पूर्व पूर्णरूप से उच्चरित होता है, किन्तु जब इसके बाद कोई अपूर्व अथवा अति ह्रस्व स्वर आता है तब यह अघोष न मे परिणत हो जाता है ।

न शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त मे आता है, किन्तु न्ह, आदि में नही आता । यथा–

नाप, नाक, पानी, चानी, चाँदी, पान, जान, प्राण, चोन्हा, गान्ही, सेन्हि –– सेनि – सेघ आदि।

जब न् किसी अन्य व्यजन वर्ण से सयुक्त होता है तब इस संयुक्त होने वाले वर्ण के अनुसार इसके उच्चारण–स्थान मे भी परिवर्तन हो जाता है, अर्थात् उस वर्ण के अनुसार इसका भी उच्चारण मूर्धन्य, तालव्य अथा दन्त हो जाता है। यथा –

इण्ड –– डन्ड,
कुञ्ज –– कुन्ज,
कण्ठ –– कन्ठ आदि ।

द)   द्वयोष्ठ्य (म्, म्ह्)

ये द्वयोष्ठ्य घोष अनुनासिक व्यजन वर्ण है, इनमे म्ह महाप्राण व्यजन है ।

चूँकि प्राण तथा नाद के कारण इन ध्वनियो से निर्मित शब्दो के अर्थ मे परिवर्तन हो जाता है, इसलिए इन्हे पृथक ध्वनिया समझना चाहिए। यथा--

बरमा, एक प्रकार का औजार, बरम्हा, बामन ।

म शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त मे आता है, किन्तु म्ह आदि में नही आता । यथा--

मोर, महुआ, जामुनि, कमरी, चाम, काम, गम्हारि, खम्हा।

पार्श्विक व्यंजन (ल्, ल्ह्)

ल् पार्श्विक, अल्पप्राण, घोष, वर्त्स्यध्वनि है तथा ल्ह् महाप्राण ध्वनि ।

लुंठित व्यंजन (र, र्ह्)

र् लुठित, अल्पप्राण, वर्त्स्य, घोष ध्वनि है तथा र्ह् महाप्राण ध्वनि।

उत्क्षिप्त या ताड़नजात व्यजन (ड़्, ड़्ह, या ढ़)

ड़् अल्पप्राण, घोष मूर्धन्य उत्क्षिप्त ध्वनि है और ड़् ह् या ढ महाप्राण ध्वनि ।

संघर्षी (स्)—

यह वास्तव मे वर्त्स्य, अघोष, ऊष्म सघर्षी ध्वनि है। यह ध्वनि शब्द के आदि, अन्त तथा मध्य से आती है। यथा—

साग, शाक, सारी, साडी, घासि, घास ।

कण्ठ्यसंघर्षी (ह्)

जब 'ह्' शब्द के मध्य या अन्त मे आता है तथा जब कोई ह्रस्व स्वर इसका अनुगामी होता है तो धीरे—धीरे इसके घोषत्व का लोप होने लगता है और वह अघोष ध्वनि मे पलित हो जाता है। अन्तिम अवस्था मे यह 'ह्' का रूप धारण कर लेता है। यथा—

हमार, मेरा, हाथ, जेहल, जेल, कहल, कहना, आदि।

भोजपुरी मे एकौंदसा , दुआदसा , मृत्यु के पश्चात् ग्यारहवें तथा बारहवे दिन मे, (ह) का उच्चारण विसर्गवत् हो जाता है और सुनाई नही देता।

सघर्षी 'ह्' अथवा विसर्ग

यह अघोष सघर्षी ध्वनि है और अघोष स्पर्श तथा सघर्षी व्यजनो मे प्राणत्व उत्पन्न करती है । विस्मयादिबोधक अव्ययो मे भी यह ध्वनि सुन पडती है। पूर्ण स्वर के अनुगामी होने पर यह ध्वनि पूर्णरूप मे तथा अपूर्ण स्वर के अनुगामी होने पर यह आशिक रूप मे सुन पड़ती है, यथा— आ , ओ आदि

अर्द्धस्वर या अन्त स्थ (य)

'य्' को अन्त स्थ या अर्द्धस्वर अर्थात् व्यजन और स्वर के बीच की ध्वनि माना जाता है। भोजपुरी मे 'य्' के स्थान पर विकल्प से लिखते समय

'अ' का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की बोलियो मे 'य्' के स्थान पर शब्द के आरम्भ मे 'ज्' हो जाता है। इसका कारण यह है कि 'य्' के उच्चारण मे तालु के निकट जीभ को जिस स्थान मे रखना पड़ता है, वहा उसे देर तक नही रखा जा सकता । मागधी अपभ्रंश से प्रसूत बोलियो में तो शब्द के आदि मे इसका 'ज्' उच्चारण प्रसिद्ध है। यथा–

पिआस् या पियास्, डिअति या डियटि, घिआ या घिया, इआर या इयार आदि ।

अर्द्धस्वर व्–

यह द्वयोष्ठ्य अर्द्धस्वर है। यह शब्द के मध्य मे आता है तथा – श्रुति का कार्य करता है। यथा–

पावल, पाना, सवृति, सौत, गॅवार, युवा या युआ, पूप, दुवार या दुआर, द्वार आदि

सयुक्त व्यंजन–

भोजपुरी मे सयुक्त व्यजन निम्नलिखित रूप मे मिलते है –

(1) अल्पप्राण तथा सघर्षी घोष एव अघोष वर्ण अपने वर्ग के महाप्राण अथवा अपने ही वर्ण से सयुक्त होते है। ध्वन्यात्मक रीति से उन्हे दीर्घ व्यजन (द्वित्व) (Long Consonant) कहा जा सकता है।

यथा–

चक्कू, या चाकू, पक्की, कच्ची आदि।

(2) न्, म् तथा ड् के भी दीर्घ (द्वित्व) रूप होते है। ये अपने वर्ग के वर्णो से सयुक्त हो सकते है । यथा-

बुन्ना, शून्य, महन्थ, महन्त, दड गा, दगा–फसाद आदि।

(3) स् को उसके पहले का अघोष, अल्पप्राण, कण्ठ्य अथवा दन्त्य व्यजन वर्णों से सयुक्त किया जा सकता है। याथा–

खुस्की, खुश्की, कुस्ती, दंगल, गस्ती, गश्ती ।

स् को उसके पहले मे अघोष, अल्पप्राण, मूर्धन्य व्यजन वर्णों से भी सयुक्त किया जा सकता है। यथा–

मास्टर या माहटर अस्पष्ट, असपहट आदि।

स् का दीर्घ (द्वित्व) रूप भी हो जाता है। याथा–

हिस्सा या हीसा, खिस्सा या खीसा।

(4) अर्द्धस्वर अपने पहले के कण्ठ्य, दन्त्य तथा ओष्ठ्य व्यजनो से सयुक्त किया जा सकता है। यथा–

ख्याल या खियाल, प्यार या पियार, ग्वाल या गुआल, द्वार या दुआर, ग्यान या गिआन ।

य् को आगे आने वाले न् या म् से सयुक्त किया जा सकता है । यथा–

न्याव या नियाव, न्याय, म्यान, मियान आदि।

ऊपर के सयुक्त व्यजनो को छोडकर शब्द के आदि मे, भोजपुरी मे सयुक्त व्यजनो का प्रयोग नही होता ।

व्यजन वर्णों का द्वित्वभाव या दीर्घीकरण

भोजपुरी तथा अन्य सभी आधुनिक भाषाओ एव बोलियो मे व्यजन ध्वनियो का दीर्घरूप मे उच्चारण किया जाता है। इस दीर्घ उच्चारण को साधारणत

द्वित्व उच्चारण की सज्ञा दी जाती है, क्योंकि ध्वनि–द्योतक वर्णों को दो बार लिखकर इस दीर्घ उच्चारण को प्रदर्शित किया जाता है। वस्तुत किसी ध्वनि का दो बार उच्चारण नही होता । जिह्वा के अग्रभाग का देर तक, दातो के स्पर्श करने के कारण 'त्त' का उच्चारण होता है। इस प्रकार इसे द्वित्व वर्णों की अपेक्षा दीर्घ व्यजन कहना अधिक वैज्ञानिक है। व्यजनो के दीर्घीकरण से उनके अर्थ मे भी अन्तर आ जाता है। यथा–

पता, पत्ता, गला, गल्ला, खीली, खिल्ली, पीला, पिल्ला।

भोजपुरी तथा नेपाली के ध्वनिग्रामो के तुलनात्मक अध्ययन का निष्कर्ष

ध्वनिग्रामो की सख्या की दृष्टि से तुलना करने पर नेपाली की तुलना मे भोजपुरी अधिक समृद्ध है। ऐ, औ तथा ऑ ये तीन मूलस्वर है जो नेपाली में नही मिलते ।

सध्यक्षर स्वरो की दृष्टि से नेपाली तथा भोजपुरी मे कुछ समानता है, ऐ और अउ दो सयुक्त स्वर मिलते हैं ।

अनुनासिक स्वरो की दृष्टि से भी नेपाली तथा भोजपुरी मे काफी समानताए है। दोनो के प्राय सभी मूल स्वरो के अनुनासिक रूप भी पाये जाते है ।

व्यजन ध्वनिग्रामो की दृष्टि से नेपाली तथा भोजपुरी मे यह भिन्नता दिखती है कि भोजपुरी मे व्यजनों की सख्या नेपाली से अधिक है।

ण व्यजन का प्रयोग भोजपुरी और नेपाली दोनो मे नही होता है।

ष का प्रयोग भी दोनो भाषाओ मे नही होता है । श का प्रयोग भी दोनो भाषाओ मे नही है ।

******

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

** संदर्भ - ग्रन्थ **

काव्य और कविता संग्रह

1 **गो-विलाप छन्दावली** - (भोजपुरी, हिन्दी, ब्रजभाषा), श्री दूधनाथ उपाध्याय, प्रकाशन- श्री नवरग सिंह रईस, भेलसा मुद्रक भारतीय जीवन प्रेस 1893 ई0 ।

2 **चारो खण्ड** - प्रकाशन-जगदीश नरायण तिवारी, 10-ए मछुआ बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता-7, 1943 ई0 ।

3 **बदमाश दर्पण** -तेगअली, प्रकाशन-भारतीय जीवन प्रेस, काशी, 1895 ई0 ।

4 **बिरहा** - रामकृष्ण वर्मा, प्रकाशन-भारतीय जीवन प्रेस, काशी, 1900 ई0 ।

5 **भारत के गीत** - दूधनाथ उपाध्याय-प्र0स0 सन् 1914 ई0, प्रकाशक-डी0आर0ए0 बलिया ।

6 **रघुवीर पत्र-पुष्प** - (हिन्दी, भोजपुरी), रघुवीर नरायण शरण, बिहार बुक स्टोर, पटना, 1917 ई0 ।

7 **रघुवीर रसरग** - (हिन्दी, भोजपुरी, ब्रजभाषा), रघुवीर नरायण शरण, बिहार बुक स्टोर, पटना, 1917 ई0 ।

8. **हिलोर** - महेन्द्र शास्त्री, राहुल पुस्तकालय, पो0 रतनपुरा, महाराजगज सारन, सन् 1928 ई0 ।

9 **ग्राम गीताजली** - चचरीक प्र0स0 ठाकुर महातमरा (क) रेती चौक गोरखपुर, सन् 1931 ई0 ।

10. **भूकम्प पचीसी** – दूधनाथ उपाध्याय, प्रभात प्रेस, चौक बलिया, सन् 1934 ई0 ।

11 **गुनगुन** – (हिन्दी, भोजपुरी), मनोरजन प्रसाद सिंह, पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय, सन् 1937 ई0 ।

12 **केवट अनुराग** – (हिन्दी, भोजपुरी), सिद्धनाथ सहाय विनयी, अम्बिका भवन, मनशा पाण्डेय का बाग, आरा, सन् 1941 ई0 ।

13. **मड़ई पलानी** – (सम्भवत हिन्दी, भोजपुरी), रघुवीर नरायण शरण, इस पुस्तक की रचना श्री सिद्धेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव ने भोजपुरी लोक साहित्य पर की है । अन्य विवरण नही मिल सका।

14. **द्रोपदी की रक्षा** – (हिन्दी, भोजपुरी), सिद्धनाथ सहाय विनयी।

15 **धरती के गीत** – (लोक भाषा कविता सग्रह), सम्पादक–रमेश चन्द्र सिन्हा, जन प्रकाशन गृह, राज भवन, स्टैण्ड रोड, बम्बई–4 ।

16. **तिरंगा** – महेश्वर प्रसाद प्र0, रचयिता, भरौली, शाहाबाद, 1950 ई0।

17 **भोजपुरी वीर काव्य** – प्रसिद्ध नारायण सिंह, अतर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, बक्सर, सन् 1955 ई0 ।

18 **गॅांव गिराऊँ** – (हिन्दी, भोजपुरी, अवधी), राजबली दुबे "तरल", प्रकाशन–आनन्द बहादुर सिंह, तुलसी पुस्तकालय, भरैनी, वाराणसी, 1959 ई0 ।

19 **साहित्य रामायण** – सुन्दर काण्ड (भोजपुरी) 1964, लका काण्ड (भोजपुरी) 1965, दुर्गा शकर प्रसाद सिंह "नाथ", नाथ साहित्य मदिर, रैन बसेरा, दलीपपुर, शहाबाद।

20 **भोजपुरी लोकगीत** – ले0 – विन्ध्यावासिनी रोड न0 1, क्वाटर न0 6, काजीपुर रोड, पटना ।

भोजपुरी कविताओ के हिन्दी सग्रह

1 **भोजपुरी के कवि एवं काव्य** – ग्रथकार महाराजकुमार दुर्गाशकर प्रसाद सिंह "नाव", विद्यावाचास्पति, सम्पादक डा0 विश्वनाथ प्रसाद, प्रकाशक बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना–1, सन् 1958 ई0।

2 **आधुनिक भोजपुरी गीत एव गीतकार** – स0 राहगीर, मधु प्रकाशन, चेतगज, वाराणसी, सन् 1958 ई0।

लोक साहित्य के सम्पादित सग्रह

1 **कविता कौमुदी** – 3रा भाग (ग्राम गीत), राम नरेश त्रिपाठी, नवनीत प्रकाशन लि0, बम्बई, द्वि0सस्करण 1955 ई0 ।

2. **भोजपुरी ग्राम गीत** – डब्लू0जी0 आर्चर तथा सकठा प्रसाद, मुद्रक पटना ला प्रेस, पटना, सन् 1943 ई0 ।

3 **लालच जी के जाल** – भोजपुरी लोककथा एव सग्रह, जगदीश, भगवती प्रसाद शास्त्री, पुस्तक भण्डार पटना, 1955 ई0 ।

4 **भोजपुरी सस्कार–गीत** – सपादक प0 हसकुमार तिरी, श्री राधा बल्लभ शर्मा, प्रकाशन बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना–4, 1977 ई0।

5 **सोहर** – स0 प0 रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।

6 **उत्तर प्रदेश के लोकगीत** – प्र0 हस कुमार तिवारी, उ0प्र0 सरकार लखनऊ, सन् 1959 ई0 ।

7 **भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन** – अप्रकाशित लेख डा0 कृष्णदेव उपाध्याय, एम ए , डि फिल

8 **भोजपुरी लोक गीत में करूण रस** – स0 2001 वि0, सम्पादक–श्री दुर्गा शकर प्रसाद सिह, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

9 **कविता कौमुदी भाग 5 ग्राम गीत** – सम्वत् 1986 वि0, स0 राम नरेश त्रिपाठी, प्र0–हिन्दी मन्दिर, प्रयाग ।

10 **जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त** – 1942 ई0, लेखक–लक्ष्मी नरायण सुधाशु, प्रकाशक–युगातर साहित्य मन्दिर, भागलपुर।

11 **मत्स्यपुराण** – स0 श्री राम प्रताप त्रिपाठी, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

12 **नाथ संप्रदाय 1950 ई0** – लेखक–हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्र0–हिन्दुस्तान एकेडेमी, प्रयाग ।

13. **हिन्दी भाषा और साहित्य** – सम्वत् 1987 विक्रमी। लेखक डा0 श्याम सुन्दर दास, सम्पादक–इडियन प्रेस, प्रयाग ।

14 **कबीर 1950 ई0** – लेखक–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्र0 हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

15. **आल्हा** – 1940 ई0, ले0 चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा, प्र0–इडियन प्रेस, प्रयाग ।

16 **हिन्दी साहित्य** – 1944 ई0, ले0–डा0 श्याम सुन्दर दास, प्र0–इडियन प्रेस, प्रयाग ।

17 **साहित्य प्रकाश** – 1931 ई0, ले0–डा0 रमाशकर शुक्ल रसाल, प्र0–इडियन प्रेस, प्रयाग ।

18 **भक्त गोपीचन्द्र** – ले0 बालकराम योगेश्वर, प्र0–जवाहर बुक डिपो, गुदरी बाजार, मेरठ ।

19 **हिन्दी साहित्य का इतिहास** – (6वा सस्करण) सम्वत् 2007 विक्रमी। लेखक–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्र0–नागरी प्रचारणी सभा, काशी।

20 **मैथिली लोक गीत** – स0 1999 वि0, सम्पादक–श्री राम इकबाल सिह, प्र0–हिन्दी मन्दिर, प्रयाग ।

कोश

1 **कृषि कोश** (प्र0 खण्ड), सम्पादक–डा0 विश्वनाथ प्रसाद, श्रुतिदेव शास्त्री, राधावल्लभ शर्मा, बिहारी राष्ट्रभाषा, पटना, 1959 ई0।

2. **कृषि कोश** (द्वितीय खण्ड), स0 श्री वैद्यनाथ पाण्डेय, श्रुतिदेव शास्त्री, प्र0–बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना 1966 ई0।

3. **भोजपुरी भाषा का शब्दकोष** – (भोजपुरी, हिन्दी), प्र0 एल0 सेट जोसफ मिशन हाउस, मोतीहारी, 1940 ई0 ।

4. **कहावत कोष** – स0 डा0 भुनेश्वर नाथ मिश्र "माधव" एव विक्रमादित्य मिश्र, प्र0 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1965 ई0 ।

5. **भोजपुरी लोकोक्तियां** डा0 शशि शेखर तिवारी, प्र0 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना 1970 ई0 ।

6 **पहेली कोश** – स0 श्री विक्रमादित्य मिश्र, प्र0 वि0रा0 परिषद, पटना, 1981 ई0 ।

7. **भोजपुरी लोकोक्तिया एव मुहावरे** – (एक समीक्षात्मक प्रबन्ध), डा0 मुक्तेश्वर तिवारी "बेसुध" प्रकाशन हिन्दी परिषद आशापुर, चित्तबडा गाव, बलिया, 1970 ई0 ।

8. **धान की उन्नत खेती** – (कृषि प्रयोग) भगाराम वैद्य, प्र0 पीरो शहाबाद, 1966 ई0 ।

9 **फोकट में सैर** – (यात्रा विवरण), स0 डा0 सत्यदेव ओझा, प्र0 भोजपुरी साहित्य परिषद 1, भोजपुरी बजार जमशेदपुर 3, 1967 ई0।

10 **रमेशरधाम यात्रा** – सावलिया बिहारी लाल वर्मा, समाज शिक्षा बोर्ड बिहार, पटना, सन् 1961 ई0 ।

भोजपुरी साहित्य की पत्र–पत्रिकाएँ

1 **भोजपुरी** – (साप्ताहिक) – स0 अखौरी महेन्द्र प्रताप वर्मा, चितरजन एवेन्यु कलकत्ता ।

2 **भोजपुरी त्रैमासिक** – स0 महेन्द्र शास्त्री, सचालक गिरीश तिवरी, भोजपुरी कार्यालय, कदम कुआ, पटना 3,1948 ई0 ।

3. **भोजपुरी (मासिक)** – स0 रघुश नारायणसिह, प्र0 प्रधान कार्यालय, आरा,1952 ई0।

4 **अजोर (त्रैमासिक)** – सं0 पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, स स अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, प्र0 भोजपुरी परिवार, सलीमपुर अहरा पटना 3, सन् 1960 ई0।

5 **गँवघर (पाक्षिक)** – स0 भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव "भानु" गँवघर कार्यालय, महादेवा, आरा, 1960 ई0 ।

6 **भोजपुरी समाचार (साप्ताहिक)** – स0 जयदारी प्र0 अग्रेसिव फेडरेशन आफ इण्डिया एक्जीविजन रोड, पटना, 1965 ई0 ।

7 **माटी की बोली (मासिक)** – स0 सतीश्वर सहायय वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद, नवीनगज, छपरा, 1964 ई0 ।

8. **भोजपुरी कहानियां (मासिक)** – अद्य सम्पादक–डा0 स्वामी नाथ सिंह वर्तमान स0 डा0 रामवती पाण्डेय, प्रकाश–भोजपुरी संसद, जगतगंज वाराणसी, 1964 ई0।

9 **चतुर्मुखी पत्रिका (त्रैमासिक)** – स0 श्री कुलदीप नरायण सिंह "झड़प", सिकन्दरपुर बलिया ।

10 **हिलोर (मासिक)** – डा0 रामनाथ पाठक "प्रणयी" स0 देवकुमार मिश्र "अलमस्त", प्र0–देववाणी शोध मन्दिर, आरा, सन् 1969 ई0 ।

11 **भोजपुरी समाज (मासिक)**– भोलानाथ सिंह प्र0 भोजपुरी समाज परासिया जिला छिन्दाडा (मध्य प्रदेश) ।

12 **भोजपुरी जनपद (मासिक)** – सम्पादक संचालक–राधामोहन "राधेश", प्र0–भोजपुरी साहित्य मन्दिर, जगतगंज वाराणसी, 1968 ई0 ।

13 **भोजपुरी साहित्य (मासिक)** – स0 डा0 जितराम पाठक, प्र0–भोजपुरी कार्यालय, प्रोफेसर कालोनी आरा, 1965 ई0 ।

14 **धरती (त्रैमासिक)**– स0 मदनमोहन सिन्हा "मनुज" प्र0–धरती कार्यालय, लूकरगंज प्रयाग, सन् 1955 ई0 ।

15 **हमार बोल** – सम्पादक ब्रजेन्द्र भारती, प्र0 भोजपुरी सेवा मण्डल, 14 एलगिन रोड, इलाहाबाद, सन् 1964 ई0 ।

16 **पुरवैया** – (भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका), सम्पादक–रामबली पाण्डेय, प्र0–भोजपुरी संसद जगतगंज, वाराणसी।

नेपाली पुस्तकहरू

1 गुरू प्रसाद मैनाली, नासो काठमाडौ राजेन्द्र प्रसाद मैनाली, 2044

2 चूडामणि बन्धु, नेपाली भाषा को उत्पत्ति, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2037

3 चूडामणि बन्धु, भाषा विज्ञान काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2040

4 ठाकुर प्रसाद पराजुली, नेपाली साहित्य को परिक्रमा काठमाडौ नेपाली विधा प्रकाशन, 2045

5 तानाशर्मा, सम र समका कृति, काठमाडौ साझा प्रकशन 2039

6 दयाराम श्रेष्ठ, नेपाली साहित्यका केही पृष्ठ, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2048

7 दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, नेपाली साहित्यको सक्षिप्त इतिहास, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2040

8 बालकृष्ण पोखरेल, नेपाली भाषा र साहित्य, काठमाडौ, रत्न पुस्तक भण्डार, 2032

9 बालकृष्ण पोखरेल, पाँच सय वर्ष, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2043

10 बालकृष्ण पोखरेल, राष्ट्रभाषा, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2040

11 बालकृष्ण सम, नियमित आकस्मिकता, काठमाडौ साझा प्रकाशन, 2043

12 मोतीराम भट्ट, कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र, बनारस रामकृष्ण वर्मा, 1948

13 मोहनराज शर्मा, शब्द रचना र वर्ण-विन्यास, काठमाडौ, काठमाडौ बुक सेन्टर, 2049

14 रामचन्द्र लम्साल, कोश विज्ञान र नेपाली कोश, काठमाडौ, श्रीमती शारदा लम्सा, 2049

15 रामराज पन्त, नेपाली लिपि विज्ञान, प्रयाग रामचरन दास अग्रवाल, सन् 1958

16 रोहिणी प्रसाद भट्टराई, वृद्ध नेपाली व्याकरण, काठमाडौ वे रा प्र प्र , 2033

17 शरदचन्द्र शर्मा भट्टराई, नेपाली वाङ्मय केही खोज केही व्याख्या, काठमाडौ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, 2042

1 क) नेपाली भाषा की उत्पत्ति चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी ।

ख) नेपाली भाषा का बनोट – गोपालनिधि तिवारी ।

2 नेपाली भाषा की उत्पत्ति र विकास – पारसमणि प्रधान ।

3 नेपाी भाषा की बनोट – गोपालनिधि तिवारी ।

4 जर्नल त्रिभुवन विश्वविद्यालय – डा0 सच्चिदानन्द चौधरी ।

5 मध्य पहाडी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन – गोविन्द चातक ।

6 श्री सूर्य विक्रम शवाली – नेपाली भाषा का विकास को सक्षिप्त इतिहास।

7 मोहन प्रसाद – मध्यकालीन अभिलेख ।

8 नेपाली साहित्यको ऐतिहासिक परिचय, तारानाथ शर्मा, सहयोगी प्रकाशक, काठमाडौ ।

9 प्राथमिक कालीन कवि र काव्य प्रवृत्ति, केशव प्रसाद उपाध्याय, साझा प्रकाशन, काठमाडौ ।

10 नेपाली कविताको प्रवृत्ति, रमेश श्रेष्ठ, साझा प्रकाशन, काठमाडौ।

11 आधुनिक नेपाली कविता, कृष्ण चन्द्र सिह प्रधान, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाडौ ।

12 सात कविहरू, तुलसी दिवस, राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाडौ ।

13 जूनकिरी, भरत राज पन्त, साझा प्रकाशन ।

14 उसैको लागी, म वी वि शाह, साझा प्रकाशन ।

15 प्रस्थान, कन्चन पुडासैनी, हरि प्रकाश पडासैनी ।

16 किन्नर किन्नर, माधव प्रसाद घिमिरे, साझा प्रकाशन ।

17 लालित्य, प0 लेखनाथ, पुस्तक ससर, विराट नगर ।

18 यो जिन्दगी खै के जिन्दगी, हरि भक्त कटुवाल, रत्न पुस्तक भण्डार, काठमाडौ।

19 इन्द्रेनी (मासिक पत्रिका), सं0 माधव प्रसाद घिमिरे, नेपाली साहित्य संसार, दार्जीलिग ।

समीक्षात्मक ग्रन्थ (साझा प्रकाशन से प्रकाशित)

1 नेपाल काव्य र उसका प्रतिनिधि कवि – हृदयचन्द्र सिह प्रधान ।

2 नेपी काव्य र कवि – राममणि "रिसाल" ।

3 नेपाली साहित्य (पृष्ठभूमि र इतिहास) अभी सुवेदी ।

4 नेपाली साहित्य केहि पृष्ठ – दयाराम श्रेष्ठ "सभव– ।

5 प्राथमिक कालीन कवि – काव्य प्रवृत्ति – केशव प्रसाद उपाध्याय ।

6 सस्कृत को अमर साहित्यकार – घटराज भट्टराई ।

7 साझा समालोचना – स0 कृष्ण चन्द्र सिह प्रधान ।

8 साहित्य चर्चा – यदुनाथ खनाल ।

9 साहित्यिक अनुशीलन – भानुभक्त पोखरेल ।

हिन्दी मे प्रकाशित पुस्तकें

1 नेपाली साहित्य का इतिहास – डा0 दीनानाथ शरण ।

2 नेपाल भारती – सं0 स्व0 ब्रज किशोर "नारायण" पटना ।

3 नेपाल की कहानी – श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव ।

4 नेपाल अतीत एव वर्तमान – शंकर सहाय सक्सेना ।

5 नेपाली और हिन्दी भक्ति–काव्य का तुलनात्मक अध्ययन–डा0 मथुरादत्त पाण्डेय।

6 नेपाली भाषा एव साहित्य – रूद्रराज पाण्डेय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

मैथिली

1 हर गौरी विवाह नाटक – जगज्ज्योतिर्मल्ल सम्पादक ड0 रामदेव झा दरभगा।

शोध – पत्रहरू .

1 चक्रपणि खनाल डोट्याली भाषिकाको वर्ण विश्लेषण र अर्थसहित सकलन, त्रि वि नेपाली स्नातकोत्तर शोध पत्र, 2049

2 जगन्नाथ उपाध्याय, तामाङ भाषा र नेपाली भाषाका व्याकरणको व्यतिरेकी तुलना, त्रि.वि नेपाली स्नातकोत्तर शोध पत्र, 2049

3 जीवेन्द्र देव गिरि, सिम्ताली क्रिया सरचनाको भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण, त्रि वि नेपाली स्नातकोत्तर शोध पत्र ।

4 परशुराम कुईकेल, काठमाडौ उपत्यकाको ध्वन्यात्मक शब्द–सकलन, त्रि वि नेपाली स्नातकोत्तर शोध पत्र ।

5. रामनाथ तिमल्सिना, सख्या र सार्वनामिक शब्दका आधारमा नेपाली भाषिकाको निर्धारण, त्रि वि. नेपाली स्नातकोत्तर शोध पत्र 2050.

अंग्रेजी पुस्तकहरू

1 आई.गेल्ब, स्टडी आफ राइटिंग दि फाउन्डेशन आफ ग्रामोटोलाजी, शिकागो युनिवर्सिटी, शिकागो प्रेस, ई0 1952

2. जे, लायन्स, इन्ट्रोडक्शन टू थ्योरेटिकल लिग्विस्टिक्स, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी, ई0 1968

3 लियोनार्ड ब्लुमफिल्ड, लैंगवेज, न्यूयार्क, हेनरी हल्ट, ई0 1933

4 डेविड क्रिस्टल, ए डिक्सनरी आफ लिग्विस्टिक्स एण्ड फोनेटिक्स दो, स ब्रिटेन बेसिन ब्लैकवेल लि , ई0 1985

****